

# ओं नमश्शिवाय

ओं नमः परमात्मने, श्री महागणपतये नमः

श्री गुरुभ्यो नमः

हरिः ओं

# शिव स्तुति

**(Based on Bhodhayana Rishi Paddadhi)**

**(With Poorvanga Puja, Mahanyasam, Rudra TriSati,  
EkadaSa Rudra Japam, Rudra & Chamaka Kramam,  
Rudra Homam & uttaranga Puja)**

**See Item No. 22, (page No368) for  
“Bodhayana Mahanyasa sootraaNi”.**

## **Version Notes**

**This is now the current Version 4.0 dated June 30, 2021.**

1. This replaces the earlier version 3.1 dated October 31, 2018.
2. This version has been updated with the errors found and reported till June 15, 2021.
3. We have added BodAyana MahAnyAsa sUtrANi which has been followed in our compilations.
4. We have included Section Heading pages like Poorvangam, MahAnyAsam, EkAdaSa Japam, Kramam, Homam and UttarAngam. Users can generate their own printouts from PDFs by selecting the Page range for a specific set of Pages/Section they like.
5. Required convention, style and presentation improvements or standardisations has been done wherever applicable.
6. Notify your corrections / suggestions etc to our email id [vedavms@gmail.com](mailto:vedavms@gmail.com)

### **Earlier Versions**

1st	Version Number	1.0 dated 15 <sup>th</sup> January 2015
2nd	Version Number	1.1 dated 31st May 2016
3rd	Version Number	3.0 dated 31st August 2018*
4th	Version Number	3.0 dated 31st October 2018
(*Version directly numbered as 3.0 due to font upgrades)		

Table of Contents

1	Introduction .....	14
1.1	Purpose.....	14
1.2	Language and Versions .....	14
1.3	Method of compilation.....	14
1.4	Acknowledgement .....	14
1.5	Important Notes.....	15
1.6	RUDRAIKAADASINI KUMBHA STAPANAM. ....	16
2	Pooja Preparations.....	17
2.1	Some Basics.....	17
2.2	Forms of Rudra Japam.....	17
2.3	Sadyo Jaatham .....	18
2.4	Star (Nakshatra) and Rasi Table:.....	19
2.4.1	Days of the Week: .....	21
2.4.2	Masam, Ruthu, Ayanam .....	21
3	पूर्वांग पूजा.....	22
3.1	पूजा प्रारंभ: .....	22
3.1.1	भाग्य सूक्तं .....	22
3.1.2	आचम्य ,पवित्रं स्वीकृत्य.....	23
3.1.3	अनुज्ञा .....	24
3.1.4	अनुज्ञा (प्रदक्षिण मन्त्राः सहित) .....	24
3.1.5	अनुज्ञा (रुद्र एकदशिनि) .....	26
3.2	विघ्नेश्वरपूजा .....	29
3.2.1	घण्ट पूजा.....	29
3.2.2	आचमनं सङ्कल्पं .....	29
3.2.3	आवाहनं उपचारं .....	30
3.2.4	नैवेद्यं, प्रार्थना .....	32
3.3	प्रार्थना पूजा प्रारंभ:.....	34

3.3.1	प्रार्थना .....	34
3.3.2	आसन पूजा .....	34
3.4	सङ्कल्पं .....	36
3.4.1	सङ्कल्पं (1) .....	36
3.4.2	सङ्कल्पं (2) .....	37
3.4.3	सङ्कल्पं (3) .....	39
3.4.4	सङ्कल्पं (4) .....	41
3.4.5	विघ्नेश्वर उद्घापनं .....	45
3.5	पुण्याहवाचनं .....	46
3.5.1	सङ्कल्पं .....	46
3.5.2	कुंभ प्रतिष्ठा मन्त्राः .....	47
3.5.3	वेदारंभे जप्याः मन्त्राः .....	51
3.6	पवमान सूक्तं .....	52
3.6.1	वास्तु मन्त्रः .....	54
3.6.2	वरुण उद्घापनं .....	55
3.6.3	प्रोक्षण मन्त्राः .....	56
3.6.4	ग्रह प्रीति .....	58
3.6.5	पूर्वाङ्ग नान्दी श्राद्धं .....	58
3.6.6	वैष्णव श्राद्धं .....	59
3.6.7	गोदानं .....	59
3.6.8	दश दानं .....	60
3.6.9	कृच्छ्राचरणं .....	60
3.6.10	ऋत्विग् वरणं .....	60
3.6.11	आचार्य वरणं .....	61
3.6.12	ऋत्विग् वरणं (Rutvik performing Abishekam) ....	61
3.6.13	आचार्यस्य ऋत्विजां च संकल्पः .....	61
3.6.14	कलशादिपूजा .....	62

3.6.15	शंखपूजा .....	63
3.6.16	आत्मपूजा .....	64
3.6.17	पीठपूजा .....	65
3.6.18	नन्दिकेश्वर अनुज्ञा .....	65
3.7	पञ्चकलश स्थापनं .....	66
3.7.1	पश्चिमं.....	66
3.7.2	उत्तरं.....	66
3.7.3	दक्षिणं .....	66
3.7.4	पूर्व .....	66
3.7.5	मद्ध्यमं .....	67
3.7.6	उपचारपूजा .....	67
4	महान्यासः.....	70
4.1	कलश प्रतिष्ठापन मन्त्राः .....	70
4.2	महान्यास मन्त्रपाठ प्रारंभः .....	74
5	प्रथम न्यासः .....	75
6	द्वितीय न्यासः .....	81
7	तृतीयन्यासः.....	82
7.1	हंस गायत्री .....	83
7.2	दिक् संपुटन्यासः.....	84
7.3	षोडशांग रौद्रीकरणं .....	89
8	चतुर्थ न्यासः.....	92
8.1	मनो ज्योतिः.....	92
8.2	आत्मरक्षा .....	93
9	पञ्चम न्यासः .....	95
9.1	शिव संकल्पः.....	95
9.2	पुरुष सूक्तं .....	101
9.3	उत्तर नारायणं.....	103
9.4	अप्रतिरथं .....	104

9.5	प्रति पूरुषद्वयं.....	106
9.6	शत रुद्रीयं .....	108
9.7	पञ्चांग जपः .....	110
9.8	अष्टाङ्ग प्रणामः.....	111
9.9	ध्यानं.....	113
10	षष्ठन्यासः (लघु न्यासः).....	114
11	रुद्र जपं (Methods) .....	117
11.1	ऊत्यल्ल कळ्ळण्ळ .....	117
11.2	दज्जळ्ळ कळ्ळण्ळ .....	118
11.3	कुंभ एक कलश (प्रधान कलश) स्थापनं .....	119
11.4	एकादश कलश स्थापनं.....	119
11.5	Sthana Peetham .....	120
11.6	श्री शक्ति पञ्चाक्षरी महामन्त्रः .....	120
12	रुद्र विदानं .....	123
12.1	कलशेषु ध्यानं .....	123
12.2	आवाहन मन्त्राः.....	125
12.2.1	For Eka kalasam / Ekadasa kalasam .....	125
12.2.2	महागणपति आवाहनं .....	126
12.2.3	सुब्रह्मण्य आवाहनं .....	126
12.2.4	दुर्गा देवी आवाहनं .....	127
12.2.5	महाविष्णु आवाहनं .....	127
12.2.6	महालक्ष्मी आवाहनं .....	127
12.2.7	महासरस्वती आवाहनं.....	128
12.2.8	सद्गुरु आवाहनं.....	128
12.2.9	अन्नपूर्णि आवाहनं.....	128
12.2.10	शास्ता आवाहनं.....	129
12.2.11	अनन्त (सर्प राजा) आवाहनं.....	129

12.2.12	सूर्यनारायण आवाहनं.....	130
12.2.13	नक्षत्र देवता आवाहनं.....	130
12.2.14	नन्दिकेश्वर आवाहनं.....	131
12.2.15	आयुर्देवता आवाहनं.....	131
12.2.16	श्री राम आवाहनं.....	131
12.2.17	श्रीकृष्ण आवाहनं.....	132
12.2.18	आञ्चनेय आवाहनं.....	132
12.3	प्राण प्रतिष्ठा.....	133
12.4	उपचारं.....	135
12.5	त्रिशति.....	141
12.6	प्रदक्षिणं.....	158
12.7	नमस्कारः.....	160
12.8	चमक प्रार्थना.....	162
12.9	अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो.....	174
12.10	श्री रुद्रस्य ऋषिच्छन्दो देवता ध्यानं.....	176
12.11	गणानां त्वा.....	178
12.12	शं च मे.....	178
12.13	श्रीरुद्र दशाक्षरी महामन्त्रः.....	180
12.14	श्री रुद्रं.....	181
13	<b>Details of “Dravya sampradaayam” in Rudraikaadasini.....</b>	<b>193</b>
14	<b>एकादश जपं.....</b>	<b>195</b>
14.1	<b>प्रथम वार – अभिषेकं गन्धतैलं.....</b>	<b>195</b>
14.1.1	चमक अनुवाकः.....	195
14.1.2	उपचार पूज.....	196
14.1.3	उपचार मन्त्राः.....	196
14.1.4	आशीर्वादं.....	198
14.2	<b>द्वितीयवार अभिषेकं – पञ्चगव्यं.....</b>	<b>199</b>

14.2.1	द्वितीयो ऽनुवाकः.....	199
14.2.2	उपचार पूज.....	199
14.2.3	उपचार मन्त्राः.....	200
14.2.4	आशीर्वादं.....	201
14.3	तृतीयवार अभिषेकं – पञ्चामृतं .....	202
14.3.1	तृतीयो ऽनुवाकः .....	202
14.3.2	उपचार पूज.....	202
14.3.3	उपचार मन्त्राः.....	203
14.3.4	आशीर्वादं.....	204
14.4	तुरीय (चतुर्थ) वार अभिषेकं – घृतं .....	204
14.4.1	चतुर्थो ऽनुवाकः .....	204
14.4.2	उपचार पूज.....	205
14.4.3	उपचार मन्त्राः.....	206
14.4.4	आशीर्वादं.....	207
14.5	पञ्चमवार अभिषेकं – क्षीरं.....	207
14.5.1	पञ्चमो ऽनुवाकः.....	207
14.5.2	उपचार पूज.....	208
14.5.3	उपचार मन्त्राः.....	208
14.5.4	आशीर्वादं.....	210
14.6	षष्ठमवार अभिषेकं – दधि.....	210
14.6.1	षष्ठो ऽनुवाकः.....	210
14.6.2	उपचार पूज.....	211
14.6.3	उपचार मन्त्राः.....	211
14.6.4	आशीर्वादं.....	213
14.7	सप्तमवार अभिषेकं – मधु.....	213
14.7.1	सप्तमो ऽनुवाकः .....	213
14.7.2	उपचार पूज.....	214



14.7.3	उपचार मन्त्राः.....	214
14.7.4	आशीर्वादं.....	215
14.8	अष्टमवार अभिषेकं – इक्षुरसं .....	216
14.8.1	अष्टमो ऽनुवाकः .....	216
14.8.2	उपचार पूज.....	216
14.8.3	उपचार मन्त्राः.....	217
14.8.4	आशीर्वादं.....	218
14.9	नवमवार अभिषेकं–निंबतोय रसं .....	218
14.9.1	नवमो ऽनुवाकः .....	218
14.9.2	उपचार पूज.....	219
14.9.3	उपचार मन्त्राः.....	219
14.9.4	आशीर्वादं.....	221
14.10	दशमवार अभिषेकं – नाळिकेरजं.....	221
14.10.1	दशमो ऽनुवाकः.....	221
14.10.2	उपचार पूज.....	222
14.10.3	उपचार मन्त्राः.....	222
14.10.4	आशीर्वादं.....	224
14.11	एकादशवार अभिषेकं – गन्धतोयं .....	224
14.11.1	एकादशो ऽनुवाकः.....	224
14.11.2	उपचार पूज.....	225
14.11.3	उपचार मन्त्राः.....	226
14.11.4	आशीर्वादं.....	227
15	गणपति ध्यानं .....	230
16	श्री रुद्र क्रमः .....	231
16.1	श्री रुद्रक्रमः प्रथमो ऽनुवाकः .....	231
16.2	श्री रुद्रक्रमः–द्वितीयो ऽनुवाकः .....	238
16.3	श्री रुद्रक्रमः–तृतीयो ऽनुवाकः.....	240
16.4	श्री रुद्रक्रमः – चतुर्थो ऽनुवाकः .....	244

16.5	श्री रुद्रक्रमः पञ्चमो ऽनुवाकः.....	248
16.6	श्री रुद्रक्रमः – षष्ठो ऽनुवाकः.....	251
16.7	श्री रुद्रक्रमः – सप्तमो ऽनुवाकः.....	253
16.8	श्री रुद्रक्रमः – अष्टमो ऽनुवाकः.....	256
16.9	श्रीरुद्रक्रमः – नवमो ऽनुवाकः.....	259
16.10	श्रीरुद्रक्रमः– दशमो ऽनुवाकः.....	262
16.11	श्री रुद्रक्रमः – एकादशो ऽनुवाकः.....	269
16.12	त्र्यंबकं यैजामहे.....	273
17	श्री चमक क्रमः.....	275
17.1	श्री चमक क्रमः – प्रथमो ऽनुवाकः.....	275
17.2	श्री चमक क्रमः – द्वितीयो ऽनुवाकः.....	279
17.3	श्री चमक क्रम :- तृतीयो ऽनुवाकः.....	282
17.4	श्री चमक क्रमः– चतुर्थो ऽनुवाकः.....	286
17.5	श्री चमक क्रमः– पञ्चमो ऽनुवाकः.....	289
17.6	श्री चमकः क्रमः – षष्ठो ऽनुवाकः.....	292
17.7	श्री चमक क्रमः – सप्तमो ऽनुवाकः.....	296
17.8	श्री चमक क्रमः – अष्टमो ऽनुवाकः.....	299
17.9	श्री चमक क्रमः – नवमो ऽनुवाकः.....	301
17.10	श्री चमक क्रमः – दशमो ऽनुवाकः.....	303
17.11	श्री चमक क्रमः – एकादशो ऽनुवाकः.....	306
17.12	इडा देवहूः.....	311
18	एकोनसप्तत्यधिक शतसंख्याक होमं.....	314
18.1	चमक होमः.....	329
19	उत्तराङ्ग पूजा.....	332
19.1	कलश उद्घापनं.....	332
19.1.1	रुद्र एकदाशिनि / महा रुद्रं.....	333
19.1.2	धूपं.....	334

## शिव स्तुति

19.1.3	दीपं.....	335
19.1.4	नैवेद्यं.....	335
19.1.5	तांबूलं.....	336
19.1.6	पञ्चमुख दीपं .....	336
19.1.7	कर्पूरनीराजनं .....	337
19.1.8	मन्त्र पुष्पं .....	338
19.1.9	चतुर्वेद पारायणं .....	339
19.1.10	आपस्तम्ब श्रौत सूत्र, पुराण, वाक्याः.....	339
19.2	कुंभ /कलश उद्घापनं.....	340
19.2.1	कलश उद्घापन मन्त्राः.....	340
19.3	अभिषेकं.....	343
19.4	अलङ्कारं, अर्चना, पूजा .....	343
19.4.1	बिल्वाष्टकं.....	344
19.4.2	धूपं .....	345
19.4.3	दीपं.....	346
19.4.4	नैवेद्यं.....	346
19.4.5	तांबूलं.....	347
19.4.6	पञ्चमुख दीपं .....	347
19.4.7	कर्पूरनीराजनं .....	348
19.4.8	मन्त्र पुष्पं .....	349
19.4.9	प्रदक्षिण नमस्कार :.....	352
19.4.10	उपचारं.....	354
19.4.11	चतुर्वेद पारायणं .....	354
19.4.12	आपस्तम्ब श्रौत सूत्र, पुराण, वाक्याः.....	355
19.5	नन्दिकेश्वर पूजा.....	355
19.6	क्षमा प्रार्थना.....	357
20	स्वस्ति वचनं.....	359
20.1	प्राशनं प्रसाद विनियोगं , दक्षिण स्वीकरणं.....	361

---

20.1.1	शंखतीर्थ प्रोक्षणं.....	361
20.1.2	अभिषेक- तीर्थप्राशनं .....	361
20.1.3	पञ्चगव्य प्राशनं .....	361
20.1.4	प्रसाद विनियोगं (to yajamaanan).....	362
20.1.5	दक्षिण स्वीकरणं .....	363
21	<b>Appendix .....</b>	<b>364</b>
21.1	शिवाष्टोत्तर-शत-नामावलि:.....	364
22	श्री बोधायनमहर्षि प्रणीतानि महान्यास सूत्राणि .....	368

=====

<b>Section 1 - PUrVAngam</b>
------------------------------

# **1 Introduction**

## **1.1 Purpose**

This book has been compiled, as our sincere and modest effort, to help Veda students and learners to conduct Pradosha Pooja, Rudraaabishekam Rudra Ekadasani and Maharudram. This book has been compiled based on the actual experience and practices in poojas/functions. Our heartfelt and sincere thanks to various people who have contributed to the compilation of this book.

The main purpose of this book is to act as a reference guide and we have tried to provide the subjects in the order in which functions are generally performed. In spite of the same, differences in the order of chanting or additional chanting are followed. Please note that this book is **not Exhaustive**.

## **1.2 Language and Versions**

This book has been prepared in Tamil, Malayalam and Sanskrit versions, with all comments and Notes in English.

## **1.3 Method of compilation**

The main source of various Sukthams and Mahanyaasam has been from the books published in Taittiriya Sakhaa compiled and commented by Shri. Sayanacharya of 13<sup>th</sup> Century and Shri Bhatta Bhaskaracharya (period unknown). Their manuscript compilations were later converted into books by great Scholars. One of such sets of “Taittiriya” was printed and published during earlier 1900 A.D. at Govt. Branch Press, Mysore and another set later published under “Anandaashram Series”. These Books were referred to by us as our primary source material for this Book.

In addition, we have also referred to standard and reputed publications and internet sites. **(Please seek the guidance of your Guru)**

## **1.4 Acknowledgement**

Our sincere thanks to all for proof-reading, typing, guiding in completion of all the three Versions of this book.

In spite of careful efforts, some mistakes might have crept in. We sincerely request the users of the books to send their feedback on corrections to **vedavms@gmail.com**. It is our endeavour to make this book error-free / accurate .

## 1.5 Important Notes

1. This book is **not meant for any Self Learning** exercise. Veda Mantras and related rituals are to be learnt from respective Gurus to gain experience on the subject over a period of time through practice and observations.
2. This book is meant **only for “Private Circulation”**.
3. It is more appropriate to chant Mantras that sing praise of Lord Parameshwara (or other Deities/Devataas that are worshipped) during the Upachara Puja (Deeparaadhanai) as a part of Ekadasa Japam. Over a period of time, many Vedic Pandits/Scholars have added mantras that seek Abhishtas (wishes) from Deities/Devataas and many of them are in vogue today. We have included 10 sets of upachara mantras in that section which are normally chanted as a practice. Experienced Acharayas may chant different set of Mantras which are not given here.
4. Krama Paatam (Sections 15,16 and 17) has been given in a two-column table for convenience of the reader, representing two teams which render Kramam. One team starts rendering their Paatam after the other team just completes their Paatam.  
Please note that when a padam is split, there is separator that is given as ‘-’. As per convention please give a pause, when a separator is there.  
The rendering needs to be extended/elongated for the **last part of the word/padam**, when it is a Dheerga Swaritam or Anudatta Swaram **and** the letter is a Dheerga letter (e.g. aa, ee, O,) **or** a Anuswaram (letters ending as tam, sam, sham etc. with a dot in Sanskrit).  
This is indicated through a “>” (arrow pointing to the right). Kindly note there are slight differences in the Font size/format of Sanskrit, Malayalam and Tamil texts. The Method of elongation varies between few schools in actual practice. Please refer to your Guru for further clarifications on rendering. This book follows the convention of Sayanacharya’s Krama Paatam.

---

**1.6 RUDRAIKAADASINI KUMBHA STAPANAM.**

East

10 BHAVOTBHAVAM	1 MAHADEVAM	2 SHIVAM
9 DEVADEVAM	11 ADITYATMAKA RUDRAM	3 RUDRAM
8 BHIMAM		4 SHAMKARAM
7 VIJAYAM	6 EESHAANAM	5 NEELA LOHITAM

West



---

## **2 Pooja Preparations**

### **2.1 Some Basics**

The Word “Rudra” means” the one who drives away all sins which are the root cause of sorrow/sufferings.

The form of Lord Shiva is worshipped in Eleven Rudra forms (Ganams);

They are :-

1. Mahadevam, 2. Shivam, 3. Rudram, 4. Shankaram,
5. Neelalohitam, 6. Eeshaanam, 7. Vijayam, 8. Bheemam,
9. Devadevam, 10. Bhavotbhavam and 11. Adityaathmaka Rudram.

In Poojas, each Ganam is represented through a Kumbha/Kalasham. Please see the picture in the preceding page for the position of the Kumbha Kalashams for Rudra Ekadasani.

In Maharudram and Athirudram, 11 such Ganams are formed, each with the respective name of the Rudra shown above in 1 to 11 numbers.

The forms of Rudra worship includes Japa, Homa, Arachana, Abhisheka with Prathakshina /Namaskaaram.

Normally, the Homam is performed on the strength/count total Rudrams, and normally the Homa count is of 10 percent of the Japam.

### **2.2 Forms of Rudra Japam**

There are **five forms (sampradaaya)** to chants Shree Rudra japa.

**The 1<sup>st</sup> form-** We recite the full Shree Rudram (all 11 anuvaakams) and then full Chamakam (all 11 anuvaakams) once. This is called “NAMAKAM”. This is for nithya paaraayanam.

#### **2<sup>nd</sup> Form**

Shree Rudram chanted full Once (all 11 anuvaakams) + 1<sup>st</sup> Anuvaakam of Chamakam only, and Shree Rudram full for 2<sup>nd</sup> round + 2<sup>nd</sup> Anuvaakam of Chamakam only, Shree Rudram full of 3<sup>rd</sup> round + 3<sup>rd</sup> Anuvaakam of Chamakam.

**If one person chants** in this order full Shree Rudram 11 times and each corresponding Chamaka one anuvaakam then this is called “Rudram”.  
(Total count is 1 person x 11 Rudrams + 1 full Chamakam = 11 ShreeRudrams + 1 Chamakam

**3<sup>rd</sup> Form Rudra Ekadasani** - 11 times the chants as per Form number 2 is Rudraikaadasini . 11 Rutviks required.

Total count = 11 persons x 11 shree Rudrams =121 Rudrams

11 persons x 1 Chamakam = 11 Chamakam

**4<sup>th</sup> Form Maharudram**-This is equivalent to 11 “Rudraikaadasini”. 121 persons required

Total count = 121 persons x 11 shree Rudrams =1331 Rudrams

121 persons x 1 Chamakam= 121 Chamakam

Eleven Ganams are created each with 11 Kalashams each representing the 11 individual Ganas. In each of the Ganas, 11 Rutviks recite 11 Rudram and One Chamakam. The Number of Rutviks is 121. Homam shall be performed by 12 (one additional) Rutvik by repeating Rudra Homam 11 times and Chamaka Homam once, taking the count of Homam to 132 Rudrams and 12 Chamakams. This is normally performed in a single day over a time span of 7/8 hours.

**5<sup>th</sup> Form Athirudram:** This is equivalent to 11 Maharudrams. 121 Rutviks chant 121 times Rudram and 11 times Chamakam over 11 days or 5/6 days (as per the event is planned).

Total count = 121 persons x 121 shree Rudrams x 11 =14641 Shree Rudrams.

121 persons x 11Chamakam=1331 Chamakams.

The Homam shall be performed by 12 Rutviks

## 2.3 **Sadyo Jaatham**

There are two practices, either to install additional Pancha Kalashams(5) or a single(Eka) Sadyo Jaatha Kalasham.

In case of (Eka) Sadyo Jaatha Kalasham, it is normally kept near the Abhisheka-Sthanam. The aavaahanam is done separately for this Kalasham during Kumbha/Kalasha aavaahanam. Abhishekam to the deity shall be performed first with this Kalasha jalam after Ekadasa japam/all dravya abhishekam. Therefore, the udvaapanam shall be performed separately to this Kalasham after Ekadasa Japam. “Namo Brahmane....” shall be chanted three times during the Udvaapanam.

## शिव स्तुति

When Pancha Kalashams (Paschimam-Sadyo Jaatham, Uttharam, Dakshinam, Poorvam and Madhyamam) are installed, then Sadyo Jaatham will be Paschimam Kalasham. The first abhishekham shall be performed from these Pancha Kalashams after Ekadasa japam/all dravya abhishekam.

In case of Rudra Ekadasani, the main Kumbham/Kalasha Jala Abhishekam to the Deities are performed after the Rudra Kramaarchana, Homa and the final udvaapanam of the Kalashams. In case of Rudraekadasani, conducted as a part of Shastyapthapoorthi or Sadaabhishekham, main Kumbha/Kalasha jala abhishekam is performed to the Yajamaana Dampathi.

### 2.4 Star (Nakshatra) and Rasi Table:

Serial No	Star Name in Tamil / Malayalam	Star Padam	Star Name in Sanskrit	Rasi
1	Ashvathi	1,2,3,4	Ashwini	Mesha
2	Bharani	1,2,3,4	Apa-Bharani	Mesha
3	Karthikai/Karthika	1	Krittikaa	Mesha
4	Karthikai/Karthika	2,3,4	Krittikaa	Vrushabha
5	Rohini	1,2,3,4	Rohini	Vrushabha
6	Mrugasheersham/Makeeryam	1,2	Mrugashirsha	Vrushabha
7	Mrugasheersham/Makeeryam	3,4	Mrugashirsha	Mithuna
8	Thiruvathirai/Thiruvathira	1,2,3,4	Aardraa	Mithuna
9	Punarpoosam	1,2,3	Punarvasu	Mithuna
10	Punarpoosam	4	Punarvasu	Kataka
11	Poosam	1,2,3,4	Pushya	Kataka
12	Aailyam	1,2,3,4	Aashleshaa	Kataka
13	Magham	1,2,3,4	Magha	Simha
14	Pooram	1,2,3,4	Poorva Phalgune	Simha
15	Utthiram	1	Utthara Phalgune	Simha

## शिव स्तुति

16	Utthiram	2,3,4	Utthara Phalgune	Kanya
17	Hastham	1,2,3,4	Hastha	Kanya
18	Chitthirai/Chitra	1,2	Chitra	Kanya
19	Chitthirai/Chitra	3,4	Chitra	Thula
20	Swathi	1,2,3,4	Swathi	Thula
21	Vishakam/Vishaka	1,2,3	Vishaka	Thula
22	Vishakam/Vishaka	4	Vishaka	Vrishchika
23	Anusham	1,2,3,4	Anuradha	Vrishchika
24	Kettai/Trikketta	1,2,3,4	Jyeshtha	Vrishchika
25	Moolam	1,2,3,4	Moola	Dhanur
26	Pooradam	1,2,3,4	Poorvashada	Dhanur
27	Utharadam/Uthiradam	1	Uthirashada	Dhanur
28	Utharadam/Uthiradam	2,3,4	Uthirashada	Makara
29	Thiruvonam	1,2,3,4	Sravana	Makara
30	Avittam	1,2	Shravishta	Makara
31`	Avittam	3,4	Shravishta	Kumbha
32	Chathayam	1,2,3,4	Shatabhishak	Kumbha
33	Poorattathi	1,2,3	Poorva Proshtapada	Kumbha
34	Poorattathi	4	Poorva Proshtapada	Meena
35	Uthirattathi	1,2,3,4	Uthira Proshtapada	Meena
36	Revathi	1,2,3,4	Revathee	Meena

### 2.4.1 **Days of the Week:**

Sunday	-	Bhanu Vasaram
Monday	-	Indu or Soma Vasaram
Tuesday	-	Bowma Vasaram
Wednesday	-	Sowmya Vasaram
Thursday	-	Guru Vasaram
Friday	-	Brigu (Shukra) Vasaram
Saturday	-	Sthira (Mandha) Vasaram

### 2.4.2 **Masam, Ruthu, Ayanam**

The start of the Hindu month may vary from 13/14<sup>th</sup> day of the English Calendar Month to the 18<sup>th</sup> day of the Calendar month. So kindly refer to the Calendar published in Tamil or Malayalam for the current month.

<b>Middle of the English Month</b>	<b>Masam name in Tamil / Malayalam</b>	<b>Masam</b>	<b>Ruthu</b>	<b>Ayanam</b>
Apr - May	Chithirai/ Medam	Mesha	Vasanta	Uttarayana
May June —	Vaikasi/ Edavam	Vrushabha	Vasanta	Uttarayana
June July —	Aani/Mithunam	Mithuna	Greeshma	Uttarayana
July August —	Adi / Karkatakam	Kataka	Greeshma	Dakshinayana
August Sept. —	Aavani/ Chingam	Simha	Varsha	Dakshinayana
Sept. October —	Purattaasi/ Kanni	Kanya	Varsha	Dakshinayana
Oct. - November	Aippasi/ Thulam	Tula	Sarath	Dakshinayana
Nov - December	Karthikai/ Vruschikam	Vrischika	Sarath	Dakshinayana
Dec. Januaray —	Margazhi/ Dhanu	Dhanur	Hemanta	Dakshinayana
Jan. - February	Thai/Makara	Makara	Hemanta	Uttarayana
Feb - March	Maasi/Kumbha	Kumbha	Shishira	Uttarayana
March - April	Panguni/ Meenam	Meena	Shishira	Uttarayana

### 3 पूर्वांग पूजा

#### 3.1 पूजा प्रारंभः

##### 3.1.1 भाग्य सूक्तं

(TB 2.9.8.7)

प्रा॒तर॒ग्निं प्रा॒तरिन्द्र॑ ह॒वाम॑हे प्रा॒तर्मि॒त्राव॑रुणा प्रा॒तर॒श्विना॑ ॥

प्रा॒तर्भ॑गं पू॒षणं ब्र॑ह्मण॒स्पतिं प्रा॒तस्सोम॑मु॒त रु॒द्रं हु॑वेम ॥ 1

प्रा॒तर्जि॑तं भ॒गमु॒ग्रं हु॑वेम व॒यं पु॒त्रम॑दि॒तेर्यो वि॑ध॒र्ता ।

आ॒द्ध्रश्चि॒द्वं म॒न्यमा॑न-स्तु॒रश्चि॒द् रा॒जा चि॒द्वं भ॒गं भ॒क्षी॒त्याह॑ ॥ 2

भ॒गप्र॑णे॒तर्भ॒ग स॒त्यरा॑धो भ॒गेमां धि॒यमु॑द॒व द॑द॒न्नः ।

भ॒ग प्र णो॑ ज॒नय॑ गो॒भिर॒श्वैर् भ॒ग प्र नृ॑भिर् नृ॒वन्त॑स्स्याम ॥ 3

उ॒तेदा॑नीं भ॒गव॑न्त-स्स्या॒मोत॑ प्र॒पित्वा॑ उ॒त म॑द्ध्ये अ॒ह्नां ।

उ॒तोदि॑ता म॒घव॑न्त् सूर्य॑स्य व॒यं दे॒वानां॑ सु॒मतौ॑ स्याम ॥ 4

भ॒ग ए॒व भ॒गवा॑ अस्तु दे॒वास्ते॑न व॒यं भ॒गव॑न्त॒स्स्याम॑ ।

तं त्वा॑ भ॒ग स॒र्व इ॒ज्जो॑हवीमि॒ स नो॑ भ॒ग पु॒र॒एता॑ भ॒वेह॑ ॥ 5

स॒म॒ध्वरा॑-योष॒सो न॑मन्त दधि॒क्रावे॑व शु॒चये॑ प॒दाय॑ ।

अ॒र्वा॒ची॒नं व॑सु॒विदं॑ भ॒गन्नो॑ रथमि॒वाश्वा॑ वा॒जिन॑ आ व॒हन्तु॑ ॥ 6

अ॒श्वा॒वती॒र् गो॒मती॒र्न उ॒षा॒सो वी॒र॒वती॒-स्स॒दमु॒च्छन्तु॒ भ॒द्राः ।  
घृ॒तं दु॒हा॒ना वि॒श्वतः॒ प्र॒पी॒ना यू॒यं पा॒त स्व॒स्ति-भि॒स्सदा॒ नः ॥ 7

यो मा॑ग्ने भा॒गि॒न् स॒न्तम॑था भा॒गं चि॒की॒र्ष॒ति ।  
अ॒भा॒ग-म॒ग्ने तं कुरु॑ मा॒मग्ने॑ भा॒गि॒नं कुरु॑ ॥ 8

भाग्य देवतायै नमः ॥

3.1.2 आचम्य ,पवित्रं स्वीकृत्य

आगमनार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसां ।

देवता पूजार्थाय घण्ठनादं करोम्यहं ॥ (इति घण्ठनादं कृत्वा)

ऋ॒द्ध्य॒ास्म ह॒व्यैर्न॑म॒सोप॑सद्य । मि॒त्रं दे॒वं मि॒त्र॒धेय॑न्नो अस्तु ।  
अ॒नू॒रा॒धान् ह॒विषा॑ व॒र्द्ध॑यन्तः । श॒तं जी॑वेम श॒रद॑स्स॒वीराः॑ ॥  
(पवित्रं धृत्वा)

नम॑स्स॒द॒से नम॑स्स॒द॒स॒स्प॒तये॒ नमः॑ स॒खी॑नां पु॒रो॒गा॒णां चक्षु॑षे नमो॑  
दि॒वे नमः॑ पृ॒थि॒व्यै ॥ (TS 3.2.4.4)

हरिः ओं । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ।

(अक्षतान् विकीर्य)

3.1.3 अनुज्ञा

अशेषे हे परिषत् भवत् पादमूले मया समर्पितां इमां सौवर्णीं  
यत्किञ्चत् दक्षिणां यथोक्त दक्षिणामिव स्वीकृत्य ।

इदं सांबपरमेश्वर पूजा कर्मकर्तुं योग्यता सिद्धिं अनुग्रहाण ।

(ब्राह्मण प्रति वचनं – "योग्यता सिद्धिरस्तु" )

3.1.4 अनुज्ञा (प्रदक्षिण मन्त्राः सहित)

ध्रु॒वं ते॒ राजा॑ वरु॒णो ध्रु॒वं दे॒वो बृ॒हस्प॑तिः ।

ध्रु॒वं त॒ इन्द्र॑-श्चा॒ग्निश्च॑ रा॒ष्ट्रं धा॑रयतां ध्रु॒वं ॥ 1 (RV.10.173.5)

पर्व॑त इ॒वावि॑चाचलिः । इन्द्र॑ इ॒वेह॑ ध्रु॒वस्तिष्ठ॑ । इ॒ह रा॒ष्ट्रमु॑ धा॒रय॑ ।

अ॒भितिष्ठ॑ प॒ृतन्य॑तः । अ॒धरे॑ स॒न्तु श॒त्रवः॑ । इन्द्र॑ इ॒व वृ॒त्रहा॑ तिष्ठ । 2  
(TB 2.4.2.9)

दे॒वीं वा॑च-म॒जन॑यन्त दे॒वाः । तां वि॒श्वरू॑पाः प॒शवो॑ वदन्ति ।

सा॒नो म॒न्द्रेष॑मूर्जं दु॒हाना॑ । धे॒नुर्वा॑ग॒स्मानु॒प सु॒ष्टतै॑तु ॥ 3

(TB 2.4.6.10)

आरंभ काल मुहूर्तः सुमुहूर्तोस्त्विति भवन्तोनुहन्तू ।

(प्रतिवचनं – "सुमुहूर्तोस्तु, सुप्रतिष्ठितमस्तु")



ये अ॒र्वा॒ङु॒त वा पु॒रा॒णे वे॒दं वि॒द्वाँ॒स॒म॒भि॒तो वद॑न्त्यादि॒त्यमे॒व ते  
परि॑वदन्ति॒ सर्वे॑ अ॒ग्निं द्वि॒तीयं तृ॒तीयं च ह॒ँस॒मि॒ति याव॑तीर्वे  
दे॒वता॒स्ता स्स॒र्वा वे॒दवि॑दि॒ ब्राह्म॑णे वसन्ति॒ तस्मा॑त् ब्राह्म॒णेभ्यो॑  
वे॒दवि॑द्भ्यो दि॒वेदि॑वे नम॒स्कुर्या॑न्नाश॒लीलं॑ की॒र्तये॑दे॒ता ए॒व दे॒वताः॑  
प्रीणा॑ति ॥ 4 (TA 2.15.1)

नमो॑ मह॒द्भ्यो नमो॑ अ॒र्भके॑भ्यो नमो॑ यु॒वद्भ्यो नम॑ आ॒शिने॑भ्याः ।  
य॒जाम॑ दे॒वान् यदि॑ श॒क्नवाम॑ मा ज्याय॒सः शं समा॑ वृ॒क्षि दे॒वाः 5  
(RV 1.27.13)

सद॑सस्पति॒-म॒द्भुतं॑ प्रि॒य-मि॒न्द्रस्य॑ का॒म्यं । स॒निं मे॒धाम॑यासिषं ॥ 6  
(TA.6.1.4)

सप्र॑थ स॒भां मे गो॑पाय । ये च स॒भ्या स्स॒भास॑दः ।  
ता॒निन्द्रि॑यावतः कुरु । सर्व॑मायु॒-रुपा॑सतां ।  
अहे॑ बु॒द्धि॒न्य म॒न्त्रं मे गो॑पाय । यमृ॑षयस्त्रै॒-वि॒दा वि॒दुः ।  
ऋच॑ स्सामा॒नि यजू॑ँषि । सा हि श्री॒रमृ॑ता स॒तां । 7 (TB 1.2.1.26)

अ॒ग्निस्तु॑ वि॒श्रव॑स्तमं तु॒वि ब्र॑ह्माणमु॒त्तमं॑ ।  
अतू॑र्त्तं श्राव॒यत्प॑तिं पु॒त्रं द॑दाति दा॒शुषे॑ ॥ 8 (RV.5.25.5)

नमः॑ स॒भाभ्य॑ स॒भाप॑तिभ्यश्च वो नमः॑ ॥ 9

अशेषे हे परिषत् भवत् पादमूले मया समर्पितां इमां सौवर्णीं  
यत्किञ्चत् दक्षिणां यथोक्त दक्षिणामिव स्वीकृत्य ।

इदं सांबपरमेश्वर पूजा कर्मकर्तुं योग्यता सिद्धिं अनुग्रहाण ।

(ब्राह्मण प्रति वचनं – "योग्यता सिद्धिरस्तु")

### 3.1.5 अनुज्ञा (रुद्र एकदशिनि)

(This Anujgya is ideally used for Rudra Ekadasini. However, appropriate changes can be made in the Sankhya (counts) for Japam/Homam in case of Maharudram)

आचम्य । शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजं प्रसन्न वदनं ध्यायेत्  
सर्व विघ्नोपशान्तये । ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर  
प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्त्ते, आद्य ब्रह्मणः, द्वितीय परार्द्धे, श्वेतवराह  
कल्पे, वैवस्वत मन्वन्तरे, अष्टाविंशति तमे कलियुगे, प्रथमे पादे,  
जंबूद्वीपे, भारतवर्षे, भरतखण्डे, मेरोः दक्षिणे पार्श्वे, शकाब्दे, अस्मिन्  
वर्त्तमाने, व्यवहारिके प्रभवादीनां षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये

..... नामसंवत्सरे .....अयने ..... ऋतौ

..... मासे .....पक्षे .....(शुभतिथौ).....

वासरयुक्तायां ..... नक्षत्रयुक्तायां शुभयोग शुभकरण

एवं गुण सकल विशेषण विशिष्टायां अस्यां .....शुभतिथौ

ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं अनादि

अविद्यावासनया प्रवर्त्तमाने अस्मिन् महति संसारचक्रे विचित्राभिः

कर्मगतिभिः विचित्रासु पशु पक्षि मृगादि योनिषु पुनः पुनः अनेकदा  
जनित्वा , केनापि पुण्यकर्म विशेषेण इदानीं तन मानुष्ये द्विजन्मविशेषं

प्राप्तवतः .....नक्षत्रे ..... राशौ जातस्य

.....शर्मणः मम सकुटुम्बस्य, जन्माभ्यासात् जन्मप्रभृति

एतत् क्षण पर्यन्तं बाल्ये वयसि कौमारे यौवने वार्द्धके च जाग्रत्  
 स्वप्न सुषुप्ति अवस्थासु , मनोवाक्काय कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिय व्यापारैः,  
 कामक्रोध-लोभ-मोह-मदमात्सर्यैः, त्वक्चक्षुः श्रोत्र जिह्वाघ्राण  
 वाक्पाणि पादपायु उपस्थाख्यैः दशभिः इन्द्रियैः, मनोबुधि-चित्त-  
 अहङ्काराख्यैः अन्तरिन्द्रियैश्च कृतानां, इहजन्मनि जन्मजन्मान्तरेषु वा  
 ज्ञानतः अज्ञानतो वा रहसि प्रकाशेषु वा संभावितानां पञ्च  
 महापातकानां उपपातकानां, ज्ञानतः सकृत्कृतानां, अज्ञानतः  
 असत्कृतानां, ज्ञानतः अज्ञानतश्च अभ्यस्तानां, निरन्तर अभ्यस्तानां,  
 चिरकाल अभ्यस्तानां, निरन्तर चिरकाल अभ्यस्तानां, एवं नवानां  
 नवविधानां , बहूनां बहुविधानां, सर्वेषां पापानां, मध्ये संभावितानां  
 सर्वेषां पापानां, सद्यः अपनोदनार्थं आदित्यात्मकरुद्र प्रसाद सिद्ध्यर्थं,  
 महादेवादि एकादश अभिन्नरूप आदित्यात्मकरुद्र प्रसादेन, अस्माकं  
 सर्वेषां आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैवीक, नवनव जनित  
 तापत्रय निवृत्त्यर्थं ..... एभिः ब्राह्मणैस्सह, महार्णवोक्त  
 प्रकारेण, आचार्यमुखेन ऋत्विङ्मुखेन च , ऋग्यजु-स्सामाथर्वणाख्येषु  
 चतुर्षु वेदेषु मध्ये, एकाधिक शतसंख्याक यजुःशाखासु, आदिभूत  
 संहिताशाखा अन्तर्भूत अग्निकाण्ड अन्तर्गतानां , सर्वेषु वेदेषु, सर्वासु  
 उपनिषद्सु, स्मृतीतिहास पुराणादिषु, सर्वपाप निवर्तकत्वेन, दिव्यज्ञान  
 प्रदत्वेन, मोक्ष प्रदत्वेन च, तत्रतत्र उद्धृष्टानां "चरमेष्टकायां जुहोति"  
 इति चरमेष्टक उपयुक्तानां,  
 "शतरुद्रान् जपेद्यस्तु ध्यायमानो महेश्वरं" इति शैव पुराण वचनेन,  
 "यः शतरुद्रीयं अधीते , स अग्निपूतो इति कैवल्योपनिषद् वचनेन,  
 "अथ हैनं ब्रह्मचारिणः ऊचुः । किं जप्येन अमृतत्वं नो भवति ।  
 सहोवाच याज्ञवल्क्यः शतरुद्रियेणेति ।  
 एतानि ह वा अमृतस्य नामधेयानि । एतैर्ह वा अमृतो भवति ।"

इति जाबालोपनिषत् वचनेन,

"रुद्राणां जपहोम अर्च्यना अभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः" इत्यादि श्रुतिस्मृति पुराणवचनैः पूजाजप होमादि कर्मसु उपयुक्तानां एकादश अनुवाक आत्मकानां तत्र "नमस्ते रुद्रमन्यवे इति" प्रथमानुवाके दुष्टसंहारार्थं सङ्कृद्ध रुद्रकोप आयुधादिभ्यः अभय प्रार्थना प्रकाशकानां पञ्चदशसंख्याकानां षोडशोपचार उपयुक्तानां,

"नमो हिरण्यबाहवे इत्यादि" अष्टानुवाकेषु वैश्वरूप्यद्ध्यान एकतो-नमस्कार उभयतो-नमस्कार रूपाणां एकोनत्रिंशत् उत्तरशत संख्याकानां त्रिशत्यर्चना उपयुक्तानां,

"द्राणे अन्धसस्पते" इति दशमानुवाके जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्तासु जलपात विषभूत शत्रुमृत्यु ज्वरादि स्फोटकादि नानारोगेभ्यः नानाभिचारेभ्यः अभयप्रार्थना प्रकाशकानां द्वादश संख्याकानां, प्रदक्षिण उपयुक्तानां "सहस्राणि सहस्रशः" इति एकदशानुवाके सर्वव्यापक रुद्र विभूति प्रकाशकानां साऽनुषंगाणां त्रयोदश संख्याकानां नमस्कार उपयुक्तानां, अभीप्सितार्थं याचानासूचक चमकानुवाक संयुक्तानां, मूर्त्यष्टक मूर्तपञ्चक मूर्तित्रय अधिष्ठान पञ्चकृत्य विधान पठीयस्य, शिवया शूलिन्या अधोराख्याया तनुवा सर्वोपादानुतया सर्वात्मकतया सर्ववेद-बोधित सर्वात्मक सर्वरीश सकलधर परमशिवाख्य सदाशिव-ब्रह्ममञ्च पर्यकायमाण

पञ्चाक्षराख्य महामन्त्ररत्न मुख्यकोशानां शतरुद्रीयाणां त्रेधाविभागद्वय षोढाविभाग षोडशधाविभाग अष्टचत्वारिंशधा विभाग एकोनसप्तति अधिक शतधाविभागानां, षण्णांविभागानां मध्ये, एकोनसप्तति अधिक शतधाविभागपक्षं आश्रित्य शतांश दशांश संपूर्णहोमानां मध्ये दशांश होमविधानेन द्वात्रिंशदुत्तरशत संख्याक नमक चमक

जपात्मक तद् दशांश परिमित द्विचत्वारिंशत् उत्तर द्विसहस्र संख्याक  
नमक चमक आहुत्यात्मकं अन्ते वसोर्धारा सहितं प्राच्यांग उदीच्यांग  
गोदान नान्दीश्राद्ध वैष्णवश्राद्ध दशदान सहितं कर्मानुष्ठान योग्यता  
संपातक पूतत्व सिद्धिकर प्राजापत्य कृच्छ्र प्रत्याम्नाय भूत हिरण्यदान  
पूर्वकं सकल पापनिवर्तकं सर्वाभीष्ट प्रदायकं रुद्रैकादशिन्याख्य  
महाप्रायश्चित्त कर्मकर्तुं योग्यतासिद्धिः अस्त्विति अनुग्रहाणा ॥

(योग्यता सिद्धिरस्तु – इति ब्राह्मण प्रतिवचनं)

### 3.2 विघ्नेश्वरपूजा

#### 3.2.1 घण्ट पूजा

घण्टदेवताभ्यो नमः । गन्धपुष्पं समर्पयामि ।

आगमनार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसां ।

देवता पूजानार्थाय घण्टनादं करोम्यहं ॥

(इति घण्टनादं कृत्वा)

#### 3.2.2 आचमनं सङ्कल्पं

आचमनं + शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजं ।

प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोप शान्तये ।

ओं भूः, ओं भुवः, ओ३ सुवः, ओं महः, ओं जनः, ओं तपः,

ओ३ सत्यं । ओं तथ्स॑वितु॒ वरे॑ण्यं । भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि ।

धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दयात्॑ ॥

ओमापो॒ ज्योती॒रसो॒ऽमृतं॒ ब्रह्म॒ भूर्भुव॒स्सुवरो॑ ।

ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं, शुभे शोभने  
मुहूर्ते आद्यब्रह्मणः द्वितीय परार्द्धे श्वेतवराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे  
अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जंबूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे  
मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यवहारिके प्रभवादि  
षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये..... नामसंवत्सरे .....अयने .....  
ऋतौ ..... मासे .....पक्षे ..... शुभतिथौ .....वासरयुक्तायां  
..... नक्षत्रयुक्तायां शुभयोग शुभकरण एवं गुण सकल विशेषण  
विशिष्टायां अस्यां .....शुभतिथौ ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा  
श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं करिष्यमाण कर्मणः निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थं  
आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये । विघ्नेश्वर पूजां करिष्ये ।

(दर्भान् निरस्य । अप उपस्पृश्य ।

गन्ध-पुष्पान् गृहीत्वा विघ्नेश्वरं आवाहयेत् ।)

### 3.2.3 आवाहनं उपचारं

ओं ग॒णानां॑ त्वा ग॒णप॑ति॒ हवाम॑हे क॒विं क॑वी॒ना-मु॑पम॒श्रव॑स्तमं ।

जे॒ष्ठरा॒जं ब्र॑ह्म॒णां ब्र॑ह्म॒णस्प॑त आ नः॑ शृ॒ण्वन्नू॑तिभिः॑ सीद॒ साद॑नं ।

ओं भूर्भुव॑स्सुव॒रं । अस्मिन्॑ हरिद्राबिंबे सपरिवारं विघ्नेश्वरं

ध्यायामि , आवाहयामि । विघ्नेश्वरस्य इदमासनं । विघ्नेश्वराय नमः ।

पाद्यं समर्पयामि । अर्घ्यं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि ।

मधुपर्कं समर्पयामि । स्नानं समर्पयामि ।

स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि । वस्त्रार्थं पुष्पाणि समर्पयामि ।

उत्तरीयार्थं पुष्पाणि समर्पयामि । यज्ञोपवीतार्थं पुष्पाणि समर्पयामि ।

आभरणार्थं पुष्पाणि समर्पयामि । दिव्यगन्धान् धारयामि ।

हरिद्राकुंकुमं धारयामि । अलङ्करणार्थं अक्षतां समर्पयामि ।

पष्पैः पूजयामि ।

ओं सुमुखाय नमः ।

ओं एकदन्ताय नमः ।

ओं कपिलाय नमः ।

ओं गजकर्णकाय नमः ।

ओं लंबोधराय नमः ।

ओं विकटाय नमः ।

ओं विघ्नराजाय नमः ।

ओं विनायकाय नमः ।

ओं धूमकेतवे नमः ।

ओं गणाध्यक्षाय नमः ।

ओं फालचन्द्राय नमः ।

ओं गजाननाय नमः ।

ओं वक्रतुण्डाय नमः ।

ओं शूर्पकर्णाय नमः ।

ओं हेरंबाय नमः ।

ओं स्कन्दपूर्वजाय नमः ।

ओं विघ्नेश्वराय नमः ।

ओं श्री महागणपतये नमः ॥

ननाविध परिमळ पत्रपुष्पाणि समर्पयामि ।

धूपार्थं पुष्पाणि समर्पयामि । दीपार्थं पुष्पाणि समर्पयामि ।

3.2.4 नैवेद्यं, प्रार्थना

ओं भूर्भुवस्सुवः । ओं तत्सवितुर्वरेण्यं । भर्गो देवस्य धीमहि ।  
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

देव सवितः प्रसुवः । सत्यं त्वर्त्तेन परिषिञ्चामि ।

ओं विघ्नेश्वराय नमः । अमृतं भवतु । अमृतोपस्तरणमसि ।

ओं प्राणाय स्वाहाः । ओं अपानाय स्वाहाः ।

ओं व्यानाय स्वाहाः । ओं उदानाय स्वाहाः ।

ओं समानाय स्वाहाः । ओं ब्रह्मणे स्वाहाः ।

ओं विघ्नेश्वराय नमः । नाळिकेरखण्डद्वयं, कदलीफलं  
निवेदयामि । मद्ध्ये मद्ध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि ।

अमृतापिधानमसि । नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

तांबूलं

ओं भूर्भुवस्सुवः । पूगीफल समायुक्तं नगवल्ली-दळैर्युतं ।

कर्पूर-चूर्ण संयुक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यतां । ओं विघ्नेश्वराय नमः ।

कर्पूर तांबूलं निवेदयामि । (समर्पयामि)

दीपाराधना

नमो ब्रातपतये, नमो गणपतये, नमः प्रमथपतये, नमस्ते अस्तु

लंबोदरा-यैकदन्ताय विघ्न(वि)नाशिने, शिवसुताय, श्री वरदमूर्त्तये नमः ।



(अथवा)

रा॒जा॒धि॒रा॒जाय॑ प्रस॒ह्य सा॒हिने॑ ॥ नमो॑ वयं वै॒श्रव॑णाय॑ कुर्महे ।  
स मे॒ कामा॑न् काम॒कामा॑य॒ मह्यं॑ ॥ कामे॑श्वरो वै॒श्रव॑णो द॒दातु॑ ।  
कु॒बे॒राय॑ वै॒श्रव॑णाय॑ । म॒हा॒रा॒जाय॑ नमः॑ ।  
कर्पू॒र नी॒राज॑नं प्रदर्शयामि । नी॒राज॑नानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।  
योऽपां॑ पु॒ष्पं वै॒द ॥ पु॒ष्पवा॑न् प्र॒जावा॑न् पशु॒मान् भ॑वति ।  
च॒न्द्रमा॒ वा अ॒पां पु॒ष्पं ॥ पु॒ष्पवा॑न् प्र॒जावा॑न् पशु॒मान् भ॑वति ।  
श्री वि॒घ्नेश्व॑राय नमः । वेदोक्त-मन्त्रपुष्पं समर्पयामि ।  
सुव॑र्ण पु॒ष्पं सम॑र्पयामि । समस्तोपचरान् समर्पयामि ।

प्रार्थना

वक्र॑तुण्ड महाकाय सूर्यकोटी समप्रभ ।  
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥ 1  
नमो नमो गणेशाय नमस्ते शिवसूनवे ।  
निर्विघ्नं कुरु मे देवेश नमामि त्वां गणाधिप । 2  
विघ्नेश्वर महाभाग सर्व लोकनमस्कृत ।  
मयाऽऽरब्धमिदं कर्म निर्विघ्नं कुरु सर्वदा ॥ 3

### 3.3 प्रार्थना पूजा प्रारंभः

(रुद्र विधानेन महान्यासपूर्वकं पञ्चायतन पूजा प्रारंभः)

#### 3.3.1 प्रार्थना

नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मण हिताय च ।

जगद्धिताय कृष्णाय श्री गोविन्दाय नमो नमः ॥ 1

आब्रह्मलोका-दाशेषादा-लोकाल्लोकपर्वतात् ।

ये वसन्ति द्विजा देवास्तेभ्यो नित्यं नमो नमः ॥ 2

ओं नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासंप्रदाय-कर्तृभ्यो

वंशऋषिभ्यो गुरुभ्यो महद्भ्यः ॥ 3

#### 3.3.2 आसन पूजा

अस्य श्री आसन महामन्त्रस्य, पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः ।

सुतलं छन्दः । कूर्मो देवता । आसने विनियोगः ।

पृथ्वि त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु आसनं ॥

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया ॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाच सर्वतो दिशां ।

सर्वेषा-मविरोधेन पूजाकर्म समारंभे ॥

योगासनाय नमः । वीरासनाय नमः । शरासनाय नमः ।

अधारशक्ति कमलासनाय नमः । (इति भूमी पुष्पाञ्जलि विकिरेत्)

=====

### 3.4 सङ्कल्पं

(The brief Sankalpam shall be used for Shiva Pooja at home, Rudraabhishekam and Pradosha Poojas)

#### 3.4.1 सङ्कल्पं (1)

आचमनं , शुक्लांबरधरं , प्राणायामं ,  
ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं,  
शुभे शोभने मुहूर्त्ते आद्यब्रह्मणः द्वितीय परार्द्धे श्वेतवराह कल्पे  
वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथमे पादे जंबूद्वीपे  
भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने  
व्यवहारिके प्रभवादि षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये ..... नामसंवत्सरे  
.....अयने ..... ऋतौ ..... मासे .....पक्षे ..... शुभतिथौ.  
..... वासरयुक्तायां ..... नक्षत्रयुक्तायां, शुभयोग शुभकरण  
एवं गुण सकल विशेषण विशिष्टायां अस्यां .....शुभतिथौ ममोपात्त  
समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं ..... नक्षत्रे .....राशौ  
जातस्य .....शर्मणः मम ..... नक्षत्रे .....राशौ  
.....जातयाः मम धर्मपत्न्याश्च आवयोः सकुटुम्बायोः .....  
सपुत्रकयोः सबन्धुवर्गयोः साश्रितजनयोश्च क्षेम-स्थैर्य-वीर्य-विजय,  
आयुरारोग्य-ऐश्वर्याणां अभिवृद्ध्यर्थं, धर्मार्थ-काम-मोक्ष-चतुर्विध  
फलपुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं, सर्वारिष्ट शान्त्यर्थं, सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थं,  
सपरिवार सोमास्कन्द परमेश्वर चरणारविन्दयोः अचञ्चल-निष्कपट-  
भक्ति सिद्ध्यर्थं , यावच्छक्ति परिवार सहित रुद्रविधानेन ध्यान-  
आवाहनादि-षोडशोपचार-पूजा पुरस्सरं महान्यासजप  
(लघुन्यासजप) रुद्राभिषेक अर्चनादि सहित सांबशिव पूजां करिष्ये ।  
तदंगं कलश-शंख-आत्म-पीठ-पूजां च करिष्ये । (द्वि)  
(इति सङ्कल्पं । अप उपस्पृश्य)

### 3.4.2 सङ्कल्पं (2)

(This Elaborate Sankalpam is ideally used for Rudraabhishekam in a Samajam, Mandal, Public function.)

आचमनं, शुक्लांबरधरं, प्राणायामं –

ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं,  
एतत् मण्डली भक्तजनानां अखिल भारतीयानां, अखिल भूमण्डल  
निवासानां, एतत् कर्म प्रवर्तकानां, प्रोत्साहकानां, साहाय्यकारीणां,  
नानाविध द्रव्य दातृकाणां, दर्शनार्थं आगतानां आगमिष्याणां  
सकुटुम्बानां साश्रित बन्धुमित्राणां, सर्वेषां महाजनानां, जन्माभ्यासात्  
जन्मप्रभृति एतत्क्षणपर्यन्तं बाल्ये वयसि कौमारे यौवने वार्द्धके च,  
जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्थासु, मनोवाक्काय कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिय  
व्यापारैः, कामक्रोध-लोभ-मोह-मदमात्सर्यैः, रहसि प्रकाशे च  
ज्ञानाज्ञानकृतानां महापातकानां, अतिपातकानां, उपपातकानां,  
सङ्करीकरणानां, मलिनीकरणानां, अपात्रीकरणानां जातिभ्रंश-करणानां  
प्रकीर्णकानां ज्ञानतः सकृत् कृतानां, अज्ञानतः असत् कृतानां,  
ज्ञानातोऽज्ञानाश्च अभ्यस्तानां, निरन्तराभ्यस्तानां चिरकालाभ्यस्तानां,  
एवं नवानां नवविधानां बहूनां बहुविधानां पापानां, मद्ध्ये संभाविविधानां  
सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनार्थं, महादेवादीनां रुद्राणां  
प्रसादसिद्ध्यर्थं, महादेवादीनां रुद्राणां प्रसादेन राज्य निर्वाहकानां  
मन्त्रिवर्याणां, अन्योन्य मत्सरबुद्धि निरसनद्वारा सद्बुद्धि उदयसिद्ध्यर्थं,  
तद्वारा इदानीं अनुभूयमान नित्योपयोग साधन उत्पन्न अलभ्यता  
निवृत्तिद्वारा सुलभ्यता सिद्ध्यर्थं, सर्वद्रव्य निर्माणशालासु जनित  
जायमान अग्निबाधा प्रवृत्ति बन्धनादि निवृत्तिद्वारा उत्तरोत्तरं  
लाभाऽभिवृद्ध्यर्थं, आन्तरीक्षात् उत्भूत, उत्पात, उत्पस्यमान सकल  
कण्डक निवृत्यर्थं, तद्वारा इन्धन-जल-विद्युश्चक्ति क्षाम निवृत्यर्थं,

अतिवृष्टि-वायुमर्दन-उग्रताप-समुद्र-क्लेशनादि निवृत्तिद्वारा सर्वविध  
प्रकृति अनुकूल सिद्ध्यर्थ, शरीरे बाद्ध्यमान बाधिष्यमाण चित्तभ्रम-  
शिरोरोग-चर्मरोग-मनोरोग-अक्षिरोग पतनाति जनित  
अस्थिच्छेदानादि सकलरोग निवृत्यर्थ, भूजलवायु सञ्चारकाल जनित  
जायमान सकलदुरित निवृत्यर्थ, आतुराणां रोगीणां वैद्यशालासु उत्तम  
भिषग्वर सेवना रोगमुक्त औषधादि सिद्धिद्वारा अरोग्य-दृढगात्रता  
सिद्ध्यर्थ, अपमृत्यु निवारणार्थ, क्षेम-स्थैर्य-वीर्य-विजय  
आयुरारोग्य-ऐश्वर्याणां अभिवृद्ध्यर्थ, धर्मार्थ-काम-मोक्ष-चतुर्विध  
फलपुरुषार्थ सिद्ध्यर्थ, सर्वारिष्ट शान्त्यर्थ, सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थ,  
सकल साम्राज्य अभिवृद्ध्यर्थ, ऐकमत्य सिद्ध्यर्थ, विद्यार्थीनां  
विद्यार्थिनीनां च बालपाठशालासु निष्प्रयासेन प्रवेश सिद्ध्यर्थ,  
तत्र प्रतिवर्ष परीक्षासु प्रथम गणनीय विजय प्राप्त्यर्थ, अभ्यस्त  
नानाबिरुध धारीणां अनुचित स्थिर उद्योग प्राप्त्यर्थ, अलाभौजनित  
क्लेश निवृत्तिद्वारा उन्नत उद्योग प्राप्त्यर्थ, चतुर्वर्णानां तत्तत् वर्णाश्रम  
कर्मासु पूर्ण उत्सुहता सिद्ध्यर्थ, उत्तमवर्णेन नित्य नैमित्तिक काम्य  
श्रौत स्मार्त विहित कर्मानुष्ठाने सोत्साहता सिद्ध्यर्थ, सुहासिनीनां  
दीर्घ-सौमंगल्य सिद्ध्यर्थ, कनक-वस्तु-वाहनादि पुत्र-पौत्र सहित  
सुखजीवित्व सिद्ध्यर्थ, वर-वधूनां च विवाह प्रतिबन्धकीभूत दुरित  
निवृत्तिद्वारा उचितकाले मनोऽभीष्ट विवाह प्राप्त्यर्थ, आस्तिकानां  
स्वधर्माभिरुचि सिद्ध्यर्थ, सद्यः सुवृष्ट्या वापी कूप तटाकानां  
समृद्ध्यर्थ, सर्व सस्याभिवृद्ध्यर्थ, अन्न समृद्ध्यर्थ, क्षाम-क्षोभ  
निवृत्यर्थ, सकलश्रेयः प्राप्ति हेतुभूत सांबपरमेश्वर परिपूर्ण अनुग्रह  
सिद्ध्यर्थ, कुटुम्बक्षेमाभिवृद्ध्यर्थ, ऐहिक आमुष्मिक सकल  
श्रेयाभिवृद्ध्यर्थ, यावच्छक्ति परिवार सहित रुद्रविधानेन ध्यान-

आवाहनादि-षोडशोपचारपूजा पुरस्सरं महान्यासजप (लघुन्यासजप)  
रुद्रजप-सहित एकदशवार रुद्राभिषेक-सहित-यथाशक्ति त्रिशति  
अर्चना क्रमार्चना अन्य अर्चनादि सहित सांबशिव पूजां करिष्ये ।  
तदंगं कलश-शंख-आत्म-पीठ-पूजां च करिष्ये । (द्वि)

(अप उपस्पृश्य)

### 3.4.3 सङ्कल्पं (3)

(This Elaborate Sankalpam may be used for Rudra Ekadasini generally)

आचमनं शुक्लांबरधरं प्राणायामं -ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा  
श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं, शुभे शोभने मुहूर्ते आध्यब्रह्मणः द्वितीय परार्धे  
श्वेतवराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथमे  
पादे जंबूद्वीपे भारतवर्षे भरत खण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे  
अस्मिन् वर्तमाने व्यवहारिके प्रभवादि- षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये  
..... नामसंवत्सरे .....अयने .....  
ऋतौ ..... मासे .....पक्षे ..... शुभतिथौ  
..... वासरयुक्तायां ..... नक्षत्रयुक्तायां  
शुभयोग शुभकरण एवं गुण सकल विशेषण विशिष्टायां अस्याम्  
.....शुभतिथौ ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर  
प्रीत्यर्थं, अनादि अविद्यावासनया प्रवर्तमाने अस्मिन् महति संसारचक्रे  
विचित्राभिः कर्मगतिभिः विचित्रासु अनेकासु पशु-पक्षि मृगादि  
योनिषु पुनःपुनः अनेकधा जनित्वा केनापि पुण्यकर्म विशेषेण  
इदानीन्तन मानुष्ये द्विजन्म विशेषं प्राप्तवतः .....नक्षत्रे  
..... राशौ जातस्य .....शर्मणः ..... नक्षत्रे  
.....राशौ .....जातयाः मम धर्मपत्न्याश्च आवयोः  
सकुटुम्बयोः ..... सपुत्रकयोः सबन्धुवर्गयोः साश्रित जनयोश्च

## शिव स्तुति

जन्माभ्यासात् जन्मप्रभृति एतत्क्षण पर्यन्तं बाल्ये वयसि कौमारे यौवने  
वार्धके च जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्थासु मनोवाक्काय कर्मेन्द्रिय  
ज्ञानेन्द्रिय व्यापारैः कामक्रोध-लोभ-मोह-मदमात्सर्यैः रहसि प्रकाशे  
च ज्ञानाऽज्ञानकृतानां महापातकानां अतिपातकानां उपपातकानां  
सङ्करीकरणानां मलिनीकरणानां अपात्रीकरणानां जातिभ्रंशकरणानां  
प्रकीर्णकानां ज्ञानतः सकृत्कृतानां अज्ञानतः असत्कृतानां  
ज्ञानतोऽज्ञानतश्च अभ्यस्तानां चिरकालाभ्यस्तानां निरन्तर चिरकाला-  
भ्यस्तानां एवं नवानां नवविधानां बहूनां बहुविधानां पापानां मद्ध्ये  
संभाविधानां सर्वेषां पापानां सद्ध्यः अपनोदनार्थं, महादेवादीनां  
रुद्राणां आदित्यात्मकरुद्रस्य च प्रसाद सिद्ध्यर्थं, आयुरा-रोग्य-पुत्र-  
पौत्र-धन-धान्य तेजो-लक्ष्म्यादि सकल-साम्राज्या-भिवृद्ध्यर्थं,  
शरीरे वर्तमान-वर्तिष्यमान समस्त-रोगपीडा परिहारद्वारे क्षिप्रारोग्य  
सिद्ध्यर्थं, सर्वे ग्रहानुकूल्य सिद्ध्यर्थं, आरोग्यदृढगात्रता सिद्ध्यर्थं,  
अपमृत्यु दोष परिहारार्थं, वार्षिक जन्मनक्षत्रे तिथिवार नक्षत्रे लग्न-  
योगकरण-ग्रहास्थित्याभिः संबन्धेन संसुचित सर्वदोष शान्त्यर्थं,  
सर्वारिष्ट-शान्त्यर्थं, चित्तशुद्ध्यर्थं, सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थं, महार्णव-  
वायुपुराण-उक्तप्रकारेण आचार्यमुखेन चमकमन्त्र संयुक्तस्य  
शतरुद्रियस्य एकोनसप्तत्यधिकशतधा विभाग पञ्चाश्रयेण दशांशहोम  
विधान पक्षाश्रयणे च संभावित द्वात्रिंशत् उत्तर शत संख्याक नमक-  
चमक जप तन्मन्त्र जप दशांश परिमित द्विचत्वारिंशत् उत्तर-द्विसहस्र  
संख्याक नमकमन्त्र चमकमन्त्रा-हुत्यात्मकं अन्ते वसोर्धारया सहितं  
कर्मानुष्ठान योग्यता संपादक पूतत्वा सिद्धिकर प्राजापत्य कृच्छ्र  
प्रत्याम्नाय भूत हिरण्यदान पूर्वकं प्राच्यांग नान्दीश्राद्ध-गोदान-



उदिच्छ्यांग वैष्णवश्राद्ध कर्मसाङ्गुण्य प्रद दशदान फलतांबूल सहितं  
रुद्रैकादशिनि कर्मकर्तुं योग्यता-सिद्धिरस्तु इति अनुग्रहाणा ।  
(योग्यता सिद्धिरस्तु – इति परिषत् ब्राह्मण प्रतिवचनं)

3.4.4 सङ्कल्पं (4)

This very Elaborate and detailed Sankalpam can be used for Rudra Ekadasani and also for Maharudram, where appropriate changes need to be made for various Sankhya(counts) of Japam/Homam.)

आचमनं , शुक्लांबरधरं, प्राणायामं दृ

ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं , शुभे शोभने  
मुहूर्ते आद्यब्रह्मणः द्वितीय परार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे  
अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथमे पादे जंबूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे  
मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यवहारिके प्रभवादि-  
षष्ट्याः –संवत्सराणां मध्ये ..... नामसंवत्सरे .....अयने  
.....ऋतौ ..... मासे .....पक्षे ..... शुभतिथौ  
..... वासरयुक्तायां ..... नक्षत्रयुक्तायां शुभयोग शुभकरण  
एवं गुण सकल विशेषण विशिष्टायां अस्यां .....शुभतिथौ ममोपात्त  
समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं ।

अनादि अविद्यावासनया प्रवर्तमाने अस्मिन् महति संसारचक्रे  
विचित्राभिः कर्मगतिभिः विचित्रासु अनेकासु पशुपक्षि मृगादि योनिषु  
पुनःपुनः अनेकधा जनित्वा केनापि पुण्यकर्म विशेषेण  
इदानींतन मानुष्ये द्विजन्म विशेषं प्राप्तवतः .....नक्षत्रे  
..... राशौ जातस्य .....शर्मणः मम ..... नक्षत्रे  
.....राशौ .....जातयाः .....मम धर्मपत्न्याश्च  
आवयोः सकुटुम्बयोः, सपुत्रकयोः सबन्धुवर्गयोः साश्रितजनयोश्च,  
जन्माभ्यासात् जन्मप्रभृति एतत्क्षण पर्यन्तं बाल्ये वयसि कौमारे यौवने

वार्धके च, जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्थासु मनोवाक्काय कर्मेन्द्रिय  
ज्ञानेन्द्रिय व्यापारैः, कामक्रोध-लोभ-मोह-मदमात्सर्यैः, त्वक्चक्षुः  
श्रोत्र जिह्वा-घ्राणा वाक्पाणि पादपायु उपस्थाख्यैः दशभिः इन्द्रियैः,  
मनोबुधि-चित्त-अहङ्काराख्यैः अन्तरिन्द्रियैश्च कृतानां, इहजन्मनि  
जन्मजन्मान्तरेषु वा ज्ञानतः अज्ञानतो वा, रहसि प्रकाशेषु वा  
संभावितानां, ब्रह्महनन सुरापान स्वर्णस्तेय गुरुतल्पगमन  
तथ्संखयोगाख्य पञ्चमहापातकानां, महापातक संबन्धित्व ज्ञापयितृत्व  
प्रयोजकत्व निमित्तत्व उपदेष्टृत्व प्रोत्साकत्व अनुमन्त्रत्वादीनां  
महापातक व्रतातिदेशिक रूपाणां, अविज्ञात गर्भहनन कूट साक्षिपाद  
निन्दित-कर्माभ्यास दैवब्राह्मण धन अपहरणादीनां अतिपातकानां,  
सोमयागस्थ क्षत्रिय वैश्य वध सभामद्ध्यगत ब्राह्मण अपमानन,  
सदापै शून्यभाषण आदीनां ब्रह्महत्या समानानां वेदविस्मृति वेदनिन्द  
समुत्कर्षार्थं अनृतवचन कळंजभक्षण अभक्ष्यभक्षणादीनां सुरापान  
समानानां, निक्षेपहरण गोभूमिहरण, सुहृदनहरणादीनां स्वर्णस्तेय  
समानानां, सती सखिपत्नी ज्येष्ठपत्नी गुरुपत्नी मातुलानी अन्त्यजा  
गमनादीनां गुरुतल्पग समानानां पतित, सहवास सहभोजन अन्त्यजा  
वाटिका निषेपण आदीनां, तथ्संयोगाख्य समानानां, गोवध आत्मार्थ  
क्रियारंभ मातृपितृ गुरुत्याग, परदार अभिमर्शन, भैषज्यकरण,  
अपण्यविक्रय, ऋण अनपाकरण, नित्यकर्मलोप, दुर्धान प्रतिग्रह  
आदीनां उपपातकानां, अजावि गजोष्ट्र मृगेभ मीनाहि महिषीवध  
साळग्राम शिवलिंग विक्रय दूर्देशगमन क्रीटान्नभोजन आदीनां,  
संकरीकरणानां फलकुसुमस्तेय मखानुगतभोजन, धान्यहरण, वस्त्रा-  
पहरणादीनां, मलिनीकरणानां, कुसीद जीवन, वाणीज्य करण, असत्य  
भाषण, अस्नानभोजन आदीनां, अपात्रीकरणानां, शूद्रान्नभोजन,

मद्ध्याघ्राण पतित सहवास आदीनां, जातिभ्रंश-करणानां  
सीमाऽतिक्रम, शपथोल्लंगन, उच्छिष्ट-भक्षण, अविहितकर्म आचरण  
विहितकर्मत्यागादीनां प्रकीर्णकानां, ज्ञानतः सकृत्कृतानां अज्ञानतः  
असत्कृतानां ज्ञानतः अज्ञानतश्च अभ्यस्तानां निरन्तर अभ्यस्तानां  
चिरकाल अभ्यस्तानां निरन्तर चिरकालअभ्यस्तानां एवं नवानां  
नवविधानां बहूनां बहुविधानां सर्वेषु पापानां मध्ये संभावितानां  
सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनार्थं, आदित्यात्मकरुद्र प्रसाद सिद्ध्यर्थं,  
महादेवादि एकादश अभिन्नरूप आदित्यात्मकरुद्र प्रसादेन अस्माकं  
सर्वेषां आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैवीक नवनवजनित तापत्रय  
निवृत्त्यर्थं, .....(यथोचितं सङ्कल्पं) एभिः ब्राह्मणैस्सह  
महार्णवोक्त प्रकारेण आचार्य मुखेन ऋत्विङ्मुखेन च ऋग्यजु-स्साम-  
अथर्वणाख्येषु चतुर्षु वेदेषु मध्ये एकाधिक शतसंख्याक  
यजुःशाखासु आदिभूत संहिताशाखा अन्तर्भूत अग्निकाण्ड अन्तः  
पातिनां सर्वेषु वेदेषु सर्वासु उपनिषत्सु स्मृतीतिहास-पुराणादिषु  
सर्वपाप निवर्तकत्वेन, दिव्यज्ञान प्रदत्वेन, मोक्ष प्रदत्वेन, च तत्रतत्र  
उद्घुष्टानां चरमायां इष्टकायां जुहोति इति चरमेष्टका उपयुक्तानां,  
"शतरुद्रान् जपेद्यस्तु द्यायमानो महेश्वरं" इति शैव पुराण वचनेन,  
"यः शतरुद्रीयं अधीते , स अग्निपूतो " इति कैवल्योपनिषद् वचनेन,  
"अथ हैनं ब्रह्मचारिणः ऊचुः । किं जप्येन अमृतत्वं नो भवति ।  
सहो वाच याज्ञवल्क्यः शतरुद्रियेणेति ।  
एतानि ह वा अमृतस्य नामधेयानि । एतैर्ह वा अमृतो भवति" ।  
इति जाबालोपनिषत् वचनेन,  
"रुद्राणां जपहोम अर्चना अभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः" इत्यादि  
श्रुतिस्मृति पुराणवचनैः पूजाजप होमादि कर्मसु उपयुक्तानां एकादश  
अनुवाक आत्मकानां तत्र "नमस्ते रुद्रमन्यवे इति" प्रथमानुवाके

## शिव स्तुति

दुष्टसंहारार्थं सङ्कृद्ध रुद्रकोप आयुधादिभ्यः अभयप्रार्थना प्रकाशकानां  
पञ्चदश-संख्याकानां षोडशोपचार उपयुक्तानां,  
"नमो हिरण्यबाहवे इत्यादि" अष्टानुवाकेषु वैश्वरूप्यद्ध्यान एकतो-  
नमस्कार उभयतो नमस्कार रूपाणां एकोनत्रिंशत् उत्तरशत संख्याकानां  
त्रिशत्यर्चना उपयुक्तानां,  
"द्राणे अन्धसस्पते" इति दशमानुवाके जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति  
अवस्तासु जलवात विषभूत शत्रुमृत्यु ज्वरादि स्फोटकादि नानारोगेभ्यः  
नानाऽभिचारेभ्यः अभयप्रार्थना प्रकाशकानां द्वादश संख्याकानां,  
प्रदक्षिण उपयुक्तानां "सहस्राणि सहस्रशः" इति एकदशानुवाके  
सर्वव्यापक रुद्र विभूति प्रकाशकानां साऽनुषंगाणां त्रयोदश  
संख्याकानां नमस्कार उपयुक्तानां, अभीप्सितार्थं याचानासूचक  
चमकानुवाक संयुक्तानां, मूर्त्यष्टक मूर्तपञ्चक मूर्तित्रय अधिष्ठान  
पञ्चकृत्य विधान पठीयस्य, शिवया शूलिन्या अधोराख्याया तनुवा  
सर्वोपादानतया सर्वात्मकतया सर्ववेदबोधित सर्वात्मक शर्वरीश  
शकलधर परमशिवाख्य सदाशिव-ब्रह्ममञ्च पर्यं कायमाण  
पञ्चाक्षराख्य महामन्त्ररत्न मुख्यकोशानां शतरुद्रीयाणां त्रेधाविभागद्वय  
षोढा विभाग षोडशधाविभाग अष्टाचत्वारिंशधा विभाग एकोनसप्तति  
अधिक शतधा विभागानां, षण्णां विभागानां मध्ये, एकोन सप्तति  
अधिक शतधा विभागपक्षं आश्रित्य शतांश दशांश संपूर्णहोमानां  
मध्ये दशांश होमविधानेन द्वात्रिंशदुत्तरशत संख्याक नमक चमक  
जपात्मक तद् दशांश परिमित द्विचत्वारिंशत् उत्तर द्विसहस्र संख्याक  
नमक चमक आहुत्यात्मकं अन्ते वसोर्धारा सहितं प्राच्यांग उदीच्यांग  
गोदान नान्दीश्राद्ध वैष्णवश्राद्ध दशदान सहितं कर्मानुष्ठान योग्यता  
संपातक पूतत्व सिद्धिकर प्राजापत्य कृच्छ्र प्रत्याम्नाय भूत हिरण्यदान

पूर्वकं सकल पापनिवर्तकं सर्वाभीष्ट प्रदायकं  
रुद्रैकादशिन्याख्य(महारुद्र\*) महाप्रायश्चित्त कर्मकर्तुं योग्यतासिद्धिः  
अस्त्विति अनुग्रहाणा ॥

(योग्यता सिद्धिरस्तु – इति परिषत् ब्राह्मण प्रतिवचनं)

### 3.4.5 विघ्नेश्वर उद्वापनं

ओं ग॒णानां॑ त्वा ग॒णप॑ति॒ꣳ ह॒वाम॑हे क॒विं क॒वीना॑-मु॒पम॑श्रवस्तमं ।  
जे॒ष्ठरा॑जं ब्र॒ह्मणां॑ ब्र॒ह्मण॑स्पत॒ आ नः॑ शृ॒ण्वन्नू॑तिभिः सीद॒ साद॑नं ।

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । अस्मात् हरिद्राबिंबात् विघ्नेश्वरं यथास्थानं  
प्रतिष्ठापयामि । (शोभनार्थे क्षेमाय पुनारागमनाय च) ।

=====

### 3.5 पुण्याहवाचनं

#### 3.5.1 सङ्कल्पं

आचमनं-पवित्रं-दर्भासनं-दर्भान् धारयामाणं – शुक्लांबरधरं –  
प्राणायामं । ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं,  
शुभे शोभने मुहूर्ते आद्यब्रह्मणः द्वितीय परार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वत  
मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथमे पादे जंबूद्वीपे भारतवर्षे  
भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यवहारिके  
प्रभवादि- षष्ट्याः –संवत्सराणां मध्ये ..... नामसंवत्सरे  
.....अयने ..... ऋतौ ..... मासे .....पक्षे  
..... शुभतिथौ ..... वासरयुक्तायां ..... नक्षत्रयुक्तायां  
शुभयोग शुभकरण एवं गुण सकल विशेषण विशिष्टायां अस्यां  
.....शुभतिथौ ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं  
(यजमानस्य)

आत्मशुद्ध्यर्थं, शरीरशुद्ध्यर्थं, सर्वोपकरण शुद्ध्यर्थं,  
शुद्ध्यर्थ-शुद्धि पुण्याहवाचनं करिष्ये (द्विः)  
(इति सङ्कल्प्य दर्भान् निरस्य, अप उपस्पृश्य)

3.5.2 कुंभ प्रतिष्ठा मन्त्राः

**(TS 1.5.11.3)**

उदु॒त्त॒मं॑ व॒रुण॑ पा॒श॒म॒स्मद॒वा॒ध॒मं॑ वि॒म॒द्ध्य॒म॒७ श्र॒थाय॑ ।

अ॒था व॒य॒मादि॒त्य व्र॒ते त॒वा॒ना॒ग॒सो अ॒दि॒त॒ये स्या॒म ॥ 1

**(TS 1.2.8.1 )**

अ॒स्त॒भ॒नाद् द्या॒मृष॑भो अ॒न्त॒रि॒क्ष-म॒मि॒मीत॑ व॒रि॒मा॒णं पृ॒थि॒व्या  
आ॒ऽसी॒द॒द्वि॒श्वा भु॒व॒ना॒नि स॒म्रा॒ड् वि॒श्वे॒त्ता॒नि व॒रु॒णस्य॑ व्र॒ता॒नि ॥ 2

**(TS 3.4.11.6)**

य॒त्किञ्चे॒दं व॒रुण॑ दै॒व्ये ज॒नेऽभि॒द्रो॒हं म॒नुष्या॑श्च॒राम॑सि ।

अ॒चि॒त्ती य॒त्तव॑ ध॒र्मा यु॒यो॒पि॒म मा न॒ स्त॒स्मा॒दे॒न॒सो दे॒व री॒रिषः॑ ॥ 3

**(TS 3.4.11.6)**

कि॒त॒वा॒सो यद् रि॒रि॒पु॒र्न दी॒वि य॒द्वा घा स॒त्य-मु॒त॒य॒न्न वि॒द्म ।

स॒र्वा ता वि॒ष्य शि॒थिरे॒व दे॒वा॒था ते स्या॒म व॒रुण॑ प्रि॒या॒सः ॥ 4

**(TS 1.5.11.3)**

अ॒व ते हे॒डो व॒रुण॑ न॒मो॒भि॒रव॑ य॒ज्ञेभि॑-री॒महे॑ ह॒वि॒र्भिः॑ ।

क्ष॒य॒न्न॒स्मभ्य॑-म॒सुर॑ प्र॒चे॒तो रा॒ज॒न्ने॒नाऽसि॑ शि॒श्रथः॑ कृ॒ता॒नि ॥ 5

**(T.S. 2.1.11.6)**

त॒त्वा या॒मि ब्र॒ह्म॒णा व॒न्द॒मा॒न स्त॒दा॒शा॒स्ते य॒ज॒मा॒नो ह॒वि॒र्भिः॑ ।

अ॒हे॒ड॒मा॒नो व॒रु॒णे॒ह बो॒द्ध्यु॒रु॒शऽस॒ मा न॒ आ॒युः प्र॒ मो॒षीः॑ ॥ 6

इ॒मं मे॑ वरु॒ण श्रु॒धी ह॒वम॑द्द॒ध्या च॑ मृ॒डय॑ । त्वा॒मव॑स्यु रा॒चके॑ ।  
तत्त्वा॑ या॒मि ब्र॒ह्मणा॑ व॒न्दमा॑नस्तदा शा॒स्ते य॑ज॒मानो॑ ह॒विर्भिः॑ ।  
अहे॑ड॒मानो॑ वरु॒णेह॑ बो॒द्ध्युरु॑श॒ः स॒ मा न॒ आयुः॑ प्रमो॒षीः ॥

ओं भूर्भुवस्सुवरो । अस्मिन् कुंभे वरुणं ध्यायामि ।

वरुणं आवाहयामि । वरुणाय नमः । रत्न सिंहासनं समर्पयामि ।

पाद्यं समर्पयामि । अर्घ्यं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि ।

मधुपर्कं समर्पयामि । स्नानं समर्पयामि । स्नानानन्तरं आचमनीयं

समर्पयामि । वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि । उपवीतं समर्पयामि ।

पुष्पाणि समर्पयामि । गन्धान् धारयामि । हरिद्रा-कुंकुमं समर्पयामि ।

अक्षतान् समर्पयामि । पुष्पैः पूजयामि ।

1. ओं वरुणाय नमः

2. ओं प्रचेतसे नमः

3. ओं सुरूपिणे नमः

4. ओं अपांपतये नमः

5. ओं मकरवाहनाय नमः

6. जलाधिपतये नमः

7. ओं पाशहस्ताय नमः

8. ओं तीर्थराजाय नमः ।

ओं वरुणाय नमः ।



नानाविध परिमळ पत्र पुष्पाणि समर्पयामि । धूपं आघ्रापयामि ।

दीपं दर्शयामि । धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः । तथ्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो योनः प्रचोदयात् । देव सवितः प्रसुवः ।

सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि ।

(रात्रौ – ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि) ।

ओं वरुणाय नमः । अमृतं भवतु । अमृतोपस्तरणमसि ।

ओं प्राणाय स्वाहा । ओं अपानाय स्वाहा ।

ओं व्यानाय स्वाहा । ओं उदानाय स्वाहा ।

ओं समानाय स्वाहा । ओं ब्रह्मणे स्वाहा ।

कदलीफलं निवेदयामि ।

मद्ध्ये मद्ध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि । अमृतापिधानमसि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि । तांबूलं समर्पयामि ।

कर्पूर नीराजनं प्रदर्शयामि । नीराजनानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मन्त्र पुष्पं समर्पयामि । सुवर्ण पुष्पं समर्पयामि ।

समस्तोपचरान् समर्पयामि ॥

## शिव स्तुति

<u>ब्राह्मण वचनं</u>	<u>ब्राह्मण प्रतिवचनं</u>
भवद्भि अनुज्ञातः पुण्याहं वाचयिष्ये	वाच्यतां
कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु	पुण्याहं कर्मणोऽस्तु पुण्यं भवतु
कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु	स्वस्ति कर्मणोऽस्तु
सर्वोपकरण शुद्धिकर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु	सर्वोपकरण शुद्धिकर्मणे स्वस्ति
कर्मण ऋद्धि भवन्तो ब्रुवन्तु	कर्म ऋद्ध्यतां
ऋद्धि समृद्धिः	पुण्याह समृद्धिः
शिवं कर्म	अस्तु

शान्तिरस्तु

पुष्टिरस्तु

तुष्टिरस्तु

ऋद्धिरस्तु

अविघ्नं अस्तु

आयुष्यं अस्तु

आरोग्यं अस्तु

धनधान्य-समृद्धिरस्तु

गोब्राह्मणेभ्यः

शुभं भवतु ।

(ऐशान्यां दिशि बहिर्देशे)

अरिष्टनिरसनमस्तु ।

उत्तरे कर्मणि

अविघ्नमस्तु ।

उत्तरोत्तराभिवृद्धिः

अस्तु ।

सर्वेशोभनमस्तु

सर्वाः संपदः सन्तु ।

3.5.3 वेदारंभे जप्याः मन्त्राः

हरिः ओं , श्री गुरुभ्यो नमः, हरिः ओं ।

ओं भूः । तत्सवितुर्वरेण्यं । ओं भुवः । भर्गो देवस्य धीमहि ।

ओ३ सुवः । धियो योनः प्रचोदयात् ।

ओं भूः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

ओं भुवः । धियो योनः प्रचोदयात् ।

ओ३ सुवः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः

प्रचोदयात् । ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।

सुरभि नो मुखा करत् प्रण आयु३षि तारिषत् ।

आपोहिष्ठा मयोभुव-स्तान ऊर्जे दधातन ।

महेरणाय चक्षसे । यो व शिशवतमो रस-स्तस्य भाजयते ह नः ।

उशतीरिव मातरः । तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिव्वथ ।

आपो जनयथा च नः ।

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव  
 आपोऽन्नमापो-ऽमृतमाप स्सम्राडापो विराडाप स्स्वराडाप  
 इच्छन्दाऽस्यापो ज्योतीऽष्यापो यजूऽष्याप स्सत्यमाप स्सर्वा  
 देवता आपो भूर्भुवस्सुवराप ओं ।

### 3.6 पवमान सूक्तं

#### TS 5.6.1.1

हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका यासु जातः कश्यपो यास्विन्द्रः ।  
 अग्निं या गर्भं दधिरे विरूपास्ता न आपश्शऽ स्योना भवन्तु ॥  
 यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यन् जनानां ।  
 मधुश्चुत-इशुचयो याः पावकास्ता न आपश्शऽ स्योना भवन्तु ॥  
 यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति ।  
 याः पृथिवीं पयसोन्दन्ति शुक्रास्ता न आपश्शऽ स्योना भवन्तु ॥  
 शिवेन मा चक्षुषा पश्यताप शिवया तनुवोप स्पृशत त्वचं मे ।  
 सर्वां अग्नीं रफ्सुषदो हुवे वो मयि वर्चो बलमोजो नि धत्त ॥

#### TB 1.4.8.1 (for Para No. 1 to 6)

पवमान स्सुवर्जनः । पवित्रेण विचर्षणिः ।  
 यः पोता स पुनातु मा । पुनन्तु मा देवजनाः । पुनन्तु मन वोधिया ।  
 पुनन्तु विश्व आयवः । जातवेदः पवित्रवत् । पवित्रेण पुनाहि मा ।  
 शुक्रेण देव दीद्यत् । अग्ने क्रत्वा-क्रतूँरनु ॥ 1

य॒त्ते॑ प॒वि॒त्र-म॒र्चि॒षि॑ । अ॒ग्ने॑ वि॒त॒त-म॒न्त॒रा । ब्र॒ह्म॒ ते॒न पु॒नी॒महे॑ ।  
 उ॒भा॒भ्यां॑ दे॒व स॒वि॒तः॑ । प॒वि॒त्रे॒ण स॒वे॒न च॑ । इ॒दं ब्र॒ह्म पु॒नी॒महे॑ ।  
 वै॒श्व॒दे॒वी पु॒न॒ती दे॒व्यागा॑त् । य॒स्यै॑ ब॒ह्वी-स्त॒नु॒वो वी॒त॒पृ॒ष्ठाः॑ ।  
 तया॑ म॒द॒न्त-स्स॒ध॒माद्ये॑षु । व॒य॒ꣳ स्या॒म प॒त॒यो र॒यी॒णां ॥ 2

वै॒श्वान॒रो र॒श्मि॒भिर्मा॑ पु॒नातु॑ । वा॒तः प्रा॒णेने॑षि॒रो म॒यो॒भूः॑ ।  
 द्या॒वापृ॑थि॒वी प॒य॒सा प॒यो॒भिः॑ । ऋ॒ता॒व॒री य॒ज्ञि॒र्ये मा॑ पु॒नी॒तां ।  
 बृ॒ह॒द्भि-स्स॒वि॒तस्तृ॑भिः । व॒र्षि॒ष्ठैर् दे॒वम॒न्म॒भिः॑ ।  
 अ॒ग्ने दक्षैः॑ पु॒ना॒हि॒मा । ये॒न दे॒वा अ॒पु॒न॒त । ये॒नापो॑ दि॒व्य॒ङ्क॒शः॑ ।  
 ते॒न दि॒व्ये॒न ब्र॒ह्म॒णा ॥ 3

इ॒दं ब्र॒ह्म पु॒नी॒महे॑ । यः पा॒व॒मा॒नी-र॒द्ध॒येति॑ ।  
 ऋ॒षि॒भि-स्सं॑भृ॒तꣳ र॒सं॑ । स॒र्वꣳ स पू॒त॒मश्ना॑ति ।  
 स्व॒दि॒तं मा॒तरि॑श्च॒ना । पा॒व॒मा॒नीर् यो अ॒द्ध॒येति॑ ।  
 ऋ॒षि॒भि-स्सं॑भृ॒तꣳ र॒सं॑ । त॒स्मै सर॑स्वती दु॒हे ।  
 क्षी॒रꣳ सर्पि॑ र्म॒धू॒द॒कं॑ । पा॒व॒मा॒नी-स्स्व॒स्त्य॒य॒नीः ॥ 4

सु॒दु॒घा॒हि प॒य॒स्व॒तीः॑ । ऋ॒षि॒भि-स्सं॑भृ॒तो र॒सः॑ ।  
 ब्रा॒ह्म॒णेष्व॒मृ॒तꣳ हि॒तं॑ । पा॒व॒मा॒नीर् दि॒श॒न्तु नः॑ ।  
 इ॒मं लो॒क॒म॒थो अ॒मुं॑ । का॒मा॒न्थ् स॒म॒र्द॒ध्य॒न्तु नः॑ ।

दे॒वीर्दे॒वैः॑ स॒माभृ॑ताः । पा॒वमा॑नी-स्स्व॒स्त्यय॑नीः ।

सु॒दु॒घा हि॑ घृ॒तश्चु॑तः । ऋ॒षिभि॑-स्सं॒भृतो॑ र॒सः ॥ 5

ब्रा॒ह्म॒णेष्व॑मृ॒तं हितं॑ । येन॑ दे॒वाः प॒वित्रे॑ण । आ॒त्मानं॑ पु॒नते॑ सदा॑ ।

तेन॑ स॒हस्र॑ धा॒रेण॑ । पा॒वमा॑न्यः पु॒नन्तु॑ मा । प्रा॒जाप॑त्यं प॒वित्रं॑ ।

श॒तो॒द्याम॑ हिर॒ण्मयं॑ । तेन॑ ब्र॒ह्मवि॑दो व॒यं ।

पू॒तं ब्र॒ह्म पु॑नीमहे । इन्द्र-स्सु॒नीती॑ स॒ह मा पु॑नातु ।

सोम॑-स्स्व॒स्त्या व॑रु॒ण-स्समी॑च्या ।

य॒मो रा॒जा प्र॑मृ॒णाभिः॑ पु॒नातु॑ मा ।

जा॒तवे॑दा मो॒र्जय॑न्त्या पु॒नातु॑ । 6

भूर्भुव॑स्सुवः ॥

### **TB 3.5.11.1**

तच्छँ॑योरा वृ॒णीम॑हे । गा॒तुं य॒ज्ञाय॑ । गा॒तुं य॒ज्ञप॑तये ।

दै॒वी स्व॑स्तिरस्तु नः । स्व॒स्ति मा॑नु॒षेभ्यः॑ ।

ऊ॒र्ध्वं जि॑गातु भे॒षजं॑ । श॒न्नो अस्तु॑ द्वि॒पदे॑ । शं चतु॑ष्पदे ॥

### **3.6.1 वास्तु मन्त्रः**

### **TS 3.4.10.1**

वा॒स्तोष्प॑ते प्र॒ति जा॑नी ह्य॒स्मान्त् स्वा॑वे॒शो अ॑न॒मीवो॑ भ॒वा नः॑ ।

यत्त्वे॑महे प्र॒ति तन्नो॑ जुषस्व श॒न्न ए॒धि द्वि॒पदे॑ शंचतु॑ष्पदे ।

वा॒स्तो॒ष्प॒ते॒ श॒ग्म॒या स॒ꣳस॒दा ते स॒क्षी॒महि॒ र॒ण्व॒या गा॒तु॒म॒त्या ।  
आ॒वः॒ क्षे॒म उ॒त यो॒गे व॒र॒न्त्रो यू॒यं पा॒त स्व॒स्ति॒भि-स्स॒दा नः॑ ।

**APMB (EAK) 2.15.19**

वा॒स्तो॒ष्प॒ते॒ प्र॒त॒र॒णो न ए॒धि गो॒भि॒र॒श्वे॒भि॒रि॒न्दो ।  
अ॒ज॒रा॒स॒स्ते स॒ख्ये स्या॒म पि॒ते॒व पु॒त्रान् प्र॒ति नो जु॒षस्व॑ ।  
अ॒मी॒व॒हा वा॒स्तो॒ष्प॒ते वि॒श्वा रू॒पा॒ण्या॒वि॒श॒न् ।  
स॒खा सु॒शे॒व ए॒धि नः॑ ।

शि॒वꣳ शि॒वं ॥ भूर्भु॒व॒स्सु॒वो भूर्भु॒व॒स्सु॒वो भूर्भु॒व॒स्सु॒वः ॥

**3.6.2 वरुण उद्घापनं**

ओं न॒मो ब्र॒ह्म॒णे न॒मो अ॒स्त्व॒ग्नये॒ नमः॑ पृ॒थि॒व्यै नम॑ ओष॒धी॒भ्यः ।  
न॒मो वा॒चे न॒मो वा॒च॒स्प॒तये॒ नमो॑ वि॒ष्णवे॑ बृ॒ह॒ते क॑रोमि । (त्रिवारं जपेत्)  
वरु॒णाय॑ नमः सक॒लारा॑धनैः स्व॒र्चि॒तं ।

त॒त्वा या॒मि ब्र॒ह्म॒णा व॒न्द॒मा॒न स्त॒दा॒शा॒स्ते य॒ज॒मा॒नो ह॒वि॒र्भिः॑ ।  
अ॒हे॒ड॒मा॒नो व॒रु॒णे॒ह बो॒द्ध्यु॒रु॒शꣳस॒ मा न॒ आयुः॑ प्र॒ मो॒षीः ॥ 6

ओं भूर्भु॒व॒स्सु॒व॒रो॒ । अ॒स्मात् कुं॒भात् आ॒वा॒हि॒तं स॒क॒ल॒ती॒र्था॒धि॒प॒तिं  
वरु॒णं य॒था॒स्थानं॑ प्र॒ति॒ष्ठा॒प॒यामि॑ । शो॒भ॒नार्थे॑ क्षे॒माय॑ पु॒न॒रा॒ग॒म॒नाय॑ च ।

3.6.3 प्रोक्षण मन्त्राः

TB 2.6.5.2 for 1 to 3 / TS 1.7.10.3 for 4, 5 / TB 3.5.10.4 for 6 & 7 /  
T.B.2.4.4.10 for 8 / RV 10.137.6 for 9 / TA 1.26.5 for 10

दे॒वस्य॑त्वा स॒वि॒तुः प्र॒स॒वे । अ॒श्विनो॑र् बा॒हुभ्यां॑ ॥ पू॒ष्णो ह॒स्ताभ्यां॑ ।  
 अ॒श्विनो॑र् भैष॒ज्येन॑ । तेज॒से ब्र॒ह्मव॑र्चसाया॒भिषि॑ञ्चामि ॥ 1

दे॒वस्य॑त्वा स॒वि॒तुः प्र॒स॒वे । अ॒श्विनो॑र् बा॒हुभ्यां॑ ॥ पू॒ष्णो ह॒स्ताभ्यां॑ ।  
 सर॒स्वत्यै॑ भैष॒ज्येन॑ । वी॒र्या॑यान्नाद्याया॒भिषि॑ञ्चामि ॥ 2

दे॒वस्य॑त्वा स॒वि॒तुः प्र॒स॒वे । अ॒श्विनो॑र् बा॒हुभ्यां॑ ॥ पू॒ष्णो ह॒स्ताभ्यां॑ ।  
 इन्द्र॑स्येन्द्रि॒येण॑ । श्रि॒यै यश॑से ब॒लाया॑-भिषि॑ञ्चामि । 3

सोम॑ꣳ राजा॒नं वरु॑ण-म॒ग्नि म॑न्वारभामहे ।  
 आ॒दि॒त्यान् वि॒ष्णुꣳ सूर्यं॑ ब्र॒ह्माण॑ञ्च बृ॒हस्प॑तिं ॥ 4

दे॒वस्य॑त्वा स॒वि॒तुः प्र॒स॒वे अ॒श्विनो॑र् बा॒हुभ्यां॑ पू॒ष्णो ह॒स्ताभ्यां॑ꣳ  
 सर॒स्वत्यै॑ वा॒चो य॑न्तुर् यन्त्रेणाग्नेस्त्वा सा॒म्राज्ये॑नाभिषि॑ञ्चा-  
 मीन्द्र॑स्यत्वा सा॒म्राज्ये॑ना॒भिषि॑ञ्चामि बृ॒हस्प॑तेस्त्वा  
 सा॒म्राज्ये॑नाभिषि॑ञ्चामि ॥ 5

आ॒युरा॑शास्ते । सु॒प्रजा॑स्त्वमाशास्ते । सजा॑तवनस्यामाशास्ते ।  
 उत्तरा॑न्देवयज्यामाशास्ते । भू॒यो ह॑विष्करण-माशास्ते ।  
 दि॒व्यन्धा॑माशास्ते । वि॒श्वं प्रि॑यमाशास्ते । यद॒नेन॑ ह॒विषा॑शास्ते ॥ 6



तद॒श्यात्-तदृ॑द्ध्यात् । तद॒स्मै दे॒वारा॑सन्तां ॥  
तद॒ग्निर् दे॒वो दे॒वेभ्यो॑ व॒नते॑ । व॒यम॒ग्नेर् मा॒नुषाः॑ ।  
इष्टं॑ च॒ वीतं॑ च । उ॒भे च॒ नो द्या॒वापृ॑थि॒वी अ॒ह॒स॒स्पातां॑ ।  
इ॒ह गति॑र् वा॒मस्ये॒दं च॑ । नमो॑ दे॒वेभ्यः॑ ॥ 7

द्रु॒पदा॒दिवे॑न् मु॒मुचा॑नः । स्वि॒न्न-स्स्ना॒त्वी म॒लादि॑व ।  
पू॒तं प॒वित्रे॑णे॒ वाज्यं॑ । आपः॑ शु॒न्धन्तु॑ मै॒नसः॑ ॥  
भूर्भु॒वस्सु॒वो भूर्भु॒वस्सु॒वो भूर्भु॒वस्सु॒वः ॥ 8

### प्राशन मन्त्रः

आप॑ इ॒द्वा उ॒ भेष॑जीः । आपो॑ अमी॒वचा॑तनीः ।  
आप॑स्सर्व॒स्य भेष॑जी । तास्ते॑ कृ॒ण्वन्तु॑ भेष॒जं ॥ 9

[अकाल मृत्यु हरणम् सर्व व्याधि निवारणं ।

सर्व(समस्त) पापक्षयहरं (देवता नाम\*) वरुण\* पाथोदकं शुभं ।]

### स्त्रीणां प्राशनेः

आ॒मया॒वी चि॑न्वीत । आपो॑ वै भेष॒जं ।  
भेष॒जमे॒वास्मै॑ करोति । सर्व॒मायु॑रेति ॥ 10

3.6.4 ग्रह प्रीति

ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं  
ग्रहप्रीतिकर हिरण्यदानं करिष्ये ।

हिरण्यगर्भं गर्भस्थं हेमबीजं बिभावसोः ।

अनन्त पुण्य फलतं अतः शान्तिं प्रयश्चमे ।

मया सङ्कल्पित श्रीरुद्र एकादशिन्याख्य (महारुद्राख्य\*) महाप्रायश्चित्त  
रूप शिवाराधन कर्म आरंभ मुहूर्त लग्नापेक्षया, आदित्यानां नवानां  
ग्रहाणां आनुकूल्य सिद्ध्यर्थं, ये ये ग्रहाः शुभ स्थानेषु स्थिताः ये ये  
ग्रहाः शुभ इतर स्थानेषु स्थिताश्च, तेषां तेषां ग्रहाणां अत्यन्त  
अतिशयित शुभफल-प्रसातृत्व सिद्ध्यर्थं आदित्यादि नवग्रह पसाद  
सिद्ध्यर्थं, यत् किञ्चित् हिरण्यं ब्राह्मणेभ्यः संप्रददे ॥ ओं तत् सत् ।

3.6.5 पूर्वांग नान्दी श्राद्धं

सपत्नीकेन मया क्रियमाण रुद्रैकादशिनी (महारुद्र\*) कर्मणः

पूर्वांगत्वेन विहित नान्दी श्राद्धे ये विहिताः तेषामिदमासनं ।

(इति सर्वेषां आसनाद्युपचारं कुर्यात्)

हिरण्यगर्भं गर्भस्थं हेमबीजं बिभावसोः । अनन्त पुण्य फलतं अतः

शान्तिं प्रयश्चमे । सपत्नीकेन मया क्रियमाण रुद्रैकादशिनी (महारुद्र\*)

कर्मणः पुर्वाङ्गत्वेन विहित नान्दीश्राद्धे ये विहिताः

तेषां प्रीयर्थं इदं हिरण्यं ब्राह्मणेभ्यः संप्रददे ॥

ओं तत् सत् । नान्दीशोभन देवताः प्रीयन्तां ।

### 3.6.6 वैष्णव श्राद्धं

हिरण्यगर्भं गर्भस्थं हेमबीजं बिभावसोः । अनन्त पुण्य फलतं अतः

शान्तिं प्रयश्चमे । सपत्नीकेन मया क्रियमाण रुद्रैकादशिनी (महारुद्र\*)

कर्मणः पुर्वाङ्गत्वेन विहित वैष्णवश्राद्धे महाविष्णु प्रीयर्थं इदं हिरण्यं

ब्राह्मणेभ्यः संप्रददे ॥ ओं तत् सत् ।

### 3.6.7 गोदानं

परमेश्वर स्वरूपस्य ब्राह्मणस्य इदमासनं । सकलाराधनैः स्वर्चितं ।

हिरण्यगर्भं गर्भस्थं हेमबीजं बिभावसोः ।

अनन्त पुण्य फलतं अतः शान्तिं प्रयश्चमे ।

गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश ।

तस्मास्वस्याः प्रदानेन अतः शान्तिं प्रयश्च मे ॥

सपत्नीकेन मया क्रियमाण रुद्रैकादशिनी (महारुद्र\*) कर्मणः

पुर्वाङ्गत्वेन विहित गोप्रतिनिधि इदं हिरण्यं (गोमूल्यं) सदक्षिणाकं

तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ओं तत् सत् । परमेश्वर प्रीयतां ॥

3.6.8 दश दानं

परमेश्वर स्वरूपस्य ब्राह्मणस्य इदमासनं । सकलाराधनैः स्वर्चितं ।

हिरण्यगर्भं गर्भस्थं हेमबीजं बिभावसोः ।

अनन्त पुण्य फलतं अतः शान्तिं प्रयश्चमे ।

गो, भू, तिल, हिरण्य, आज्य, वासः, धान्यः, गुळः, रौप्य लवणाख्य

दशद्रव्यानां प्रतिनिधि यत् किञ्चित् इदं हिरण्यं सदक्षिणाकं

तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ओं तत् सत् ।

3.6.9 कृच्छ्राचरणं

हिरण्यगर्भं गर्भस्थं हेमबीजं बिभावसोः ।

अनन्त पुण्य फलतं अतः शान्तिं प्रयश्चमे ।

श्री रुद्रैकादशिन्याख्य (महारुद्राख्य\*) महाप्रायश्चित्त शिवाराधन योग्यता

सिद्ध्यर्थं पूतत्वं सिद्ध्यर्थं कृच्छ्राचरण प्रतिनिधि यत् किञ्चित् इदं

हिरण्यं सदक्षिणाकं ब्राह्मणेभ्यः तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ओं तत् सत् ।

3.6.10 ऋत्विग् वरणं

अस्मिन् रुद्रैकादशिनी (महारुद्र\*) कर्मणि महादेव (कलश) पूजा रुद्र

जप होमार्थं ऋत्विजं त्वां वृणे । (एवं भवोद्भव पर्यन्तं वृत्वा)

3.6.11 आचार्य वरणं

अस्मिन् रुद्रैकादशिनी(महारुद्र\*) कर्मणि आदित्यामक रुद्र कलश  
पूजा रुद्र जप होमार्थं सकल कर्म कर्तुं आचार्यं त्वां वृणे ।

3.6.12 ऋत्विग् वरणं (Rutvik performing Abishekam)

अस्मिन् रुद्रैकादशिनी (महारुद्र\*) कर्मणि महान्यास पूर्व रुद्रजप  
एकादशवार रुद्रजप अभिषेकार्थं ऋत्विजं त्वां वृणे ।

सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः रुद्रैकादशिनी (महारुद्र\*) कर्म अन्योन्य  
सहायेन कुरुद्ध्वं । (वयं कुर्मः –इति ब्राह्मण प्रतिवचनं)

3.6.13 आचार्यस्य ऋत्विजां च संकल्पः

आचमनं-पवित्रं-दर्भासनं दर्भान् धारयमाणं- शुक्लांबरधरं  
प्राणायामं ममोपात्त समस्त दुरितक्षयद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं,  
शुभे शोभने मुहूर्ते आद्यब्रह्मणः द्वितीय परार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वत  
मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथमे पादे जंबूद्वीपे भारतवर्षे  
भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने  
व्यवहारिके प्रभवादि षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये ..... नामसंवत्सरे,  
.....अयने ..... ऋतौ ..... मासे .....पक्षे  
..... शुभतिथौ ..... वासरयुक्तायां  
..... नक्षत्रयुक्तायां शुभयोग शुभकरण एवं गुण सकल  
विशेषण विशिष्टायां अस्यां .....शुभतिथौ .....

नक्षत्रे.....राशौ जातस्य .....शर्मणः अस्य  
यजमानस्य सकुटुम्बस्य महादेवादीनां रुद्राणां प्रसादसिद्ध्यर्थं  
सर्वारिष्ट शान्त्यर्थं सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थं यजमान संकल्पित  
रुद्रैकादशिनी (महारुद्र\*) कर्म अन्योन्य सहायेन वयं करिष्यामः ।  
"महादेव पूजां करिष्यामि, शिव रुद्र इत्यादि तत् तत् देवता पूजां  
करिष्यामि" ॥ (इति संकल्प्य कलशादि पूजां कुर्युः)

### 3.6.14 कलशादिपूजा

कलशाय नमः । दिव्यगन्धान् धारयामि ।  
गंगायै नमः । यमुनायै नमः । गोदावर्यै नमः । सरस्वत्यै नमः ।  
नर्मदायै नमः । सिन्धवे नमः । कावेर्यै नमः ।  
सप्तकोटि महातीर्थान् आवाहयामि ।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं॑ सर्वं॑ विश्वा॑ भूतान्यापः॑ प्राणा वा आपः॑ पशव  
आपोऽन्नमापो-ऽमृतमाप-स्सम्राडापो विराडाप-स्स्वराडाप-  
श्छन्दा॑स्यापो ज्योती॑ष्यापो यजू॑ष्याप-स्सत्यमाप-स्सर्वा  
देवता॑ आपो भूर्भुवस्सुवराप ओं ।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मद्ध्ये मातृगणाः स्मृताः ।

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वणः ।

अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशांबु समाश्रिताः ।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः ।

आयान्तु शिवपूजार्थं दुरितक्षय-कारकाः ।

ओं भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवः ॥

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि, आत्मानं च प्रोक्ष्य ।)

### 3.6.15 शंखपूजा

(कलशजलेन शंखं प्रक्षाळ्य, पुनः कलशजलेन शंखं गायत्र्या प्रपूर्यः)

पाञ्चजन्याय नमः । दिव्यगन्धान् धारयामि ।

(शंखमूले) ब्रह्मणे नमः । (शंखमद्ध्ये) जनार्दनाय नमः ।

(शंखाग्रे) चन्द्रशेखराय नमः ।

(इति अभ्यर्च्य । शंखं स्पृष्ट्वा जपेत् ।)

शंखं चन्द्रार्कदैवत्यं मद्ध्ये वरुणसंयुतं ।

पृष्ठे प्रजापतिश्चैव अग्रे गंगा सरस्वती ॥

त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया  
शंखे तिष्ठति विप्रेन्द्राः तस्माच्छंखं प्रपूजयेत् ।

त्वं पुरासागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे  
पूजितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोऽस्तुते ।  
गर्भा देवारिनारीणां विशीर्यन्ते सहस्रधा  
तव नादेन पाताळे पाञ्चजन्य नमोऽस्तुते ।

ओं पाञ्चजन्याय॑ विद्महे॑ पवमानाय॑ धीमहि॑ ।  
तन्नः॑ शंखः॑ प्रचोदयात्॑ ॥ (इति त्रिवारं जपित्वा)

अ॒ग्रे॒र्मन्वे॑ प्र॒थम॑स्य प्र॒चे॒तसो॑ यं पाञ्च॑जन्यं ब॒हव॑ स्समिन्धते॑ ॥  
वि॒श्वस्यां॑ वि॒शि प्र॑वि॒विशि॒वाँस्-मीमहे॑ स नो॑ मुञ्च॒त्वँह॑सः ।  
(इति शंखजलं कलशजले किञ्चित् आसिच्य, शिष्टजलेन  
ओं भूर्भुवस्सुवो॑ भूर्भुवस्सुवो॑ भूर्भुवस्सुवः॑ इति सर्वोपकरणानि  
प्रोक्ष्य, आत्मानं च प्रोक्ष्य, कलशोदकेन पुनश्च शंखं गायत्र्या  
पूरयित्वा)

### 3.6.16 आत्मपूजा

आत्मने नमः । दिव्यगन्धान् धारयामि । आत्मने नमः ।  
अन्तरात्मने नमः । योगात्मने नमः । जीवात्मने नमः ।



परमात्मने नमः । ज्ञानात्मने नमः । समस्तोपचारान् समर्पयामि ।

देहो जीवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः ।

त्यजेदज्ञान निर्माल्यं सोऽहंभावेन पूजयेत् ।

### 3.6.17 पीठपूजा

आधारशक्त्यै नमः मूलप्रकृत्यै नमः

आदिकूर्माय नमः आदिवराहाय नमः

अनन्ताय नमः पृथिव्यै नमः

रत्नमण्डपाय नमः रत्नवेदिकायै नमः

स्वर्णस्तंभायै नमः श्वेतछत्राय नमः .

कल्पकवृक्षाय नमः क्षीरसमुद्राय नमः

सितचामराभ्यां नमः योगपीठासनाय नमः

### 3.6.18 नन्दिकेश्वर अनुज्ञा

वेदान्त-वेद्याखिल विश्वमूर्ते विभो विरूपाक्ष विशेषशून्य ।

विश्वेश्वराशेष-गणेशवन्द्य कवाट-मुद्घाटय कालाकाल

नन्दिकेश्वराय नमः ।

नन्दिकेश्वर सर्वज्ञ शिवद्धान परायण

महेश्वरस्य पूजार्थं अनुज्ञां दातुमर्हसि ।

=====

### 3.7 पञ्चकलश स्थापनं

#### 3.7.1 पश्चिमं

सद्यो॑ जा॒तं प्र॒पद्या॑मि सद्यो॑ जा॒ताय॑ वै नमो॑ नमः॑ ।  
भवे॑ भवे॑ नाति॑भवे॑ भव॒स्व मां । भवो॑द्भवाय॑ नमः॑ ॥  
ओं भूर्भुव॑स्सुव॒रो ।

अस्मिन् पश्चिमकलशे सद्योजातं ध्यायामि । आवाहयामि ।

#### 3.7.2 उत्तरं

वामदे॒वाय॑ नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॑ नमः॑ श्रे॒ष्ठाय॑ नमो॑ रु॒द्राय॑ नमः॑ का॒लाय॑ नमः॑  
कल॑विक॒रणा॑य नमो॑ बल॑विक॒रणा॑य नमो॑ ब॒लाय॑ नमो॑ बल॑प्रमथ॒नाय॑  
नमः॑ सर्व॑भूतदम॒नाय॑ नमो॑ म॒नोन्म॑नाय॒ नमः॑ । ओं भूर्भुव॑स्सुव॒रो ।  
अस्मिन् उत्तरकलशे वामदेवं ध्यायामि । आवाहयामि ।

#### 3.7.3 दक्षिणं

अ॒घोरे॑भ्यो ऽथ॒घोरे॑भ्यो घोर॒घोर॑तरेभ्यः । सर्वे॑भ्यः सर्व॒शर्वे॑भ्यो  
नम॑स्ते अस्तु रु॒द्ररू॑पेभ्यः ॥ ओं भूर्भुव॑स्सुव॒रो ।  
अस्मिन् दक्षिणकलशे अघोरं ध्यायामि । आवाहयामि ।

#### 3.7.4 पूर्वं

तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ महा॒देवा॑य धीमहि । तन्नो॑ रु॒द्रः प्रचो॑दयात् ॥  
ओं भूर्भुव॑स्सुव॒रो । अस्मिन् पूर्वकलशे तत्पुरुषं ध्यायामि ।  
आवाहयामि ।

3.7.5 मद्ध्यमं

ई॒शानः॑ सर्व॑विद्या॒ना-मी॒श्वरः॑ सर्व॑भू॒तानां॑ ब्र॒ह्माधि॑पति॒ ब्र॒ह्म॒णोऽधि॑पति॒  
ब्र॒ह्मा॑ शि॒वो मे॑ अस्तु सदा॑शि॒वो ॥ ओं भूर्भु॑वस्सु॒वरो॑ ।

अस्मिन् मद्ध्यम कलशे ईशानं ध्यायामि । आवाहयामि ।

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत् पूजावसानकं तावत् त्वं प्रीतिभावेन  
कुंभेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।

आवाहितो भव । स्थापितो भव । सन्निहितो भव । सन्निरुद्धो भव ।

अवकुण्ठितो भव । सुप्रीतो भव । सुप्रसन्नो भव । वरदो भव ।

स्वागतं अस्तु । प्रसीद प्रसीद ।

3.7.6 उपचारपूजा

सद्यो॑ जा॒ताय॑ वै नमो॑ नमः॑ – रत्नसिंहासनं समर्पयामि ।

भवे॑ भवे॑ नाति॑भवे॑ भवस्व॑ मां – पाद्यं समर्पयामि ।

भवो॑द्भवाय॑ नमः॑ – अर्घ्यं समर्पयामि ।

वामदे॒वाय॑ नमः॑ – आचमनीयं समर्पयामि ।

ज्येष्ठा॒य नमः॑ – मधुपर्कं समर्पयामि ।

श्रेष्ठा॒य नमः॑ – स्नानं समर्पयामि ।

स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

रुद्रा॒य नमः॑ – वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि ।

## शिव स्तुति

कालाय नमः	– यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि ।
कलविकरणाय नमः	– गन्धाक्षतान् समर्पयामि ।
बलविकरणाय नमः	– पुष्पाणि समर्पयामि ।
बलाय नमः	– धूपं आघ्रापयामि ।
बलप्रमथनाय नमः	– दीपं दर्शयामि ।
सर्वभूतदमनाय नमः	– नैवेद्यं निवेदयामि ।
मनोन्मनाय नमः	– तांबूलं समर्पयामि ।
सपरिवार श्री सांबपरमेश्वराय नमः ।	

सर्वोपचारार्थं कर्पूरनीराजनं प्रदर्शयामि ।

अ॒घो॒रे॒भ्यो ऽथ॒घो॒रे॒भ्यो घोर॒घो॒र॒तरे॒भ्यः ।

सर्वे॒भ्यः सर्व॒ शर्वे॒भ्यो नमस्ते अस्तु रु॒द्ररू॒पेभ्यः ॥

तत्पु॒रुषाय॑ वि॒द्महे॑ म॒हादे॒वाय॑ धीम॒हि । तन्नो॑ रु॒द्रः प्रचो॒दयात् ॥

ई॒शानः॑ सर्व॒विद्या॒ना-मी॒श्वर॑सर्व॒ भूता॒नां ब्र॒ह्माधि॑पतिर्ब्र॒ह्म॒णो  
ऽधि॑पति॒ ब्र॒ह्मा शि॒वो मे अस्तु सदा॑शि॒वो ॥

(नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतये ऽंबिकापतय  
उमापतये पशुपतये नमो नमः ॥)

=====

## Section 2 - MahAnyAsam

## 4 महान्यासः

### 4.1 कलश प्रतिष्ठापन मन्त्राः

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।  
स बुद्धिन्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥

नाके सुपर्ण-मुपयत् पतन्तः हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा ।  
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युं ।

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णियं । भवा वाजस्य संगथे ।

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा  
भुवना ऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु । 1 (अप उपस्पृश्य)

इदं विष्णु विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं । समूढमस्य पाञ्च सुरे ।

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त् समुद्रव्यचसं गिरः ।

रथीतमञ्च रथीनां वाजानाञ्च सत्पतिं पतिं । TS 4.6.3.4

आपो वा इदंञ्च सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव  
आपोऽन्नमापो-ऽमृतमाप-स्सम्राडापो विराडाप-स्स्वराडाप-  
श्छन्दाञ्चस्यापो ज्योतीञ्चष्यापो यजूञ्चष्याप-स्सत्यमाप-स्सर्वा  
देवता आपो भूर्भुवस्सुवराप ओं । 2

अपः प्रणयति । श्रद्धा वा आपः । श्रद्धामेवारभ्य प्रणीय प्रचरति ।

अपः प्रणयति ।

यज्ञो वा आपः । यज्ञमेवारभ्य प्रणीय प्रचरति । अपः प्रणयति ।

वज्रो वा आपः । वज्रमेव भ्रातृव्येभ्यः प्रहृत्य प्रणीय प्रचरति ।

अपः प्रणयति ।

आपो वै रक्षोघ्नीः । रक्षसामपहत्यै । अपः प्रणयति ।

आपो वै देवानां प्रियं धाम । देवानामेव प्रियं धाम प्रणीय प्रचरति ।

अपः प्रणयति ।

आपो वै सर्वा देवताः । देवता एवारभ्य प्रणीय प्रचरति ।

अपः प्रणयति ।

आपो वै शान्ताः । शान्ताभिरेवास्य शुचं शमयति । देवो वः

सवितोत् पुनात्व-च्छिद्रेण पवित्रेण वसोस्सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ 3

कूर्चाग्रै रक्षसान् घोरान् छिन्धि कर्मविघातिनः ।

त्वामर्पयामि कुंभेऽस्मिन् साफल्यं कुरु कर्मणि ।

वृक्षराज समुद्भूताः शाखायाः पल्लवत्व चः ।

युष्मान् कुंभेष्वर्पयामि सर्वपापापनुत्तये ।

नाळिकेर-समुद्भूत त्रिनेत्र हर सम्मित ।

शिखया दुरितं सर्वं पापं पीडां च मे नुद ।

स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः ।

तं भागं चित्रमीमहे । (RV 5.82.3)

तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमान-स्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।

अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुशस्स मा न आयुः प्रमोषीः ॥

ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् कुंभे वरुणमावाहयामि ।

वरुणस्य इदमासनं । वरुणाय नमः । सकलाराधनैः स्वर्चितं ।

रत्नसिंहासनं समर्पयामि । पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्यं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि ।

मधुपर्कं समर्पयामि । स्नानं समर्पयामि ।

स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि । उपवीतं समर्पयामि ।

गन्धान् धारयामि । अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्पाणि समर्पयामि ।

1. ओं वरुणाय नमः
2. ओं प्रचेतसे नमः
3. ओं सुरूपिणे नमः
4. ओं अपांपतये नमः
5. ओं मकरवाहनाय नमः
6. जलाधिपतये नमः



7. ओं पाशहस्ताय नमः 8. ओं तीर्थराजाय नमः

ओं वरुणाय नमः । नानाविध परिमळ पत्र पुष्पाणि समर्पयामि ।

धूपं आघ्रापयामि । दीपं दर्शयामि ।

धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः । तथ्स॑वि॒तुर्व॑रे॒ण्यं॑ भ॒र्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि ।

धि॒यो यो॑न॒ प्रचो॑दयात् ।

देव सवितः प्रसुवः । सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि ।

(रात्रौ – ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि) ।

ओं वरुणाय नमः । अमृतं भवतु । अमृतोपस्तरणमसि ।

ओं प्राणाय स्वाहा । ओं अपानाय स्वाहा । ओं व्यानाय स्वाहा ।

ओं उदानाय स्वाहा । ओं समानाय स्वाहा । ओं ब्रह्मणे स्वाहा ।

कदलीफलं निवेदयामि । मद्ध्येमद्ध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि ।

अमृतापिधानमसि । नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

तांबूलं समर्पयामि । कर्पूर नीराजनं प्रदर्शयामि ।

नीराजनानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि । मन्त्र पुष्पं समर्पयामि ।

सुवर्ण पुष्पं समर्पयामि । समस्तोपचरान् समर्पयामि ॥

#### 4.2 महान्यास मन्त्रपाठ प्रारंभः

अथातः पञ्चांगरुद्राणां न्यासपूर्वकं जप-होमा-र्चना-भिषेक-

विधिं व्याख्यास्यामः

Note: The Mahanyasa Rishi here explains to his students the vidhi (method ) and vyakyaanam (pooja) while teaching Mahanayagam and hence he uses the words

“विधिं व्याख्यास्यामः”.

Here you, as the kartha, are not doing "vidhi" ("vidhi" meaning the trial method as how to conduct the pooja) or "pooja vyakyaanam" (pooja explanation) but actually doing the pooja itself. Hence it would be more appropriate to say

“अथातः पञ्चांगरुद्राणां न्यासपूर्वकं जप-होमा-र्चनाभिषेकं

करिष्यमाणः ” ।

=====

## 5 प्रथम न्यासः

या ते॑ रु॒द्र शि॒वा तनू॑रघो॒रा-ऽपा॑पकाशिनी । तया॑ न स्त॒नुवा॑  
श॒न्तम॑या गि॒रिश॑न्ताभि॒चाक॑शीहि । (शि॒खायै॑ नमः) । 1

अ॒स्मिन् मह॑त्यर्ण॒वे ऽन्तरि॑क्षे भ॒वा अधि॑ ।  
तेषां॑ सहस्र॒योजने॑ ऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि । (शि॒रसे॑ नमः) । 2

सह॑स्राणि सहस्र॒शो ये रु॒द्रा अधि॑ भू॒म्यां ।  
तेषां॑ सहस्र॒योजने॑ ऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि । (ल॒लाटाय॑ नमः) । 3

ह॒स-श्शु॑चिषद्-वसु॑रन्तरि॒क्ष-स॒द्धोता॑-वेदि॒षदति॑थिर् दुरो॒णस॑त् ।  
नृ॒षद्-वर॑सद्-ऋ॒तस॑द्-व्यो॒मस॑दब्जा गो॒जा ऋ॒तजा॑  
अ॒द्रिजा॑ ऋ॒तं बृ॒हत् ॥ 3 (भ्रू॒वोर्म॑द्ध्याय नमः) । 4

त्र्य॑म्बकं य॒जामहे॑ सुगन्धिं पु॒ष्टिव॑र्धनं । उ॒र्वारु॑कमि॒व ब॑न्ध॒नान्  
मृ॒त्योर् मु॑क्षीय मा॒ऽमृता॑त् । (ने॒त्राभ्यां॑ नमः) । 5

नमः॑ स्रु॒त्याय च॑ प॒थ्याय च॑ नमः॑ का॒व्याय च॑ नी॒प्याय च॑ ।  
(कर्णा॑भ्यां नमः) । 6

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।  
वीरान्मानो रुद्र भामितो वधीर् हविष्मन्तो नमसा विधेम ते ।

(नासिकाभ्यां नमः) । 7

अवतत्य धनुस्त्वञ् सहस्राक्ष शतेषुधे ।  
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव । (मुखाय नमः) । 8

नीलग्रीवा शिशितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः ।  
तेषाञ् सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि । (कण्ठाय नमः) । 9A

नीलग्रीवा शिशितिकण्ठा दिवञ् रुद्रा उपश्रिताः ।  
तेषाञ् सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि । (उपकण्ठाय नमः) । 9B

नमस्ते अस्त्वायुधायानातताय धृष्णावे ।  
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने । (बाहुभ्यां नमः) । 10

या ते हेतिर् मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।  
तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिब्भुज । (उपबाहुभ्यां नमः) । 11  
परिणो रुद्रस्य हेतिर् वृणक्तु परित्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ।

अव स्थिरा मघवद्भ्यः तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृडय ।  
(मणिबन्धाभ्यां नमः) । 12

ये ती॒र्था॒नि प्र॒चर॑न्ति सृ॒काव॑न्तो निष॒ङ्गि॑णः ।

तेषां॑ सहस्र॒योज॑ने ऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि । (हस्ताभ्यां नमः) । 13

सद्यो॑ जा॒तं प्र॒पद्या॑मि सद्यो॑ जा॒ताय॑ वै नमो॑ नमः । भवे॑ भवे॑ नाति॑ भवे॑  
भव॒स्व मां । भवो॑द्-भवा॒य नमः॑ ॥ (अंगुष्ठाभ्यां नमः) । 14A

वा॒मदे॒वाय॑ नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॑ नमः॑ श्रे॒ष्ठाय॑ नमो॑ रु॒द्राय॑ नमः॑ का॒लाय॑ नमः॑  
क॒लवि॑कर॒णाय॑ नमो॑ ब॒लवि॑कर॒णाय॑ नमो॑ ब॒लाय॑ नमो॑ ब॒लप्र॑मथ॒नाय॑  
नमः॑ स॒र्वभू॑तद॒मना॑य॒ नमो॑ म॒नोन्म॑नाय॒ नमः॑ । (तर्जनीभ्यां नमः) 14B

अ॒घोरे॑भ्यो ऽथ॒घोरे॑भ्यो घोर॒घोर॑तरेभ्यः । स॒र्वेभ्यः॑ स॒र्व श॑र्वेभ्यो॒ नम॑स्ते  
अस्तु॑ रु॒द्र रू॒पेभ्यः॑ ॥ (मद्ध्यमाभ्यां नमः) । 14 C

तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ म॒हादे॒वाय॑ धीमहि ।

तन्नो॑ रु॒द्रः प्र॒चोद॑यात् ॥ (अनामिकाभ्यां नमः) । 14D

ई॒शानः॑ स॒र्ववि॑द्याना-मीश्वरः॑ स॒र्वभू॑ता॒नां ब्र॒ह्माधि॑पतिर् ब्रह्म॒णोऽधि॑पतिर् ब्रह्मा शि॒वो मे॑ अस्तु सदाशि॒वो ॥ (कनिष्ठिकाभ्यां नमः) 14E

नमो॑ वः कि॒रि॒केभ्यो॑ दे॒वानां॑ हृद॒येभ्यः॑ । (हृदयाय नमः) । 15

नमो॑ ग॒णेभ्यो॑ ग॒णप॑तिभ्यश्च वो॒ नमः॑ । (पृष्ठाय नमः) । 16

नमो॑ हिर॒ण्यबा॑हवे॒ सेना॒न्ये दि॒शाञ्च॑ पतये॒ नमः॑ । (पार्श्वार्थाभ्यां नमः) । 17

विज्यं॑ धनुः॑ कप॒र्दिनो॑ वि॒शल्यो॑ बा॒णवा॑ ७ उ॒त ।

अने॑शन्नस्येष॒व आ॒भुरस्य॑ निष॒ङ्गथिः॑ । (जठराय नमः) । 18

हि॒रण्यग॑र्भ॒ स्सम॑वर्तता॒ग्रे भू॒तस्य॑ जा॒तः प॒तिरेक॑ आसीत् । सदा॑धार  
पृथि॒वीं द्यामु॑तेमां कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ वि॒धेम॑ । (नाभ्यै नमः) । 19

मी॒ढुष्ट॑म॒ शिव॑तम॒ शिवो॑ नस्सु॒मना॑ भव । पर॒मे वृ॒क्ष आ॑युधं नि॒धाय॑  
कृ॒त्तिं वँ॑सान॒ आच॑र पिना॒कं बिभ्र॑दागहि । (कठ्यै नमः) । 20

ये भू॒ताना॑-मधि॒पतयो॑ वि॒शिखा॑सः कप॒र्दिनः॑ ।

तेषा॑ ७ सहस्र॒योज॑ने॒ ऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि । (गुह्याय नमः) । 21

ये अ॒न्नेषु॑ वि॒विद्ध्य॑न्ति पा॒त्रेषु॑ पिब॒तो जना॑न् ।

तेषा॑ ७ सहस्र॒योज॑ने॒ ऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि । (अण्डाभ्यां नमः) । 22

स शि॒रा जा॑तवे॒दा अ॒क्षरं॑ पर॒मं प॒दं । वेदा॑ना ७ शि॒रसि॑ मा॒ता  
आ॒युष्म॑न्तं करोतु मां । (अपानाय नमः) । 23

मा नो॑ म॒हान्त॑मु॒त मा नो॑ अ॒र्भकं॑ मा न उ॒क्षन्त॑मु॒त मा न उ॒क्षितं॑ ।  
मा नो॑ व॒धीः पि॒तरं॑ मो॒त मा॒तरं॑ प्रि॒या मा न॑स्तनु॒वो रु॒द्र री॒रिषः॑ ।

(ऊरुभ्यां नमः) । 24

ए॒ष ते॑ रु॒द्र भा॒गस्तं॑ जु॒षस्व॑ ते॒नाव॑से॒न प॒रो मू॒जव॑तोऽती॒ह्य  
व॒तत॑धन्वा पि॒नाक॑हस्तः कृ॒त्तिवा॑साः ॥ (जा॒नुभ्यां॑ नमः) 25

स॒ꣳसृ॒ष्टजि॑त् सो॒मपा॑ बा॒हुश॑र्द्ध्यूर्ध्वध॑न्वा प्र॒तिहि॑ताभि-रस्ता ॥  
बृ॒हस्प॑ते परि॒ दीया॑ रथे॒न रक्षो॑हाऽमि॒त्राꣳ अ॒पबा॑धमानः । (जं॒घाभ्यां॑ नमः) 26

वि॒श्वं भू॑तं भु॒वनं चि॒त्रं बहु॑धा जा॒तं जा॑यमानं च॒ यत् ।  
सर्वो॑ ह्येष रु॒द्र-स्त॑स्मै रु॒द्राय॑ नमो अस्तु ॥ (गुल्फा॑भ्यां नमः) 27

ये प॒थां प॑थिरक्षय ऐ॒लबृ॑दा यव्यु॒धः ।  
तेषांꣳ स॒हस्र॑यो॒जने॑ ऽव॒धन्वा॑नि तन्म॒सि । (पा॒दाभ्यां॑ नमः) । 28

अ॒र्ध्यवो॑चदधि॒वक्ता॑ प्रथ॒मो दै॒व्यो भि॒षक् । अ॒हीꣳश्च॑ सर्वा॒न्  
जं॒भय॑न् थ्सर्वा॒श्च या॑तु॒धान्यः॑ । (क॒वचा॑य हुं) । 29

नमो॑ बि॒ल्मिने॑ च क॒वचि॑ने च॒ नमः॑ श्रु॒ताय॑ च श्रु॒तसे॒नाय॑ च ।  
(उ॒पक॒वचा॑य हुं) 30

नमो॑ अस्तु नी॒लग्री॑वाय स॒हस्रा॑क्षाय मी॒ढुषे॑ । अथो॒ ये अ॒स्य  
स॒त्वानो॑ऽहं तेभ्योऽक॒रन्न॑मः । (ने॒त्रत्र॑याय वौषट्) 31

प्र॒मुञ्च॑ ध॒न्व॒न॒स्त्व॒-मु॒भयो॒-रा॒र्त्तियोज्या॑ ।

याश्च॑ ते॒ ह॒स्त॒ इ॒षवः॑ प॒रा ता॑ भ॒गवो॑ व॒प । (अ॒स्त्राय॑ फट्) 32

य ए॒ताव॑न्तश्च॒ भूया॑ँ॒सश्च॑ दि॒शो रु॒द्रा वि॑त॒स्थिरे॑ ।

तेषा॑ँ॒ सह॑स्र॒योज॑ने॒ ऽव॒ध॒न्वा॒नि त॑न्म॒सि । (इति॑ दि॒ग्बन्धः॑) 33

-----इति प्रथम न्यासः-----

(शिखादि अस्त्रपर्यन्तं एकत्रिंशदंगन्यासः दिग्बन्ध सहितः प्रथमः)

---



## 6 द्वितीय न्यासः

(ओं नमो भगवते रुद्रायेति नमस्कारान् न्यसेत्)

ओं नमः (मूर्द्ध्नि) ।

नं नमः (नासिकाग्रे) ।

मों नमः (ललाटाय) ।

भं नमः (मुखाय) ।

गं नमः (कण्ठाय) ।

वं नमः (हृदयाय) ।

तें नमः (दक्षिण हस्ताय) ।

रुं नमः (वाम हस्ताय) ।

द्रां नमः (नाभ्यै) ।

यं नमः (पादाभ्यां) ॥

-----इति द्वितीय न्यासः-----

मूर्द्धादि पादान्तं दशांग न्यासः द्वितीयः

---

## 7 तृतीयन्यासः

सद्यो॑ जा॒तं प्र॑पद्यामि सद्यो॑ जा॒ताय॑ वै नमो॑ नमः॑ । भवे॑ भवे॑ नाति॑भवे॑  
भव॑स्व मां । भवोद्भवाय॑ नमः॑ ॥ (पादाभ्यां नमः) । 1

वाम॑दे॒वाय॑ नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॑ नमः॑ श्रे॒ष्ठाय॑ नमो॑ रु॒द्राय॑ नमः॑ का॒लाय॑ नमः॑  
कल॑विक॒रणाय॑ नमो॑ बल॑विक॒रणाय॑ नमो॑ बलाय॑ नमो॑ बल॑प्रमथ॒नाय॑  
नम॑ स्सर्व॑भू॒तद॑मनाय॑ नमो॑ मनो॑न्मनाय॑ नमः॑ । (ऊरुभ्यां नमः) । 2

अ॒घो॒रेभ्यो॑ ऽथ॒घो॒रेभ्यो॑ घोर॑घोर॒तरे॑भ्यः । सर्वे॑भ्यः सर्व॑ शर्वे॑भ्यो॑ नम॑स्ते  
अस्तु॑ रु॒द्ररू॑पेभ्यः ॥ (हृदयाय नमः) । 3

तत्पु॑रुषाय॑ वि॒द्महे॑ महा॒देवाय॑ धीमहि॑ ।  
तन्नो॑ रु॒द्रः प्र॑चोदयात् ॥ (मुखाय नमः) । 4

ई॒शानः॑ सर्व॑विद्याना-मीश्वर॑सर्व॑ भू॒तानां॑ ब्रह्मा॑धिपतिर्  
ब्रह्म॑णोऽधिपतिर् ब्रह्मा॑ शि॒वो मे॑ अस्तु॑ सदा॑शि॒वो ॥  
हंस॑ हंस॑ । (मूर्ध्ने नमः) । 5

## 7.1 हंस गायत्री

अस्य श्री हंसगायत्री महामन्त्रस्य, अव्यक्त परब्रह्म ऋषिः,

अनुष्टुप् छन्दः, परमहंसो देवता ।

हंसां बीजं, हंसीं शक्तिः । हंसूं कीलकं ।

परमहंस प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ 1

हंसां अंगुष्ठाभ्यां नमः । हंसीं तर्जनीभ्यां नमः ।

हंसूं – मध्यमाभ्यां नमः । हंसै – अनामिकाभ्यां नमः ।

हंसौ – कनिष्ठिकाभ्यां नमः । हंसः – करतल करपृष्ठाभ्यां नमः । 2

हंसां – हृदयाय नमः । हंसीं – शिरसे स्वाहा ।

हंसूं – शिखायै वषट् । हंसै – कवचाय हुं ।

हंसौ – नेत्रत्रयाय वौषट् । हंसः – अस्त्राय फट् ॥

ओं भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः । 3

॥ ध्यानं ॥

गमागमस्थं गमनादिशून्यं चिद् रूपदीपं तिमिरापहारं ।

पश्यामि ते सर्वजनान्तरस्थं नमामि हंसं परमात्मरूपं ॥ 4

हंस हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि । तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥ 5

(इति त्रिवारं जपित्वा)

हंस हंसेति यो ब्रूयाद् हंसो (ब्रूयाद्धंसो) नाम सदाशिवः ।

एवं न्यास विधिं कृत्वा ततः संपुटमारभेत् ॥ 6

## 7.2 दिक् संपुटन्यासः

देवता – इन्द्रः

दिक् – पूर्व

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । लं ।

त्रा॑ता॒रमि॒न्द्र-मवि॑ता॒र-मि॒न्द्र॒ॐ हवे॑हवे सु॒हव॒ॐ शू॒रमि॒न्द्रं॑ ॥

हु॒वे नु श॒क्रं पु॒रुहू॑तमि॒न्द्र॒ॐ स्व॒स्ति नो म॒घवा धा॒त्विन्द्रः॑ ॥

(TS 1.6.12.5)

लं इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतये ऐरावत वाहनाय सांगाय सायुधाय  
सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः । लं इन्द्राय नमः ।

पूर्व दिग्भागे (ललाटस्थाने) इन्द्रः सुप्रीतो वरदो भवतु । 1

देवता– अग्निः

दिक्– दक्षिणपूर्व (आग्नेय दिक्)

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । रं ।

त्वन्नो॑ अ॒ग्ने वरु॑णस्य वि॒द्वान् दे॒वस्य॑ हे॒डोऽव॑ यासि॒सीष्ठाः॑ ।

यजि॑ष्ठो वह्नि॒तमः॑ शोशु॒चानो॑ वि॒श्वा द्वे॒षा॒ॐ सि प्र॑मु॒मुग्द्ध्य॒स्मत् ॥

(T.S.2.5.12.3)

रं अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतये अजवाहनाय सांगाय सायुधाय  
सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः । रं अग्नये नमः ।

आग्नेय दिग्भागे (नेत्रस्थाने) अग्निः सुप्रीतो वरदो भवतु । 2

देवता- यमः

दिक् - दक्षिणं

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । हं ।

सु॒गन्तः॑ पन्था॒मभयं॑ कृ॒णोतु॑ । यस्मि॒न्नक्ष॑त्रे य॒म ए॒ति रा॒जा ॥

यस्मि॒न्नेन॑-म॒भ्यषि॑ञ्चन्त दे॒वाः । तद॒स्य चि॒त्रं ह॒विषा॑ य॒जाम ।

अप॑ पा॒प्मानं॑ भ॒रणी॑र्भरन्तु । (T.B.3.1.2.11)

हं यमाय दण्डहस्ताय धर्माधिपतये महिषवाहनाय सांगाय सायुधाय

सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः । हं यमाय नमः ।

दक्षिणदिग्भागे (कर्णस्थाने) यमः सुप्रीतो वरदो भवतु । 3

देवता- निर्ऋति

दिक् - दक्षिण पश्चिमं

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । षं ।

असु॑न्वन्त-मय॑जमान-मिच्छ॑ स्तेन॒स्येत्या॑म् तस्कर॒स्यान्वेषि॑ ।

अन्य॑-मस्म-दिच्छ॑ सा त इत्या॑ नमो॑ देवि निर्ऋ॒ते तुभ्य॑मस्तु ॥

TS 4.2.5.4)

षं निर्ऋतये खड्गहस्ताय रक्षोधिपतये नरवाहनाय सांगाय सायुधाय

सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः ।

षं निर्ऋतये नमः । नैर्ऋत दिग्भागे (मुखस्थाने) निर्ऋतिः सुप्रीतो

वरदो भवतु । 4

देवता- वरुणः

दिक् - पश्चिमं

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । वं ।

तत्त्वा॑ यामि॒ ब्रह्म॑णा॒ वन्द॑मान-स्तदाशास्ते॑ यज॑मानो ह॒विर्भिः॑ ।

अहे॑डमानो वरुणे॒ह बो॒द्ध्युरु॑शा॒ऽस मा न॒ आयुः॑ प्र मोषीः ॥

TS 2.1.11.6)

वं वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय सांगाय सायुधाय

सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः । वं वरुणाय नमः ।

पश्चिमदिग्भागे (बाहुस्थाने) वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु । 5

देवता - वायुः

दिक्- उत्तर पश्चिमं

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । यं ।

आ नो॑ नि॒युद्धि॑-॒शति॑नी-भि॒रध्व॑रं । स॒हस्रि॑णी॒भिरु॑पयाहि य॒ज्ञं ।

वायो॑ अ॒स्मिन् ह॒विषि॑ मादयस्व । यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभि॑ स्सदा॒ नः ॥

(T.B.2.8.1.2)

यं वायवे सांकुशध्वज हस्ताय प्राणाधिपतये मृगवाहनाय सांगाय

सायुधाय सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः ।

यं वायवे नमः । वायव्य दिग्भागे (नासिकास्थाने) वायुः

सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ 6

देवता – सोमः

दिक् – उत्तरं

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । सं ।

वय॑ꣳ सोम॑ व्र॒ते तव॑ ।

मन॑स्त॒नू-षु बिभ्र॑तः । प्र॒जाव॑न्तो अशीमहि ॥ (T.B.2.4.2.7)

सं सोमाय॑ अमृतकलश॑ हस्ताय॑ नक्षत्राधिपतये॑ अश्ववाहनाय॑  
सांगाय॑ सायुधाय॑ सशक्ति॑ परिवाराय॑ उमामहेश्वर॑ पार्षदाय॑ नमः ।

सं सोमाय॑ नमः । उत्तर दिग्भागे (हृदयस्थाने) सोमः

सुप्रीतो॑ वरदो॑ भवतु ॥ 7

देवता- ईशानः

दिक् –उत्तर पूर्वं

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । शं ।

तमी॑शानं॑ (तमी॑शानं॑) जग॑त-स्त॒स्थुष॑स्पतिं॑ ।

धियं॑जिन्वमवसे॑ हूमहे॑ वयं॑ । पू॒षा नो॑ यथा॑ वेद॑ साम॑सद् वृ॒धे  
रक्षि॑ता पा॒युरद॑ब्धः स्वस्त्यै॑ ॥ (RV.1.89.5)

शं ईशानाय॑ शूलहस्ताय॑ विद्याधिपतये॑ वृषभवाहनाय॑ सांगाय॑ सायुधाय॑  
सशक्ति॑ परिवाराय॑ उमामहेश्वर॑ पार्षदाय॑ नमः ।

शं ईशानाय॑ नमः । ऐशान दिग्भागे (नाभिस्थाने) ईशानः सुप्रीतो  
वरदो॑ भवतु ॥ 8

देवता- ब्रह्म

दिक् - ऊर्ध्वं

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । अं ।

अस्मे॑ रु॒द्रा मे॒हना॑ पर्व॒तासो॑ वृ॒त्रह॑त्ये भर॒ हूतौ॑ सजोषाः॑ ।

य इ॒शंस॑ते स्तु॒वते॑ धायि॑ प॒ञ्च इन्द्र॑ज्येष्ठा अ॒स्मा अव॑न्तु दे॒वाः ॥

(RV.8.63.1.2)

अं ब्रह्मणे पद्महस्ताय लोकाधिपतये हंसवाहनाय सांगाय सायुधाय

सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः । अं ब्रह्मणे नमः ।

ऊर्ध्वदिग्भागे (मूर्धस्थाने) ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ 9

देवता-विष्णुः

दिक् - अधो दिक्

ओं भूर्भुवस्सुवरो॑ । ह्रीं ।

स्यो॒ना पृ॒थिवि॑ भवा॑ ऽनृ॒क्षरा॑ नि॒वेश॑नी । यच्छा॑ नः शर्म॑ सप्र॒थाः ॥

(TA. 6.1.10)

ह्रीं विष्णवे चक्रहस्ताय नागाधिपतये गरुडवाहनाय सांगाय सायुधाय

सशक्ति परिवाराय उमामहेश्वर पार्षदाय नमः । ह्रीं विष्णवे नमः ।

अधो दिग्भागे (पादस्थाने) विष्णुस्सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ 10



### 7.3 षोडशांग रौद्रीकरणं

(TS 1.3.3.1 )

वि॒भूर॑सि प्र॒वाह॑णो

रौ॒द्रे॒णानी॑केन पा॒हि मा॑ऽग्ने पि॒पृ॒हि मा॒ मा मा॑ हि॒ऽसीः । 1

व॒हिर॑सि ह॒व्यवा॑हनो

रौ॒द्रे॒णानी॑केन पा॒हि मा॑ऽग्ने पि॒पृ॒हि मा॒ मा मा॑ हि॒ऽसीः । 2

श्वा॒त्रो॑सि प्र॒चे॒ता

रौ॒द्रे॒णानी॑केन पा॒हि मा॑ऽग्ने पि॒पृ॒हि मा॒ मा मा॑ हि॒ऽसीः । 3

तु॒थो॑सि वि॒श्ववे॑दा

रौ॒द्रे॒णानी॑केन पा॒हि मा॑ऽग्ने पि॒पृ॒हि मा॒ मा मा॑ हि॒ऽसीः । 4

उ॒शि॒ग॒सि क॒वी

रौ॒द्रे॒णानी॑केन पा॒हि मा॑ऽग्ने पि॒पृ॒हि मा॒ मा मा॑ हि॒ऽसीः । 5

अ॒ंघा॑रि॒रसि॑ ब॒ंभा॑री

रौ॒द्रे॒णानी॑केन पा॒हि मा॑ऽग्ने पि॒पृ॒हि मा॒ मा मा॑ हि॒ऽसीः । 6

अ॒व॒स्यु॑र॒सि दु॒वस्वा॑न्

रौ॒द्रे॒णानी॑केन पा॒हि मा॑ऽग्ने पि॒पृ॒हि मा॒ मा मा॑ हि॒ऽसीः । 7

शु॒न्ध्यूर॑सि॒ मा॒र्जा॒ली॒यो

रौ॒द्रे॒णा॒नी॒के॒न पा॒हि मा॒ग्ने पि॒पृ॒हि मा॒ मा॒ मा॒ हि॒॒सीः । 8

स॒म्रा॒ड॑सि॒ कृ॒शानू॑

रौ॒द्रे॒णा॒नी॒के॒न पा॒हि मा॒ग्ने पि॒पृ॒हि मा॒ मा॒ मा॒ हि॒॒सीः । 9

प॒रि॒षद्यो॑सि॒ पव॑मानो

रौ॒द्रे॒णा॒नी॒के॒न पा॒हि मा॒ग्ने पि॒पृ॒हि मा॒ मा॒ मा॒ हि॒॒सीः । 10

प्र॒तक्वा॑सि॒ नभ॑स्वान्

रौ॒द्रे॒णा॒नी॒के॒न पा॒हि मा॒ग्ने पि॒पृ॒हि मा॒ मा॒ मा॒ हि॒॒सीः । 11

असं॑मृष्टो॒सि ह॒व्य॒सू॒दो

रौ॒द्रे॒णा॒नी॒के॒न पा॒हि मा॒ग्ने पि॒पृ॒हि मा॒ मा॒ मा॒ हि॒॒सीः । 12

ऋ॒त॒धा॒मा॒सि सु॒व॒ज्यो॑ती

रौ॒द्रे॒णा॒नी॒के॒न पा॒हि मा॒ग्ने पि॒पृ॒हि मा॒ मा॒ मा॒ हि॒॒सीः । 13

ब्र॒ह्म॒ज्यो॑ति॒रसि॒ सु॒व॒र्द्धा॑मा

रौ॒द्रे॒णा॒नी॒के॒न पा॒हि मा॒ग्ने पि॒पृ॒हि मा॒ मा॒ मा॒ हि॒॒सीः । 14

अ॒जो॑स्येकपाद्

रौ॒द्रे॒णा॒नी॒केन॑ पा॒हि मा॑ग्ने पि॒पृ॒हि मा॒ मा मा॑ हि॒ंसीः । 15

अ॒हि॒र॒सि बु॒द्धि॒न्यो

रौ॒द्रे॒णा॒नी॒केन॑ पा॒हि मा॑ग्ने पि॒पृ॒हि मा॒ मा मा॑ हि॒ंसीः । 16

त्वगस्थिगतैः सर्वपापैः प्रमुच्यते । सर्वभूतेष्वपराजितो भवति ।

तथो भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-यक्ष-यमदूत-शाकिनी-

डाकिनी-सर्प-श्वापद-वृश्चिक-तस्कराद् उपद्रवाद् उपघाताः ।

सर्वे (ग्रहाः) ज्वलन्तं पश्यन्तु । मां रक्षन्तु ।

यजमानं सकुटुम्बं रक्षन्तु । सर्वान् महाजनान् रक्षन्तु ।

-----इति तृतीयः न्यासः-----

पादाति मूर्द्धधान्तं पञ्चांग न्यासः तृतीयः

---

## 8 चतुर्थ न्यासः

### 8.1 मनो ज्योतिः

मनो॑ ज्योति॑ र्जुषता॑-माज्यं॑ विच्छिन्नं॑ यज्ञं॑ समिमं॑ दधातु ।  
या इ॒ष्टा उ॒षसो॑ नि॒मुच॑श्च तास्सन्दधामि ह॒विषा॑ घृ॒तेन॑ । (TS 1.5.10.2)

(गुह्याय नमः) । 1

अ॒बो॒द्ध्य॒ग्निः॑ स॒मिधा॑ ज॒नानां॑ प्र॒तिधे॒नु-मि॒वाय॑ती-मु॒षासं॑ ।  
य॒ह्वा इ॒व प्र॒ वया॑-मु॒ज्जिहा॑नाः प्र॒ भान॑वः सि॒स्रते॑ नाक॒मच्छ॑ ।

(नाभ्यै नमः) । 2 (TS 4.4.4.1 & 4.2)

अ॒ग्नि॒र्मूर्द्धा॑ दि॒वः क॒कुत्प॑तिः पृ॒थि॒व्या अ॒यं ।

अ॒पां रे॒तांसि॑ जि॒न्वति॑ । (हृदयाय नमः) । 3 (TS 1.5.5.1)

मू॒र्द्धानं॑ दि॒वो अ॒रतिं॑ पृ॒थि॒व्या वै॒श्वान॑र-मृ॒ताय॑ जा॒तम॒ग्निं ।  
क॒विं स॒म्राज॑-म॒तिथिं॑ ज॒नाना॑-मा॒सन्ना॑ पा॒त्रं ज॒नय॑न्त दे॒वाः ।

(कण्ठाय नमः) । 4 (TS 1.4.13.1)

म॒र्माणि॑ ते॒ वर्म॑भि इ॒च्छाद॑यामि सोम॑स्त्वा रा॒जा ऽमृ॑तेना॒भिव॑स्तां ।  
उ॒रोर्व॑री॒यो व॑रि॒वस्ते॑ अस्तु॒ जय॑न्तं॒ त्वाम॑नु म॒दन्तु॑ दे॒वाः । (TS 4.6.4.5)

(मुखाय नमः) । 5

जा॒तवे॒दा यदि॑ वा पा॒वको॑ऽसि । वै॒श्वा॒नरो॑ यदि॑ वा वैद्यु॒तोऽसि॑ ।  
शं प्र॒जाभ्यो॑ यज॒मानाय॑ लो॒कं । ऊ॒र्जं पु॒ष्टिं द॑द॒द्भ्याव॑वृ॒थस्व ॥  
(शिर॑से नमः) ॥ 6 (TB 3.10.5.1)

## 8.2 आत्मरक्षा

(T.B.2.3.11.1 to T.B.2.3.11.4) for full para "8.2"

ब्र॒ह्मा॒त्म॒न्वद॑सृजत । तद॑का॒मय॑त । स॒मा॒त्म॒ना प॒द्येये॑ति ।  
आ॒त्म॒न्ना-॒त्म॒न्नित्या॑म॒न्त्रय॑त । तस्मै॑ द॒श॒म॒ं हू॒तः प्र॑त्य॒शृ॒णोत् ।  
स द॒श॒हू॒तोऽभ॑वत् । द॒श॒हू॒तो ह॒ वै ना॒मैषः॑ ।  
तं वा॑ ए॒तं द॒श॒हू॒त॒ं सन्तं॑ ।  
द॒श॒हो॒तेत्या॑ च॒क्षते॑ प॒रोक्षे॑ण । प॒रोक्ष॑प्रि॒या इ॒व हि॒ दे॒वाः ॥  
आ॒त्म॒न्ना-॒त्म॒न्नित्या॑म॒न्त्रय॑त । तस्मै॑ स॒प्त॒म॒ं हू॒तः प्र॑त्य॒शृ॒णोत् ।  
स स॒प्त॒हू॒तोऽभ॑वत् । स॒प्त॒हू॒तो ह॒ वै ना॒मैषः॑ ।  
तं वा॑ ए॒त॒ं स॒प्त॒हू॒त॒ं सन्तं॑ । स॒प्त॒हो॒तेत्या॑ च॒क्षते॑ प॒रोक्षे॑ण ।  
प॒रोक्ष॑प्रि॒या इ॒व हि॒ दे॒वाः ॥  
आ॒त्म॒न्ना-॒त्म॒न्नित्या॑म॒न्त्रय॑त । तस्मै॑ ष॒ष्ठ॒ं हू॒तः प्र॑त्य॒शृ॒णोत् ।  
स ष॒ड्हू॒तोऽभ॑वत् । ष॒ड्हू॒तो ह॒ वै ना॒मैषः॑ । तं वा॑ ए॒त॒ं ष॒ड्हू॒त॒ं सन्तं॑ ।  
ष॒ड्हो॒तेत्या॑च॒क्षते॑ प॒रोक्षे॑ण । प॒रोक्ष॑प्रि॒या इ॒व हि॒ दे॒वाः ॥

## शिव स्तुति

आ॒त्म॒न्ना-॒त्म॒न्नित्या॒मन्त्र॑यत । तस्मै॑ पञ्च॒म॒ꣳ हू॒तः प्र॒त्य॒शृ॒णो॒त् ।  
स पञ्च॒हू॒तोऽभ॑वत् । पञ्च॒हू॒तो ह॒ वै ना॒मैषः॑ ।  
तं वा॑ ए॒तं पञ्च॒हू॒त॒ꣳ सन्तं॑ । पञ्च॒हो॒तेत्या॑चक्षते प॒रोक्षे॑ण ।  
प॒रोक्ष॑प्रिया इ॒व हि॒ दे॒वाः ॥

आ॒त्म॒न्ना-॒त्म॒न्नित्या॒मन्त्र॑यत । तस्मै॑ चतु॒र्थ॒ꣳ हू॒तः प्र॒त्य॒शृ॒णो॒त् ।  
स चतु॒र्हू॒तोऽभ॑वत् । चतु॒र्हू॒तो ह॒ वै ना॒मैषः॑ ।  
तं वा॑ ए॒तं चतु॒र्हू॒त॒ꣳ सन्तं॑ । चतु॒र्हो॒तेत्या॑चक्षते प॒रोक्षे॑ण ।  
प॒रोक्ष॑प्रिया इ॒व हि॒ दे॒वाः ॥

तम॑ब्रवीत् । त्वं वा॑ मे नेदि॒ष्ठ॒ꣳ हू॒तः प्र॒त्य॒श्रौ॒षीः॑ ।  
त्वयै॑ना॒नाख्या॑तार इति । तस्मा॑न्नु॒हैना॒ꣳ-श्चतु॒र्हो॒तार॑ इत्या॑चक्षते ।  
तस्मा॑च्छ्रू॒षुः पु॒त्राणा॒ꣳ हृ॒द्यत॑मः । नेदि॒ष्ठो हृ॒द्यत॑मः ।  
नेदि॒ष्ठो ब्र॑ह्म॒णो भ॑वति । य ए॒वं वा॑ वेद ॥ (आ॒त्म॒ने नमः॑)

-----इति चतुर्थ न्यासः-----

**गुह्यादि मस्तकान्त षडंगन्यासः चतुर्थः**

## 9 पञ्चम न्यासः

### 9.1 शिव संकल्पः

(Rig veda Khila Kaandam , 4<sup>th</sup> Capter , 11 Suktam – for full 9.1)

येनेदं॑ भू॒तं भु॒वनं॑ भविष्यत् परिगृहीत-ममृतेन॑ सर्वं॑ । येन॑ यज्ञस्तायते॑  
(यज्ञस्त्रायते) सप्त॑ होता॒ तन्मे॑ मनः॑ शिवसंकल्पमस्तु ॥ 1

येन॑ कर्माणि॑ प्रचरन्ति॑ धीरा॑ यतो॑ वाचा॑ मनसा॑ चारुयन्ति॑ ।  
यथ् स॒म्मित॒मनु॑ सँयन्ति॑ प्राणिनस्तन्मे॑ मनः॑ शिवसंकल्पमस्तु ॥ 2

येन॑ कर्माण्यपसो॑ मनीषिणो॑ यज्ञे॑ कृण्वन्ति॑ विदथेषु॑ धीराः॑ ।  
यदपूर्वं॑ यक्ष्मन्तः॑ प्रजानां॑ तन्मे॑ मनः॑ शिवसंकल्पमस्तु ॥ 3

यत्प्रज्ञान-मु॒त चे॒तो धृ॒तिश्च॑ यज्ज्योति-रन्तरमृतं॑ प्रजासु॑ ।  
यस्मान्न॑ ऋते॑ किञ्चन॑ कर्म॑ क्रियते॑ तन्मे॑ मनः॑ शिवसंकल्पमस्तु ॥ 4

सुषारथि-रश्वा॑निव॒ यन्मनु॑ष्यान् नेनीयते-ऽभीशु॑भिर्वाजिन॑ इव ।  
हृत्प्रतिष्ठं॑ यदजिरं॑ जविष्ठं॑ तन्मे॑ मनः॑ शिवसंकल्पमस्तु ॥ 5

यस्मिन् ऋच-स्साम-यजूं॑षि यस्मिन् प्रतिष्ठिता॑ रथनाभाविवाराः॑ ।  
यस्मिञ्चित्तञ् सर्वमोतं॑ प्रजानां॑ तन्मे॑ मनः॑ शिवसंकल्पमस्तु ॥ 6

यदत्र॑ षष्ठं॑ त्रिशतञ् सुवीरं॑ यज्ञस्य॑ गुह्यं॑ नव॑ नावमाय्यं॑ ।  
दशपञ्चत्रिंशतं॑ यत्परं॑ च॑ तन्मे॑ मनः॑ शिवसंकल्पमस्तु ॥ 7

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।  
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 8

येनेदं विश्वं जगतो बभूव ये देवापि महतो जातवेदाः ।  
तदेवाग्नि-स्तमसो ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 9

येन द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षं च ये पर्वताः प्रदिशो दिशश्च ।  
येनेदं जगद् व्याप्तं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 10

ये मनो हृदयं ये च देवा ये दिव्या आपो ये सूर्यरश्मिः ।  
ते श्रोत्रे चक्षुषी सञ्चरन्तं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 11

अचिन्त्यं चाप्रमेयं च व्यक्ताव्यक्तं परं च यत् ।  
सूक्ष्मात् सूक्ष्मतरं ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 12

एका च दश शतं च सहस्रं चायुतं च नियुतं च प्रयुतं  
चार्षुदं च न्यर्षुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तश्च परार्धश्च तन्मे मनः  
शिवसंकल्पमस्तु ॥ 13

ये पञ्चपञ्च दश शतं सहस्र-मयुत-न्यर्षुदं च ।  
ते अग्निचित्येष्टकास्तं शरीरं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 14



वे॒दा॒ह॒मे॒तं॑ पु॒रु॒षं॑ म॒हान्त॑-मा॒दि॒त्य-व॒र्णं॑ तम॒सः॑ पर॒स्तात् ।  
यस्य॑ यो॒निं॑ परि॒पश्य॑न्ति॒ धी॒रास्त॑न्मे॒ मनः॑ शि॒वसं॑क॒ल्पम॑स्तु ॥ 15

यस्ये॒दं॑ धी॒राः पु॒नन्ति॑ क॒वयो॑ ब्र॒ह्माण॑मे॒तं त्वा॑ वृ॒णत॑ इ॒न्दुं॑ ।  
स्था॒वरं॑ जंग॒मं द्यौ॑राका॒शं तन्मे॑ मनः॑ शि॒वसं॑क॒ल्पम॑स्तु ॥ 16

परा॑त् पर॒तरं॑ चै॒व यत्॑ परा॒श्चै॒व यत्प॑रं ।  
यत्प॑रात् परतो॒ ज्ञे॒यं तन्मे॑ मनः॑ शि॒वसं॑क॒ल्पम॑स्तु ॥ 17

परा॑त् पर॒तरो॑ ब्र॒ह्मा तत्प॑रात् परतो॒ हरिः॑ ।  
तत्प॑रात् परतो॒ ऽधी॑शस्तन्मे॒ मनः॑ शि॒वसं॑क॒ल्पम॑स्तु ॥ 18

या वे॒दादि॑षु गा॒यत्री॑ स॒र्वव्या॑पि म॒हेश्व॑री ।  
ऋग्-य॒जु-स्सामा॑-थर्वै॒श्च तन्मे॑ मनः॑ शि॒वसं॑क॒ल्पम॑स्तु ॥ 19

यो वै दे॒वं म॒हादे॒वं प्र॑ण॒वं पर॑मेश्व॒रं ।  
यः स॒र्वे स॒र्व वेदै॑श्च तन्मे॒ मनः॑ शि॒वसं॑क॒ल्पम॑स्तु ॥ 20

प्र॒यतः॑ प्र॒णवो॑ङ्का॒रं प्र॑ण॒वं पु॒रुषो॑त्त॒मं ।  
ओं का॒रं प्र॑ण॒वात्मा॑नं तन्मे॒ मनः॑ शि॒वसं॑क॒ल्पम॑स्तु ॥ 21

योऽसौ॑ स॒र्वेषु॑ वे॒देषु॑ प॒ठ्यते॑ ह्यज॒ ईश्व॑रः ।  
अ॒कायो॑ निर्गु॒णो ह्या॒त्मा तन्मे॑ मनः॑ शि॒वसं॑क॒ल्पम॑स्तु ॥ 22

गो॒भि॒ र्जु॒ष्टं॑ ध॒नेन॑ ह्या॒युषा॑ च॒ ब॒लेन॑ च ।

प्र॒जया॑ प॒शुभिः॑ पु॒ष्करा॒क्षं॑ तन्मे॒ मनः॑ शि॒वसं॑क॒ल्पम॑स्तु ॥ 23

कै॒लास॑ शि॒खरे॑ र॒म्ये शं॑करस्य शि॒वा॒लये॑ ।

दे॒वता॑स्तत्र॒ मोद॑न्ते तन्मे॒ मनः॑ शि॒वसं॑क॒ल्पम॑स्तु ॥ 24

त्र्यं॑बकं॒ य॒जाम॑हे सु॒गन्धिं॑ पु॒ष्टि॒वर्द्ध॑नं । उ॒र्वारु॑कमि॒व ब॑न्ध॒नान्

मृ॒त्यो-र्मु॑क्षी॒य माऽमृ॑ता॒त् तन्मे॒ मनः॑ शि॒वसं॑क॒ल्पम॑स्तु ॥ 25

वि॒श्वत॑-श्चक्षु॒रुत॑ वि॒श्वतो॑ मु॒खो वि॒श्वतो॑ ह॒स्त उ॒त वि॒श्वत॑स्पात् ।

सं बा॒हुभ्यां॑ नम॒ति संप॑तत्रै॒र्द्यावा॑पृथि॒वी ज॒नय॑न् दे॒व ए॒कस्त॑न्मे॒ मनः॑

शि॒वसं॑क॒ल्पम॑स्तु ॥ 26

च॒तुरो॑ वे॒दान॑धी॒यीत॑ स॒र्वशा॑स्त्रम॒यं वि॑दुः ।

इति॑हा॒सपु॒राणा॑नां तन्मे॒ मनः॑ शि॒वसं॑क॒ल्पम॑स्तु ॥ 27

मा नो॑ म॒हान्त॑मु॒त मा नो॑ अ॒र्भकं॑ मा न॒ उक्ष॑न्तमु॒त मा न॑ उ॒क्षितं॑ ।

मा नो॑ व॒धीः पि॒तरं॑ मो॒त मा॒तरं॑ प्रि॒या मा न॑स्त॒नुवो॑ रु॒द्र री॒रिष॑स्तन्मे॒

मनः॑ शि॒वसं॑क॒ल्पम॑स्तु ॥ 28

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।  
वीरान्मानो रुद्र भामितोवधीर्हविष्मन्तो नमसा विधेम ते तन्मे मनः  
शिवसंकल्पमस्तु ॥ 29

ऋतं सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलं । ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं  
विश्वरूपाय वै नमो नमस्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 30

कद् रुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टमाय तव्यसे । वोचेम शन्तम हृदे ।  
सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ 31

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमत स्सुरुचो वेन आवः ।  
स बुद्धिनया उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि-मसतश्च विवः । 32

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्-राजा जगतो बभूव ।  
य ईशे अस्य द्विपद-श्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम तन्मे मनः  
शिवसंकल्पमस्तु ॥ 33

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।  
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम तन्मे मनः  
शिवसंकल्पमस्तु ॥ 34

## शिव स्तुति

यो रुद्रो अ॒ग्नौ यो अ॒प्सु य ओष॑धीषु यो रुद्रो विश्वा भुवना ऽऽवि॒वेश  
तस्मै रु॒द्राय॑ नमो अस्तु तन्मे मनः शिवसं॑कल्पमस्तु ॥ 35

गन्ध॑द्वारां दु॒राध॑र्षां नित्यपु॑ष्टां करी॒षिणीं॑ । ईश्वरी॑ सर्व भू॒तानां॑  
तामि॒होप॑ह्वये श्रियं तन्मे मनः शिवसं॑कल्पमस्तु ॥ 36

य इदं॑ शिवसं॑कल्पं सदा ध्या॒यन्ति॑ ब्राह्म॒णाः ।  
ते परं॑ मोक्षं गमिष्यन्ति तन्मे मनः शिवसं॑कल्पमस्तु ॥ 37

(हृदयाय नमः)

### **Korvai for Shivasankalpam**

- येनेदं, येन कर्माणि, येन कर्माण्यपसो, यत् प्रज्ञानं, सुषारथिर्, यस्मिन्नृचो, यदत्र षष्ठं, यज्जाग्रतो, येनेदं, येन द्यौः पृथिवी दश ।
- ये मनो हृदय, मचिन्त्य, मेका च, ये पञ्च, वेदाहमेतं, यस्येदं धीराः, परात् परतरं चैव, परात् परतरो ब्रह्मा, या वेदादिषु, यो वै देवं दश ।
- प्रयतो, योऽसौ, गोभिर् जुष्टं, कैलास शिखरे, त्र्यम्बकं, विश्वतश्चक्षु, शत्रुरो वेदान्, मानो महान्त, म्मानस्तोक, ऋतं सत्यं दश ।
- कद् रुद्राय, ब्रह्मजज्ञानं, यः प्राणतो, य आत्मदा, यो रुद्रो, गन्धद्वारां, य इदं शिवसङ्कल्पं सप्तत्रिंशत् ॥

## 9.2 पुरुष सूक्तं

(T.A.3.12.1 to T.A.3.12.7)

स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः । स॒हस्रा॑क्षः स॒हस्र॑पात् ।  
स भूमिं॑ वि॒श्वतो॑ वृ॒त्वा । अत्य॑तिष्ठद् द॒शाङ्गु॑लं । पुरु॑ष ए॒वेद॑ सर्वं॑ ।  
यद् भू॒तं यच्च॑ भव्यं॑ । उ॒तामृ॑त॒त्वस्ये॑शानः । यद॒न्नेना॑तिरो॒हति॑ ।  
ए॒तावा॑नस्य म॒हिमा॑ । अतो॒ ज्याया॑ञ्च पू॒रुषः॑ ॥ 1  
पादो॑ऽस्य वि॒श्वा भू॒तानि॑ । त्रि॒पाद॑स्यामृ॒तन्दि॑वि ।  
त्रि॒पादूर्ध्व॑ उदै॒त् पुरु॑षः । पादो॑स्ये॒हा ऽऽभ॑वात्पुनः ।  
ततो॑ वि॒ष्वङ् व्य॑क्रामत् । सा॒श॒ना॒न॒श॒ने अ॒भि ।  
तस्मा॑द् वि॒राड् जा॑यत । वि॒राजो॑ अ॒धि पू॒रुषः॑ ।  
स जा॒तो अत्य॑रिच्यत । प॒श्चाद् भूमि॑मथो पु॒रः ॥ 2  
यत् पुरु॑षेण ह॒विषा॑ । दे॒वा य॒ज्ञम॑तन्वत ।  
वस॑न्तो अ॒स्यासी॑दाज्यं॑ । ग्री॒ष्म इ॒द्धम॑-॒श्शर॑द्ध॒विः ।  
स॒प्तास्या॑सन् परि॒धयः॑ । त्रि॒स्सप्त॑ स॒मिधः॑ कृ॒ताः ।  
दे॒वा यद् य॒ज्ञं त॑न्वा॒नाः । अब॑द्धन् पुरु॑षं प॒शुं ।  
तं य॒ज्ञं ब॒र्हिषि॑ प्रौक्षन् । पुरु॑षं जा॒तम॑ग्रतः ॥ 3

तेन देवा अयजन्त । साद्ध्या ऋषयश्च ये ।  
 तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः । संभृतं पृषदाज्यं ।  
 पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यान् । आरण्यान् ग्राम्याश्च ये ।  
 तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः । ऋचः सामानि जज्ञिरे ।  
 छन्दाँसि जज्ञिरे तस्मात् । यजुस्तस्मा दजायत ॥ 4

तस्मादश्वा अजायन्त । ये के चोभयादतः ।  
 गावो ह जज्ञिरे तस्मात् । तस्माज्जाता अजावयः ।  
 यत्पुरुषं व्यदधुः । कतिधा व्यकल्पयन् ।  
 मुखं किमस्य कौ बाहू । कावूरू पादावुच्येते ।  
 ब्राह्मणोस्य मुखमासीत् । बाहू राजन्यः कृतः ॥ 5

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः । पद्भ्याँ शूद्रो अजायतः ।  
 चन्द्रमा मनसो जातः । चक्षो-स्सूर्यो अजायत ।  
 मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च । प्राणाद् वायु-रजायत ।  
 नाभ्या आसीदन्तरिक्षं । शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।  
 पद्भ्यां भूमि दिशः श्रोत्रात् । तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥ 6

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं । आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे ।  
 सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः । नामानि कृत्वाभिवदन् । यदास्ते ॥

धा॒ता पु॒रस्ता॒द्यमु॒दा ज॒हार । श॒क्रः प्र॒विद्वान् प्र॒दिश॑श्चत॒स्रः ।  
तमे॒वं वि॒द्वान॒मृत॑ इ॒ह भ॑वति । नान्यः पन्था॒ अय॑नाय विद्यते ।  
यज्ञे॑न य॒ज्ञ-म॑यजन्त दे॒वाः । तानि॑ धर्मा॒णि प्रथ॑मान्यासन् ।  
ते ह॒ नाकं॑ महि॒मान॑स्सचन्ते । यत्र॒ पूर्वे॑ सा॒द्दया॑-स्सन्ति॑ दे॒वाः ॥ 7  
(शिरसे स्वाहा)

### 9.3 उत्तर नारायणं

(T.A.3.13.1 to T.A.3.13.2)

अ॒द्भ्यस्सं॑भूतः पृथि॒व्यै रसा॑च्च । वि॒श्वक॑र्मणः॒ सम॑वर्तताधि॑ ।  
तस्य॒ त्वष्टा॑ वि॒दध॑द् रू॒पमे॑ति । तत्पु॒रुष॑स्य॒ विश्व॑मा॒जान॑मग्रे ॥ 1  
वेदा॒हमे॒तं पु॒रुषं॑ म॒हान्तं॑ । आ॒दि॒त्यव॑र्णं॒ तम॑सः॒ पर॑स्तात् ।  
तमे॒वं वि॒द्वान॒मृत॑ इ॒ह भ॑वति । नान्यः पन्था॒ विद्य॑तेऽय॒नाय ॥ 2  
प्र॒जाप॑तिश्चरति॒ गर्भे॑ अ॒न्तः । अ॒जाय॑मानो बहु॒धा वि॑जायते ।  
तस्य॒ धीराः॒ परि॑जानन्ति॒ योनिं॑ । मरी॑चीनां प॒दमि॑च्छन्ति वे॒धसः॑ ॥ 3  
यो दे॒वेभ्य॑ आ॒तप॑ति । यो दे॒वानां॑ पु॒रोहि॑तः ।  
पूर्वो॒ यो दे॒वेभ्यो॑ जा॒तः । नमो॑ रु॒चाय॑ ब्रा॒ह्मये ॥ 4  
रुचं॑ ब्रा॒ह्मज्ज॑नयन्तः । दे॒वा अग्रे॑ तदब्रुवन् ।  
यस्त्वै॒वं ब्रा॒ह्म॒णो वि॒द्यात् । तस्य॑ दे॒वा अस॑न्वशे ॥ 5

ही॒श्च ते ल॒क्ष्मीश्च॑ प॒त्न्यौ । अ॒हो॒रा॒त्रे पा॒र्श्वे । नक्ष॑त्राणि रू॒पं ।  
अ॒श्विनौ॒ व्या॒त्तं । इ॒ष्टं म॒निषा॑ण । अ॒मुं म॒निषा॑ण । स॒र्वं म॒निषा॑ण ॥ 6

(शिखायै वषट्)

#### 9.4 अप्रतिरथं

(TS 4.6.4.1 to TS 4.6.4.5)

आ॒शुः शि॒शानो॑ वृ॒षभो॑ न यु॒द्ध्मो घ॒नाघ॑नः क्षो॒भण-श्च॑र्षणी॒नां ।

सं॒क्र॒न्दनो॑ऽनिमि॒ष ए॒कवी॒रः श॒तꣳ से॒ना अ॒जय॑त् सा॒कमि॒न्द्रः ॥

सं॒क्र॒न्दने॑ना निमि॒षेण॑ जि॒ष्णुना॑ यु॒त्का॒रेण॑ दु॒श्च॒यव॑नेन धृ॒ष्णुना॑ ।

तदि॒न्द्रेण॑ ज॒यत॑ तथ् स॒हद॑ध्वं यु॒धो न॒र इ॒षुह॑स्तेन वृ॒ष्णा ॥

स इ॒षुह॑स्तैः स नि॒षंगि॑भिर्वशी सꣳस्र॒ष्टा स यु॒ध इ॒न्द्रो ग॒णेन॑ ।

सꣳसृ॒ष्टजि॑त् सोम॒पा बा॒हुश॑र्द्ध्यूर्द्ध्वध॒न्वा प्र॒तिहि॑ताभि-रस्ता ॥

बृ॒हस्प॑ते परि दी॒या र॒थेन॑ रक्षो॒हाऽमि॑त्राꣳ अप॒बाध॑मानः । 1

प्र॒भञ्ज॑न्त् से॒नाः प्र॒मृ॒णो यु॒धा ज॒यन्न॑स्माक-मे॒द्ध्यवि॑ता र॒थानां॑ ॥

गो॒त्रभि॑दं गो॒विदं॑ व॒ज्रबा॑हुं ज॒यन्त॑म॒ज्म प्र॒मृ॒णन्त-मो॑जसा ।

इ॒मꣳ स॒जाता॑ अनु-वी॒रय॑ध्व-मि॒न्द्रꣳ स॒खायो॑ ऽनु सꣳ र॒भद॑ध्वं ॥

ब॒लवि॑ज्ञायः-स्थ॒विरः॑ प्र॒वीरः॑ स॒हस्वा॑न् वा॒जी स॒हमा॑न उ॒ग्रः ।



अ॒भिवी॒रो अ॒भिस॒त्वा स॒हो॒जा जै॒त्रमि॒न्द्र रथ॒माति॒ष्ठ गो॒वित् ॥

अ॒भि गो॒त्राणि॒ सह॒सा गा॒हमा॒नो ऽदा॒यो वी॒रः श॒तम॑न्युरिन्द्रः । 2

दु॒श्च॒यव॒नः पृ॒तना॒षाड॒युद्ध्यो॑-स्माक॒ं से॒ना अ॒वतु॑ प्र यु॒थ्सु ॥

इन्द्र॑ आ॒सां-ने॒ता बृ॒हस्प॑ति॒ रक्षि॑णा॒ यज्ञः॑ पु॒र ए॒तु सो॒मः ।

दे॒वसे॒नाना॑-म॒भिभ॑ज्जती॒नां ज॑यन्ती॒नां म॒रुतो॑ यन्त्व॒ग्रे ॥

इन्द्र॑स्य वृ॒ष्णो व॒रुण॑स्य॒ राज्ञ॑ आ॒दित्या॑नां॒ मरु॑ता॒ं श॒र्द्ध उ॒ग्रं ।

महा॑म॒नसां॑ भु॒वन॑च्य॒वानां॑ घो॒षो दे॒वानां॑ ज॑यता॒ मुद॑स्थात् ॥

अ॒स्माक॒-मि॒न्द्रः स॒मृते॑षु॒ ध्वजे॑ष्वस्माकं॒ या इ॑षवस्ता॒ जय॑न्तु । 3

अ॒स्माकं॑ वी॒रा उ॒त्तरे॑ भवन्त्वस्मा॒नु दे॒वा अ॒वता॑ ह॒वेषु॑ ॥

उ॒द्धर्ष॑य म॒घव॒न्ना-यु॑धान्यु॒थ्सत्वे॑नां॒ माम॑कानां॒ महा॑सि ।

उ॒द्ध॒त्रह॑न् वा॒जिनां॑ वा॒जिना॑न्युद्-र॒थानां॑ ज॑यतामेतु॒ घोषः॑ ॥

उ॒प प्रे॒त ज॑यता॒ नरः॑स्थि॒रा वः॑ सन्तु॒ बा॒हवः॑ ।

इन्द्रो॑ वः श॒र्म य॑च्छ॒त्वना॑धृष्या॒ यथा॑ ऽस॒थ ॥

अ॒वसृ॑ष्टा॒ परा॑ प॒त श॑रव्ये॒ ब्रह्म॑स॒ंशिता॑ । 4

गच्छामित्रान् प्र विश मैषां कञ्चनोच्छिषः ॥  
मर्माणि ते वर्मभि र्छादयामि सोमस्त्वा राजा ऽमृतेनाभि वस्तां ।  
उरोर्वरीयो वरिवस्ते अस्तु जयन्तं त्वामनु मदन्तु देवाः ॥  
यत्र बाणाः संपतन्ति कुमारा विशिखा इव ।  
इन्द्रो नस्तत्र वृत्रहा विश्वाहा शर्म यच्छतु ॥ 5 (कवचाय हुं)

### 9.5 प्रति पुरुषद्वयं

(TS 1.8.6.1 to TS 1.8.6.2 for para 1 to 2

(T.B.1.6.10.1 to T.B.1.6.10.5 for para 3 to 7)

प्रतिपुरुषमेककपालान् निर्वपत्येक-मतिरिक्तं ँयावन्तो गृह्याः ॥  
स्मस्तेभ्यः कमकरं पशूनाञ् शर्मासि शर्म यजमानस्य शर्म मे  
यच्छैक एव रुद्रो न द्वितीयाय तस्थ आखुस्ते रुद्र पशुस्तं जुषस्वैष  
ते रुद्र भागः सह स्वस्राऽम्बिकया तं जुषस्व भेषजं गवेऽश्वाय  
पुरुषाय भेषजमथो अस्मभ्यं भेषजञ् सुभेषजं यथाऽसति । । 1  
सुगं मेषाय मेष्या अवांब रुद्र-मदिमह्यव देवं त्र्यंबकं ।  
यथा नः श्रेयसः करद्यथा नो वस्यसः करद्यथा नः पशुमतः  
करद्यथा नो व्यवसाययात् ॥  
त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्यो मुक्षीय माऽमृतात् ॥

ए॒ष ते॑ रु॒द्र भा॒गस्तं॑ जु॒षस्व॑ ते॒नाव॒सेन॑ प॒रो मू॒जव॒तोऽती॒ह्य ( )  
वत॑तधन्वा पि॒नाक॑हस्तः कृ॒त्तिवा॒साः ॥ 2

प्र॒तिपू॒रुष॑-मे॒कक॑पा॒लान् निर्व॑पति । जा॒ता ए॒व प्र॒जा रु॒द्रान्  
नि॒रव॑दयते । ए॒कम॑तिरि॒क्तं । ज॒निष्य॑माणा ए॒व प्र॒जा रु॒द्रान् नि॒रव॑दयते ।  
ए॒कक॑पा॒ला भव॑न्ति । ए॒कधै॒व रु॒द्रं नि॒रव॑दयते । नाभि॑घारयति ।  
यद॑भि॒घार॑येत् । अ॒न्तर॑व॒चारि॑णं रु॒द्रं कुर्या॑त् ।  
ए॒कोल्मु॒केन॑ यन्ति । 3

तद्धि॑ रु॒द्रस्य॑ भा॒गधे॑यं । इ॒मां दि॒शं य॑न्ति । ए॒षा वै रु॒द्रस्य॑ दिक् ।  
स्वा॒यामे॒व दि॒शि रु॒द्रं नि॒रव॑दयते । रु॒द्रो वा अ॒पशु॑का॒या आ॒हुत्यै॑  
नाति॑ष्ठत । अ॒सौ ते॑ प॒शुरि॑ति नि॒र्दिशे॑द् यं द्वि॒ष्यात् । यमे॒व द्वेष्टि॑ ।  
तम॑स्मै प॒शुं नि॒र्दिश॑ति । यदि॒ न द्वि॒ष्यात् ।  
आ॒खुस्ते॑ प॒शुरि॑ति ब्रूयात् । 4

न ग्रा॒म्यान् प॒शून् हि॒नस्ति॑ । ना॒र॒ण्यान् । च॒तुष्प॑थे जु॒होति॑ ।  
ए॒ष वा अ॒ग्नीनां॑ प॒ङ्बीशो॑ नाम । अ॒ग्नि॒वत्ये॒व जु॒होति॑ ।  
म॒द्ध्यमे॑न प॒र्णेन॑ जु॒होति॑ । सु॒ग॒ध्येषा॑ । अथो॒ खलु॑ ।  
अ॒न्तमे॒नैव॑ हो॒तव्यं॑ । अ॒न्तत॑ ए॒व रु॒द्रं नि॒रव॑दयते । 5

ए॒ष ते॑ रु॒द्रभा॒गः स॒हस्व॒स्रां ऽबि॒कये॒त्याह॑ ।  
 शर॒द्धा अ॒स्यां॒बिका॒ स्व॒सा ॥  
 तया॒ वा ए॒ष हि॑न॒स्ति । य॒ञ् हि॑न॒स्ति । तयै॒वैन॑ञ् स॒ह श॑मयति ।  
 भेष॒जं ग॒व इ॒त्याह॑ । याव॑न्त ए॒व ग्रा॒म्याः प॒शवः॑ । तेभ्यो॑ भेष॒जं क॑रोति ।  
 अवा॑न्ब रु॒द्र-म॒दिम॒हीत्या॑ह । आ॒शिष॑-मे॒वैता॑-मा॒शास्ते॑ ॥ 6

त्र्य॑म्ब॒कं य॑जाम॒ह इ॒त्याह॑ । मृ॒त्यो मु॑क्षी॒य मा॒ऽमृ॒ता-दि॒ति वा॑ वैत॒दाह॑ ।  
 उ॒त्कि॑रन्ति । भ॒गस्य॑ ली॒फ॒सन्ते॑ । मू॒ते कृ॒त्वा स॑जन्ति ।  
 यथा॒ जनं॑ य॒तेऽव॒सं क॑रोति । ता॒दृगे॒व तत् ।  
 ए॒ष ते॑ रु॒द्रभा॒ग इ॒त्याह॑ नि॒रव॑त्यै । अ॒प्रती॒क्ष-मा॑यन्ति ।  
 अ॒पः परि॑षिञ्चति । रु॒द्रस्या॒न्तर्-हि॑त्यै ।  
 प्र॒वा ए॒तेऽस्मा॑-ल्लो॒का-च॑च्यवन्ते । ये त्र्य॑म्ब॒कै-श्च॑रन्ति ।  
 आ॒दि॒त्यं च॒रुं पु॒नरे॒त्य नि॒र्वप॑ति । इ॒यं वा॑ अ॒दि॒तिः ।  
 अ॒स्यामे॒व प्र॑ति॒तिष्ठ॑न्ति ॥ 7 (ने॒त्रत्र॑याय॒ वौष॑ट्)

## 9.6 शत रुद्रीयं

T.B.3.11.2.1 to T.B.3.11.2.4 for full 9.6

त्वम॑ग्ने रु॒द्रो अ॒सुरो॑ म॒हो दि॒वः । त्व॑ञ् श॒र्द्धो॑ मा॒रुतं॑ पृ॒क्ष ई॒शिषे॑ ।  
 त्वं वा॑तै॒ररु॑णै॒र्यासि॑ शंग॒यः । त्वं पू॒षा वि॑ध॒तः पा॒सि नु॑त्म॒नाः ॥  
 दे॒वा दे॒वेषु॑ श्रय॒द्ध्वं । प्र॒थमा॑ द्वि॒तीये॑षु श्रय॒द्ध्वं ।

द्वितीया-स्तृतीयेषु श्रयद्ध्वं । तृतीया-श्चतुर्थेषु श्रयद्ध्वं ।  
चतुर्थाः पञ्चमेषु श्रयद्ध्वं । पञ्चमाः षष्ठेषु श्रयद्ध्वं । 1

षष्ठाः सप्तमेषु श्रयद्ध्वं । सप्तमा अष्टमेषु श्रयद्ध्वं ।  
अष्टमा नवमेषु श्रयद्ध्वं । नवमा दशमेषु श्रयद्ध्वं ।  
दशमा एकादशेषु श्रयद्ध्वं । एकदशा द्वादशेषु श्रयद्ध्वं ।  
द्वादशा-स्त्रयोदशेषु श्रयद्ध्वं । त्रयोदशा-श्चतुर्दशेषु श्रयद्ध्वं ।  
चतुर्दशाः पञ्चदशेषु श्रयद्ध्वं । पञ्चदशाः षोडशेषु श्रयद्ध्वं । 2

षोडशाः सप्तदशेषु श्रयद्ध्वं । सप्तदशा अष्टादशेषु श्रयद्ध्वं ।  
अष्टादशा एकान्नविंशेषु श्रयद्ध्वं ।  
एकान्नविंशा विंशेषु श्रयद्ध्वं ।  
विंशा एकविंशेषु श्रयद्ध्वं ।  
एकविंशा द्वाविंशेषु श्रयद्ध्वं ।  
द्वाविंशा स्त्रयोविंशेषु श्रयद्ध्वं ।  
त्रयोविंशा चतुर्विंशेषु श्रयद्ध्वं ।  
चतुर्विंशाः पञ्चविंशेषु श्रयद्ध्वं ।  
पञ्चविंशाः षड्विंशेषु श्रयद्ध्वं । 3

षड्विं॒शा॒ स्सप्तविं॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ ।  
 सप्तविं॒शा॒ अष्टाविं॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ ।  
 अष्टाविं॒शा॒ एकान्नत्रिं॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ ।  
 एकान्नत्रिं॒शा॒ स्त्रिं॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ ।  
 त्रिं॒शा॒ एकत्रिं॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ ।  
 एकत्रिं॒शा॒ द्वात्रिं॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ ।  
 द्वात्रिं॒शा॒ स्त्रयस्त्रिं॒शेषु॑ श्रय॒द्ध्वं॑ ।  
 दे॒वास्त्रि॒रेका॒दशा॑ स्त्रि॒स्त्रयस्त्रिं॒शाः॑ ।  
 उत्तरे॑ भवत । उत्तर॑ वर्त्मान॑ उत्तर॑ सत्वानः । यत्काम॑ इ॒दं जु॒होमि॑ ।  
 तन्मे॑ समृ॒द्ध्यतां॑ । व॒य॒स्याम॑ पत॒यो रयी॑णां । भूर्भुव॒स्वस्स्वाहा॑ ॥ 4

(अस्त्राय फट् )

### 9.7 पञ्चांग जपः

ह॒सः॑ शुचि॒षद् वसु॑रन्तरि॒क्ष-स॒द्धोता॑ वेदि॒षदति॑थि॒ दु॒रोण॑सत् ।  
 नृ॒षद्-वर॑सद् ऋ॒तसद् व्यो॑मस-द॒ब्जा गो॑जा ऋ॒तजा॑ अ॒द्रिजा॑  
 ऋ॒तं बृ॒हत् ॥ 1 (TS 4.2.1.5)

प्र॒तद्विष्णु॑-स्तव॒ते वी॒र्या॑य । मृ॒गो न भी॑मः कु॒चरो॑ गि॒रिष्ठाः॑ । य॒स्यो॒रुषु॑  
 त्रि॒षु वि॒क्रम॑णेषु । अधि॒क्षिय॑न्ति भुव॒नानि॑ वि॒श्वा ॥ 2 (T.B.2.4.3.4)

त्र्य॑ंबकं॒ य॑जामहे सु॒गन्धिं॑ पु॒ष्टिव॑र्द्धनं ।

उ॒र्वारु॑कमि॒व ब॑न्ध॒नान् मृ॒त्यो मु॑क्षी॒य माऽमृ॑तात् । 3

तथ्स॑वितु॒ वृ॑णीमहे । व॒यं दे॒वस्य॑ भो॒जनं॑ ।

श्रेष्ठ॑ सर्व॒-धा॑तमं । तुरं॑ भग॒स्य धी॑महि । 4 (TA 1.11.3)

विष्णु॑ योनिं॑ कल्पयतु । त्वष्टा॑ रूपाणि॑ पि॒शतु॑ ।

आसि॑ञ्जतु प्र॒जाप॑तिः । धा॒ता गर्भं॑ दधातु ते । 5 (EAK 1.13.1)

### 9.8 अष्टाङ्ग प्रणामः

हिर॑ण्यग॒र्भः स-म॑वर्तताग्रे भू॒तस्य॑ जा॒तः प॒तिरे॑क आसीत् ।

स दा॑धार पृथि॒वीं द्या-मु॒तेमां॑ कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ वि॒धेम ॥

(उमामहेश्वराभ्यां नमः) । 1 (TS 4.1.8.3)

यः प्रा॑णतो निमि॒षतो॑ महि॒त्वैक॑ इद्-राजा जग॑तो ब॒भूव॑ ।

य ई॒शो अ॒स्य द्वि॒पदश्च॑तुष्पदः॒ कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ वि॒धेम ॥

(उमामहेश्वराभ्यां नमः) । 2 (TS 4.1.8.4)

ब्रह्म॑ज॒ज्ञानं॑ प्रथ॒मं पु॒रस्ता॑द् वि॒सीम॑त-स्सु॒रुचो॑ वे॒न आ॑वः ।

स बु॒द्धि॒न्या उप॑मा अ॒स्य वि॒ष्टा-स्स॒तश्च॑ यो॒निम॑-स॒तश्च॑ वि॒वः ।

(उमामहेश्वराभ्यां नमः) । 3 (TS 4.2.8.2.)

म॒ही द्यौः पृ॒थि॒वी च न इ॒मं य॒ज्ञं मि॒मिक्ष॑तां ।

पि॒पृ॒ता॒न्नो भ॑रीमभिः । (उ॒मा॒म॒हे॒श्व॒रा॒भ्यां नमः॑) । 4 (TS 3.3.10.2)

उ॒प॒श्वा॒स॒य पृ॒थि॒वी-मु॒त द्यां पु॒रु॒त्रा ते म॑नु॒तां वि॒ष्टि॑तं जगत् ।

स दु॒न्दु॒भे स॒जूरि॑न्द्रेण दे॒वैर्दू॒राद्-द॒वीयो॑ अप॒सेध॑ श॒त्रून् ।

(उ॒मा॒म॒हे॒श्व॒रा॒भ्यां नमः॑) । 5 (TS 4.6.6.6)

अ॒ग्ने न॒य सु॒प॒था रा॒ये अ॒स्मा॒न् वि॒श्वा॒नि दे॒व व॒यु॒ना॒नि वि॒द्वान् ।

यु॒यो॒द्ध्य॒स्म-ज्जु॒हु॒रा॒ण॒मे॒नो भू॑यि॒ष्ठां ते न॑म॒उ॒क्तिं वि॒धेम॑ ।

(उ॒मा॒म॒हे॒श्व॒रा॒भ्यां नमः॑) । 6 (TS 1.1.14.3)

या ते अ॒ग्ने रु॒द्रि॒या त॒नू॒स्त॒या नः पा॒हि त॒स्या॒स्ते स्वा॒हा॑ ।

(उ॒मा॒म॒हे॒श्व॒रा॒भ्यां नमः॑) । 7 (TS 1.2.11.2)

इ॒मं य॑म प्र॒स्तर॑-मा हि सी॒दाङ्गि॑रोभिः पि॒तृभिः॑ सँवि॒दानः॑ ।

आ त्वा म॒न्त्राः क॒वि॒श॒स्ता व॒ह॒न्त्वे॒ना रा॒जन् ह॒विषा॑ मा॒दय॑स्व

(उ॒मा॒म॒हे॒श्व॒रा॒भ्यां नमः॑) । 8 (TS 2.6.12.6)

Note: The following is only a sloka which says as to what are the 8 angas with which one has to do Pranamam / Namaskaram. This is not a Mantra.

(उ॒र॒सा, शि॒र॒सा, दृ॒ष्ट्या, म॒न॒सा, व॒च॒सा त॒था ।

प॒द्भ्यां, क॒रा॒भ्यां, क॒र्णा॒भ्यां, प्र॒णा॒मोऽष्टा॑ंग उच्यते )



### 9.9 ध्यानं

अथात्मानं शिवात्मानं श्री रुद्ररूपं ध्यायेत् ॥

शुद्धस्फटिक सङ्काशं त्रिनेत्रं पञ्च वक्त्रकं ।

गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरण भूषितं ॥ 1

नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नाग यज्ञोपवीतिनं ।

व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्य-मभय प्रदं ॥ 2

कमण्डल्वक्ष सूत्रेच दधानं शूलपाणिनं । or

(or कमण्डल्वक्ष सूत्राणां धारिणं शूलपाणिनं)

ज्वलन्तं पिङ्गलजटं (or जटा) शिखा मद्ध्योद-धारिणं ॥ 3

वृषस्कन्ध समारूढं उमा देहाब्ध् धारिणं ।

अमृतेनाप्लुतं हृष्टं (शान्तं) दिव्यभोग समन्वितं ॥ 4

दिग्देवता समायुक्तं सुरासुर नमस्कृतं ।

नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुव-मक्षर-मव्ययं ।

सर्व व्यापिन-मीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणं ॥ 5

(उमामहेश्वराभ्यां नमः ।)

-----इति पञ्चमः न्यासः-----

हृदयादि अस्त्रान्तं षडंग न्यासः पञ्चमः

## 10षष्ठन्यासः (लघु न्यासः)

(This mantra seems to be broken into Ruks, from some source and the Swaram marking does not follow some basic conventions.e.g. swaritam at the beginning of a Ruk which are not definitely Nitya swara formation. Many Vedic Schools render the following nyasa without swaram as there is no authentic source with swaram for this mantra in classic Vedic text according to them.)

प्रजनने ब्रह्मा तिष्ठतु । पादयो विष्णुस्तिष्ठतु । हस्तयो हरस्तिष्ठतु ।  
बाह्वोरिन्द्रस्तिष्ठतु । जठरेऽग्निस्तिष्ठतु । हृदये शिवस्तिष्ठतु ।  
कण्ठे वसवस्तिष्ठन्तु । वक्त्रे सरस्वती तिष्ठतु ।  
नासिकयो वायुस्तिष्ठतु । नयनयो-श्चन्द्रादित्यौ तिष्ठेतां ।  
कर्णयो-रश्विनौ तिष्ठेतां । ललाटे रुद्रास्तिष्ठन्तु ।  
मूर्धन्या-दित्यास्तिष्ठन्तु । शिरसि महादेवस्तिष्ठतु ।  
शिखायां वामदेवस्तिष्ठतु । पृष्ठे पिनाकी तिष्ठतु ।  
पुरतः शूली तिष्ठतु । पार्श्वयोः शिवाशङ्करौ तिष्ठेतां ।  
सर्वतो वायुस्तिष्ठतु । ततो बहिः सर्वतोऽग्नि ज्वालामालापरिवृतस्तिष्ठतु ।  
सर्वेष्वङ्गेषु सर्वा देवताः यथास्थानं तिष्ठन्तु । 1  
**मां रक्षन्तु । यजमानं सकुटुम्बं रक्षन्तु । सर्वान् महाजनान् रक्षन्तु ।**

---

अग्नि॑र्मे॒ वाचि॑ श्रितः

(T.B.3.10.8.4 to T.B.3.10.8.10) for para 1

अ॒ग्नि॑र्मे॒ वाचि॑ श्रितः । वा॒ग्घृ॑दये । हृद॑यं मयि॑ ।

अ॒हम॑मृते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ ।

वा॒युर्मे॒ प्रा॒णे श्रितः॑ । प्रा॒णो हृ॑दये । हृद॑यं मयि॑ ।

अ॒हम॑मृते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ ।

सू॒र्यो मे॒ चक्षु॑षि श्रितः । चक्षु॑रु॒ हृदये॑ । हृद॑यं मयि॑ ।

अ॒हम॑मृते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ ।

च॒न्द्रमा॑ मे॒ मन॑सि श्रितः । मनो॑ हृदये । हृद॑यं मयि॑ ।

अ॒हम॑मृते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ ।

दि॒शो मे॒ श्रोत्रे॑ श्रिताः । श्रोत्र॑ हृदये । हृद॑यं मयि॑ ।

अ॒हम॑मृते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ ।

आ॒पो मे॒ रेत॑सि श्रिताः । रेतो॑ हृदये । हृद॑यं मयि॑ ।

अ॒हम॑मृते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ ।

पृ॒थि॒वी मे॒ शरी॑रे श्रिता । शरी॑रु॒ हृदये॑ । हृद॑यं मयि॑ ।

अ॒हम॑मृते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ ।

ओष॑धिव॒नस्प॑तयो॒ मे लो॑मसु॒ श्रि॒ताः । लो॑मानि॒ हृद॑ये ।  
हृद॑यं॒ मयि॑ । अ॒हम॒मृते॑ ॥ अ॒मृतं॒ ब्रह्म॑णि ।

इन्द्रो॑ मे॒ बलै॑ श्रि॒तः । बल॑ हृद॑ये । हृद॑यं॒ मयि॑ ।  
अ॒हम॒मृते॑ ॥ अ॒मृतं॒ ब्रह्म॑णि ।

पर्ज॑न्यो मे॒ मूर्द्ध॑न्धि श्रि॒तः । मूर्धा॑ हृद॑ये । हृद॑यं॒ मयि॑ ।  
अ॒हम॒मृते॑ ॥ अ॒मृतं॒ ब्रह्म॑णि ।

ईशा॑नो मे॒ मन्यौ॑ श्रि॒तः । मन्यु॑र् हृद॑ये । हृद॑यं॒ मयि॑ ।  
अ॒हम॒मृते॑ ॥ अ॒मृतं॒ ब्रह्म॑णि ।

आ॒त्मा म॑ आ॒त्मनि॑ श्रि॒तः । आ॒त्मा हृद॑ये । हृद॑यं॒ मयि॑ ।  
अ॒हम॒मृते॑ ॥ अ॒मृतं॒ ब्रह्म॑णि ।

पुन॑र्म आ॒त्मा पुन॑रायु॒रागात् ॥ पुनः॑ प्रा॒णः पुन॑राकू॒तमा॑गात् ॥  
वैश्वा॑नरो रश्मि॒भिर्वा॑वृ॒धानः॑ । अ॒न्तस्ति॑ष्ठ॒त्वमृ॑तस्य गो॒पाः ॥ १

आ॒रा॒धि॒तो म॑नुष्यै॒स्त्वं सि॒द्धैर्दे॑वा॒सुरा॑दिभिः ।  
आ॒रा॒धया॑मि भ॒क्त्या त्वा॒ऽनु॑ग्रहा॒ण म॑हेश्वर ॥ २

**(Note for point No.2)**

Given as per existing convention in use, source not available in classic vedic texts.

## 11 रुद्र जपं (Methods)

There are generally 2 methods in practice before chanting  
1<sup>st</sup> Avarti (round) Rudram Japam.

### 11.1 First Method

The order of first method is as follows:

1. कलश ध्यानं "ध्यायेन्निरामयं वस्तु " (item No.12.1)
2. आवाहनं (item No.12.2.1 to 12.2.18)
3. प्राण प्रतिष्ठा (item No.12.3)
4. उपचारं (item No.12.4)
5. त्रिशति (item No. 12.5)
6. प्रदक्षिणं (item No. 12.6)
7. नमस्कारः (item No. 12.7)
8. चमक प्रार्थना (item No. 12.8)
9. अघोरेभ्यो (item No. 12.9)
10. श्रीरुद्रस्य ऋषिच्छन्दो देवता ध्यानं (item No. 12.10)
11. ओं गणानां त्वा (item No. 12.11)
12. शं च मे (item No.12.12)
13. श्री रुद्र दशाक्षरी महामन्त्रः (item No.12.13)
14. रुद्रं (item No. 12.14)

=====

## 11.2 Second Method

1. शक्ति पञ्चाक्षरी (item No. 11.6)
  2. श्रीरुद्रस्य ऋषिच्छन्दो देवता ध्यानं (item No.12.10)
  3. कलश ध्यानं "ध्यायेन्निरामयं वस्तु " (item No.12.1)
  4. आवाहनं (item No.12.2.1 to 12.2.18)
  5. प्राण प्रतिष्ठा (item No.12.3)
  6. उपचारं (item No.12.4)
  7. त्रिशति (item No. 12.5)
  8. प्रदक्षिणं (item No. 12.6)
  9. नमस्कारः (item No. 12.7)
  10. चमक प्रार्थना (item No. 12.8)
  11. अघोरेभ्यो (item No. 12.9)
  12. ओं गणानां त्वा (item No. 12.11)
  13. शं च मे (item No.12.12)
  14. श्री रुद्र दशाक्षरी महामन्त्रः (item No.12.13)
  15. रुद्रं (item No. 12.14)
-

### 11.3 कुंभ एक कलश (प्रधान कलश) स्थापनं

(धान्य-तण्डुलोपरि आम्रपल्लव-नाळिकेर सहित आदित्यात्मकरुद्रं /  
वरुणं आवाहयेत्)

ओं भूर्भुवस्सुवरो । अस्मिन् कलशे आदित्यात्मकरुद्रं /  
वरुणं ध्यायामि । आवाहयामि ।

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतस्सुरुचो वेन आवः ।  
सुवर्णपुष्पं समर्पयामि । समस्तोपचारान् समर्पयामि ।

### 11.4 एकादश कलश स्थापनं

प्राच्यां एक कलशः । आग्नेयीमारभ्य नैऋतिकलश पर्यन्तं चत्वारः  
कलशाः । प्रतीच्यां एकः । वायवीमारभ्य ऐशानी पर्यन्तं  
चत्वारकलशाः । मध्ये प्रधानकलशः ।

(एवं एकादशकलशान् प्रतिष्ठाप्य पूजा कर्तव्या)

ओं भूर्भुवस्सुवरो । अस्मिन् कुंभे महादेवं ध्यायामि । आवाहयामि ।

(एवं क्रमेण शिवं, रुद्रं, शङ्करं, नीललोहितं, ईशानं, विजयं, भीमं,  
देवदेवं, भवोद्भवं मध्ये आदित्यात्मकरुद्रं )

(इति तत्तत् कलशेष तदनु प्राण प्रतिष्ठा च कुर्युः)

### 11.5 Sthana Peetham

इति घण्टनादं कृत्वा, संप्रार्थ्य, निर्माल्यं उधृत्य , देवताः स्नानपीठे स्थापयेत्, तद्यथा मध्ये शंभूः, आग्नेयां सूर्यः, नैऋत्यां विघ्नेश्वरः , वायव्यां अंबिका, ऐशान्यां हरिः इति क्रमेण शिवलिङ्गादीनि तत्तत् स्थानेषु स्थापयित्वा, पञ्चकलशांश्च (चतस्रषु दिक्षु, चतुरः, मध्ये, एकं च ) स्थापयित्वा लघुन्यास पूर्वकं देवताः स्वदेह तत्तदंगेषु विन्यसेत् ।

### 11.6 श्री शक्ति पञ्चाक्षरी महामन्त्रः

One should get proper “deeksha” from guru to recite this mahamantram as per tradition. This is only followed under Second Method. (see 11.2)

अस्य श्री शक्ति पञ्चाक्षरी महामन्त्रस्य,  
वामदेव ऋषिः, पंक्तिश्चन्द्रः, श्री सांबसदाशिवो देवता,  
हां बीजं, ह्रीं शक्तिः, हूं कीलकं, श्री सांबसदाशिव प्रसाद सिद्ध्यर्थे  
जपे, पूजायां, होमे च विनियोगः ।

### करन्यासः

ओं हां सर्वज्ञशक्तिधाम्ने	अंगुष्ठाभ्यां नमः
नं ह्रीं नित्यतृप्तिशक्तिधाम्ने	तर्जनीभ्यां नमः
मं हूं अनादिबोधशक्तिधाम्ने	मध्यमाभ्यां नमः
शिं ह्रैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने	अनामिकाभ्यां नमः



वां हौं अलुप्तशक्तिधाम्ने

कनिष्ठिकाभ्यां नमः

यं हः अनन्त शक्तिधाम्ने

करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः

### अंगन्यासः

ओं ह्रां सर्वज्ञशक्तिधाम्ने

हृदयाय नमः

नं ह्रीं नित्यतृप्तिशक्तिधाम्ने

शिरसे स्वाहा

मं हूं अनादिबोधशक्तिधाम्ने

शिखायै वषट्

शिं ह्रैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने

कवचाय हुं

वां हौं अलुप्तशक्तिधाम्ने

नेत्रत्रयाय वौषट्

यं हः अनन्त शक्तिधाम्ने

अस्त्राय फट्

भूर्भुवस्सुवरों

इति दिग्बन्धः

### ध्यानं

मूले कल्पद्रुमस्य द्रुतकन-कनिभं चारुपद्मा-सनस्थं

वामाङ्गारूढ गौरी निबिडकुचभरा भोग-गाढोपगूडं

नानालङ्कार-दीप्तं वरपरशु मृगाभीतिहस्तं त्रिनेत्रं

वन्दे बालेन्दुमौलिं गजवदन-गुहाश्लिष्टपार्श्वं महेशं ॥

पञ्चोपचार पूजा

लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि । हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि ।

यं वाय्वात्मने धूपं आघ्रापयामि । रं वह्न्यात्मने दीपं दर्शयामि

वं अमृतात्मने अमृतं निवेदयामि ।

सं सर्वात्मने सर्वोपचारान् समर्पयामि

मूलमन्त्रः – " ओं ह्रीं नमश्शिवाय "

(अष्टोत्तरं वा, द्वात्रिंशतं वा, यथाशक्ति जपेत्)

---

## 12रुद्र विदानं

### 12.1 कलशेषु ध्यानं

ध्यायेन्निरामयं वस्तु सर्गस्थिति लयादिकं ।  
निर्गुणं निष्कलं नित्यं मनो वाचामगोचरं ॥ 1

गंगाधरं शशिधरं जटामकुट शोभितं ।  
श्वेतभूति त्रिपुण्ड्रेण विराजित ललाटकं ॥ 2

लोचनत्रय संपन्नं स्वर्णकुण्डल शोभितं  
स्मेराननं चतुर्बाहुं मुक्ताहारोपशोभितं ॥ 3

अक्षमालां सुधाकुंभं चिन्मयीं मुद्रिकामपि  
पुस्तकं च भुजैर्दिव्यैर्दधानं पार्वतीपतिं ॥ 4

श्वेतांबरधरं श्वेतं रत्नसिंहासन स्थितं  
सर्वाभीष्ट प्रदातारं वटमूल निवासिनं ॥ 5

वामांगे संस्थितां गौरीं बालार्कायुत सन्निभां  
जपाकुसुमसाहस्र समानश्रिय-मीश्वरीं ॥ 6

सुवर्णरत्नखचित मकुटेन विराजितां  
ललाटपट्ट संराजत् संलग्नतिलकाञ्चितां ॥ 7

राजीवायतनेत्रान्तां नीलोत्पल दलेक्षणां  
संतप्त हेमरचित ताटङ्गाभरणान्वितां ॥ 8

तांबूल चर्वणरत रक्त जिह्वा विराजितां  
पताका भरणोपेतां मुक्ता हारोप शोभितां ॥ 9

स्वर्ण कंकण संयुक्तैश्चतुर्भिर्बाहुभिर्युतां ।  
सुवर्ण रत्नखचित काञ्चीदाम विराजितां ॥ 10

कदलीललितस्तंभ सन्निभोरुयुगान्वितां  
श्रिया विराजितपदां भक्तत्राण परायणां ॥ 11

अन्योन्या-श्लिष्टहृद् बाहु गौरीशङ्कर-संज्ञकं  
सनातनं परंब्रह्म परमात्मान-मव्ययं ॥ 12

(मंगलायतनं देवं युवान-मतिसुन्दरं । ध्यायेत् कल्पतरोर्मूले सुखासीनं  
सहोमया ॥ आवाहयामि जगता-मीश्वरं परमेश्वरं ।) 13

(आगच्छाऽऽगच्छ भगवन् देवेश परमेश्वर ।  
सच्चिदानन्द भूतेश पार्वती च नमोऽस्तुते)

आ॒त्वा॑ व॒हन्तु॑ ह॒रय॑स्स॒चे॒तसः॑ श्वे॒तैर॑श्चै॒स्सह॑ के॒तुम॑द्भिः ।  
वा॒ताजि॑तै॒र्बल॑वद्भि॒र्मनो॑ज॒वै रा॒याहि॑ शी॒घ्रं म॑म ह॒व्याय॑ श॒र्वो ।

=====

12.2 आवाहन मन्त्राः

12.2.1 For Eka kalasam / Ekadasa kalasam

त्र्य॑ंबकं॑ य॒जामहे॑ सु॒गन्धिं॑ पु॒ष्टिव॑र्धनं ।

उ॒र्वारु॑कमि॒व ब॑न्ध॒नान् मृ॒त्योर्मु॑क्षी॒य माऽमृ॑तात् ॥

गौरी॑मिमा॒य स॒लिलानि॑ तक्ष॒त्येक॑पदी द्वि॒पदि॑ सा चतु॒ष्पदी॑ ।

अ॒ष्टा॒पदी॑ न॒वप॑दी ब॒भूवु॑षी स॒हस्रा॑क्षरा प॒रमे॑ व्यो॒मन् ।

(for Eka Kalasam)

(ओं ह्रीं नमः शि॒वाय॑ । स॒द्योजा॑तं प्र॒पद्या॑मि । ओं भूर्भू॒वस्सु॒वरो॑ ।

अस्मिन् कुंभे/कलशे श्री सोमास्कन्द परमेश्वरं ध्यायामि ।

आवाहयामि । )

(for Ekadasa Kalasam)

नम॑स्ते रु॒द्र म॒न्यव॑ उ॒तोत॑ इ॒षवे॑ नमः ।

नम॑स्ते अस्तु॒ धन्व॑ने बा॒हुभ्या॑मु॒त ते॒ नमः॑ । ओं ह्रीं नमः शि॒वाय॑ ।

स॒द्योजा॑तं प्र॒पद्या॑मि । ओं भूर्भू॒वस्सु॒वरो॑ ।

अस्मिन् कुंभे/कलशे महादेवं ध्यायामि । आवाहयामि ।

शिवं ध्यायामि । आवाहयामि । रुद्रं ध्यायामि । आवाहयामि ।

शङ्करं ध्यायामि । आवाहयामि । नीललोहितं ध्यायामि । आवाहयामि ।

ईशानं ध्यायामि । आवाहयामि । विजयं ध्यायामि । आवाहयामि ।

भीमं ध्यायामि । आवाहयामि । देवदेवं ध्यायामि । आवाहयामि ।

भवोद्भवं ध्यायामि । आवाहयामि ।

आदित्यात्मकरुद्रं ध्यायामि । आवाहयामि ।

(Note: Some of the Aavahana mantras are from Slokas and not from Vedas. Scholars from various schools use different swarams. We have not provided the swarams consciously. )

### 12.2.2 महागणपति आवाहनं

ओं । ग॒णाना॑न्त्वा ग॒णप॑ति॒ ॐ ह॒वाम॑हे क॒विं क॑वी॒नामु॑पमश्रवस्तमं ।  
ज्ये॒ष्ठरा॑जं ब्र॒ह्मणां॑ ब्र॒ह्मण॑स्पत॒ आ न॑श्शृ॒ण्वन्नू॑तिभिः सीद॒ साद॑नं ॥  
(TS 2.3.14.3)

तत्पु॒रुषाय॑ वि॒द्महे॑ व॒क्रतु॑ण्डाय॒ धीम॑हि ।

तन्नो॑ द॒न्तिः प्र॑चोदयात् ॥ ओं भूर्भुव॒स्सुव॑रो ।

अस्मिन् कुंभे/कलशे श्री महागणपतिं ध्यायामि । आवाहयामि ।

### 12.2.3 सुब्रह्मण्य आवाहनं

नि॒घृष्वैर॑स॒मायु॑तैः । कालैर्. ह॒रित्व॑माप॒न्नैः । इन्द्रा॑याहि स॒हस्र॑युक् ।  
अ॒ग्नि वि॑भ्रा॒ष्टिव॑सनः । वा॒युः श्वे॑तसि॒कद्रु॑कः ।  
स॒म्व॑त्स॒रो वि॑षू॒वर्णैः॑ । नित्या॑स्ते ऽनु॒चरा॑स्तव ।

सुब्र॑ह्मण्यो॒ ॐ सुब्र॑ह्मण्यो॒ ॐ सुब्र॑ह्मण्यो । (TA 1.12.3)

तत्पु॒रुषाय॑ वि॒द्महे॑ म॒हासे॑नाय॒ धीम॑हि । तन्नः॑ षण्मुखः प्रचोदयात् ॥

ओं भूर्भुव॒स्सुव॑रो । अस्मिन् कुंभे/कलशे वळिळदेवसेना समेत

श्री सुब्रह्मण्यस्वामिनं ध्यायामि आवाहयामि ।

12.2.4 दुर्गा देवी आवाहनं

जा॒तवे॑द॒से सु॒नवाम॑ सोम॒मरा॑तीयतो निद॒हाति॑ वेदः ।

सनः॑ पर्ष॒दति॑ दु॒र्गाणि॑ वि॒श्वा ना॒वेव॑ सि॒न्धुं दुरि॑तात्य॒ग्निः । T.A.6.2.1

का॒त्याय॑नाय वि॒द्महे॑ क॒न्यकु॑मा॒रि धी॑महि । तन्नो॑ दु॒र्गिः प्रचो॑दयात् ॥

ओं भूर्भुव॑स्सुव॒रो । अस्मिन् कुंभे/कलशे श्री दुर्गादेवीं/अंबिकां

ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.5 महाविष्णु आवाहनं

सह॑स्र॒शीर्षा॑ पु॒रुषः॑ । सह॑स्राक्षः सह॑स्रपात् ।

स भूमिं॑ वि॒श्वतो॑ वृ॒त्वा । अत्य॑तिष्ठ॒द्दशाङ्गु॑लं । T.A.3.12.1

ना॒राय॑णाय वि॒द्महे॑ वा॒सुदे॒वाय॑ धी॑महि । तन्नो॑ वि॒ष्णुः प्रचो॑दयात् ॥

ओं भूर्भुव॑स्सुव॒रो । अस्मिन् कुंभे/कलशे श्री भूमि समेत

श्री महाविष्णुं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.6 महालक्ष्मी आवाहनं

हि॒रण्य॑वर्णां॒ हरि॑णीं सु॒वर्ण॑रजतस्र॒जां ।

च॒न्द्रां हि॒रण्म॑यीं ल॒क्ष्मीं जा॒तवे॑दो म॒ आव॑ह । (RV Khila Kaandam - 5.8.7.1)

महा॑दे॒व्यै च॑ वि॒द्महे॑ वि॒ष्णुप॑त्यै च॒ धी॑महि ।

तन्नो॑ लक्ष्मीः प्रचो॑दयात् ॥ ओं भूर्भुव॑स्सुव॒रो ।

अस्मिन् कुंभे/कलशे महालक्ष्मीं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.7 महासरस्वती आवाहनं

प्र॒णो॑ दे॒वी सर॑स्वती वा॒जेभि॑ वा॒जिनी॑वति । धी॒नाम॑वि॒त्र्यव॑तु ॥  
(TS 1.8.22.1)

वाग्दे॒व्यै च वि॒द्महे वि॒रिञ्चि॑ प॒त्न्यै च धी॑महि । तन्नो वा॒णी प्र॑चोदयात् ॥  
अस्मिन् कु॒म्भे/कल॑शे महासरस्वतीं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.8 सद्गुरु आवाहनं

गुरवे॑ सर्व॒लोकानां॑ भिष॒जे भव॑रोगिणां । नि॒धये॑ सर्व॒ विद्या॑नां ।  
श्री दक्षि॑णा मूर्तये॒ नमः॑ ।  
गुरु॑र्ब्रह्म गुरु॑र्विष्णुः गुरु॑र्दे॒वो महे॑श्वरः ।  
गुरु॑साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे॑ नमः ॥  
ओं गुरु॑दे॒वाय वि॒द्महे पर॑ब्रह्मणे धीमहि । तन्नो गुरुः प्र॑चोदयात् ।  
ओं भूर्भुव॑स्सुव॒रो । अस्मिन् कु॒म्भे/कल॑शे सद्गुरुं ध्यायामि ।  
आवाहयामि ।

12.2.9 अन्नपूर्णि आवाहनं

आ॒व॒ह॒न्ती॑ वि॒त॒न्वा॒ना । कु॒र्वा॒णा ची॒र-मा॒त्मनः॑ ।  
वा॒सा॒ँसि॑ म॒म गा॒वश्च॑ । अ॒न्न॒पा॒ने च॑ सर्व॒दा । ततो॑ मे श्रि॒य॒मा॒व॒ह ।  
लो॒म॒शां प॒शुभि॑स्सह स्वाहा । T.A.5.4.1  
ओं भग॑वत्यै च वि॒द्महे मा॒हेश्व॑र्यै च धीमहि ।  
तन्नो अन्न॑पूर्णी प्रचोदयात् ।



ओं भूर्भुवस्सुवरो ।

अस्मिन् कुंभे/कलशे अन्नपूर्णीं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.10 शास्ता आवाहनं

धा॒ता वि॒धा॒ता पर॒मो॒त स॒न्दृक् प्र॒जाप॑तिः पर॒मेष्ठी॑ वि॒राज॑ ।  
स्तो॒माश्च॒न्दा॒सि नि॒विदो॑ म आ॒हुरे॒तस्मै॑ रा॒ष्ट्रम॑भि स॒न्नमाम॑ ।  
अ॒भ्याव॑र्त्तद्ध्व-मु॒पमे॑त सा॒कम॑य॒ शास्ता॑ऽधि॒पति॑र्वो अस्तु ।  
अस्य॑ वि॒ज्ञान॑-म॒नु स॒ रभ॑द्ध्वमि॒मं प॒श्चाद॑नु जी॒वाथ॑ सर्वे॑ ।  
(TS 5.7.4.4)

ओं भूतनाथाय विद्महे भवपुत्राय धीमहि । तन्नः शास्ता प्रचोदयात् ।

ओं भूर्भुवस्सुवरो । अस्मिन् कुंभे/कलशे पूर्णा-पुष्कलांबा समेत  
श्री हरिहरपुत्र स्वामिनं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.11 अनन्त (सर्प राजा) आवाहनं

नमो॑ अस्तु स॒र्पेभ्यो॑ ये के च पृ॒थि॒वीम॑नु ।  
ये अ॒न्तरि॑क्षे ये दि॒वि तेभ्य॑ स्स॒र्पेभ्यो॑ नमः ।  
ये ऽदो॑ रो॒चने॑ दि॒वो ये वा सूर्य॑स्य र॒श्मिषु॑ । येषा॑म॒प्सु स॑दः कृतं  
तेभ्य॑ स्स॒र्पेभ्यो॑ नमः । या इ॒षवो॑ यातु॒धाना॑नां ये वा व॒नस्प॑ती॒रनु॑ ।  
ये वाऽव॑टेषु शे॒रते॑ तेभ्य॑ स्स॒र्पेभ्यो॑ नमः । TS 4.2.8.3

सर्पराजाय विद्महे सहस्रफणाय धीमहि । तन्नो अनन्तः प्रचोदयात् ।

ओं भूर्भुवस्सुवरो । अस्मिन् कुंभे/कलशे सर्पराजं ध्यायामि

आवाहयामि ।

12.2.12 सूर्यनारायण आवाहनं

आ स॒त्येन॑ रज॒सा॒ वर्त॑मानो निवेशयन्नमृतं म॒र्त्यं च॑ ।

हि॒र॒ण्य॒येन॑ स॒वि॒ता रथे॒नाऽऽ दे॒वो या॑ति भुवना वि॒पश्य॑न् । TS 3.4.11.2

भा॒स्क॒राय॑ वि॒द्महे॑ महद्युति॒कराय॑ धीमहि । तन्नो॑ आ॒दित्य॑ प्रचो॒दयात्॑ ॥

ओं भूर्भुवस्सुवरो । अस्मिन् कुंभे/कलशे छाया-सुवर्च्छलांबा समेत

श्री सूर्यनारायणं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.13 नक्षत्र देवता आवाहनं

अ॒ग्नि॒र्नः॑ पा॒तु कृ॑त्तिकाः । नक्ष॑त्रं दे॒वमिन्द्रि॑यं ।

इ॒द॒मा॒सां वि॑चक्षणं । ह॒वि॒रासं॑ जु॒होत॑न । यस्य॑ भा॒न्ति र॒श्मयो॑ यस्य॑

के॒तवः॑ । यस्ये॒मा वि॒श्वा भु॑वनानि सर्वा ।

स कृ॑त्तिकाभि-र॒भिस॒म्व॑सानः । अ॒ग्नि॒र्नो दे॒वस्सु॑वि॒ते द॑धातु ॥

(अ॒प॒पा॒प्मानं॑ भ॒रणी॑ भ॒रन्तु॑) । (T.B.3.1.1.1 to T.B.3.1.2.11)

ओं भूर्भुवस्सुवरो । अस्मिन् कुंभे/कलशे नक्षत्रदेवतां ध्यायामि ।

आवाहयामि ।

12.2.14 नन्दिकेश्वर आवाहनं

शूलाङ्कुशधरं देवं महादेवस्य वल्लभं ।

शिवकार्यं विधानञ्च ध्यायेत् त्वां नन्दिकेश्वरं ।

तत् पुरुषाय विधमहे चक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो नन्दिः प्रचोदयात् ॥

ओं भूर्भुवस्सुवरो । अस्मिन् कुंभे/कलशे नन्दिकेश्वरं ध्यायामि ।

आवाहयामि ।

12.2.15 आयुर्देवता आवाहनं

आयु॑ष्ठे वि॒श्वतो॑ दध॒ दय॒ मग्नि॑ व॒रेण्यः॑ । पुन॑स्ते प्राण आ॒ ज्यति॑

(or आयाति) पराय॑क्ष्मं सु॒वामि॑ ते । आ॒युर्द्धा अ॒ग्ने ह॒विषो॑ जुषा॒णो

घृ॒तप्र॑तीको घृ॒तयो॑निरेधि । घृ॒तं पी॒त्वा मधु॑ चा॒रु गव्यं॑ पि॒तेव॑

पु॒त्रम॒भि रक्ष॑तादि॒मं । TS 1.3.14.4 & T.A. 2.5.1a

ओं भूर्भुवस्सुवरो । अस्मिन् कुंभे/कलशे आयुर्देवतां ध्यायामि ।

आवाहयामि ।

12.2.16 श्री राम आवाहनं

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेदसे ।

रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ।

दाशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि ।

तन्नो रामः प्रचोदयात् । ओं भूर्भुवस्सुवरो ।

अस्मिन् कुंभे/कलशे सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत् समेत  
श्री रामचन्द्रस्वामिनं ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.17 श्रीकृष्ण आवाहनं

कृष्णाय वासुदेवाय देवकी नन्दनाय च । नन्दगोप कुमाराय  
श्री गोविन्दाय नमो नमः । देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ।  
तन्नो कृष्णः प्रचोदयात् । ओं भूर्भुवस्सुवरो ।

अस्मिन् कुंभे/कलशे रुक्मणी-सत्यभामा समेत श्री कृष्णस्वामिनं  
ध्यायामि । आवाहयामि ।

12.2.18 आञ्चनेय आवाहनं

बुद्धिर्बलं यशोधैर्यं निर्भयत्वं अरोगता ।  
अजाट्यं वाक्पटुत्वं च हनुमत् स्मरणात् भवेत् ।  
श्री रामदूताय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि । तन्नो हनुमन्तः प्रचोदयात् ।  
ओं भूर्भुवस्सुवरो । अस्मिन् कुंभे/कलशे वेदशास्त्र पण्डित परम  
भागवतोत्तम श्री आञ्चनेयस्वामिनं ध्यायामि । आवाहयामि ।

=====

### 12.3 प्राण प्रतिष्ठा

आदित्यात्मक-रुद्रस्य, आवाहितानां सर्वासां देवतानां प्राणप्रतिष्ठा  
महामन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः ।

ऋग्यजुस्सामाथर्वाणि छन्दांसि ।

सकलजगत् सृष्टि-स्थिति-संहारकारिणी प्राणशक्तिः परादेवता ।

आं बीजं । ह्रीं शक्तिः । क्रों कीलकं ।

आदित्यात्मक-रुद्रस्य आवाहितानां सर्वासां देवतानां प्राणप्रतिष्ठार्थं  
जपे विनियोगः ॥

आं अंगुष्ठाभ्यां नमः । ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।

क्रों मध्यमाभ्यां नमः । आं अनामिकाभ्यां नमः ।

ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । क्रों करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

आं हृदयाय नमः । ह्रीं शिरसे स्वाहा ।

क्रों शिखायै वषट् । आं कवचाय हुं ।

ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । क्रों अस्त्राय फट् ॥

भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः ।

ध्यानं

रक्तांभोधिस्थपोतोल्लसदरुण सरोजाधिरूढाकराब्जैः ।

पाशं कोदण्डमिक्षूद् भव मळिगुण-मप्यंकुशं पञ्चबाणान् ।

बिभ्राणा-सृक्कपालां त्रिनयन लसिता पीनवक्षोरुहाढ्या ।

देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणाशक्तिः परा नः ॥

आं ह्रीं क्रों । क्रों ह्रीं आं । य र ल व श ष स हों ।

क्षं, हंसःसोहं, सोहं हंसः ।

आदित्यात्मकरुद्रस्य, आवाहितानां सर्वासां देवतानां

प्राणा इह प्राणाः ।

आं ह्रीं क्रों । क्रों ह्रीं आं । य र ल व श ष स हों ।

क्षं , हंसः सोहं, सोहं हंसः ।

आदित्यात्मकरुद्रस्य आवाहितानां सर्वासां देवतानां जीव इह स्थितः ।

आं ह्रीं क्रों । क्रों ह्रीं आं । य र ल व श ष स हों ।

क्षं, हंसः सोहं सोहं हंसः ।

आदित्यात्मकरुद्रस्य, आवाहितानां सर्वासां देवतानां सर्वेन्द्रियाणि

वाङ्मनश्चक्षु-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-प्राणापान-व्यानोदान-समाना

इहैवागत्य इहैवास्मिन् (एषु कुंभेषु/कलशेषु, अस्यां प्रतिमायां,

अस्मिन् लिङ्गे, अस्मिन् सालग्रामे, शिला चक्रे) सुखं चिरं तिष्ठन्तु  
स्वाहा ॥

अ॒सु॒नी॒ते पु॒नर॒स्मा॒सु चक्षुः॑ पु॒नः प्रा॒णमि॒ह नो॑ धेहि॒ भोगं॑ ।  
ज्योक् पश्ये॒म सूर्य॑मु॒च्चर॒न्त-म॑नु॒मते मृ॒डया॑ नस्स्व॒स्ति ॥ RV 10.59.6

आवा॒हितो भव॑ । स्था॒पितो भव॑ । सन्नि॒हितो भव॑ । सन्निरु॒द्धो भव॑ ।  
अव॒कुण्ठि॑तो भव । सु॒प्रीतो भव॑ । सुप्र॒सन्नो भव॑ । वर॒दो भव॑ ।  
प्रसी॒द प्रसी॑द ॥

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकं तावत् त्वं प्रीतिभावेन  
कुंभेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।

आदित्यात्मक-रुद्रस्य प्राणान् प्रतिष्ठापयामि ॥

(पञ्चोपचार पूजा, धूप, दीप, नैवेद्यं, तांबूलं, नीराजनं) ॥

यत्किञ्चिन्निवेदनं ॥)

#### 12.4 उपचारं

या त इषुः शिव॑त॒मा शि॒वं ब॒भूव॑ ते ध॒नुः । शि॒वा श॒रव्या॑ या तव॒ तया॑  
नो रु॒द्र मृ॒डय॑ । ओं ह्रीं नमः॑ शि॒वाय॑ । स॒द्यो जा॒ताय॑ वै नमो॒ नमः॑ ।  
रत्न॑सिंहासनं समर्पयामि ॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपाप काशिनी । तया नस्तनुवा शन्तमया  
गिरिशन्ता-भिचाकशीहि ॥ ओं ह्रीं नमः शिवाय ।

भवे भवे नातिभवे भवस्व मां । पादयोः पाद्यं समर्पयामि ॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे । शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरु मा  
हिंसीः पुरुषं जगत् । ओं ह्रीं नमः शिवाय ।

भवोद्भवाय नमः । अर्घ्यं समर्पयामि ॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि । यथा  
नस्सर्वमिज्जगदयक्ष्मं सुमना असत् । ओं ह्रीं नमः शिवाय ।

वामदेवाय नमः । आचमनीयं समर्पयामि ॥

अद्ध्यवोच-दधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् । अहींश्च सर्वान्  
जंभयन् त्सर्वाश्च यातुधान्यः ॥ ओं ह्रीं नमः शिवाय ।

ज्येष्ठाय नमः । मधुपर्कं समर्पयामि ॥

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुस्सुमङ्गलः । ये चेमां रुद्रा अभितो  
दिक्षु श्रिताः सहस्रशो ऽवैषां हेड ईमहे । ओं ह्रीं नमः शिवाय ।

श्रेष्ठाय नमः । स्नानं समर्पयामि । स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।



अ॒सौ यो॑ऽव॒सर्प॑ति नी॒लग्री॑वो विलो॒हितः॑ । उ॒तैनं॑ गो॒पा अ॑दृ॒शन्न॑दृ॒शन्  
उद॒हार्यः॑ । उ॒तैनं॑-वि॒श्वा भू॒तानि॑ स दृ॒ष्टो मृ॑डयाति नः ।

ओं ह्रीं नमः शि॒वाय॑ । रु॒द्राय॑ नमः । वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि ।

नमो॑ अस्तु नी॒लग्री॑वाय सहस्रा॒क्षाय॑ मी॒ढुषे॑ । अथो॒ ये अ॑स्य  
सत्वा॒नोऽहं॑ तेभ्यो॑ऽकर॒न्नमः॑ । ओं ह्रीं नमः शि॒वाय॑ ।

का॒लाय॑ नमः । यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि ।

प्रमु॑च धन्व॒नः त्वमु॑भयो-रार्त्तियो॒ ज्यौ । याश्च॑ ते हस्त इ॒षवः॑ परा॒ ता  
भग॑वो वप । ओं ह्रीं नमः शि॒वाय॑ ।

कल॑विकरणाय॒ नमः॑ । गन्धान् धारयामि । गन्धोपरि अक्षतान्  
समर्पयामि ।

अव॑तत्य धनु॒स्त्वꣳ सह॑स्राक्ष शते॒षुधे॑ । नि॒शीर्य॑ श॒ल्यानां॑ मु॒खा शि॒वो  
नः सु॒मना॑ भव । ओं ह्रीं नमः शि॒वाय॑ ।

बल॑विकरणाय॒ नमः॑ । पुष्पाणि सर्पयामि ।

1. ओं भवाय देवाय नमः ।

ओं शर्वाय देवाय नमः ।

2. ओं ईशानाय देवाय नमः ।

ओं पशुपतये देवाय नमः ।

3. ओं रुद्राय देवाय नमः ।

ओं उग्राय देवाय नमः ।

4. ओं भीमाय देवाय नमः ।

ओं महते देवाय नमः ।

- 1.ओं भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः ।      ओं शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः ।
- 2.ओं ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः ।      ओं पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः ।
- 3.ओं रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः ।      ओं उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः ।
- 4.ओं भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः ।      ओं महतो देवस्य पत्न्यै नमः

नानाविद परिमळ पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि ॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाꣳ उत । अनेशन्नस्येषव  
आभुरस्य निषङ्गथिः । ओं ह्रीं नमः शिवाय ।

बलाय नमः । धूपमाघ्रापयामि ।

या ते हेति मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः । तयाऽस्मान् विश्वतः  
त्वमयक्ष्मया परिब्भुज । ओं ह्रीं नमः शिवाय । बलप्रमथनाय नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूप-दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

नैवेद्यं

ओं भूर्भुवस्सुवः । तथ्सवितुर्वरेणं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः  
प्रचोदयात् ॥ देव सवितः प्रसुवः । सत्यं त्वर्त्तेन परिषिञ्जामि ।

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः । अमृतं भवतु ।

अमृतोपस्तरणमसि । ओं प्राणाय स्वाहा । ओं अपानाय स्वाहा ।

ओं व्यानाय स्वाहा । ओं उदानाय स्वाहा । ओं समानाय स्वाहा ।

ओं ब्रह्मणे स्वाहा ।

नमस्ते अस्त्वायु॑धा॒याना॑त॒ताय॑ धृ॒ष्णवे॑ ॥ उ॒भाभ्या॑मु॒त ते॒ नमो॑ बा॒हुभ्यां॑  
तव॑ ध॒न्वने॑ । ओं ह्रीं नमः॑ शि॒वाय॑ । सर्व॑भू॒तद॑म॒नाय॑ नमः॑ ।

..... निवेदयामि । मद्ध्ये मद्ध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि ।

अमृतापिधानमसि । हस्तप्रक्षाळनं समर्पयामि । पादप्रक्षाळनं

समर्पयामि । नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

परि॑ ते ध॒न्वनो॑ हे॒तिर॒स्मान् वृ॑णक्तु वि॒श्वतः॑ । अथो॒ य इ॒षुधि॒स्तवारे॑  
अ॒स्मन्नि॒धेहि॒तं ॥ ओं ह्रीं नमः॑ शि॒वाय॑ ।

म॒नोन्म॑नाय॒ नमः॑ । कर्पूर॑तांबूलं निवेदयामि ।

नमस्ते अस्तु॑ भगवन् वि॒श्वेश्व॑राय॒ महा॑दे॒वाय॑ त्र्यं॒बका॑य॒ त्रिपु॑रान्त॒काय॑  
त्रि॒काग्नि॑काला॒य का॒लाग्नि॑रु॒द्राय॑ नी॒लक॑ण्ठाय॒ मृत्यु॑ञ्ज॒याय॑ सर्वे॑श्व॒राय॑  
सदा॑शि॒वाय॑ शङ्क॒राय॑ श्रीमन्महादे॒वाय॑ नमः॑ ॥

ओं महादेवादिभ्यो रुद्रेभ्यो नमः ।

सर्वोपचारार्थं कर्पूरनीराजनदीपं प्रदर्शयामि ।

नीराजनानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

## शिव स्तुति

---

बृ॒ह॒त्साम॑ क्ष॒त्र॒भृद् वृ॒द्ध॒वृ॒ष्णि॒यं त्रि॒ष्टु॒भौ॒ज॒श्शु॒भित॑-मु॒ग्र॒वी॒रं ।

इ॒न्द्र॒स्तो॒मे॒न प॒ञ्च॒द॒शे॒न म॒द्ध्य॒मि॒दं वा॒ते॒न स॒ग॒रे॒ण र॒क्ष ।

र॒क्षां धा॒र॒या॒मि । ओं ह॒र, ओं ह॒र, ओं ह॒र ।

आ॒वा॒हि॒ता॒भ्यः स॒र्वा॒भ्यो दे॒वे॒भ्यो नमः॑ । स॒र्वो॒प॒चा॒रा॒न् स॒म॒र्प॒या॒मि ।

---

## 12.5 त्रिशति

"प्रणवेन विहीनो यः मन्त्रः प्राणहीनकः

सर्व मन्त्रेषु मन्त्राणं प्राणः प्रणव उच्यते" ।

According to the above sloka "OM" has to be added before each naama archana. )

1. ओं नमो हिरण्यबाहवे नमः ।
2. ओं सेनान्ये नमः ।
3. ओं दिशां च पतये नमः ।
4. ओं नमो वृक्षेभ्यो नमः ।
5. ओं हरिकेशेभ्यो नमः ।
6. ओं पशूनां पतये नमः ।
7. ओं नमः सस्पिञ्जराय नमः ।
8. ओं त्विषीमते नमः ।
9. ओं पथीनां पतये नमः ।
10. ओं नमो बभ्रुशाय नमः ।
11. ओं विव्याधिने नमः ।
12. ओं अन्नानां पतये नमः ।
13. ओं नमो हरिकेशाय नमः ।
14. ओं उपवीतिने नमः ।

15. ओं पु॒ष्टा॒नां॑ प॒तये॑ नमः ।
16. ओं नमो॑ भ॒वस्य॑ हे॒त्यै॑ नमः ।
17. ओं जग॑तां प॒तये॑ नमः ।
18. ओं नमो॑ रु॒द्राय॑ नमः ।
19. ओं आ॒त॒ता॒वि॒ने॑ नमः ।
20. ओं क्षे॒त्रा॒णां॑ प॒तये॑ नमः ।
21. ओं नमः॑ सू॒ताय॑ नमः ।
22. ओं अ॒ह॒न्त्या॑य नमः ।
23. ओं व॒ना॒नां॑ प॒तये॑ नमः ।
24. ओं नमो॑ रो॒हि॒ताय॑ नमः ।
25. ओं स्थ॒प॒तये॑ नमः ।
26. ओं वृ॒क्षा॒णां॑ प॒तये॑ नमः ।
27. ओं नमो॑ म॒न्त्रि॒णे॑ नमः ।
28. ओं वा॒णि॒जाय॑ नमः ।
29. ओं क॒क्षा॒णां॑ प॒तये॑ नमः ।
30. ओं नमो॑ भुव॒न्तये॑ नमः ।
31. ओं वा॒रि॒व॒स्कृ॒ताय॑ नमः ।
32. ओं ओ॒ष॒धी॒नां॑ प॒तये॑ नमः ।

33. ओं नम॑ उ॒च्चैर्घो॑षाय॒ नमः॑ ।  
34. ओं आ॒क्र॒न्द॒य॒ते नमः॑ ।  
35. ओं प॒त्ती॒नां प॒तये॑ नमः॑ ।  
36. ओं नमः॑ कृ॒त्स्न॒वी॒ताय॑ नमः॑ ।  
37. ओं धा॒व॒ते नमः॑ ।  
38. ओं स॒त्त्व॒नां प॒तये॑ नमः॑ ।  
39. ओं नमः॑ स॒ह॒मा॒नाय॑ नमः॑ ।  
40. ओं नि॒व्या॒धि॒ने नमः॑ ।  
41. ओं आ॒व्या॒धि॒नी॒नां प॒तये॑ नमः॑ ।  
42. ओं नमः॑ क॒कु॒भाय॑ नमः॑ ।  
43. ओं नि॒ष॒ङ्गि॒णे नमः॑ ।  
44. ओं स्ते॒ना॒नां प॒तये॑ नमः॑ ।  
45. ओं नमो॑ नि॒ष॒ङ्गि॒णे नमः॑ ।  
46. ओं इ॒षु॒धि॒म॒ते नमः॑ ।  
47. ओं त॒स्क्रा॒णां प॒तये॑ नमः॑ ।  
48. ओं नमो॑ व॒ञ्च॒ते नमः॑ ।  
49. ओं प॒रि॒व॒ञ्च॒ते नमः॑ ।  
50. ओं स्ता॒यू॒नां प॒तये॑ नमः॑ ।

51. ओं नमो निचेरवे नमः ।
52. ओं परिचराय नमः ।
53. ओं अरण्यानां पतये नमः ।
54. ओं नमः सृकाविभ्यो नमः ।
55. ओं जिघाँसद्भ्यो नमः ।
56. ओं मुष्णातां पतये नमः ।
57. ओं नमोऽसिमद्भ्यो नमः ।
58. ओं नक्तंचरद्भ्यो नमः ।
59. ओं प्रकृन्तानां पतये नमः ।
60. ओं नम उष्णीषिणे नमः ।
61. ओं गिरिचराय नमः ।
62. ओं कुलुञ्चानां पतये नमः ।
63. ओं नम इषुमद्भ्यो नमः ।
64. ओं धन्वाविभ्यश्च नमः ।
65. ओं वो नमः ।
66. ओं नम आतन्वानेभ्यो नमः ।
67. ओं प्रतिदधानेभ्यश्च नमः ।
68. ओं वो नमः ।



69. ओं नम आयच्छद्भ्यो नमः ।

70. ओं विसृजद्भ्यश्च नमः ।

71. ओं वो नमः ।

72. ओं नमोऽस्यद्भ्यो नमः ।

73. ओं विद्ध्यद्भ्यश्च नमः ।

74. ओं वो नमः ।

75. ओं नम आसीनेभ्यो नमः ।

76. ओं शयानेभ्यश्च नमः ।

77. ओं वो नमः ।

78. ओं नमः स्वपद्भ्यो नमः ।

79. ओं जाग्रद्भ्यश्च नमः ।

80. ओं वो नमः ।

81. ओं नमस्तिष्ठद्भ्यो नमः ।

82. ओं धावद्भ्यश्च नमः ।

83. ओं वो नमः ।

84. ओं नमस्सभाभ्यो नमः ।

85. ओं सभापतिभ्यश्च नमः ।

86. ओं वो नमः ।

87. ओं नमो अ॒श्वे॒भ्यो॑ नमः ।
88. ओं अ॒श्वप॑ति॒भ्यश्च॑ नमः ।
89. ओं वो॑ नमः ।
90. ओं नम॑ आ॒व्या॒धिनी॑भ्यो नमः ।
91. ओं वि॒विद्ध्य॑न्ती॒भ्यश्च॑ नमः ।
92. ओं वो॑ नमः ।
93. ओं नम॑ उ॒गणा॑भ्यो नमः ।
94. ओं तृ॒हृती॑भ्यश्च नमः ।
95. ओं वो॑ नमः ।
96. ओं नमो॑ गृ॒थ्से॑भ्यो नमः ।
97. ओं गृ॒थ्सप॑ति॒भ्यश्च॑ नमः ।
98. ओं वो॑ नमः ।
99. ओं नमो॑ ब्रा॒तै॒भ्यो॑ नमः ।
100. ओं ब्रा॒तप॑ति॒भ्यश्च॑ नमः ।
101. ओं वो॑ नमः ।
102. ओं नमो॑ ग॒णे॒भ्यो॑ नमः ।
103. ओं ग॒णप॑ति॒भ्यश्च॑ नमः ।

104. ओं वो नमः ।  
105. ओं नमो विरूपेभ्यो नमः ।  
106. ओं विश्वरूपेभ्यश्च नमः ।  
107. ओं वो नमः ।  
108. ओं नमो महद्भ्यो नमः ।  
109. ओं क्षुल्लकेभ्यश्च नमः ।  
110. ओं वो नमः ।  
111. ओं नमो रथिभ्यो नमः ।  
112. ओं अरथेभ्यश्च नमः ।  
113. ओं वो नमः ।  
114. ओं नमो रथेभ्यो नमः ।  
115. ओं रथपतिभ्यश्च नमः ।  
116. ओं वो नमः ।  
117. ओं नमस्सेनाभ्यो नमः ।  
118. ओं सेनानिभ्यश्च नमः ।  
119. ओं वो नमः ।  
120. ओं नमः क्षत्तृभ्यो नमः ।  
121. ओं संग्रहीतृभ्यश्च नमः ।

122. ओं वो नमः ।
123. ओं नमस्तक्षभ्यो नमः ।
124. ओं रथकारेभ्यश्च नमः ।
125. ओं वो नमः ।
126. ओं नमः कुलालेभ्यो नमः ।
127. ओं कमरिभ्यश्च नमः ।
128. ओं वो नमः ।
129. ओं नमः पुंजिष्टेभ्यो नमः ।
130. ओं निषादेभ्यश्च नमः ।
131. ओं वो नमः ।
132. ओं नम इषुकृद्भ्यो नमः ।
133. ओं धन्वकृद्भ्यश्च नमः ।
134. ओं वो नमः ।
135. ओं नमो मृगयुभ्यो नमः ।
136. ओं श्वनिभ्यश्च नमः ।
137. ओं वो नमः ।
138. ओं नमः श्वभ्यो नमः ।
139. ओं श्वपतिभ्यश्च नमः ।

140. ओं वो नमः ॥
141. ओं नमो भवाय च नमः ।
142. ओं रुद्राय च नमः ।
143. ओं नमश्शर्वाय च नमः ।
144. ओं पशुपतये च नमः ।
145. ओं नमो नीलग्रीवाय च नमः ।
146. ओं शितिकण्ठाय च नमः ।
147. ओं नमः कपर्दिने च नमः ।
148. ओं व्युप्तकेशाय च नमः ।
149. ओं नमस्सहस्राक्षाय च नमः ।
150. ओं शतधन्वने च नमः ।
151. ओं नमो गिरिशाय च नमः ।
152. ओं शिपिविष्टाय च नमः ।
153. ओं नमो मीढुष्टमाय च नमः ।
154. ओं इषुमते च नमः ।
155. ओं नमो ह्रस्वाय च नमः ।
156. ओं वामनाय च नमः ।
157. ओं नमो बृहते च नमः ।

158. ओं वर्॒षी॒य॒से च॒ नमः॑ ।
159. ओं नमो॑ वृ॒द्धाय॑ च॒ नमः॑ ।
160. ओं सं॒वृ॒द्ध्व॒ने च॒ नमः॑ ।
161. ओं नमो॑ अ॒ग्रि॒याय॑ च॒ नमः॑ ।
162. ओं प्र॒थ॒माय॑ च॒ नमः॑ ।
163. ओं नम॑ आ॒श॒वे च॒ नमः॑ ।
164. ओं अ॒जि॒राय॑ च॒ नमः॑ ।
165. ओं नमः॑ शी॒घ्रि॒याय॑ च॒ नमः॑ ।
166. ओं शी॒भ्याय॑ च॒ नमः॑ ।
167. ओं नम॑ ऊ॒र्म्याय॑ च॒ नमः॑ ।
168. ओं अ॒व॒स्व॒न्याय॑ च॒ नमः॑ ।
169. ओं नमः॑ स्त्रो॒त॒स्याय॑ च॒ नमः॑ ।
170. ओं द्वी॒प्याय॑ च॒ नमः॑ ।
171. ओं नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॑ च॒ नमः॑ ।
172. ओं क॒नि॒ष्ठाय॑ च॒ नमः॑ ।
173. ओं नमः॑ पू॒र्व॒जाय॑ च॒ नमः॑ ।
174. ओं अ॒प॒र॒जाय॑ च॒ नमः॑ ।

175. ओं नमो मद्ध्यमाय च नमः ।  
 176. ओं अपगल्भाय च नमः ।  
 177. ओं नमो जघन्याय च नमः ।  
 178. ओं बुद्धिन्याय च नमः ।  
 179. ओं नमः सोभ्याय च नमः ।  
 180. ओं प्रतिसर्याय च नमः ।  
 181. ओं नमो याम्याय च नमः ।  
 182. ओं क्षेम्याय च नमः ।  
 183. ओं नम उर्वर्याय च नमः ।  
 184. ओं खल्याय च नमः ।  
 185. ओं नमः श्लोक्याय च नमः ।  
 186. ओं अवसान्याय च नमः ।  
 187. ओं नमो वन्याय च नमः ।  
 188. ओं कक्ष्याय च नमः ।  
 189. ओं नमः श्रवाय च नमः ।  
 190. ओं प्रतिश्रवाय च नमः ।  
 191. ओं नम आशुषेणाय च नमः ।  
 192. ओं आशुरथाय च नमः ।

193. ओं नमः शूराय च नमः ।  
 194. ओं अवभिन्दते च नमः ।  
 195. ओं नमो वर्मिणे च नमः ।  
 196. ओं वरूथिने च नमः ।  
 197. ओं नमो बिल्मिने च नमः ।  
 198. ओं कवचिने च नमः ।  
 199. ओं नमश्श्रुताय च नमः ।  
 200. ओं श्रुतसेनाय च नमः ।  
 201. ओं नमो दुन्दुभ्याय च नमः ।  
 202. ओं आहनन्याय च नमः ।  
 203. ओं नमो धृष्णवे च नमः ।  
 204. ओं प्रमृशाय च नमः ।  
 205. ओं नमो दूताय च नमः ।  
 206. ओं प्रहिताय च नमः ।  
 207. ओं नमो निषङ्गिणे च नमः ।  
 208. ओं इषुधिमते च नमः ।  
 209. ओं नमस्तीक्ष्णेषवे च नमः ।



210. ओं आयु॒धिने॑ च॒ नमः॑ ।  
211. ओं नमः॑ स्वा॒यु॒धाय॑ च॒ नमः॑ ।  
212. ओं सु॒धन्व॑ने च॒ नमः॑ ।  
213. ओं नमः॑ स्रु॒त्याय॑ च॒ नमः॑ ।  
214. ओं प॒थ्याय॑ च॒ नमः॑ ।  
215. ओं नमः॑ का॒त्याय॑ च॒ नमः॑ ।  
216. ओं नी॒प्याय॑ च॒ नमः॑ ।  
217. ओं नमः॑ सू॒द्याय॑ च॒ नमः॑ ।  
218. ओं सर॒स्याय॑ च॒ नमः॑ ।  
219. ओं नमो॑ ना॒द्याय॑ च॒ नमः॑ ।  
220. ओं वै॒शन्ता॑य च॒ नमः॑ ।  
221. ओं नमः॑ कू॒प्याय॑ च॒ नमः॑ ।  
222. ओं अ॒व॒त्याय॑ च॒ नमः॑ ।  
223. ओं नमो॑ व॒र्ष्याय॑ च॒ नमः॑ ।  
224. ओं अ॒व॒र्ष्याय॑ च॒ नमः॑ ।  
225. ओं नमो॑ मे॒घ्याय॑ च॒ नमः॑ ।  
226. ओं वि॒द्यु॒त्याय॑ च॒ नमः॑ ।  
227. ओं नम॑ ई॒ध्रिया॑य च॒ नमः॑ ।

228. ओं आ॒त॒प्या॒य च॒ नमः॑ ।
229. ओं नमो॑ वा॒त्या॒य च॒ नमः॑ ।
230. ओं रे॒ष्मि॒या॒य च॒ नमः॑ ।
231. ओं नमो॑ वा॒स्त॒व्या॒य च॒ नमः॑ ।
232. ओं वा॒स्तु॒पा॒य च॒ नमः॑ ।
- 233. ओं नमः॑ सो॒मा॒य च॒ नमः॑ ।**
234. ओं रु॒द्रा॒य च॒ नमः॑ ।
235. ओं नम॑स्ता॒म्रा॒य च॒ नमः॑ ।
236. ओं अरु॑णा॒य च॒ नमः॑ ।
237. ओं नमः॑ श॒ङ्गा॒य च॒ नमः॑ ।
238. ओं प॒शु॒प॒त॒ये च॒ नमः॑ ।
239. ओं नम॑ उ॒ग्रा॒य च॒ नमः॑ ।
240. ओं भी॒मा॒य च॒ नमः॑ ।
241. ओं नमो॑ अ॒ग्रे॒व॒धा॒य च॒ नमः॑ ।
242. ओं दू॒रे॒व॒धा॒य च॒ नमः॑ ।
243. ओं नमो॑ ह॒न्त्रे॒ च॒ नमः॑ ।
244. ओं ह॒नी॒य॒से च॒ नमः॑ ।

245. ओं नमो वृक्षेभ्यो नमः ।  
 246. ओं हरिकेशेभ्यो नमः ।  
 247. ओं नमस्ताराय नमः ।  
 248. ओं नमश्शंभवे च नमः ।  
 249. ओं मयोभवे च नमः ।  
 250. ओं नमश्शंकराय च नमः ।  
 251. ओं मयस्कराय च नमः ।  
 252. ओं नमः शिवाय च नमः ।  
 253. ओं शिवतराय च नमः ।  
 254. ओं नमस्तीर्थ्याय च नमः ।  
 255. ओं कूल्याय च नमः ।  
 256. ओं नमः पार्याय च नमः ।  
 257. ओं अवार्याय च नमः ।  
 258. ओं नमः प्रतरणाय च नमः ।  
 259. ओं उत्तरणाय च नमः ।  
 260. ओं नम आतार्याय च नमः ।  
 261. ओं आलाद्याय च नमः ।  
 262. ओं नमः शष्याय च नमः ।

263. ओं फे॒न्या॒य च॒ नमः॑ ।
264. ओं नमः॑ सि॒क॒त्या॒य च॒ नमः॑ ।
265. ओं प्र॒वा॒ह्या॒य च॒ नमः॑ ।
266. ओं नम॑ इ॒रि॒ण्या॒य च॒ नमः॑ ।
267. ओं प्र॒प॒थ्या॒य च॒ नमः॑ ।
268. ओं नमः॑ कि॒ञ्शि॒ला॒य च॒ नमः॑ ।
269. ओं क्ष॒य॒णा॒य च॒ नमः॑ ।
270. ओं नमः॑ क॒प॒र्दि॒ने च॒ नमः॑ ।
271. ओं पु॒ल॒स्त॒ये च॒ नमः॑ ।
272. ओं नमो॑ गो॒ष्ठा॒य च॒ नमः॑ ।
273. ओं गृ॒ह्या॒य च॒ नमः॑ ।
274. ओं नम॑स्त॒ल्पा॒य च॒ नमः॑ ।
275. ओं गे॒ह्या॒य च॒ नमः॑ ।
276. ओं नमः॑ का॒त्या॒य च॒ नमः॑ ।
277. ओं ग॒ह्व॒रे॒ष्ठा॒य च॒ नमः॑ ।
278. ओं नमो॑ हृ॒द॒या॒य च॒ नमः॑ ।
279. ओं नि॒वे॒ष्या॒य च॒ नमः॑ ।

280. ओं नमः पा॒ऽस॒व्याय॑ च॒ नमः॑ ।
281. ओं रज॑स्याय च॒ नमः॑ ।
282. ओं नमः॑ शु॒ष्व्याय॑ च॒ नमः॑ ।
283. ओं हरि॑त्याय च॒ नमः॑ ।
284. ओं नमो॑ लो॒प्याय॑ च॒ नमः॑ ।
285. ओं उल॑प्याय च॒ नमः॑ ।
286. ओं नम॑ ऊ॒र्व्याय॑ च॒ नमः॑ ।
287. ओं सू॒र्म्याय॑ च॒ नमः॑ ।
288. ओं नमः॑ प॒र्ण्याय॑ च॒ नमः॑ ।
289. ओं प॒र्णश॑द्याय च॒ नमः॑ ।
290. ओं नमो॑ऽपगु॒रमा॑णाय च॒ नमः॑ ।
291. ओं अ॒भिघ्न॑ते च॒ नमः॑ ।
292. ओं नम॑ आ॒क्खि॑दते च॒ नमः॑ ।
293. ओं प्र॒क्खि॑दते च॒ नमः॑ ।
294. ओं नमो॑ वो॒ नमः॑ ।
295. ओं कि॒रि॒केभ्यो॑ नमः॑ ।
296. ओं दे॒वाना॑ऽहृ॒दये॑भ्यो॒ नमः॑ ।

297. ओं नमो॑ वि॒क्षी॒णके॒भ्यो॒ नमः॑ ।

298. ओं नमो॑ वि॒चि॒न्व॒त्के॒भ्यो॒ नमः॑ ।

299. ओं नम॑ आ॒निर्॒ह॒ते॒भ्यो॒ नमः॑ ।

300. ओं नम॑ आ॒मी॒व॒त्के॒भ्यो॒ नमः॑ ।

## 12.6 प्रदक्षिणं

द्रा॒पे अ॒न्ध॒स॒स्प॒ते द॒रि॒द्र॒न्नी॒ल॒लो॒हित॑ ।

ए॒षां पु॒रु॒षा॒णामे॒षां प॒शू॒नां मा भे॒र्माऽ॒रो मो ए॒षां किञ्च॒नाम॑मत् । 1

या ते॑ रु॒द्र शि॒वा त॒नू॒श्शि॒वा वि॒श्वा॒ह॒भे॒षजी॑ ।

शि॒वा रु॒द्रस्य॑ भे॒षजी॑ तया॑ नो मृ॒ड जी॒वसे॑ ॥ 2

इ॒माꣳ रु॒द्राय॑ तव॒से क॒प॒र्दि॒ने क्ष॒य॒द्वी॒राय॑ प्र भ॒राम॑हे म॒तिं ।

यथा॑ नः॒ श॒म॒सद्-द्वि॒पदे॑ च॒तु॒ष्पदे॑ वि॒श्वं पु॒ष्टं ग्रा॒मे अ॒स्मि॒न्नना॑तुरं । 3

मृ॒डा नो॑ रु॒द्रो त॒नो म॒य॒स्कृ॒धि क्ष॒य॒द्वी॒राय॑ नम॒सा वि॒धेम॑ ते ।

यच्छ॒ञ्च योश्च॑ म॒नुरा॒यजे॑ पि॒ता तद॑श्याम॒ तव॑ रु॒द्र प्र॒णीतौ॑ । 4

मा नो॑ म॒हान्त॑मु॒त मा नो॑ अ॒र्भकं॑ मा न॒ उक्ष॑न्तमु॒त मा न॑ उक्षि॒तं ।

मा नो॑ व॒धीः पि॒तरं॑ मो॒त मा॒तरं॑ प्रि॒या मा न॑स्त॒नुवो॑ रु॒द्र री॒रिषः॑ । 5

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।  
वीरान्मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तो नमसा विधेम ते । 6

आरात्ते गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्न-मस्मे ते अस्तु ।  
रक्षा च नो अधि च देव ब्रूह्यधा च नः शर्म यच्छ द्विर्हाः ॥ 7

स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगन्न भीम-मुपहन्तु-मुग्रं ।  
मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यन्ते अस्मन्नि वपन्तु सेनाः ॥ 8

परिणो रुद्रस्य हेति वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ।  
अव स्थिरा मघवद्भ्य-स्तनुष्व मीद्वस्तोकाय तनयाय मृडय । 9

मीढुष्टम शिवतम शिवो नस्सुमना भव । परमे वृक्ष आयुधन्निधाय  
कृत्तिं वसान आ चर पिनाकं बिभ्रदा गहि । 10

विकिरिद विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः ।  
यास्ते सहस्रं हेतयोऽन्य-मस्मन्नि वपन्तु ताः । 11

सहस्राणि सहस्रधा बाहुवोस्तव हेतयः ।  
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि । 12

12.7 नमस्कारः

स॒हस्रा॑णि स॒हस्र॑शो ये रु॒द्रा अ॒धि भू॒म्यां॑ ।  
तेषां॑ स॒हस्र॑यो॒जने॒ ऽव॒ धन्वा॑नि तन्मसि । 1

(रु॒द्रेभ्यो॑ नमः)

अ॒स्मिन् म॑ह॒त्यर्ण॑वे॒ ऽन्तरि॑क्षे भ॒वा अ॒धि ।  
तेषां॑ स॒हस्र॑यो॒जने॒ ऽव॒ धन्वा॑नि तन्मसि । 2

(रु॒द्रेभ्यो॑ नमः)

नी॒लग्री॑वाः शि॒ति॒कण्ठाः॑ श॒र्वा अ॒धः क्ष॑माच॒राः ।  
तेषां॑ स॒हस्र॑यो॒जने॒ ऽव॒ धन्वा॑नि तन्मसि । 3

(रु॒द्रेभ्यो॑ नमः)

नी॒लग्री॑वा-शि॒ति॒कण्ठा॒ दि॒वः॑ रु॒द्रा उ॒प॒श्रिताः॑ ।  
तेषां॑ स॒हस्र॑यो॒जने॒ ऽव॒ धन्वा॑नि तन्मसि । 4

(रु॒द्रेभ्यो॑ नमः)

ये वृ॒क्षेषु॑ स॒स्पिञ्ज॑रा नी॒लग्री॑वा वि॒लोहि॑ताः ।  
तेषां॑ स॒हस्र॑यो॒जने॒ ऽव॒ धन्वा॑नि तन्मसि । 5

(रु॒द्रेभ्यो॑ नमः)



ये भू॒ताना॑-मधि॒पत॑यो वि॒शिखा॑सः क॒पर्दि॑नः ।

तेषां॑ सहस्र॒योज॑ने ऽव॒ धन्वा॑नि तन्मसि । 6 (रु॒द्रेभ्यो॑ नमः)

ये अ॒न्नेषु॑ वि॒विद्ध्य॑न्ति पा॒त्रेषु॑ पि॒बतो॑ जना॒न् ।

तेषां॑ सहस्र॒योज॑ने ऽव॒ धन्वा॑नि तन्मसि । 7 (रु॒द्रेभ्यो॑ नमः)

ये प॒थां प॑थि॒रक्ष॑य ऐ॒लबृ॑दा य॒व्युधः॑ ।

तेषां॑ सहस्र॒योज॑ने ऽव॒ धन्वा॑नि तन्मसि । 8

(रु॒द्रेभ्यो॑ नमः)

ये ती॒र्थानि॑ प्र॒चर॑न्ति सू॒काव॑न्तो निष॒ङ्गिणः॑ ।

तेषां॑ सहस्र॒योज॑ने ऽव॒ धन्वा॑नि तन्मसि । 9

(रु॒द्रेभ्यो॑ नमः)

य ए॒ताव॑न्तश्च॒ भूया॑ँसश्च दि॒शो रु॒द्रा वि॑त॒स्थिरे॑ ।

तेषां॑ सहस्र॒योज॑ने ऽव॒ धन्वा॑नि तन्मसि । 10 (रु॒द्रेभ्यो॑ नमः)

नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॑ ये पृ॒थिव्यां॑ येषा॒मन्न॑मिष॒व-स्तेभ्यो॑ द॒श प्रा॒ची  
द॒श दक्षि॑णा द॒श प्र॒तीची॑ द॒शोदी॑ची द॒शोर्द्ध्वा॑-स्तेभ्यो॑ नम॒स्ते नो॑  
मृ॒डय॑न्तु ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो द्वेष्टि॒ तं वो॑ ज॒म्भे द॑धामि ॥ 11

(रु॒द्रेभ्यो॑ नमः)

नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॑ ये॒ऽन्तरिक्षे॑ येषां॑ वा॒त इ॒षव॑-स्तेभ्यो॑ द॒श प्रा॒ची  
 द॒शदक्षि॑णा द॒शप्र॒तीची॑ द॒शोदी॑ची द॒शोर्द्ध्वा॑-स्तेभ्यो॑ नमस्ते नो॑  
 मृडयन्तु॑ ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॑ तं वा॒जंभे॑ दधामि ॥ 12

(रुद्रेभ्यो नमः)

नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॑ ये दि॒वि येषां॑ व॒र्षमि॑षव॑-स्तेभ्यो॑ द॒श  
 प्रा॒ची द॒शदक्षि॑णा द॒शप्र॒तीची॑ द॒शोदी॑ची द॒शोर्द्ध्वा॑-स्तेभ्यो॑ नमस्ते  
 नो॑ मृडयन्तु॑ ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॑ तं वा॒जंभे॑ दधामि ॥ 13

(रुद्रेभ्यो नमः)

## 12.8 चमक प्रार्थना

प्रथमो ऽनुवाकः

अ॒ग्नावि॑ष्णू स॒जोष॑से॒मा वर्द्ध॑न्तु वा॒ङ्गिरः॑ ।

द्यु॒नैर्वा॑ज॒भिरा॑गतं ॥

वा॒जश्च॑ मे,  
 प्र॒यति॑श्च मे,  
 धी॒तिश्च॑ मे,  
 स्वर॑श्च मे,

प्र॒सव॑श्च मे,  
 प्र॒सिति॑श्च मे,  
 क्र॒तुश्च॑ मे,  
 श॒लोक॑श्च मे,

श्रावश्च॑ मे,  
 ज्योति॑श्च मे,  
 प्राणश्च॑ मे,  
 व्यानश्च॑ मे,  
 चित्तं॑ च॒ म॒ ,  
 वाक्च॑ मे,  
 चक्षु॑श्च मे ,  
 दक्षश्च॑ मे,  
 ओजश्च॑ मे ,  
 आयुश्च॑ मे,  
 आत्मा॑ च॒ मे,  
 शर्म॑ च॒ मे,  
 ऽङ्गानि॑ च॒ मे,  
 परू॑षि च॒ मे,

द्वितीयो ऽनुवाकः

ज्यैष्ठ्यं॑ च॒ म॒ ,  
 मन्यु॑श्च मे,

श्रुति॑श्च मे,  
 सुवश्च॑ मे,  
 ऽपानश्च॑ मे,  
 ऽसुश्च॑ मे,  
 आधी॑तं च॒ मे,  
 मनश्च॑ मे,  
 श्रोत्रं॑ च॒ मे,  
 बलं॑ च॒ म॒ ,  
 सहश्च॑ म॒ ,  
 जरा॑ च॒ म॒ ,  
 तनू॑श्च मे,  
 वर्म॑ च॒ मे,  
 ऽस्थानि॑ च॒ मे,  
 शरी॑राणि च॒ मे ॥ 1 (36)

आधि॑पत्यं च॒ मे,  
 भाम॑श्च मे,

## शिव स्तुति

---

ॐ॒श्च॒ मे॒,  
जे॒मा च॑ मे॒,  
वरि॒मा च॑ मे॒,  
व॒र्ष्मा च॑ मे॒,  
वृ॒द्धं च॑ मे॒,  
स॒त्यं च॑ मे॒,

जग॑च्च॒ मे॒,  
व॒शश्च॑ मे॒,  
क्री॒डा च॑ मे॒,  
जा॒तं च॑ मे॒,  
सू॒क्तं च॑ मे॒,  
वि॒त्तं च॑ मे॒,  
भू॒तं च॑ मे॒,  
सु॒गं च॑ मे॒,

ॐ॒भश्च॑ मे॒,  
महि॒मा च॑ मे॒,  
प्र॒थिमा च॑ मे॒,  
द्राघु॑या च॑ मे॒,  
वृ॒द्धिश्च॑ मे॒,  
श्र॒द्धा च॑ मे॒,

धनं॑ च॒ मे॒,  
त्वि॒षिश्च॑ मे॒,  
मोद॑श्च॒ मे॒,  
जनि॑ष्यमाणं च॑ मे॒,  
सुकृ॑तं च॒ मे॒,  
वेद्यं॑ च॒ मे॒,  
भवि॑ष्यच्च॒ मे॒,  
सु॒पथं॑ च॒ म॒,

ऋ॒द्धं च॑ म॒,  
क्लृ॒प्तं च॑ मे॒,  
मति॑श्च मे॒,

ऋ॒द्धिश्च॑ मे॒,  
क्लृ॒प्तिश्च॑ मे॒,  
सुम॑तिश्च मे ॥ 2 (38)

तृतीयो ऽनुवाकः

शं च॑ मे॒,  
प्रि॒यं च॑ मे॒,  
का॒मश्च॑ मे॒,  
भ॒द्रं च॑ मे॒,

म॒यश्च॑ मे॒,  
ऽनु॒का॒मश्च॑ मे॒,  
सौम॑नसश्च मे॒,  
श्रे॒यश्च॑ मे॒,

व॒स्यश्च॑ मे॒,  
भ॒गश्च॑ मे॒,  
य॒न्ता च॑ मे॒,  
क्षे॒मश्च॑ मे॒,

य॒शश्च॑ मे॒,  
द्र॒वि॒णं च॑ मे॒,  
ध॒र्ता च॑ मे॒,  
धृ॒तिश्च॑ मे॒,

वि॒श्वं च॑ मे॒,  
सँ॒वि॒च्च॑ मे॒,  
सूश्च॑ मे॒,  
सी॒रं च॑ मे॒,

म॒हश्च॑ मे॒,  
ज्ञा॒त्रं च॑ मे॒,  
प्र॒सूश्च॑ मे॒,  
ल॒यश्च॑ म॒,

ऋ॒तं च॑ मे,  
 ऽय॒क्ष्मं च॑ मे,  
 जी॒वातु॑श्च मे,  
 ऽन॒मित्रं॑ च॒ मे,  
 सु॒गं च॑ मे,  
 सू॒षा च॑ मे,

ऽमृ॒तं च॑ मे,  
 ऽना॒मय॑च्च मे,  
 दी॒र्घायु॑त्वं च॒ मे,  
 ऽभ्यं॑ च॒ मे,  
 श॒यनं॑ च॒ मे,  
 सु॒दिनं॑ च॒ मे ॥ 3 (36)

चतुर्थो ऽनुवाकः

ऊ॒र्क्च॑ मे,  
 प॒यश्च॑ मे,  
 घृ॒तं च॑ मे,  
 स॒ग्धिश्च॑ मे,  
 कृ॒षिश्च॑ मे,  
 जै॒त्रं च॑ मे,  
 र॒यिश्च॑ मे,  
 पु॒ष्टं च॑ मे,  
 वि॒भु च॑ मे,  
 ब॒हु च॑ मे,

सू॒नृता॑ च॒ मे,  
 र॒सश्च॑ मे,  
 म॒धु च॑ मे ,  
 स॒पीति॑श्च मे,  
 वृ॒ष्टिश्च॑ मे,  
 औ॒द्भिद्यं॑ च॒ मे ,  
 रा॒यश्च॑ मे ,  
 पु॒ष्टिश्च॑ मे,  
 प्र॒भु च॑ मे,  
 भू॒यश्च॑ मे,

पूर्णं च मे,  
ऽक्षितिश्च मे,

ऽन्नं च मे,  
ब्रीहयश्च मे,  
माषाश्च मे,  
मुद्गाश्च मे,

गोधूमाश्च मे,  
प्रियंगवश्च मे,  
श्यामाकाश्च मे,

पञ्चमो ऽनुवाकः

अश्मा च मे,  
गिरयश्च मे,  
सिकताश्च मे,  
हिरण्यं च मे,

सीसं च मे,  
श्यामं च मे,  
ऽग्निश्च म,

पूर्णतरं च मे,  
कूयवाश्च मे,

ऽक्षुच्च मे,  
यवाश्च मे,  
तिलाश्च मे,  
खल्वाश्च मे,

मसुराश्च मे,  
ऽणवश्च मे,  
नीवाराश्च मे ॥ 4 (38)

मृत्तिका च मे,  
पर्वताश्च मे,  
वनस्पतयश्च मे,  
ऽयश्च मे,

त्रपुश्च मे,  
लोहं च मे,  
आपश्च मे,

वी॒रु॒धश्च॑ म॒,

कृ॒ष्टप॒च्यं च॑ मे॒,

ग्रा॒म्याश्च॑ मे॒,

वि॒त्तं च॑ मे॒,

भू॒तं च॑ मे॒,

वसु॑ च॑ मे॒,

कर्म॑ च॑ मे॒,

ऽर्था॑श्च॑ म॒,

इति॑श्च॑ मे॒,

ओष॑धयश्च॑ मे॒,

ऽकृ॒ष्टप॒च्यं च॑ मे॒,

प॒शव॑ आ॒रण्या॑श्च॑ य॒ज्ञेन॑ कल्पन्तां ,

वि॒त्तिश्च॑ मे॒,

भू॒तिश्च॑ मे॒,

वस॑तिश्च॑ मे॒,

शक्ति॑श्च॑ मे॒,

ए॒मश्च॑ म॒,

गति॑श्च॑ मे ॥ 5 (32)

### षष्ठो ऽनुवाकः

अ॒ग्निश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॑ मे॒,

सवि॑ता च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॑ मे॒,

पू॒षा च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॑ मे॒,

मि॒त्रश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॑ मे॒,

त्व॒ष्टा च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॑ मे॒,

विष्णु॑श्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॑ मे॒ ,

सोम॑श्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॑ मे॒,

सर॑स्वती च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॑ मे॒,

बृ॒हस्प॑तिश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॑ मे॒,

वरु॑णश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॑ मे॒,

धा॒ता च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॑ मे॒,

ऽश्वि॑नौ च॑ म॒ इन्द्र॑श्च॑ मे॒,



म॒रु॒तश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,  
पृ॒थि॒वी च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,

वि॒श्वे च॑ मे, दे॒वा इन्द्र॑श्च मे,  
ऽन्त॑रि॒क्षं च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,

द्यौश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,  
मूर्धा॑ च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,

दि॒शश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,  
प्र॒जाप॑तिश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे ॥ 6 (21)

सप्तमो ऽनुवाकः

अ॒॒शुश्च॑ मे,  
ऽदा॑भ्यश्च॑ मे,  
उपा॒॒शुश्च॑ मे,  
ऐन्द्र॑वा॒यव॑श्च मे,

र॒श्मिश्च॑ मे,  
ऽधि॑पतिश्च॑ म,  
ऽन्त॑र्या॒मश्च॑ म,  
मै॒त्रावरु॑णश्च॑ म,

आ॒श्विन॑श्च मे,  
शु॒क्रश्च॑ मे,  
आ॒ग्रय॑णश्च॑ मे,  
ध्रु॒वश्च॑ मे,

प्र॒तिप्र॑स्था॒नश्च॑ मे,  
म॒न्थी च॑ म,  
वै॒श्वदे॑वश्च॑ मे,  
वै॒श्वान॑रश्च॑ म,

ऋ॒तुग्र॑हाश्च॑ मे,  
ऐन्द्रा॑ग्नश्च॑ मे,  
म॒रुत्व॑तीयाश्च॑ मे,  
आ॒दि॒त्यश्च॑ मे,

ऽति॑ग्रा॒ह्याश्च॑ म,  
वै॒श्वदे॑वश्च॑ मे,  
मा॒हेन्द्र॑श्च॑ म,  
सा॒वि॒त्रश्च॑ मे,

सारस्वतश्च मे,  
पालीवतश्च मे,

पौष्णश्च मे,  
हारियोजनश्च मे ॥ 7 (28)

अष्टमो ऽनुवाकः

इ॒ध्मश्च॑ मे,  
वे॒दिश्च॑ मे,  
सु॒चश्च॑ मे,  
ग्रा॒वाणश्च॑ मे,  
उ॒पर॒वाश्च॑ मे,  
द्रो॒णक॒लशश्च॑ मे,  
पू॒तभृ॑च्च म,  
आ॒ग्नी॑ध्रं च मे,

ब॒र्हिश्च॑ मे,  
धि॒ष्णि॒याश्च॑ मे,  
च॒मसा॑श्च मे,  
स्व॒रवश्च॑ म,  
ऽधि॒षव॑णे च मे,  
वा॒यव्या॑नि च मे,  
आ॒धव॑नीयश्च म,  
ह॒वि॒र्धा॒नं च॑ मे,

गृ॒हाश्च॑ मे,  
पु॒रोडा॑शाश्च मे,  
ऽव॒भृथश्च॑ मे,

स॒दश्च॑ मे,  
प॒च॒ताश्च॑ मे,  
स्व॒गाका॑रश्च मे ॥ 8 (22)

नवमो ऽनुवाकः

अ॒ग्निश्च॑ मे,  
ऽर्कश्च॑ मे,

घ॒र्मश्च॑ मे,  
सू॒र्यश्च॑ मे,

प्रा॒णश्च॑ मे,  
 पृ॒थि॒वी च॑ मे,  
 दि॒तिश्च॑ मे,  
 श॒क्वरी॑रङ्गु॒लयो दि॑शश्च मे,  
 सा॒म च॑ मे,  
 य॒जुश्च॑ मे,  
 त॒पश्च॑ म,  
 व्र॒तं च॑ मे,  
 बृ॒ह॒द्र॒थ॒न्त॒रे च॑ मे  
दश॑मो ऽनु॒वाकः॑

ग॒र्भाश्च॑ मे,  
 त्रि॒श्च॑ मे,  
 दि॒त्य॒वाट् च॑ मे,  
 पञ्चा॒विश्च॑ मे,  
 त्रि॒व॒थ्सश्च॑ मे,  
 तु॒र्य॒वाट् च॑ मे,  
 प॒ष्ठ॒वाट् च॑ मे,

ऽश्व॑मे॒धश्च॑ मे,  
 ऽदि॒तिश्च॑ मे,  
 द्यौश्च॑ मे,  
 य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पन्ता॒-मृ॒क्च॑ मे,  
 स्तो॒मश्च॑ मे,  
 दी॒क्षा च॑ मे,  
 ऋ॒तुश्च॑ मे ,  
 ऽहो॒रा॒त्रयो॑ वृ॒ष्ट्या,  
 य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पेतां॑ ॥ 9 (21)

व॒थ्स॑श्च॒ मे,  
 त्रि॒च॑ मे ,  
 दि॒त्यौ॒ही च॑ मे,  
 पञ्चा॒वी च॑ मे,  
 त्रि॒व॒थ्स॑ च॒ मे,  
 तु॒र्यौ॒ही च॑ मे,  
 प॒ष्ठौ॒ही च॑ म,

उ॒क्षा च॑ मे,

ऋ॒षभश्च॑ मे,

ऽन॒ड्वान् च॑ मे,

आयु॑र्य॒ज्ञेन॑ कल्पतां,

मपा॑नो य॒ज्ञेन॑ कल्पतां ,

चक्षु॑र्य॒ज्ञेन॑ कल्पतां७,

मनो॑ य॒ज्ञेन॑ कल्पतां ,

मा॒त्मा य॒ज्ञेन॑ कल्पतां ,

एकादशो ऽनुवाकः

एका॑ च मे,

पञ्च॑ च मे,

नव॑ च म,

त्रयो॑दश च मे,

सप्त॑दश च मे,

एक॑विंशतिश्च मे,

पञ्च॑विंशतिश्च मे,

नव॑विंशतिश्च म,

व॒शा च॑ म,

वे॒हच्च॑ मे,

धे॒नुश्च॑ म,

प्रा॒णो य॒ज्ञेन॑ कल्पता-

ँव्या॑नो य॒ज्ञेन॑ कल्पतां

श्रो॒त्रं य॒ज्ञेन॑ कल्पतां

ँवा॒ग्य॒ज्ञेन॑ कल्पता-

ँय॒ज्ञो य॒ज्ञेन॑ कल्पतां ॥ 10 (29)

ति॒स्रश्च॑ मे,

स॒प्त च॑ मे,

एका॑दश च मे,

पञ्च॑दश च मे,

नव॑दश च म,

त्रयो॑विंशतिश्च मे,

सप्त॑विंशतिश्च मे,

एक॑त्रिंशच्च मे,

त्रयस्त्रिंशच्च मे,

ऽष्टौ च मे,

षोडश च मे,

चतुर्विंशतिश्च मे,

द्वात्रिंशच्च मे,

चत्वारिंशच्च मे,

ऽष्टाचत्वारिंशच्च मे,

चतस्रश्च मे,

द्वादश च मे,

विंशतिश्च मे,

ऽष्टाविंशतिश्च मे

षट्त्रिंशच्च मे,

चतुश्चत्वारिंशच्च मे ,

वाजश्च प्रसवश्चा-पिजश्च क्रतुश्च सुवश्च मूर्धा च व्यश्रिजय-

श्चान्त्यायन-श्चान्त्यश्च भौवनश्च भुवनश्चा-धिपतिश्च ॥ 11 (41)

इडा देवहूर्मनु र्यज्ञनीर् बृहस्पति-रुक्थामदानि

शस्मिषद्-विश्वेदेवाः सूक्तवाचः पृथिविमातर्मा मा हिंसीर्मधु मनिष्ये

मधु जनिष्ये मधु वक्ष्यामि मधु वदिष्यामि मधुमतीं

देवेभ्यो वाचमुद्यासं शुश्रूषेभ्यस्तं मा देवा

अवन्तु शोभायै पितरो ऽनुमदन्तु ॥

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

=====

### 12.9 अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो

अ॒घो॒रे॒भ्यो॑ ऽथ॒घो॒रे॒भ्यो॑ घोर॒घोर॑तरेभ्यः ।

सर्वे॑भ्यः सर्व॒शर्वे॑भ्यो नमस्ते अस्तु रु॒द्ररू॑पेभ्यः ॥

तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ महा॒देवा॑य धीमहि । तन्नो॑ रु॒द्रः प्र॑चोदयात् ॥

ई॒शानः॑ सर्व॒विद्या॑ना-मीश्वरः॑ सर्व॒भूता॑नां ब्र॒ह्माधि॑पति ब्र॒ह्म॒णोऽधि॑पति  
ब्र॒ह्मा शि॒वो मे॑ अस्तु सदाशिवों ॥

((नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतये ऽंबिकापतय  
उमापतये पशुपतये नमो नमः ॥ ))

---

<h2>Section 3 – Rudra Japam</h2>
----------------------------------

---

12.10 श्री रुद्रस्य ऋषिच्छन्दो देवता ध्यानं

अस्य श्री रुद्राध्याय प्रश्न महामन्त्रस्य

अघोर ऋषिः, अनुष्टुप् चन्दः, संकर्षणमूर्ति स्वरूपो योऽसावादित्य स  
एष मृत्युंजयरुद्रो देवता ।

नमः शिवायेति बीजं, शिवतरायेति शक्तिः,

नमः सोमायेति (महादेवायेति) कीलकं, (श्री साम्ब सदाशिव)

सोमास्कन्द-परमेस्वर प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

करन्यासः

अग्निहोत्रात्मने

अंगुष्ठाभ्यां नमः

दर्शपूर्णमासात्मने

तर्जनीभ्यां नमः

चातुर्मास्यात्मने

मध्यमाभ्यां नमः

निरूढपशुबन्धात्मने

अनामिकाभ्यां नमः

ज्योतिष्टोमात्मने

कनिष्ठिकाभ्यां नमः

सर्वक्रत्वात्मने

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

अंगन्यासः

अग्निहोत्रात्मने

हृदयाय नमः

दर्शपूर्णमासात्मने

शिरसे स्वाहा

चातुर्मास्यात्मने

शिखायै वषट्



निरूढपशुबन्धात्मने	कवचाय हुं
ज्योतिष्ठोमात्मने	नेत्रत्रयाय वौषट्
सर्वक्रत्वात्मने	अस्त्राय फट्
भूर्भुवस्सुवरो	इति दिग्बन्धः

### ध्यानं

आपाताळनभःस्थलान्तभुवनब्रह्माण्ड-माविस्फुरज्-  
ज्योतिः स्फाटिकलिंगमौळिविलसत् पूर्णोन्दुवान्तामृतैः ।  
अस्तोकाप्लुतमेक-मीशमनिशं रुद्रानुवाकान् जपन्-  
ध्यायन् नीप्सितसिद्धये ऽद्रुव (द्रुत) पदं विप्रो-ऽभिषिञ्चेच्छिवं ॥ 1

पीठं यस्य धरित्री जलधरकलशं लिंगमाकाश मूर्तिं  
नक्षत्रं पुष्पमाल्यं ग्रहकणकुसुमं चन्द्र-वहन्यर्क-नेत्रं  
कुक्षिः सप्तसमुद्रं भुजगिरि-शिखरं सप्त पाताळपादं  
वेदं वक्त्रं षडंगं दशदिशि वसनं दिव्यलिंगं नमामि ॥ 2

ब्रह्माण्ड-व्याप्तदेहा भसितहिम रुचा भासमाना भुजंगैः  
कण्ठे कालाः कपर्दा-कलित शशिकला श्रण्ड कोदण्डहस्ताः  
त्र्यक्षा रुद्राक्षमाला प्रणत भयहराः (प्रकटितविभवाः) शांभवा मूर्तिभेदाः  
रुद्राः श्रीरुद्र-सूक्त प्रकटितविभवाः नः प्रयच्छन्तु सौख्यं ॥ 3

12.11 गणानां त्वा

ओं ग॒णानां॑ त्वा ग॒णप॑ति॒ ॐ ह॒वाम॑हे क॒विं क॒वीना॑-मु॒पम॑श्रवस्तमं ।  
जे॒ष्ठरा॒जं ब्र॑ह्मणां ब्रह्मणस्पत॒ आ नः॑ शृ॒ण्वन्नू॒तिभिः॑ सीद॒ साद॑नं ।  
श्री महा गणपतये नमः ।

12.12 शं च मे

शं च मे,	मयश्च मे,
प्रि॒यं च मे,	ऽनु॒काम॑श्च मे,
का॒मश्च मे,	सौम॑नसश्च मे,
भ॒द्रं च मे,	श्रेय॑श्च मे,
व॒स्यश्च मे,	यश॑श्च मे,
भग॑श्च मे,	द्र॒विणं॑ च मे,
य॒न्ता च मे,	ध॒र्ता च मे,
क्षे॒मश्च मे,	धृ॒तिश्च मे,
वि॒श्वं च मे,	म॒हश्च मे,
सँ॒वि॒च्च मे,	ज्ञा॒त्रं च मे,
सू॒श्च मे,	प्र॒सूश्च मे,
सी॒रं च मे,	ल॒यश्च मे,

## शिव स्तुति

---

ऋ॒तं च॑ मे॒,

ऽय॒क्ष्मं च॑ मे॒,

जी॒वातु॑श्च मे॒,

ऽन॒मि॒त्रं च॑ मे॒,

सु॒गं च॑ मे॒,

सू॒षा च॑ मे॒,

ऽमृ॒तं च॑ मे॒,

ऽना॒मय॑च्च मे॒,

दी॒र्घायु॑त्वं च॑ मे॒,

ऽभ्य॑यं च॑ मे॒,

श॒यनं॑ च॑ मे॒,

सु॒दिनं॑ च॑ मे॒ ॥ ३ (३६)

ओं शान्तिः॑ शान्तिः॑ शान्तिः॑ ।

=====

### 12.13 श्रीरुद्र दशाक्षरी महामन्त्रः

अस्य श्रीरुद्र दशाक्षरी महामन्त्रस्य, बोधायन ऋषिः, पङ्क्तिः छन्दः,  
सदाशिव रुद्रो देवता ।

#### ध्यानं

कैलासाचल-सन्निभा त्रिनयनं पञ्चास्यमम्बायुतं  
नीलग्रीव-महीश-भूषणधरं व्याघ्रत्वचा प्रावृतं  
अक्षस्रग्वर-कुण्डिका-भयकरं चान्द्रीं कलां बिभ्रतं  
गंगाभोविलसज्जटं दशभुजं वन्दे महेशं परं ॥

#### मूलमन्त्रः

"ओं नमो भगवते रुद्राय"

It is customary to chant "Shree Rudram" after this Dyanam  
and Moola Mantram.

---

12.14 श्री रुद्रं

पथमो ऽनुवाकः

ओं नमो भगवते रुद्राय ॥

ओं नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः ।

नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः । 1.1

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः ।

शिवा शरव्या या तव तया नो रुद्र मृडय । 1.2

या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा ऽपापकाशिनी ।

तया नस्तनुवा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि । 1.3

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।

शिवाङ्-गिरित्र ताङ्कुरु मा हिंसीः पुरुषं जगत् । 1.4

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।

यथा नस्सर्वमि-ज्जगदयक्ष्मं सुमना असत् । 1.5

अध्यवोच-दधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।

अहींश्च सर्वान् जंभयन् त्सर्वाश्च यातुधान्यः । 1.6

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुस्सुमङ्गलः । ये चेमाँ रुद्रा  
अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो ऽवैषाँ हेड ईमहे । 1.7

असौ यो ऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः ।  
उतैनं गोपा अदृशन्-नदृशन्-नुदहार्यः ।  
उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः । 1.8

नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।  
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्यो ऽकरन्नमः । 1.9

प्रमुञ्च धन्वन-स्त्वमुभयो-रार्णियोज्या ।  
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप । 1.10

अवतत्य धनुस्त्वँ सहस्राक्ष शतेषुधे ।  
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव । 1.11

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ उत ।  
अनेशन्नस्येषव आभुरस्य निषङ्गथिः । 1.12

या ते हेति मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।  
तयाऽस्मान् विश्वत स्त्वमयक्ष्मया परिब्भुज । 1.13

नमस्ते अस्त्वायु॑धाया-ना॒तताय॑ धृ॒ष्णवे॑ ।  
उ॒भाभ्या॑मु॒त ते॒ नमो॑ बा॒हुभ्यां॑ तव॒ धन्व॑ने । 1.14

परि॑ ते॒ धन्व॑नो हे॒तिर॒स्मान् वृ॑णक्तु॒ विश्व॑तः ।  
अथो॒ य इ॑षु॒धिस्त॒वारे॒ अ॒स्मन्नि॑धेहि॒ तं ॥ 1.15

नमस्ते अस्तु॑ भगवन् विश्वेश्वराय॑ महादेवाय॑ त्र्यम्ब॒काय॑  
त्रिपु॒रान्त॑काय॒ त्रिका॑ग्निका॒लाय॑ का॒लाग्नि॑रु॒द्राय॑  
नील॑कण्ठाय॒ मृत्यु॑ञ्जयाय॒ सर्वेश्व॑राय॒ सदा॑शिवाय॒  
शङ्करा॑य श्रीमन्-महादेवाय॒ नमः॑ ॥

### द्वितीयो ऽनुवाकः

नमो॑ हि॒रण्य॑बा॒हवे॑ से॒नान्ये॑ दि॒शांच॑ प॒तये॑ नमो॒ 2.1  
नमो॑ वृ॒क्षेभ्यो॑ हरि॒केशे॑भ्यः प॒शूनां॑ प॒तये॑ नमो॒ 2.2  
नम॑ स्स॒स्पिञ्ज॑राय॒ त्विषी॑मते प॒थीनां॑ प॒तये॑ नमो॒ 2.3  
नमो॑ ब॒भ्रु॒शाय॑ वि॒व्याधि॑ने-ऽन्ना॒नां प॒तये॑ नमो॒ 2.4  
नमो॑ हरि॒केशा॑योप॒वीति॑ने पु॒ष्टा॒नां प॒तये॑ नमो॒ 2.5  
नमो॑ भव॒स्य हे॒त्यै जग॑तां प॒तये॑ नमो॒ 2.6  
नमो॑ रु॒द्राया॑-त॒तावि॑ने क्षे॒त्राणां॑ प॒तये॑ नमो॒ 2.7  
नमः॑ सू॒ताया॑-ह॒न्त्याय॑ व॒नानां॑ प॒तये॑ नमो॒ 2.8

नमो॑ रोहि॒ताय॑ स्थ॒पतये॑ वृ॒क्षाणां॑ पतये॑ नमो॑	2.9
नमो॑ मन्त्रि॒णे वाणि॑जाय॒ कक्षा॑णां पतये॑ नमो॑	2.10
नमो॑ भुव॒न्तये॑ वारि॒वस्कृ॑ता-यौष॒धीनां॑ पतये॑ नमो॑	2.11
नम॑ उच्चै॒र्घोषा॑याक्र॒न्दयते॑ पत्ती॒नां पतये॑ नमो॑	2.12
नमः॑ कृ॒त्स्नवी॑ताय॒ धाव॑ते स॒त्त्वनां॑ पतये॑ नमः॑ ॥	2.13

### तृतीयो ऽनुवाकः

नम॑स्सह॒मानाय॑ नि॒व्याधि॑न आ॒व्याधि॑नी॒नां पतये॑ नमो॑	3.1
नमः॑ ककु॒भाय॑ निष॒ङ्गिणे॑ स्ते॒नानां॑ पतये॑ नमो॑	3.2
नमो॑ निष॒ङ्गिण॑ इषु॒धिम॑ते तस्करा॒णां पतये॑ नमो॑	3.3
नमो॑ वज्र॑चते परि॒वज्र॑चते स्तायू॒नां पतये॑ नमो॑	3.4
नमो॑ निचे॒रवे॑ परि॒चरा॑या-र॒ण्यानां॑ पतये॑ नमो॑	3.5
नमः॑ सृ॒कावि॑भ्यो जिघा॒ंसद्भ्यो॑ मुष्ण॒तां पतये॑ नमो॑	3.6
नमो॑ ऽसि॒मद्भ्यो॑ नक्तं॑ चर॒द्भ्यः प्र॑कृ॒न्तानां॑ पतये॑ नमो॑	3.7
नम॑ उष्णी॒षिणे॑ गिरि॒चरा॑य कुलु॒ञ्चानां॑ पतये॑ नमो॑	3.8
नम॑ इषु॒मद्भ्यो॑ धन्वा॒विभ्य॑श्च वो॒ नमो॑	3.9
नम॑ आत॒न्वाने॑भ्यः प्रति॒दधाने॑भ्यश्च वो॒ नमो॑	3.10
नम॑ आय॒च्छद्भ्यो॑ विसृ॒जद्भ्य॑श्च वो॒ नमो॑	3.11
नमो॑ ऽस्य॒द्भ्यो वि॒द्ध्यभ्य॑श्च वो॒ नमो॑	3.12



नम॑ आ॒सी॒ने॒भ्यः॑ श॒या॒ने॒भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑	3.13
नम॑स्स्व॒पद्भ्यो॑ जा॒ग्रद्भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑	3.14
नम॑स्तिष्ठ॒द्भ्यो॑ धा॒वद्भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑	3.15
नम॑स्स॒भाभ्य॑ स्स॒भाप॑तिभ्यश्च वो॒ नमो॑	3.16
नमो॑ अ॒श्वेभ्यो॑ ऽश्व॒पति॑भ्यश्च वो॒ नमः॑ ॥	3.17

### चतुर्थो ऽनुवाकः

नम॑ आ॒व्या॒धिनी॑भ्यो वि॒विद्ध्य॑न्तीभ्यश्च वो॒ नमो॑	4.1
नम॑ उ॒गणा॑भ्य स्तृ॒हती॑भ्यश्च वो॒ नमो॑	4.2
नमो॑ गृ॒थ्से॑भ्यो गृ॒थ्स॑पतिभ्यश्च वो॒ नमो॑	4.3
नमो॑ ब्रा॒तेभ्यो॑ ब्रा॒तप॑तिभ्यश्च वो॒ नमो॑	4.4
नमो॑ ग॒णेभ्यो॑ ग॒णप॑तिभ्यश्च वो॒ नमो॑	4.5
नमो॑ वि॒रूपे॑भ्यो वि॒श्वरूपे॑भ्यश्च वो॒ नमो॑	4.6
नमो॑ म॒हद्भ्यः॑ क्षु॒ल्लके॑भ्यश्च वो॒ नमो॑	4.7
नमो॑ र॒थिभ्यो॑ ऽर॒थेभ्यश्च॑ वो॒ नमो॑	4.8
नमो॑ र॒थेभ्यो॑ र॒थप॑तिभ्यश्च वो॒ नमो॑	4.9
नमः॑ से॒नाभ्य॑ स्से॒नानि॑भ्यश्च वो॒ नमो॑	4.10
नमः॑ क्ष॒त्तृभ्य॑ स्सं॒ग्रही॑तृभ्यश्च वो॒ नमो॑	4.11
नम॑स्त॒क्षभ्यो॑ र॒थका॑रेभ्यश्च वो॒ नमो॑	4.12

नमः॑ कु॒लाले॑भ्यः॑ कम॒रि॑भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑	4.13
नमः॑ पु॒ञ्जि॑ष्टे॒भ्यो नि॒षादे॑भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑	4.14
नमः॑ इ॒षुकृ॑द्भ्यो॑ धन्व॒कृद्भ्य॑श्च॑ वो॒ नमो॑	4.15
नमो॑ मृ॒गयु॑भ्यः॑ श्वनि॒भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑	4.16
नमः॑ श्व॒भ्यः श्व॑पति॒भ्यश्च॑ वो॒ नमः॑ ॥	4.17

पञ्चमो ऽनुवाकः

नमो॑ भ॒वाय॑ च॒ रु॒द्राय॑ च॒ नमः॑ श॒र्वाय॑ च॒ पशु॑पतये च॒  
 नमो॑ नी॒लग्री॑वाय च॒ शि॒तिक॑ण्ठाय च॒ नमः॑ क॒पर्दि॑ने च॒ व्यु॑प्त॒केशा॑य च॒  
 नमः॑ स्स॒हस्रा॑क्षाय च॒ श॒तध॑न्वने च॒ नमो॑ गि॒रि॒शाय॑ च॒ शि॒पिवि॑ष्टाय च॒  
 नमो॑ मी॒ढुष्ट॑माय॒ चेषु॑मते च॒ नमो॑ ह्र॒स्वाय॑ च॒ वा॒मना॑य च॒  
 नमो॑ बृ॒हते॑ च॒ वर्॒षीय॑से च॒ नमो॑ वृ॒द्धाय॑ च॒ स॒म्बृ॑द्ध॒ध्वने॑ च॒  
 नमो॑ अ॒ग्रि॒याय॑ च॒ प्र॒थमा॑य च॒ नमः॑ आ॒शवे॑ चा॒जि॒राय॑ च॒  
 नमः॑ शी॒घ्रि॒याय॑ च॒ शी॒भ्याय॑ च॒ नमः॑ ऊ॒र्म्या॑य चा॒वस्व॑न्याय च॒  
 नमः॑ स्रो॒तस्या॑य च॒ द्वी॒प्याय॑ च ॥ 5

षष्ठो ऽनुवाकः

नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॑ च॒ क॒नि॒ष्ठाय॑ च॒ नमः॑ पू॒र्वजा॑य चा॒पर॑जाय च॒  
 नमो॑ म॒द्ध्य॑माय चा॒पग॑ल्भाय च॒ नमो॑ जघ॒न्याय॑ च॒ बु॒द्धि॑न्याय च॒  
 नमः॑ स्सो॒भ्याय॑ च॒ प्र॒ति॒स॒र्या॑य च॒ नमो॑ या॒म्याय॑ च॒ क्षे॒म्याय॑ च॒

नम॑ उ॒र्व॒र्या॑य च॒ ख॒ल्या॑य च॒ नम॑ श॒लो॒क्या॑य चा॒व॒सा॒न्या॑य च॒  
 नमो॑ व॒न्या॑य च॒ क॒क्ष्या॑य च॒ नम॑ श॒श्र॒वा॑य च॒ प्र॒ति॒श्र॒वा॑य च॒  
 नम॑ आ॒शु॒षे॒णाय॑ चा॒शु॒र॒था॑य च॒ नमः॑ शू॒रा॑य चा॒व॒भि॒न्द॒ते च॒  
 नमो॑ व॒र्मि॒णे च॒ व॒रू॒थि॒ने च॒ नमो॑ बि॒ल्मि॒ने च॒ क॒व॒चि॒ने च॒  
 नमः॑ श्रु॒ता॑य च॒ श्रु॒त॒से॒ना॑य च ॥ 6

### सप्तमो ऽनुवाकः

नमो॑ दु॒न्दु॒भ्या॑य चा॒ह॒न॒न्या॑य च॒ नमो॑ धृ॒ष्ण॒वे च॒ प्र॒मृ॒शाय॑ च॒  
 नमो॑ दू॒ता॑य च॒ प्र॒हि॒ता॑य च॒ नमो॑ नि॒ष॒ङ्गि॒णे चेषु॑धि॒मते॑ च॒  
 नम॑ स्ती॒क्ष्णो॑ष॒वे चा॒यु॒धि॒ने च॒ नमः॑ स्वा॒यु॒धाय॑ च॒ सु॒ध॒न्व॒ने च॒  
 नम॑ स्स्रु॒त्या॑य च॒ प॒थ्या॑य च॒ नमः॑ का॒ट्या॑य च॒ नी॒प्या॑य च॒  
 नमः॑ सू॒द्या॑य च॒ सर॒स्या॑य च॒ नमो॑ ना॒द्या॑य च॒ वै॒श॒न्ता॑य च॒  
 नमः॑ कू॒प्या॑य चा॒व॒ट्या॑य च॒ नमो॑ वर्ष्पा॑य चा॒व॒र्ष्पा॑य च॒  
 नमो॑ मे॒घ्या॑य च॒ वि॒द्यु॒त्या॑य च॒ नम॑ ई॒ध्रि॒या॑य चा॒त॒प्या॑य च॒  
 नमो॑ वा॒त्या॑य च॒ रे॒ष्मि॒या॑य च॒ नमो॑ वा॒स्त॒व्या॑य च॒ वा॒स्तु॒पा॑य च ॥ 7

### अष्टमो ऽनुवाकः

नमः॑ सो॒मा॑य च॒ रु॒द्राय॑ च॒ नम॑ स्ता॒म्रा॑य चा॒रु॒णाय॑ च॒  
 नम॑ श॒श॒ङ्गा॑य च॒ प॒शु॒प॒तये॑ च॒ नम॑ उ॒ग्रा॑य च॒ भी॒मा॑य च॒  
 नमो॑ अ॒ग्रे॒व॒धाय॑ च॒ दू॒रे॒व॒धाय॑ च॒ नमो॑ ह॒न्त्रे॑ च॒ ह॒नी॒य॒से च॒

नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो

नमस्ताराय

नम इशंभवे च मयोभवे च नम इशङ्कराय च मयस्कराय च

नम शिवाय च शिवतराय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च

नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च

नम आतार्याय चालाद्याय च नम इशष्याय च फेन्याय च

नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च ॥ 8

नवमो ऽनुवाकः

नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च नमः किंशिलाय च क्षयणाय च

नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नमो गोष्ठ्याय च गृह्याय च

नम-स्तल्प्याय च गेह्याय च नमः कात्याय च गह्वरेष्ठाय च

नमो हृदय्याय च निवेष्याय च नमः पांसव्याय च रजस्याय च

नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च

नम ऊर्व्याय च सूर्म्याय च नमः पण्य्याय च पर्णशद्याय च

नमोऽपगुरमाणाय चाभिघ्नते च नम आक्खिदते च प्रक्खिदते च

नमो वः किरिकेभ्यो देवानां हृदयेभ्यो नमो विक्षीणकेभ्यो

नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो आनिर्हतेभ्यो नमो आमीवत्केभ्यः ॥ 9

दशमो ऽनुवाकः

द्रा॒पे अ॒न्ध॒स॒स्प॒ते द॒रि॒द्र-॒नी॒ल॒लो॒हि॒त ।

ए॒षां पु॒रु॒षा॒णामे॒षां प॒शू॒नां मा भे र्मा॒ऽरो मो ए॒षां किञ्च॒ नाम॑मत् । 10.1

या ते रु॒द्र शि॒वा त॒नू॒श्शि॒वा वि॒श्वा॒ह॒भे॒ष॒जी ।

शि॒वा रु॒द्रस्य॑ भे॒ष॒जी तया॑ नो मृ॒ड जी॒व॒से ॥ 10.2

इ॒माꣳ रु॒द्राय॑ तव॒से क॒प॒र्दि॒ने क्ष॒य॒द्वी॒राय॑ प्र॒भ॒रा॒म॒हे म॒तिं ।

यथा॑ नः श॒म॒स॒द्-द्वि॒प॒दे च॒तु॒ष्प॒दे वि॒श्वं पु॒ष्टं ग्रा॒मे अ॒स्मि-॒न्न॒ना॒तु॒रं । 10.3

मृ॒डा नो रु॒द्रो त॒नो म॒य॒स्कृ॒धि क्ष॒य॒द्वी॒राय॑ न॒म॒सा वि॒धेम॑ ते ।

यच्छञ्च॒ योश्च॒ म॒नु॒रा॒य॒जे पि॒ता तद॑श्याम॒ तव॑ रु॒द्र प्र॒णी॒तौ । 10.4

मा नो॑ म॒हान्त॑मु॒त मा नो॑ अ॒र्भ॒कं मा न॒ उ॒क्ष॒न्त॑मु॒त मा न॒ उ॒क्षि॑तं ।

मा नो॑ व॒धीः पि॒तरं॑ मो॒त मा॒तरं॑ प्रि॒या मा न॑स्त॒नु॒वो रु॒द्र री॒रि॒षः । 10.5

मा न॑स्तो॒के त॒नये॑ मा न॒ आयु॑षि॒ मा नो॑ गो॒षु मा नो॑ अ॒श्वेषु॑ री॒रि॒षः ।

वी॒रा॒न्मा॒नो रु॒द्र भा॒मि॒तो व॒धीर्. ह॒वि॒ष्म॒न्तो न॒म॒सा वि॒धेम॑ ते । 10.6

आ॒रा॒त्ते गो॒घ्न उ॒त पू॒रु॒ष॒घ्ने क्ष॒य॒द्वी॒राय॑ सु॒म्न-॒म॒स्मे ते॑ अ॒स्तु ।

र॒क्षा च॑ नो॒ अधि॑ च॒ देव॑ ब्रू॒ह्य॒धा च॑ नः श॒र्म यच्छ॑द्वि॒बर्॒हाः ॥ 10.7

स्तु॒हि श्रु॒तं ग॒र्त्त॒सदं॑ यु॒वानं॑ मृ॒गन्न॑ भी॒म-मु॒प॒ह॒न्तु-मु॒ग्रं ।  
मृ॒डा ज॒रि॒त्रे रु॒द्र स्त॒वानो॑ अ॒न्यन्ते॑ अ॒स्मन्नि॒वप॑न्तु से॒नाः । 10.8

परि॑ णो रु॒द्रस्य॑ हे॒ति वृ॑णक्तु परि त्वे॒षस्य॑ दु॒र्म॒तिर॑घायोः ।  
अ॒व स्थि॑रा म॒घव॑द्भ्य-स्तनु॒ष्व मी॒ढ्वस्तो॑काय॒ तन॑याय मृ॒डय॑ । 10.9

मी॒ढुष्ट॑म शि॒वत॑म शि॒वो न॑ स्सु॒मना॑ भव ।  
पर॑मे वृ॒क्ष आ॒युध॑न्नि॒धाय॑ कृ॒त्तिं व॑सान॒ आ च॑र पि॒नाकं॑ बिभ्र॒दा ग॑हि । 10.10

वि॒कि॒रिद॑ वि॒लो॒हित॑ नम॒स्ते अ॑स्तु भगवः ।  
यास्ते॑ स॒हस्र॑ हे॒तयो॑ऽन्य-म॒स्मन्नि॒वप॑न्तु ताः । 10.11

स॒हस्रा॑णि स॒हस्र॑धा बा॒हुवो॑स्तव हे॒तयः॑ ।  
तासा॑मी॒शानो॑ भगवः प॒राची॑ना॒ मुखा॑ कृ॒धि । 10.12

### एकादशो ऽनुवाकः

स॒हस्रा॑णि स॒हस्र॑शो ये रु॒द्रा अधि॑ भू॒म्यां ।  
तेषां॑ स॒हस्र॑योजने ऽव ध॒न्वानि॑ तन्म॒सि । 11.1

अ॒स्मिन् मह॑त्य॒र्णवे॑-ऽन्त॒रिक्षे॑ भ॒वा अधि॑ । 11.2

नी॒लग्री॑वाः शि॒ति॒कण्ठाः॑ श॒र्वा अधः॑ क्ष॒माच॑राः । 11.3

नी॒लग्री॑वा शि॒ति॒कण्ठा॑ दि॒व रु॒द्रा उप॑श्रिताः । 11.4

ये वृ॒क्षेषु॑ स॒स्पि॒ञ्जरा॑ नी॒लग्री॑वा वि॒लो॒हिताः॑ । 11.5

ये भू॒ताना॒-मधि॑पतयो विशि॒खासः॑ कप॒र्दिनः॑ ।	11.6
ये अ॒न्नेषु॑ वि॒विद्ध्यन्ति॑ पा॒त्रेषु॑ पि॒बतो॑ जना॒न् ।	11.7
ये प॒थां प॑थिरक्षय ऐ॒लबृ॑दा यव्यु॒धः ।	11.8
ये ती॒र्थानि॑ प्र॒चरन्ति॑ सृ॒काव॑न्तो निष॒ङ्गिणः॑ ।	11.9
य ए॒ताव॑न्तश्च भू॒याँसश्च॑ दि॒शो रु॒द्रा वि॑तस्थिरे ।	
तेषाँ॑ सहस्रयो॒जने ऽव॑ धन्वा॒नि तन्म॑सि ।	11.10

नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॑ ये पृ॒थिव्यां॑ यै॒ऽन्तरि॑क्षे ये दि॒वि येषा॑मन्नं वा॒तो  
व॒रु॒षमि॑षव-स्तेभ्यो॑ द॒श प्रा॑ची द॒श दक्षि॑णा द॒श प्र॑तीची  
द॒शोदी॑ची द॒शोर्द्ध्वा-स्तेभ्यो॑ नम॒स्ते नो॑ मृडयन्तु ते यं द्वि॒ष्मो  
यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॑ तं वाँ॒ जंभे॑ दधामि ॥ 11.11

### त्र्यंबकादि महामन्त्रः

त्र्य॑ंबकं य॒जामहे॑ सुगन्धिं पु॒ष्टिव॑र्धनं ।  
उ॒र्वारु॒कमि॑व बन्ध॒नान् मृ॒त्यो मु॑क्षीय मा॒ऽमृता॑त् । 1  
यो रु॒द्रो अ॒ग्नौ यो॑ अ॒प्सु य॑ ओष॒धीषु॑ यो रु॒द्रो वि॒श्वा  
भु॒वना॑ ऽऽवि॒वेश॑ तस्मै रु॒द्राय॑ नमो॑ अस्तु । 2

तमु॒ष्टुहि॑ यः स्वि॒षुः सु॒धन्वा॑ यो वि॒श्वस्य॑ क्षयति भेष॒जस्य॑ ।  
यक्ष्वा॑महे सौम॒नसा॑य रु॒द्रं नमो॑भि दे॒वम॑सुरं दुवस्य । 3

अ॒यं मे॒ ह॒स्तो॑ भ॒ग॒वा॒न॒यं॑ मे॒ भ॒ग॒व॒त्त॒रः॑ ।

अ॒यं मे॒ वि॒श्व॒-भै॒ष॒जो॒य॒श्च॑ शि॒वा॒भि॒म॒र्श॒नः॑ । 4

ये ते॑ स॒ह॒स्र॑म॒यु॒तं पा॒शा मृ॒त्यो म॒र्त्या॑य॒ ह॒न्त॑वे ।

ता॒न् य॒ज्ञ॒स्य॑ मा॒यया॑ स॒र्वान॑व॒ य॒जाम॑हे । 5

मृ॒त्य॒वे॒ स्वा॒हा॑ मृ॒त्य॒वे॒ स्वा॒हा॑ । 6

ओं न॒मो भ॒ग॒व॒ते रु॒द्राय॑ वि॒ष्ण॒वे मृ॒त्यु॒र्मे पा॒हि॒ ॥

प्रा॒णा॒नां ग्र॒न्थि॒र॒सि रु॒द्रो मा॑ वि॒शान्त॑कः । ते॒ना॒न्ने॒ना॒प्या॒य॒स्व ॥ 7

न॒मो रु॒द्राय॑ वि॒ष्ण॒वे मृ॒त्यु॒र्मे पा॒हि॒ ॥

ओं शा॒न्तिः॒ शा॒न्तिः॒ शा॒न्तिः॑ ॥

---



## **13 Details of “Dravya sampradaayam” in Rudraikaadasini**

प्रथमं गन्धतैलं च	द्वितीयं पञ्चगव्यकं
पञ्चामृतं तृतीयं च	चतुर्थं घृतमेव च
पञ्चमं पयसा स्नानं	दध्ना स्नानं तु षष्ठकं
सप्तमं मधुना स्नानं	अष्टमं चेषुदण्डजं
नवमं निंबतोयं च	दशमं नाळिकेरजं
एकादशं गन्धतोयं च	अथ कुंभाभिषेचनं

### **द्रव्य संप्रदायं (Purushasookta abhishekam)**

तोयं तु शान्तिदं प्रोक्तं	गन्धतैलं सुखप्रदं
पञ्चगव्यं पवित्रं च	जयं पञ्चामृतं तथा
घृतं मोक्षप्रदं विद्यात्	क्षीरमायुष्यवर्द्धनं
दधि संपत्प्रदं चैव	मधु माधवतोषदं
इक्षुसारं बलारोग्यं	लिकुचं ज्ञानवर्द्धनं
नाळिकेरोदकं चैव	सालोक्यानन्ददायकं
रजनी राजवश्यं च	पिष्टं तु ऋणमोचनं
आमलकं पित्तशमनं	क्षौद्रं वित्त-विवर्द्धनं
द्राक्षारूक्षहरा नित्यं	दाडिमी राज्यदायिका

## शिव स्तुति

---

गन्धोदकैश्च संस्नाप्य

ज्ञानवान् भक्तिमान् भवेत्

इहलोके सुखंभुक्त्वा

अन्ते वैकुण्ठमाप्नुयात्.

(रजनी = Sandal paste

पिष्टं = rice flour

आमलकं = Gooseberry

क्षौद्रं = Champaka flower juice

द्राक्ष रसं = Grape juice

दाडिमी = pomegranate)

---

## 14 एकादश जपं

### 14.1 प्रथम वार – अभिषेकं गन्धतैलं

#### 14.1.1 चमक अनुवाकः

ओं । अ॒ग्ना॒वि॒ष्णू॒ स॒जोष॑से॒मा व॑र्द्धन्तु॒ वाङ्गि॑रः ।

द्यु॒नैर् वा॑र्जेभि॒रागतं॑ ॥

वा॒जश्च॑ मे, प्र॒सव॑श्च मे, प्र॒यति॑श्च मे, प्र॒सि॒तिश्च॑ मे,

धी॒तिश्च॑ मे, क्र॒तुश्च॑ मे, स्वर॑श्च मे, श्लो॒कश्च॑ मे,

श्रा॒वश्च॑ मे, श्रु॒तिश्च॑ मे, ज्यो॒तिश्च॑ मे, सु॒वश्च॑ मे,

प्रा॒णश्च॑ मे, ऽपान॑श्च मे, व्या॒नश्च॑ मे, ऽसु॑श्च मे,

चि॒त्तं च॑ म, आ॒धी॒तं च॑ मे, वाक्च॑ मे, म॒नश्च॑ मे,

चक्षु॑श्च मे, श्रो॒त्रं च॑ मे, दक्ष॑श्च मे, ब॒लं च॑ म,

ओ॒जश्च॑ मे, स॒हश्च॑ म, आ॒युश्च॑ मे, ज॒रा च॑ म,

आ॒त्मा च॑ मे, त॒नूश्च॑ मे, श॒र्म च॑ मे, वर्म॑ च मे,

ऽङ्गा॒नि च॑ मे, ऽस्थानि॑ च मे, प॒रू॒षि च॑ मे, शरी॑राणि च मे ।

ओं शान्तिः॑ शान्तिः॑ शान्तिः॑ ॥

14.1.2 उपचार पूज

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पयामि ।

बलाय नमः । धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः । दीपं दर्शयामि ।

धूप-दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः ----- . (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभूतदमनाय नमः । कदलीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि । मनोन्मनाय नमः ।

कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।

14.1.3 उपचार मन्त्राः

1. पुरुषस्य विद्म सहस्राक्षस्य महादेवस्य धीमहि ।

तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । 1.1 (T.A.6.1.5)

2. यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद् विश्वा धियो रुद्रो महर्षिः ।

हिरण्यगर्भं पश्यत जायमानं सनो देवश्शुभया

स्मृत्या सँय्युनक्तु । 1.2 (T.A.6.12.3)

3. ब्राह्मण एकहोता । स यज्ञः । स मे ददातु प्रजां पशून्

पुष्टिं यशः । यज्ञश्च मे भूयात् । 1.3 (T.A.3.7.1)

4. प्र॒भ्राज॑मानानां॒ रुद्रा॑णां॒ स्थाने॑ स्व॒तेज॑सा भा॒नि ।  
प्र॒भ्राज॑मानीनां॒ रुद्रा॑णीनां॒ स्थाने॑ स्व॒तेज॑सा भा॒नि । 1.4 TA 1.14.4
5. ए॒ष वै वि॒भुर्नाम॑ य॒ज्ञः । सर्व॑ ह॒ वै तत्र॑ वि॒भु भव॑ति ।  
ये॒त्रैतेन॑ य॒ज्ञेन॑ यज॒न्ते । 1.5 (T.B.3.9.19.1)
6. प्रा॒णापा॑न-व्या॒नोदा॑न-स॒माना॑ मे शु॒द्ध्यन्तां॑ ज्योति॑-र॒हं वि॒रजा॑  
विपा॒प्मा भू॒यास॑ स्वाहा॑ ॥ 1.6 (T.A.6.65.1)
7. अ॒ग्निर्मे॑ वा॒चि श्रि॑तः । वा॒ग्घृ॑दये । हृ॒दयं॑ मयि॑ ।  
अ॒हम॑मृते॑ ॥ अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ । 1.7 (T.B.3.10.8.4)
8. वि॒भूर॑सि प्र॒वाह॑णो रौ॒द्रेणा॑नी॒केन॑ पा॒हि मा॑ग्ने पिपृ॒हि  
मा॒ मा मा॑ हि॒सीः । 1.8 (T.S.1.3.3.1)
9. स॒त्यं परं॑ परं॒ सत्यं॑ स॒त्येन॑ न सु॒वर्गा॑ल्-लो॒काच्च॑वन्ते  
क॒दाच॑न स॒तां हि॑ स॒त्यं तस्मा॑त् स॒त्ये र॑मन्ते । 1.9 (T.A.6.78.1)
10. आ॒ज्येन॑ जुहोति । अ॒ग्नेर्वा॑ ए॒तद्रूपं॑ । यदा॒ज्यं । यदा॒ज्येन॑ जुहोति ।  
अ॒ग्निमे॒व तत्प्री॑णाति । 1.10 (T.B.3.8.14.2)

सर्वोपचारार्थे कर्पूर नीराजनं प्रदर्शयामि ।

रक्षां धारयामि । ओं हर । ओं हर । ओं हर ।

(नम॑श्शं॒भवे॑ च मयो॒भवे॑ च नम॑श्शङ्क॒राय॑ च मय॒स्क॒राय॑ च  
नम॑श्शि॒वाय॑ च शि॒वत॑राय च) । समस्तोपचारान् समर्पयामि ।

#### 14.1.4 आशीर्वादं

अनेन प्रथमवार प्रयुक्त श्री रुद्र महामन्त्र जप सहित गन्धतैलाभिषेकेन  
च भगवान् सर्वात्मकः श्री महादेवः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा ,  
अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य,  
अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां  
समस्त दुरिदोपशमनद्वारा आयुरारोग्य पुत्र पौत्र धन ध्यान्य तेजो  
लक्ष्म्यादि सकल साम्राज्यसिद्धि प्रदः, शान्ति प्रदः ,  
पुरुषार्थ चतुष्टय सिद्धि प्रदः , समस्त कल्याण परम्परावाप्ति प्रदः,  
लोक क्षेमादिवृद्धि प्रदश्च भूयादिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥  
(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

---

## 14.2 द्वितीयवार अभिषेकं – पञ्चगव्यं

### 14.2.1 द्वितीयो ऽनुवाकः

ज्यैष्ठ्यं च मे, आधिपत्यं च मे, मन्युश्च मे, भामश्च मे,  
ऽमश्च मे, ऽभश्च मे, जेमा च मे, महिमा च मे,  
वरिमा च मे, प्रथिमा च मे, वर्ष्मा च मे, द्राघुया च मे,  
वृद्धं च मे, वृद्धिश्च मे, सत्यं च मे, श्रद्धा च मे,  
जगच्च मे, धनं च मे, वशश्च मे, त्विषिश्च मे,  
क्रीडा च मे, मोदश्च मे, जातं च मे, जनिष्यमाणं च मे,  
सूक्तं च मे, सुकृतं च मे, वित्तं च मे, वेद्यं च मे,  
भूतं च मे, भविष्यच्च मे, सुगं च मे, सुपथं च मे,  
ऋद्धं च मे, ऋद्धिश्च मे, क्लृप्तं च मे, क्लृप्तिश्च मे,  
मतिश्च मे, सुमतिश्च मे ॥ 2 (38)

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

### 14.2.2 उपचार पूज

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पयामि ।

बलाय नमः । धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूप-दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः ----- . (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्व॑भू॒तद॑मनाय॒ नमः॑ । कद॑लीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्या॑नन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनो॑न्मनाय॒ नमः॑ । कर्पू॑र तांबूलं निवेदयामि ।

#### 14.2.3 उपचार मन्त्राः

1. तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ महा॒देवाय॑ धीमहि । तन्नो॑ रु॒द्रः प्र॒चोद॑यात् ॥ 2.1

2. यस्मा॑त्परं ना॒परम॑स्ति किञ्चिद् यस्मा॑-न्नाणी॒यो न ज्या॑योऽस्ति  
कश्चित् । वृ॒क्ष इव॑ स्तब्धो दि॒वि तिष्ठ॑-त्येक॒स्तेने॒दं पूर्णं॑  
पुरु॑षेण सर्वं॑ ॥ 2.2

3. अ॒ग्निर्द्वि॑होता । स भ॒र्ता । स मे॑ ददातु प्र॒जां प॒शून् पु॒ष्टिं य॑शः ।  
भ॒र्ता च॑ मे भूयात् ॥ 2.3

4. व्यव॑दातानां रु॒द्राणां॑ स्थाने स्वतेज॑सा भानि ।  
व्यव॑दातीनां रु॒द्राणीनां॑ स्थाने स्वतेज॑सा भानि ॥ 2.4

5. ए॒ष वै प्र॒भुर्नाम॑ य॒ज्ञः । सर्व॑ ह॒ वै तत्र॑ प्र॒भु भ॑वति ।  
येनै॒तेन॑ य॒ज्ञेन॑ यजन्ते ॥ 2.5

6. वाङ्म॑न-श्चक्षु॑श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-रेतो-बुद्ध्य॑कूतिः संकल्पा मे  
शुद्ध्य॑न्तां ज्योति॑रहं वि॒रजा॑ विपाप्मा भूया॑स स्वाहा ॥ 2.6



7. वा॒युर्मे॑ प्रा॒णो श्रि॒तः । प्रा॒णो हृ॒दये॑ । हृ॒दयं॑ म॒यि ।

अ॒हम॒मृते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ । 2.7

8. वहि॑रसि ह॒व्यवा॑हनो रौ॒द्रेणा॑नी॒केन॑ पा॒हि मा॑ऽग्ने पि॒पृहि॑  
मा॒ मा मा॑ हि॒ंसीः । 2.8

9. तप॑ इति तपो॒ नान॑श॒नात्प॑रं य॒दिध॑ परं तप॒-स्तद्गु॑र्ध॒र्षं  
तद्गु॑र्ध॒र्षं तस्मा॑-तप॒सि र॑मन्ते । 2.9

10. म॒धुना॑ जु॒होति॑ । म॒हत्यै॑ वा ए॒तद्दे॒वता॑यै रू॒पं । यन्म॑धु ।  
यन्म॑धुना जु॒होति॑ । म॒हती॑मे॒व तद्दे॒वतां॑ प्री॒णाति॑ । 2.10

14.2.4 आशीर्वादं

अनेन द्वितीयवार प्रयुक्त श्री रुद्र महामन्त्र जप सहित पञ्चगव्य  
अभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्री शिवः,

सर्वान्तरयामि सकल कल्याण गुण गणैक निलयः, सुप्रीत सुप्रसन्नो  
वरदो भूत्वा अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां  
महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां, सर्वोपद्रव-सर्वरोग-  
सर्वपीडा-सर्वबाधादि निवृत्तिप्रदः, मनः शान्त्यादिप्रदः,

नित्य मंगळावाप्ती प्रदश्च भूयासुरिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥

(तथास्तु - इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

---

### 14.3 तृतीयवार अभिषेकं – पञ्चामृतं

#### 14.3.1 तृतीयो ऽनुवाकः

शं च मे, मयश्च मे, प्रियं च मे, ऽनुकामश्च मे,  
 कामश्च मे, सौमनसश्च मे, भद्रं च मे, श्रेयश्च मे,  
 वस्यश्च मे, यशश्च मे, भगश्च मे, द्रविणं च मे,  
 यन्ता च मे, धर्ता च मे, क्षेमश्च मे, धृतिश्च मे,  
 विश्वं च मे, महश्च मे, सँविच्च मे, ज्ञात्रं च मे,  
 सूश्च मे, प्रसूश्च मे, सीरं च मे, लयश्च म,  
 ऋतं च मे, ऽमृतं च मे, ऽयक्ष्मं च मे, ऽनामयच्च मे,  
 जीवातुश्च मे, दीर्घायुत्वं च मे, ऽनमित्रं च मे, ऽभयं च मे,  
 सुगं च मे, शयनं च मे, सूषा च मे, सुदिनं च मे ॥ 3 ( 36 )

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

#### 14.3.2 उपचार पूज

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।  
 दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पयामि । बलाय नमः ।  
 धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः ।  
 दीपं दर्शयामि । धूप-दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।  
 ओं भूर्भुवस्सुवः ----- . (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभू॒तद॑मनाय॒ नमः॑ । कद॒ली॒फलं॑ निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनो॒न्मनाय॑ नमः । कर्पूर॑ तांबूलं निवेदयामि ।

### 14.3.3 उपचार मन्त्राः

1. तत्पुरुषाय विद्महे॑ वक्रतुण्डाय॑ धीमहि । तन्नो॑ दन्तिः प्रचोदयात् ॥ 3.1

2. न कर्मणा॑ न प्रजया॑ धनेन॑ त्यागेनैके॑ अमृतत्व-मानशुः ।

परेण॑ नाकं॒ निहितं॑ गुहायां॒ विभ्राज॑देतद्-यतयो॑ विशन्ति । 3.2

3. पृथि॒वी त्रि॒होता॑ । स प्र॒तिष्ठा॑ । स मे ददातु॑ प्रजां पशून्

पुष्टिं॑ यशः॑ । प्र॒तिष्ठा॑ च मे भूयात् । 3.3

4. वासुकिवैद्युतानां॑ रुद्राणां॑ स्थाने॑ स्वतेजसा॑ भानि ।

वासुकिवैद्युतीनां॑ रुद्राणीनां॑ स्थाने॑ स्वतेजसा॑ भानि । 3.4

5. एष॑ वा ऊर्जस्वान्नाम॑ यज्ञः । सर्व॑ ह वै तत्रोर्जस्वद् भवति ।

येत्रैतेन॑ यज्ञेन॑ यजन्ते । 3.5

6. त्वक् चर्म-मांस॑ रुधिर-मेदो-मज्जा-स्नायवोऽस्थीनि॑

मे शुद्ध्यन्तां॑ ज्योति-रहं॑ विरजा॑ विपाप्मा॑ भूयासः॑ स्वाहा ॥ 3.6

7. सूर्यो॑ मे चक्षुषि॑ श्रितः । चक्षुर्, हृदये॑ । हृदयं॑ मयि ।

अहममृते॑ । अमृतं॑ ब्रह्मणि । 3.7

8. श्वा॒त्रो॒सि॒ प्र॒चे॒ता॒ रौ॒द्रे॒णा॒नी॒केन॒ पा॒हि मा॒ग्ने पि॒पृ॒हि  
मा॒ मा॒ मा॒ हि॒ंसीः । 3.8

9. द॒म इति॑ नि॒यतं॑ ब्र॒ह्म॒चा॒रिण॑-स्तस्मा॒-द॒मे र॑मन्ते । 3.9

10. त॒ण्डु॒लैर्जु॑होति । व॒सूनां॑ वा ए॒तद् रू॒पं । यत्त॑ण्डु॒लाः ।  
यत्त॑ण्डु॒लैर्जु॑होति । व॒सूने॒व तत्प्री॑णाति । 3.10

#### 14.3.4 आशीर्वादं

अनेन तृतीयवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित पञ्चामृत अभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीरुद्रः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां सर्वानन्दसिद्धि प्रदः, सर्वाभीष्टसिद्धि प्रदश्च भूयादिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥

(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

#### 14.4 तुरीय (चतुर्थ) वार अभिषेकं – घृतं

##### 14.4.1 चतुर्थो ऽनुवाकः

ऊ॒र्क्च॑ मे,	सू॒नृ॒ता च॑ मे,	प॒यश्च॑ मे,	र॒सश्च॑ मे,
घृ॒तं च॑ मे,	म॒धु च॑ मे,	स॒ग्धिश्च॑ मे,	स॒पी॒तिश्च॑ मे,
कृ॒षिश्च॑ मे,	वृ॒ष्टिश्च॑ मे,	जै॒त्रं च॑ मे,	औ॒द्भि॒द्यं च॑ मे,
र॒यिश्च॑ मे,	रा॒यश्च॑ मे,	पु॒ष्टं च॑ मे,	पु॒ष्टिश्च॑ मे,

## शिव स्तुति

वि॒भु च॑ मे, प्र॒भु च॑ मे, बहु॑ च॒ मे, भू॒यश्च॑ मे,  
पू॒र्ण च॑ मे, पू॒र्ण॒तरं॑ च॒ मे, ऽक्षि॑तिश्च॒ मे, कू॒यवा॑श्च॒ मे,  
ऽन्नं॑ च॒ मे, ऽक्षु॑च्च॒ मे, व्री॒हय॑श्च॒ मे, यवा॑श्च॒ मे,  
मा॒षाश्च॑ मे, ति॒लाश्च॑ मे, मु॒द्गाश्च॑ मे, ख॒ल्वाश्च॑ मे,  
गो॒धूमा॑श्च॒ मे, म॒सुरा॑श्च॒ मे, प्रि॒यंग॑वश्च॒ मे, ऽण॒वश्च॑ मे,  
श्या॒माका॑श्च॒ मे, नी॒वारा॑श्च॒ मे ॥ 4 (38)

ओं शान्तिः॑ शान्तिः॑ शान्तिः॑ ॥

### 14.4.2 उपचार पूज

अमृ॒ताभि॑षेकोऽस्तु । आवा॒हिता॑भ्यः सर्वा॑भ्यो दे॒वता॑भ्यो नमः ।

दि॒व्य ग॑न्धान् धार॒यामि॑ । पु॒ष्पाणि॑ स॒मर्प॑यामि ।

ब॒लाय॑ नमः । धू॒पं आ॑घ्राप॒यामि॑ । ब॒लप्र॑मथ॒नाय॑ नमः ।

दी॒पं दर्श॑यामि । धू॒प-दी॑पानन्तरं आच॒मनी॑यं स॒मर्प॑यामि ।

ओं भूर्भु॒वस्सु॒वः ----- (नैवेद्य॑ मन्त्रं) ।

सर्व॑भू॒तद॑म॒नाय॑ नमः । कद॒ली॒फलं॑ निवेद॒यामि॑ ।

नैवेद्य॑ानन्तरं आच॒मनी॑यं स॒मर्प॑यामि ।

म॒नो॒न्म॒नाय॑ नमः । कर्पू॒र ता॑ंबूलं निवेद॒यामि॑ ।

14.4.3 उपचार मन्त्राः

1. तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो नन्दिः प्रचोदयात् ॥ 4.1
2. वेदान्त-विज्ञान सुनिश्चितार्था-स्सन्यास योगाद्यत-यश्शुद्ध सत्त्वाः ।  
ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले परामृतात् परिमुच्यन्ति सर्वे ॥ 4.2
3. अन्तरिक्षं चतुर्होता । स विष्ठाः । स मे ददातु प्रजां पशून्  
पुष्टिं यशः । विष्ठाश्च मे भूयात् ॥ 4.3
4. रजतानां रुद्राणां स्थाने स्वतेजसा भानि ।  
रजतानां रुद्राणीनां स्थाने स्वतेजसा भानि ॥ 4.4
5. एष वै पयस्वान्नाम यज्ञः । सर्वं ह वै तत्र पयस्वद्भवति ।  
येत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते ॥ 4.5
6. शिरः-पाणि-पाद-पार्श्व-पृष्ठोरूदर-जङ्घ-शिश्नोपस्थ-पायवो मे  
शुद्ध्यन्तां ज्योति-रहं विरजा विपाप्मा भूयासः स्वाहा ॥ 4.6
7. चन्द्रमा मे मनसि श्रितः । मनो हृदये । हृदयं मयि ।  
अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ॥ 4.7
8. तुथोसि विश्ववेदा रौद्रेणानीकेन पाहि माग्ने पिपृहि  
मा मा मा हिंसीः ॥ 4.8
9. शम इत्यरण्ये मुनय-स्तस्माच्छमे रमन्ते ॥ 4.9

10. पृथु॑कै॒ र्जु॒होति॑ । रु॒द्राणां॑ वा॒ ए॒तद् रू॒पं । यत्पृ॑थु॒काः ।

यत्पृ॑थु॒कै॒ र्जु॒होति॑ । रु॒द्रा॒ने॒व तत्प्री॑णाति । 4.10

#### 14.4.4 आशीर्वादं

अनेन तुरीयवार (चतुर्थवार) प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित  
घृताभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीशङ्करः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो  
भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां  
महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां तापत्रय निवृत्तिद्वारा  
क्षेमाभिवृद्धिप्रदो भूयादिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥  
(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रतिवचनं)

#### 14.5 पञ्चमवार अभिषेकं – क्षीरं

##### 14.5.1 पञ्चमो ऽनुवाकः

अ॒श्मा च॑ मे॒, मृ॒त्तिका च॑ मे॒, गि॒रय॑श्च मे॒, पर्व॑ताश्च मे॒,  
सि॒कता॑श्च मे॒, वन॑स्पतयश्च मे॒, हि॒रण्यं च॑ मे॒, ज्य॑श्च मे॒,  
सी॒सं च॑ मे॒, त्र॒पुश्च॑ मे॒, श्या॒मं च॑ मे॒, लो॒हं च॑ मे॒,  
ऽग्नि॑श्च म॒, आ॒पश्च॑ मे॒, वी॒रुध॑श्च म॒, ओष॑धयश्च मे॒,  
कृ॒ष्टप॑च्यं च॑ मे॒, ऽकृ॑ष्टपच्यं च॑ मे॒,  
ग्रा॒म्याश्च॑ मे॒ प॒शव॑ आ॒रण्या॑श्च य॒ज्ञेन॑ कल्पन्तां ,  
वि॒त्तं च॑ मे॒, वि॒त्तिश्च॑ मे॒, भू॒तं च॑ मे॒, भू॒तिश्च॑ मे॒,

वसु च मे, वसतिश्च मे, कर्म च मे, शक्तिश्च मे,  
 ऽर्थश्च म, एमश्च म, इतिश्च मे, गतिश्च मे ॥ 5 (32)

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

#### 14.5.2 उपचार पूज

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पयामि ।

बलाय नमः । धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूप-दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः ----- (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभूतदमनाय नमः । कदलीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनोन्मनाय नमः । कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।

#### 14.5.3 उपचार मन्त्राः

1. तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि ।

तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात् । 5.1

2. दहं विपापं परमेश्वभूतं यत्पुण्डरीकं पुरमद्ध्य सऽस्थं ।

तत्रापि दहं गगनं विशोक-स्तस्मिन्. यदन्तस्त-दुपासितव्यं । 5.2



3. वा॒युः पञ्च॑होता । स प्रा॒णः । स मे॑ ददातु प्र॒जां प॒शून्  
पुष्टिं॑ च॒शः । प्रा॒णश्च॑ मे भूयात् । 5.3
4. परुषा॑णां रु॒द्राणां॑ स्थाने स्वतेजसा भानि ।  
परुषा॑णां रु॒द्राणीनां॑ स्थाने स्वतेजसा भानि । 5.4
5. ए॒ष वै वि॒धृतो॑ नाम॒ यज्ञः॑ । सर्व॑ ह॒ वै तत्र॑ वि॒धृतं॑ भवति ।  
येत्रै॑तेन॒ यज्ञेन॑ यजन्ते । 5.5
6. उत्तिष्ठ॑ पुरुष ह॒रित-पिङ्ग॑ल लोहिताक्षि देहि देहि ददापयिता मे॑  
शु॒द्ध्यन्तां॑ ज्योति॑-रहं वि॒रजा॑ विपाप्मा भूयास॑ स्वाहा॑ । 5.6
7. दि॒शो मे॑ श्रोत्रे॑ श्रिताः । श्रोत्र॑ ह॒दये॑ । ह॒दयं॑ मयि ।  
अ॒हम॒मृते॑ । अ॒मृतं॑ ब्रह्मणि । 5.7
8. उ॒शि॒ग॒सि क॒वी रौ॒द्रेणा॑नीकेन पा॒हि मा॒ग्ने पि॒पृहि॑  
मा॒ मा॒ मा॒ हि॒सीः॑ । 5.8
9. दा॒न-मि॒ति सर्वा॑णि भू॒तानि॑ प्र॒शंस॑न्ति दा॒ना-न्नाति॑ दु॒श्चरं॑  
तस्मा॑-द्दाने रमन्ते । 5.9
10. ला॒जैर्जु॑होति । आ॒दि॒त्यानां॑ वा ए॒तद्रू॑पं । यल्ला॒जाः ।  
यल्ला॒जैर्जु॑होति । आ॒दि॒त्याने॒व तत्प्री॑णाति । 5.10

14.5.4 आशीर्वादं

अनेन पञ्चमवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित पयसाभिषेकेन  
च भगवान् सर्वात्मकः श्रीनीललोहितः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा,  
अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां,  
निखिल भूमण्डल निवासिनां शरीरे वर्तमान वर्तिष्यमान समस्त  
रोग-पीडा परिहारद्वारा क्षिप्रारोग्य सिद्धि प्रदो भूयादिति भवन्तो  
महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥ (तथास्तु - इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.6 षष्ठमवार अभिषेकं - दधि

14.6.1 षष्ठो ऽनुवाकः

अ॒ग्निश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,	सोम॑श्च म॒ इन्द्र॑श्च मे,
स॒वि॒ता च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,	स॒र॒स्व॒ती च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,
पू॒षा च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,	बृ॒ह॒स्प॒तिश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,
मि॒त्रश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,	व॒रु॒णश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,
त्व॒ष्टा च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,	धा॒ता च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,
वि॒ष्णुश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे ,	ऽश्वि॑नौ च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,
म॒रु॒तश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,	वि॒श्वे च॑ मे, दे॒वा इन्द्र॑श्च मे,
पृ॒थि॒वी च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,	ऽन्त॑रि॒क्षं च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे,

द्यौश्च॑ म॒ इन्द्रश्च॑ मे, दि॒शश्च॑ म॒ इन्द्रश्च॑ मे,  
मूर्धा॑ च॒ म॒ इन्द्रश्च॑ मे, प्र॒जाप॑तिश्च॒ म॒ इन्द्रश्च॑ मे ॥ 6 (21)

ओं शान्तिः॑ शान्तिः॑ शान्तिः॑ ॥

#### 14.6.2 उपचार पूज

अमृ॑ताभिषेकोऽस्तु । आवा॑हिताभ्यः सर्वा॑भ्यो देव॑ताभ्यो नमः ।

दि॒व्य ग॑न्धान् धार॑यामि । पु॒ष्पाणि॑ सम॑र्पयामि ।

ब॒लाय॑ नमः । धूपं॑ आघ्रा॑पयामि । ब॒लप्र॑मथ॒नाय॑ नमः ।

दी॒पं दर्श॑यामि । धूप॑-दी॒पान॑न्तरं आच॑मनीयं सम॑र्पयामि ।

ओं भूर्भु॑वस्सु॒वः ----- (नैवेद्य॑ मन्त्रं) ।

सर्व॑भूतद॒मनाय॑ नमः । कद॑लीफलं निवे॑दयामि ।

नैवेद्या॑नन्तरं आच॑मनीयं सम॑र्पयामि ।

म॒नोन्म॑नाय॒ नमः॑ । कर्पू॑र तांबूलं निवे॑दयामि ।

#### 14.6.3 उपचार मन्त्राः

1. तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ सुव॑र्णप॒क्षाय॑ धीमहि ।

तन्नो॑ गरुडः प्रचो॑दयात् ॥ 6.1

2. यो वे॑दादौ स्वरः प्रो॒क्तो वे॑दान्ते च प्र॑तिष्ठितः ।

तस्य॑ प्र॒कृति॑लीनस्य॒ यः पर॑स्स म॒हेश्वरः॑ ॥ 6.2

3. च॒न्द्रमा॒ षड्ढो॒ता । स ऋ॒तून् क॒ल्पया॑ति । स मे॒ ददा॑तु  
प्र॒जां प॒शून् पु॒ष्टिं यँ॑शः । ऋ॒तव॑श्च मे॒ कल्प॑न्तां । 6.3
4. श्या॒मानाँ रु॒द्राणाँ॑ स्था॒ने स्व॑तेजसा॒ भानि॑ ।  
श्या॒मानाँ रु॒द्राणी॑ना स्था॒नेँ स्व॑तेजसा॒ भानि॑ । 6.4
5. ए॒ष वै व्या॑वृ॒त्तो ना॑म॒ यज्ञः॑ । सर्व॑ँ ह॒ वै  
तत्र॑ व्या॒वृ॒तं भ॑वति । ये॒त्रैते॑न॒ यज्ञे॑न॒ यज॑न्ते । 6.5
6. पृ॒थिव्या॑प-स्तेजो-वा॒यु-रा॒काशा॑ मे॒ शुद्ध्य॑न्तां॒ ज्योति॑-र॒हं  
वि॒रजा॑ वि॒पाप्मा॑ भू॒यास॑ँ स्वाहा॑ ॥ 6.6
7. आपो॑ मे॒ रेत॑सि श्रि॒ताः । रेतो॑ हृ॒दये॑ । हृ॒दयं॑ म॒यि ।  
अ॒हम॑मृ॒ते ॥ अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ । 6.7
8. अ॒ंघारि॑रसि॒ बंभा॑री रौ॒द्रेणा॑नी॒केन॑ पा॒हि मा॑ऽग्ने पि॒पृहि॑  
मा॒ मा॒ मा॒ हिँसीः॑ । 6.8
9. ध॒र्म इति॑ ध॒र्मेण॑ स॒र्वमि॑दं प॒रिगृ॑हीतं॒ धर्मान्ना॑ति-दु॒ष्करं॑  
तस्मा॑-ध॒र्मे र॑मन्ते । 6.9
10. क॒रम्बै॑ र्जु॒होति॑ । वि॒श्वेषां॑ वा॒ एत॑द्दे॒वता॑नाँ रू॒पं । यत्क॒रम्बाः॑ ।  
यत्क॒रम्बै॑ र्जु॒होति॑ । वि॒श्वाने॑व तद्दे॒वान्प्री॑णाति । 6.10

14.6.4 आशीर्वादं

अनेन षष्ठवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित दध्याभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीईशानः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुंबस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां आयुर्बलं यशोवर्चः पशवस्थैर्यं सिद्धिर्लक्ष्मीः क्षमाकान्तिः सद्गुणानन्दो नित्योत्सवो नित्यश्रीर् नित्यमंगळं इत्येषां सर्वदाभि-वृद्धिं भूयासुरिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥

(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.7 सप्तमवार अभिषेकं – मधु

14.7.1 सप्तमो ऽनुवाकः

अ॒ञ्शु॒श्च॑ मे, र॒श्मि॒श्च॑मे, ऽदा॒भ्य॒श्च॑ मे, ऽधि॒पति॑श्च म,  
उपा॒ञ्शु॒श्च॑ मे, ऽन्तर्या॒मश्च॑ म, ऐन्द्र॒वाय॒वश्च॑ मे, मैत्रा॒वरु॒णश्च॑ म,  
आ॒श्विन॑श्च मे, प्र॒तिप्र॒स्थान॑श्च मे, शु॒क्रश्च॑ मे, म॒न्थी च॑ म,  
आ॒ग्रय॑णश्च मे, वै॒श्वदे॒वश्च॑ मे, ध्रु॒वश्च॑ मे, वै॒श्वान॑रश्च म,  
ऋ॒तुग्रा॒हाश्च॑ मे, ऽति॒ग्राह्या॑श्च म, ऐन्द्रा॒ग्नश्च॑ मे, वै॒श्वदे॒वश्च॑ मे,  
मरु॒त्वती॑याश्च मे, मा॒हेन्द्र॑श्च म, आ॒दित्य॑श्च मे, सा॒वित्र॑श्च मे,  
सा॒रस्व॑तश्च मे, पौ॒ष्णश्च॑ मे, पा॒त्नीव॑तश्च मे, हा॒रियो॒जन॑श्च मे ॥ 7 (28)  
ओं शान्तिः॒ शान्तिः॒ शान्तिः॑ ॥

14.7.2 उपचार पूज

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पयामि ।

बलाय नमः । धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूप-दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः ----- . (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभूतदमनाय नमः । कदलीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनोन्मनाय नमः । कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।

14.7.3 उपचार मन्त्राः

1. वेदात्मनाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि । तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ॥  
7.1
2. सद्योजातं प्रपद्यामि सद्यो जाताय वै नमो नमः ।  
भवे भवे नातिभवे भवस्व मां । भवोद्भवाय नमः ॥ 7.2
3. अन्नं सप्तहोता । स प्राणस्य प्राणः । स मे ददातु प्रजां  
पशून् पुष्टिं यशः । प्राणस्य च मे प्राणो भूयात् । 7.3
4. कपिलानां रुद्राणां स्थाने स्वतेजसा भानि ।  
कपिलानां रुद्राणीनां स्थाने स्वतेजसा भानि । 7.4

5. ए॒ष वै प्र॒ति॒ष्ठि॒तो॒ नाम॒ य॒ज्ञः । सर्व॑ ह॒ वै तत्र॒ प्र॒ति॒ष्ठि॒तं॒ भव॑ति ।  
ये॒त्रै॒तेन॑ य॒ज्ञेन॑ यज॒न्ते । 7.5
6. श॒ब्द-स्पर्श॑-रू॒प-र॒स-ग॒न्धा मे॑ शु॒द्ध्य॒न्तां ज्योति॑-र॒हं  
ॐ वि॒रजा॑ वि॒पा॒प्मा भू॒यास॑ स्वाहा ॥ 7.6
7. पृ॒थि॒वी मे॑ शरी॒रे श्रि॒ता । शरी॑र॒ हृद॑ये । हृद॒यं म॑यि ।  
अ॒हम॑मृ॒ते ॥ अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ । 7.7
8. अ॒व॒स्यु॒रसि॑ दु॒व॒स्वान् रौ॒द्रेणा॑नी॒केन॑ पा॒हि मा॑ग्ने पि॒पृहि॑  
मा॒ मा॒ मा॒ हि॒सीः । 7.8
9. प्र॒जन॑ इति॒ भू॒या॒स-स्तस्मा॑द्भू॒यिष्ठाः॑ प्र॒जाय॑न्ते तस्मा॑द्भू॒यिष्ठाः॑  
प्र॒जन॑ने रम॒न्ते । 7.9
10. धा॒नाभि॑ जु॒होति॑ । नक्ष॑त्राणां वा ए॒तद्रू॑पं । य॒द्धानाः॑ ।  
य॒द्धाना॑भि जु॒होति॑ । नक्ष॑त्राण्ये॒व तत्प्री॑णाति । 7.10

#### 14.7.4 आशीर्वादं

अनेन सप्तमवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित मध्वभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीविजयः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां अनेक कोट्यार्जित काम-क्रोध-लोभ-मोह-

मद-माथ्सर्याख्य सकल दुरितिघ्नौ शमनद्वारा, महैश्वर्याव्याप्ति प्रदश्च  
भूयादिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥

(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

#### 14.8 अष्टमवार अभिषेकं – इक्षुरसं

##### 14.8.1 अष्टमो ऽनुवाकः

इ॒ध्मश्च॑ मे, ब॒र्हिश्च॑ मे, वे॒दिश्च॑ मे, धि॒ष्णि॒याश्च॑ मे,  
सु॒चश्च॑ मे, च॒म॒साश्च॑ मे, ग्रा॒वा॒णश्च॑ मे, स्वर॑वश्च म,  
उ॒पर॒वाश्च॑ मे, ऽधि॑षवणे च मे, द्रो॒ण॒क॒ल॒शश्च॑ मे, वा॒य॒व्या॒नि च॑ मे,  
पू॒त॒भृ॒च्च॑ म, आ॒ध॒व॒नी॒यश्च॑ म, आ॒ग्नी॒ध्रं च॑ मे, ह॒वि॒र्धा॒नं च॑ मे,  
गृ॒हाश्च॑ मे, स॒दश्च॑ मे, पु॒रो॒डा॒शाश्च॑ मे, प॒च॒ताश्च॑ मे,  
ऽव॒भृ॒थश्च॑ मे, स्व॒गा॒का॒रश्च॑ मे ॥ 8 (22)

ओं शान्तिः॑ शान्तिः॑ शान्तिः॑ ॥

##### 14.8.2 उपचार पूज

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पयामि ।

ब॒ला॒य नमः॑ । धू॒पं आ॒घ्रा॒प॒यामि॑ । ब॒ल॒प्र॒म॒थ॒ना॒य नमः॑ ।

दी॒पं दर्श॑यामि । धू॒प-दी॒पा॒न॒न्तरं॑ आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुव॑स्सुवः ----- (नैवेद्य मन्त्रं) ।



सर्वभू॒तदम॑नाय॒ नमः॑ । कद॒ली॒फलं॑ निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनो॑न्मनाय॒ नमः॑ । कर्पू॒र तांबूलं॑ निवेदयामि ।

14.8.3 उपचार मन्त्राः

1. नारा॒य॒णाय॑ वि॒द्महे॑ वासुदे॒वाय॑ धीमहि । तन्नो॑ विष्णुः प्रचो॒दयात्॑ । 8.1

2. वाम॑दे॒वाय॑ नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॑ नमः॑ श्रे॒ष्ठाय॑ नमो॑ रु॒द्राय॑ नमः॑ का॒लाय॑ नमः॑ कल॑विकर॒णाय॑ नमो॑ बल॑विकर॒णाय॑ नमो॑ ब॒लाय॑ नमो॑ बल॑प्रमथ॒नाय॑ नमः॑ सर्व॑भूतदम॒नाय॑ नमो॑ मनो॑न्मनाय॒ नमः॑ । 8.2

3. द्यौर॑ष्ट॒होता॑ । सोऽना॑धृष्यः । स मे ददा॑तु प्र॒जां प॒शून् पुष्टिं॑ य॒शः॑ । अ॒ना॒धृष्य॑श्च भूया॑सं । 8.3

4. अ॒तिलो॑हि॒ताना॑ रु॒द्राणा॑ स्थाने स्वते॒जसा॑ भा॒नि ।  
अ॒तिलो॑हि॒तीना॑ रु॒द्राणी॑ना स्थाने स्वते॒जसा॑ भा॒नि । 8.4

5. ए॒ष वै ते॑ज॒स्वी नाम॑ य॒ज्ञः । सर्व॑ ह वै तत्र तेज॒स्वी भ॑वति ।  
येत्रै॑तेन य॒ज्ञेन॑ यजन्ते । 8.5

6. मनो॑-वाक्काय॑-कर्माणि मे शुद्ध्यन्तां ज्योति॑-र॒हं वि॒रजा॑ विपा॒प्मा भूया॑स स्वाहा॑ । 8.6

7. ओष॑धिवनस्पतयो मे लोम॑सु श्रिताः । लोमा॑नि हृदये ।  
हृदयं॑ मयि । अ॒हम॑मृते । अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि । 8.7

8. शु॒न्द्ध्यूर॑सि॒ मा॒र्जा॒ली॒यो रौ॒द्रे॒णा॒नी॒केन॑ पा॒हि मा॒ऽग्ने पि॒पृ॒हि  
मा॒ मा॒ मा॒ हि॒॒सीः । 8.8
9. अ॒ग्नय॑ इ॒त्याह॑ तस्मा॑-द॒ग्नय॑ आ॒धात॑व्या अ॒ग्निहो॑त्र-मि॒त्याह॑  
तस्मा॑-द॒ग्निहो॑त्रे रम॒न्ते । 8.9
10. स॒क्तुभि॑ जु॒होति॑ । प्र॒जाप॑ते॒ र्वा ए॒तद्रू॑पं । यथ्स॑क्तवः ।  
यथ्स॑क्तुभि॑ जु॒होति॑ । प्र॒जाप॑तिमे॒व तत्प्री॑णाति । 8.10

#### 14.8.4 आशीर्वादं

अनेन अष्टमवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित इक्षुसारा-भिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीभीमः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां भगवत् पादार विन्दयोः अचञ्चल निष्कपट भक्ति प्रदः समस्त कल्याणगुण प्रदश्च भूयादिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥ (तथास्तु - इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

#### 14.9 नवमवार अभिषेकं-निंबतोय रसं

##### 14.9.1 नवमो ऽनुवाकः

अ॒ग्निश्च॑ मे, घ॒र्मश्च॑ मे ऽर्क॑श्च मे, सूर्य॑श्च मे,  
प्रा॒णश्च॑ मे, ऽश्व॑मे॒धश्च॑ मे, पृ॒थि॒वी च॑ मे, ऽदि॒तिश्च॑ मे,

दितिश्च मे, द्यौश्च मे, शक्वरीरङ्गुलयो दिशश्च मे,  
यज्ञेन कल्पन्ता-मृक्च मे, साम च मे, स्तोमश्च मे,  
यजुश्च मे, दीक्षा च मे,

तपश्च म, ऋतुश्च मे, व्रतं च मे, ऽहोरात्रयोर्वृष्ट्या, बृहद्रथन्तरे च मे  
यज्ञेन कल्पेतां ॥ 9 (21)

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

#### 14.9.2 उपचार पूज

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पयामि ।

बलाय नमः । धूपं आघ्रापयामि । बलप्रमथनाय नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूप-दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवः ----- (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभूतदमनाय नमः । कदलीफलं निवेदयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

मनोन्मनाय नमः । कर्पूर तांबूलं निवेदयामि ।

#### 14.9.3 उपचार मन्त्राः

1. वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णद॒ष्ट्राय॑ धीमहि ।  
तन्नो नारसि॒ंहः प्रचो॑दयात् । 9.1

2. अ॒घो॒रे॒भ्योऽथ॒घो॒रे॒भ्यो॒ घो॒र॒घो॒र॒त॒रे॒भ्यः॑ । स॒र्वे॒भ्यः॑ स॒र्व॒श॒र्वे॒भ्यो॒  
नम॑स्ते अस्तु रु॒द्ररू॒पे॒भ्यः॑ । 9.2
3. आ॒दि॒त्यो न॒व॒हो॒ता । स ते॑ज॒स्वी । स मे॑ द॒दातु॑ प्र॒जां प॒शून्  
पु॒ष्टिं य॑शः । ते॒ज॒स्वी च॑ भू॒यासं॑ । 9.3
4. ऊ॒र्ध्वा॒नां रु॒द्रा॒णां स्थाने॑ स्व॒तेज॑सा भानि ।  
ऊ॒र्ध्वा॒नां रु॒द्रा॒णी॒नां स्थाने॑ स्व॒तेज॑सा भानि । 9.4
5. ए॒ष वै ब्र॑ह्मवर्च॒सी नाम॑ य॒ज्ञः । आ ह॑ वै तत्र ब्रा॒ह्म॒णो  
ब्र॑ह्मवर्च॒सी जा॑यते । ये॒त्रै॒तेन॑ य॒ज्ञेन॑ यजन्ते । 9.5
6. अ॒व्य॒क्त॒भा॒वै-र॒हं॒का॒रै ज्योति॑-र॒हं वि॒र॒जा वि॒पा॒प्मा  
भू॒यास॑ स्वाहा । 9.6
7. इन्द्रो॑ मे ब॒लं श्रि॑तः । ब॒लं हृ॑दये । हृ॒दयं॑ मयि ।  
अ॒हम॑मृते । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्म॒णि । 9.7
8. स॒म्रा॒ड॒सि कृ॒शानू॑ रौ॒द्रे॒णानी॑केन पा॒हि मा॒ग्ने पि॒पृ॒हि  
मा मा मा हि॑सीः । 9.8
9. य॒ज्ञ इति॑ य॒ज्ञो हि दे॒वा-स्तस्मा॑द्ध्य॒ज्ञे र॑मन्ते । 9.9
10. म॒सू॒स्यै जु॑होति । स॒र्वासां॑ वा ए॒तद्दे॒वता॑नां रू॒पं । यन्म॑सू॒स्यानि॑ ।  
यन्म॑सू॒स्यै जु॑होति । स॒र्वा ए॒व तद्दे॒वताः॑ प्रीणाति । 9.10

14.9.4 आशीर्वादं

अनेन नवमवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित निंबुतोयाभिषेकेन  
च भगवान् सर्वात्मकः श्रीदेवदेवः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा,  
अस्य यजमानस्य सकुटुंबस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां,  
निखिल भूमण्डल निवासिनां सकल श्रेयप्राप्ति हेतु भूत सांबपरमेश्वर  
परिपूर्णा-नुग्रह सिद्धि प्रदो भूयादिति भवन्तो महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥  
(तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.10 दशमवार अभिषेकं – नाळिकेरजं

14.10.1 दशमो ऽनुवाकः

गर्भा॑श्च मे, व॒थ्साश्च॑ मे, त्वि॑श्च मे, त्वी॑च मे,  
दि॒त्य॒वाट् च॑ मे, दि॒त्यौ॒ही च॑ मे, प॒ञ्चा॒विश्च॑ मे, प॒ञ्चा॒वी च॑ मे,  
त्रि॒व॒थ्सश्च॑ मे, त्रि॒व॒थ्सा च॑ मे, तु॒र्य॒वाट् च॑ मे, तु॒र्यौ॒ही च॑ मे,  
प॒ष्ठ॒वाट् च॑ मे, प॒ष्ठौ॒ही च॑ म, उ॒क्षा च॑ मे, व॒शा च॑ म,  
ऋ॒षभ॑श्च मे, वे॒हच्च॑ मे, ऽन॒ड्वान् च॑ मे, धे॒नुश्च॑ म,  
आ॒युर्-य॒ज्ञेन॑ कल्पतां, प्रा॒णो य॒ज्ञेन॑ कल्पता-  
मपा॒नो य॒ज्ञेन॑ कल्पतां, व्या॒नो य॒ज्ञेन॑ कल्पतां

चक्षु॑ र्य॒ज्ञेन॑ कल्पता॒ ७      श्रोत्रं॑ य॒ज्ञेन॑ कल्पतां  
मनो॑ य॒ज्ञेन॑ कल्पतां ,      वा॒ग्य॒ज्ञेन॑ कल्पता-  
मात्मा॑ य॒ज्ञेन॑ कल्पतां ,      य॒ज्ञो य॒ज्ञेन॑ कल्पतां ॥ 10(41)  
ओं शान्तिः॑ शान्तिः॑ शान्तिः॑ ॥

#### 14.10.2 उपचार पूज

अमृ॑ताभिषेकोऽस्तु । आवा॑हिताभ्यः सर्वा॑भ्यो देवता॑भ्यो नमः ।  
दिव्य॑ गन्धान् धारयामि । पुष्पा॑णि समर्पयामि ।  
बला॑य नमः । धूपं॑ आघ्रापयामि । बल॑प्रमथनाय नमः ।  
दीपं॑ दर्शयामि । धूप-दी॑पानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।  
ओं भूर्भुव॑स्सुवः ----- . (नैवेद्य मन्त्रं) ।  
सर्व॑भूतदमनाय नमः । कद॑लीफलं निवेदयामि ।  
नैवेद्या॑नन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।  
मनो॑न्मनाय नमः । कर्पू॑र तांबूलं निवेदयामि ।

#### 14.10.3 उपचार मन्त्राः

1. भा॒स्क॒राय॑ वि॒द्महे॑ म॒हद्यु॑ति॒कराय॑ धीमहि ।  
तन्नो॑ आ॒दित्यः॑ प्र॒चोद॑यात् ॥ 10.1
2. तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ म॒हादे॒वाय॑ धीमहि ।  
तन्नो॑ रु॒द्रः प्र॒चोद॑यात् ॥ 10.2

3. प्र॒जाप॑ति॒ र्दश॑होता । स इ॒दं॑ सर्वं ।  
स मे॑ ददातु प्र॒जां प॒शून् पु॒ष्टिं य॑शः । सर्व॑ञ्च मे भूयात् । 10.3
4. अव॑पतन्तानां॑ रु॒द्राणां॑ स्थाने॑ स्व॒तेज॑सा भानि ।  
अव॑पतन्तीनां॑ रु॒द्राणीनां॑ स्थाने॑ स्व॒तेज॑सा भानि । 10.4
5. ए॒ष वा अ॑तिव्याधी॒ नाम॑ य॒ज्ञः । आ ह॒ वै तत्र॑ रा॒जन्यो॑ऽतिव्याधी॒ जाय॑ते । ये॒त्रैते॑न॒ य॒ज्ञेन॒ यज॑न्ते । 10.5
6. आ॒त्मा मे॑ शु॒द्ध्यन्तां॑ ज्योति॑-र॒हं वि॒रजा॑ वि॒पाप्मा॑ भूयास॑ स्वाहा॑  
। अ॒न्तरा॑त्मा मे॑ शु॒द्ध्यन्तां॑ ज्योति॑-र॒हं वि॒रजा॑ वि॒पाप्मा॑ भूयास॑ स्वाहा॑  
। प॒रमा॑त्मा मे॑ शु॒द्ध्यन्तां॑ ज्योति॑-र॒हं वि॒रजा॑ वि॒पाप्मा॑ भूयास॑ स्वाहा॑ ।  
क्षु॒धे स्वाहा॑ । क्षु॒त्पिपा॑साय स्वाहा॑ ।  
वि॒वि॒द्यै स्वाहा॑ । ऋ॒ग्विधा॑नाय स्वाहा॑ । क॒षोत्का॑य स्वाहा॑ ।  
क्षु॒त्पिपा॑साम॒लां ज्येष्ठा॑म॒लक्ष्मी॑ न॒शयाम्य॑हं ।  
अ॒भूति॑-म॒समृ॑द्धिं च॒ सर्वा॑ निर्णु॒द मे पा॑प्मानं॑ स्वाहा॑ । 10.6
7. प॒र्जन्यो॑ मे मूर्द्ध॑न्नि श्रि॒तः । मूर्धा॑ हृद॒ये । हृद॑यं म॒यि ।  
अ॒हम॑मृते॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ । 10.7
8. प॒रिषद्यो॑ऽसि॒ पव॑मानो॒ रौद्रे॑णानी॒केन॑ पा॒हि मा॑ऽग्ने पिपृ॒हि  
मा॒ मा मा॑ हि॒ंसीः । 10.8

9. मान॒स-मि॒ति वि॒द्वाँ॒स-स्त॒स्मा-द्वि॒द्वाँ॒स ए॒व  
मान॒से र॒मन्ते । 10.9

10. प्रि॒यङ्गु॒तण्डु॒लैर् जु॒होति । प्रि॒याङ्गा॒ ह वै ना॒मैते ।  
ए॒तै र्वै दे॒वा अ॒श्वस्या॒ङ्गानि॒ सम॒दधुः । यत्प्रि॒यङ्गु॒तण्डु॒लैर् जु॒होति ।  
अ॒श्वस्यै॒वाङ्गानि॒ स॒न्दधा॒ति । 10.10

14.10.4 आशीर्वादं

अनेन दशमवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित नाळिकेरजा-  
भिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीभवोद्भवः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो  
भूत्वा, अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां  
महाजनानां, निखिल भूमण्डल निवासिनां क्षेम-स्थैर्य-वीर्य-विजय-  
आयुरारोग्य पुत्रपौत्र धनधान्य कनकवास्तु वाहनादि समस्तैश्वर्य प्रदः  
तेजो-लक्ष्म्यादी समस्त पुरुषार्थ सिद्धि प्रदश्च भूयादिति भवन्तो  
महान्तो-ऽनुगृह्णन्तु ॥

(तथास्तु - इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

14.11 एकादशवार अभिषेकं - गन्धतोयं

14.11.1 एकादशो ऽनुवाकः

एका॑ च मे, ति॒स्रश्च॑ मे, प॒ञ्च च॑ मे, स॒प्त च॑ मे,  
न॒व च॑ म, ए॒काद॑श च मे, त्रयो॑दश च मे, प॒ञ्चद॑श च मे,



## शिव स्तुति

सप्तदश च मे, नवदश च म, एकविंशतिश्च मे, त्रयोविंशतिश्च मे,  
पञ्चविंशतिश्च मे, सप्तविंशतिश्च मे,  
नवविंशतिश्च म, एकत्रिंशच्च मे,  
त्रयस्त्रिंशच्च मे, चतस्रश्च मे, ऽष्टौ च मे, द्वादश च मे,  
षोडश च मे, विंशतिश्च मे, चतुर्विंशतिश्च मे, ऽष्टाविंशतिश्च मे,  
द्वात्रिंशच्च मे, षट्त्रिंशच्च मे, चत्वारिंशच्च मे  
चतुश्चत्वारिंशच्च मे ऽष्टाचत्वारिंशच्च मे,  
वाजश्च प्रसवश्चा-पिजश्च क्रतुश्च सुवश्च मूर्धा च  
व्यञ्जय-श्चान्त्यायन-श्चान्त्यश्च भौवनश्च भुवनश्चा-धिपतिश्च । 11  
इडा देवहू र्मनुर्यज्ञनी बृहस्पति-रुक्थामदानि शस्त्रिषद्-विश्वे-देवाः  
सूक्तवाचः पृथिविमातर्मा मा हिंसी र्मधु मनिष्ये मधु जनिष्ये मधु  
वक्ष्यामि मधु वदिष्यामि मधुमतीं देवेभ्यो वाचमुद्यासं  
शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मा देवा अवन्तु शोभायै पितरो ऽनुमदन्तु ॥  
ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

### 14.11.2 उपचार पूज

अमृताभिषेकोऽस्तु । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दिव्य गन्धान् धारयामि । पुष्पाणि समर्पयामि ।

बलाय॑ नमः॑ । धूपं॑ आघ्रापयामि॑ । बलप्रमथनाय॑ नमः॑ ।

दीपं॑ दर्शयामि॑ । धूप-दीपानन्तरं॑ आचमनीयं॑ समर्पयामि॑ ।

ओं भूर्भुवस्सुवः॑ ----- (नैवेद्य मन्त्रं) ।

सर्वभूतदमनाय॑ नमः॑ । कदलीफलं॑ निवेदयामि॑ ।

नैवेद्यानन्तरं॑ आचमनीयं॑ समर्पयामि॑ ।

मनोन्मनाय॑ नमः॑ । कर्पूर तांबूलं॑ निवेदयामि॑ ।

#### 14.11.3 उपचार मन्त्राः

1. वै॒श्वान॒राय॑ वि॒द्महे॑ ला॒ली॒लाय॑ धीमहि॑ । तन्नो॑ अ॒ग्निः प्रचो॒दयात्॑ ॥  
का॒त्याय॑नाय॑ वि॒द्महे॑ क॒न्यकु॑मारि॑ धीमहि॑ ।  
तन्नो॑ दु॒र्गिः प्रचो॒दयात्॑ ॥ 11.1
2. ई॒शानः॑ सर्व॑विद्याना-मीश्वरः॑ सर्व॑भू॒तानां॑ ब्रह्माधि॑पति॑  
ब्रह्म॑णोऽधि॑पति॑ ब्रह्मा॑ शिवो॑ मे अस्तु॑ सदा॑शिवो॑ ॥ 11.2
3. हि॒रण्य॑पात्रं॑ म॒धोः पू॒र्णं द॑दाति । म॒धव्यो॑ ऽसा॒नीति॑ । ए॒क॒धा ब्र॒ह्मण॑  
उप॑हरति । ए॒क॒धैव॑ यज॒मान॑ आयु॒स्तेजो॑ ददाति । 11.3  
((नमो॑ हि॒रण्य॑बा॒हवे॑ हि॒रण्य॑वर्णा॒य हि॒रण्य॑रूपा॒य हि॒रण्य॑पतये॑  
ऽंबिका॑पतये॑ उ॒माप॑तये॑ प॒शुप॑तये॑ नमो॑ नमः॑ ॥))
4. वैद्यु॑तानां॑ रु॒द्राणां॑ स्थाने॑ स्व॒तेज॑सा भानि॑ ।  
वैद्यु॑तीनां॑ रु॒द्राणीनां॑ स्थाने॑ स्व॒तेज॑सा भानि॑ । 11.4

5. ए॒ष वै दी॒र्घो॑ नाम॒ य॒ज्ञः । दी॒र्घायु॑षो ह॒ वै तत्र॑ मनु॒ष्या भ॑वन्ति ।  
 ये॒त्रै॒तेन॑ य॒ज्ञेन॑ यजन्ते । ए॒ष वै क्लृ॑प्तो नाम॒ य॒ज्ञः ।  
 कल्प॑ते ह॒ वै तत्र॑ प्र॒जाभ्यो॑ योगक्षे॒मः । ये॒त्रै॒तेन॑ य॒ज्ञेन॑ यजन्ते । 11.5
6. अन्न॑मय-प्राण॑मय-मनो॑मय-वि॒ज्ञाना॑मय-मान॑न्दमय-मा॒त्मा मे॑  
 शु॒द्ध्यन्तां॑ ज्योति॑-र॒हं वि॒रजा॑ विपा॒प्मा भू॑यास॒ स्वाहा॑ ॥ 11.6
7. ई॒शानो॑ मे म॒न्यौ श्रि॒तः । म॒न्युर् हृ॑दये । हृ॒दयं॑ म॒यि ।  
 अ॒हम॒मृतै॑ । अ॒मृतं॑ ब्र॒ह्मणि॑ । 11.7
8. प्र॒तक्वा॑सि नभ॒स्वान् रौ॒द्रेणा॑नी॒केन॑ पा॒हि मा॑ग्ने पि॒पृहि॑  
 मा॒ मा मा॑ हि॒ंसीः॑ । 11.8
9. न्या॒स इति॑ ब्र॒ह्मा ब्र॒ह्मा हि॑ प॒रः प॒रो हि॑ ब्र॒ह्मा ता॑नि वा  
 ए॒तान्य॑वराणि॒ परा॑ं॒सि न्या॒स ए॒वात्य॑रेच॒ यद्ध्य॑ ए॒वं  
 वैदे॑-त्युप॒निषत् ॥ 11.9
10. द॒शान्ना॑नि जुहोति । द॒शाक्ष॑रा वि॒राट् ।  
 वि॒राट् कृ॑त्स्न-स्या॒न्नाद् य॒स्या-व॑रुद्ध्यै ॥ 11.10

14.11.4 आशीर्वादं

अनेन एकादशवार प्रयुक्त श्रीरुद्र महामन्त्र जप सहित

गन्धतोयाभिषेकेन च भगवान् सर्वात्मकः श्रीआदित्यात्मकरुद्रः

सर्व मंगलाजानि, प्रकृष्टै-श्वर्यशालि, सीमातीत-वैभवः, नागराज भूषः,

सर्वपाप हरणः, सर्वप्राणिगण समुज्जीवकः, ब्रह्माण्ड-नायकः,  
सकल कल्याण-गुणनिलयः सुप्रीत सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा,  
अस्य यजमानस्य सकुटुंबस्य, अत्र आगतानां सर्वेषां महाजनानां,  
निखिल भूमण्डल निवासिनां सर्वानन्द सिद्धिप्रदः, सांसारिक रोग  
गणनिवारकः, सर्वाभीष्ट सिद्धि प्रदश्च भूयादिति भवन्तो महान्तो-  
ऽनुगृह्णन्तु ॥ (तथास्तु – इति ब्राह्मण प्रति वचनं)

---

**(Note: During Vibhuti Abhishekam the Rutvik performing the abhishekam shall recite “Mrutha Sanjeevani Suktham”).**

In case of Rudraabhishekam, please proceed to Chapter 19 for Uttaraṅga / Punar Pooja and perform Abhishekam thereafter. For Rudra Ekadasani or Maha Rudram, proceed to Rudra Kramam)

ओं नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः ।

नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते करोमि ॥ ( 3 times)

---

**(Perform the Udvaapanam of Sadyo Jaatha Kalasham or Pancha Kalashams and perform abhishekam to the deities)**

---

## Section 4 – Rudra Kramam

## 15 गणपति ध्यानं

ओं ग॒णानां॑ त्वा	त्वा ग॒णपतिं॑
ग॒णपति॑ꣳ हवामहे	ग॒णपति॑मिति ग॒ण - पतिं॑ >
हवामहे क॒विं	क॒विं क॒वीनां॑
क॒वीनामु॑पमश्रवस्तमं	उ॒पमश्र॑वस्तम॒मित्यु॑पमश्रवः - तमं॑ >
ज्येष्ठ॑राजं ब्रह्म॒णां	ज्येष्ठ॑राजमिति ज्येष्ठ - राजं॑ >
ब्रह्म॒णां ब्रह्म॑णः	ब्रह्म॑णस्पते >
पत॑ आ	आ नः॑
नꣳशृ॑ण्वन्	शृ॑ण्वन्नूतिभिः॑
ऊ॒तिभि॑स्सीद	ऊ॒तिभि॑रित्यूति - भिः॑
सीद॑ सादनं	साद॑नमिति सादनं॑

## 16 श्री रुद्र क्रमः

### 16.1 श्री रुद्रक्रमः प्रथमो ऽनुवाकः

ओं नमो भगवते रुद्राय

ओं, नमस्ते	ते रुद्र
रुद्र मन्यवे >	मन्यव उतो
उतो ते >	उतो इत्युतो
त इषवे	इषवे नमः
नम इति नमः	नमस्ते
ते अस्तु	अस्तु धन्वने
धन्वने बाहुभ्यां >	बाहुभ्यामुत
बाहुभ्यामिति बाहु - भ्यां >	उत ते >
ते नमः	नम इति नमः
या ते >	त इषुः
इषुशिवतमा	शिवतमा शिवं
शिवतमेति शिव - तमा >	शिवं बभूव
बभूव ते	ते धनुः
धनुरिति धनुः	शिवा शरव्या >
शरव्या या	या तव

## शिव स्तुति

तव॑ तया॑ >	तया॑ नः
नो॑ रु॒द्र	रु॒द्र मृ॒डय
मृ॒डयेति॑ मृ॒डय	या ते॑ >
ते॑ रु॒द्र	रु॒द्र शि॒वा
शि॒वा त॒नूः	त॒नूर॒घोरा
अ॒घोरा॑ ऽपा॒पका॑शिनी	अ॒पा॒पका॑शिनीत्यपा॒प - का॑शिनी>
तया॑ नः	न॒स्तनु॒वा >
तनु॒वा श॒न्तम॒या	श॒न्तम॒या गि॒रिश॒न्त
श॒न्तम॒येति॑ शं - त॒मया॑ >	गि॒रिश॒न्ताभि॑
गि॒रिश॒न्तेति॑ गि॒रि-श॒न्त	अ॒भिचा॑कशीहि
चा॑कशीहीति॑ चा॑कशीहि	यामि॑षुं >
इ॒षुं गि॒रिश॒न्त	गि॒रिश॒न्त ह॒स्ते >
गि॒रिश॒न्तेति॑ गि॒रि - श॒न्त	ह॒स्ते बि॒भर्षि॑
बि॒भर्ष्य॑स्तवे	अ॒स्तव॑ इत्यस्तवे
शि॒वां गि॒रित्र॑	गि॒रित्र॑ तां
गि॒रित्रेति॑ गि॒रि - त्र॑	तां कुरु॑
कुरु॑ मा	मा हि॑सीः
हि॑सीः पु॒रुषं॑	पु॒रुषं॑ जगत्



## शिव स्तुति

जगदिति जगत्	शिवेन वचसा
वचसा त्वा	त्वा गिरिश
गिरिशाच्छ	अच्छावदामसि
वदामसीति वदामसि	यथा नः
नः सर्वं >	सर्वमित्
इज्जगत्	जगदयक्ष्मं
अयक्ष्मं सुमनाः >	सुमना असत्
सुमना इति सु - मनाः >	असदित्यसत्
अद्ध्यवोचत्	अवोचदधिवक्ता
अधिवक्ता प्रथमः	अधिवक्तेत्यधि - वक्ता
प्रथमो दैव्यः	दैव्यो भिषक्
भिषगिति भिषक्	अहीश्च
च सर्वान्	सर्वान् जंभयन्
जंभयन्त् सर्वाः >	सर्वाश्च
च यातुधान्यः	यातुधान्य इति यातु - धान्यः
असौ यः	यस्ताम्रः
ताम्रो अरुणः	अरुण उत
उत बभ्रुः	बभ्रुः सुमङ्गलः
सुमङ्गल इति सु-मङ्गलः	ये च

## शिव स्तुति

चे॒मां	इ॒माꣳ रु॒द्राः
रु॒द्रा अ॒भितः॑	अ॒भितो॑ दि॒क्षु
दि॒क्षु श्रि॒ताः	श्रि॒ताः स॒हस्र॑शः
स॒हस्र॑शोऽव	स॒हस्र॑श इति स॒हस्र - शः
अ॒वैषां	ए॒षाꣳ हे॒डः
हे॒ड ई॒महे	ई॒मह इ॒तीम॑हे
अ॒सौ यः	योऽव॑स॒र्पति
अ॒वस॑र्पति नी॒लग्री॑वः	अ॒वस॑र्पतीत्य॒व - सर्प॑ति
नी॒लग्री॑वो वि॒लोहितः॑	नी॒लग्री॑व इति नी॒ल - ग्री॑वः
वि॒लोहित॑ इति वि - लो॒हितः	उ॒तैनं॑ >
ए॒नं गो॒पाः	गो॒पा अ॒दृश॑न्
गो॒पा इति॑ गो-पाः	अ॒दृश॑न् अ॒दृश॑न्
अ॒दृश॑न्नुद॒हार्यः॑	उ॒दहार्य॑ इत्युद-॒हार्यः
उ॒तैनं॑ >	ए॒नं वि॒श्वा >
वि॒श्वा भू॒तानि॑	भू॒तानि॑ सः
स दृ॒ष्टः	दृ॒ष्टो मृ॒डया॑ति
मृ॒डया॑ति नः	न इति॑ नः
नमो॑ अस्तु	अ॒स्तु नी॒लग्री॑वाय

## शिव स्तुति

नी॒लग्री॒वाय॑ सह॒स्रा॒क्षाय॑	नी॒लग्री॒वाये॑ति नी॒ल - ग्री॒वाय॑
सह॒स्रा॒क्षाय॑ मी॒ढुषे॑ >	सह॒स्रा॒क्षाये॑ति सह॒स्र - अ॒क्षाय॑
मी॒ढुष॑ इति॑ मी॒ढुषे॑ >	अथो॒ ये
अथो॒ इत्यथो॑ >	ये अ॒स्य
अ॒स्य स॒त्वानः॑	स॒त्वानो॑ऽहं
अ॒हन्ते॑भ्यः	ते॒भ्योऽकरं॑
अ॒कर॒न्नमः॑	नम॑ इति॑ नमः॑
प्रमु॒ञ्च	मु॒ञ्च ध॒न्वनः॑
ध॒न्वन॑स्त्वं	त्वमु॒भयोः॑ >
उ॒भयो॑रान्नियोः॑	आ॒र्न्नियो॒र्ज्यां
ज्या॒मिति॑ ज्यां	याश्च॑
च ते॑ >	ते ह॒स्ते॑ >
ह॒स्त इ॒षवः॑	इ॒षवः॑ प॒रा >
प॒रा ताः॑	ता भ॒गवः॑
भ॒गवो॑ वप	भ॒गव॑ इति॑ भ॒ग - वः॑
व॒पेति॑ वप	अ॒वत॑त्य ध॒नुः
अ॒वत॑त्येत्यव - त॒त्य	ध॒नुस्त्वं
त्व॒ँ सह॒स्राक्ष॑	सह॒स्राक्ष॑ श॒तेषु॑धे
सह॒स्राक्षे॑ति सह॒स्र - अ॒क्ष	श॒तेषु॑ध इति॑ श॒त - इ॒षुधे॑ >

## शिव स्तुति

नि॒शी॒र्य॑ श॒ल्या॒नां॑ >	नि॒शी॒र्ये॑ति नि - शी॒र्य॑
श॒ल्या॒नां॑ मु॒खा॑ >	मु॒खा॑ शिवः
शि॒वो नः॑	नः सु॒म॒नाः॑ >
सु॒म॒ना॑ भव	सु॒म॒ना॑ इति सु - म॒नाः॑ >
भवे॑ति भव	वि॒ज्यं॑ धनुः
वि॒ज्य॒मि॒ति॒ वि - ज्यं॑ >	धनुः॑ क॒प॒र्दि॒नः॑
क॒प॒र्दि॒नो॑ वि॒शल्यः॑	वि॒शल्यो॑ बा॒ण॒वा॒न्
वि॒शल्य॑ इति वि - श॒ल्यः॑	बा॒ण॒वा॒ꣳ उ॒त
बा॒ण॒वा॒नि॒ति॒ बा॒ण - वा॒न्	उ॒ते॒त्यु॒त
अ॒ने॒श॒न्न॒स्य॑	अ॒स्ये॒ष॒वः॑
इ॒ष॒वः॑ आ॒भुः॑	आ॒भु॒र॒स्य॑
अ॒स्य॑ नि॒ष॒ङ्ग॒थिः॑	नि॒ष॒ङ्ग॒थि॒रि॒ति॒ नि॒ष॒ङ्ग॒थिः॑
या ते॑ >	ते हे॒तिः॑
हे॒ति॒र्मी॒ढु॒ष्ट॒म॑	मी॒ढु॒ष्ट॒म॑ ह॒स्ते॑ >
मी॒ढु॒ष्ट॒मे॒ति॒ मी॒ढुः॑ - त॒म॑	ह॒स्ते॑ ब॒भू॒व॑
ब॒भू॒व॑ ते	ते धनुः॑
धनु॒रि॒ति॒ धनुः॑	तया॒ऽस्मा॒न्
अ॒स्मा॒न् वि॒श्वतः॑	वि॒श्वत॑स्त्वं

## शिव स्तुति

त्वमय॑क्ष्मया॑ >	अय॑क्ष्मया परि॑
परि॑ब्भुज	भु॒जेति॑ भुज
नम॑स्ते	ते अ॒स्तु
अ॒स्त्वायु॑धाय	आयु॑धायानातताय
अना॑तताय धृ॒ष्णवे॑ >	अना॑ततायेत्यना॑ – त॒ताय
धृ॒ष्णव॑ इति॑ धृ॒ष्णवे॑ >	उ॒भाभ्या॑मुत
उ॒त ते॑ >	ते नमः॑
नमो॑ बा॒हुभ्यां॑ >	बा॒हुभ्यान्तव॑
बा॒हुभ्या॑मिति॑ बा॒हु – भ्यां॑ >	तव॑ धन्व॒ने
धन्व॒न इति॑ धन्व॒ने	परि॑ ते
ते धन्व॒नः	धन्व॒नो हेतिः॑
हेति॑रस्मान्	अ॒स्मान् वृ॑णक्तु
वृ॒णक्तु॑ वि॒श्वतः॑	वि॒श्वत॑ इति॑ वि॒श्वतः॑
अथो॑ यः	अथो॑ इत्यथो॑ >
य इ॒षुधिः॑	इ॒षुधि॑स्तव
इ॒षुधिरि॑तीषु – धिः	तवा॑रे
आ॒रे अ॒स्मत्	अ॒स्मन्नि
नि॒धेहि॑	धे॒हि तं
तमि॑ति तं	

16.2 श्री रुद्रक्रमः-द्वितीयो ऽनुवाकः

न॒मो हिर॑ण्यबा॒हवे	हिर॑ण्यबा॒हवे से॒नान्ये॑ >
हिर॑ण्यबा॒हव इति॑ हिर॑ण्य - बा॒हवे >	से॒नान्ये॑ दि॒शां
से॒नान्य इति॑ से॒ना - न्ये॑ >	दि॒शाञ्च
च पत॑ये	पत॑ये नमः
न॒मो नमः॑	न॒मो वृ॒क्षेभ्यः॑
वृ॒क्षेभ्यो॑ हरि॒केशे॑भ्यः	हरि॒केशे॑भ्यः प॒शूनां॑
हरि॒केशे॑भ्य इति॑ हरि॑ - के॒शेभ्यः॑	प॒शूनां॑ पत॑ये
पत॑ये नमः	न॒मो नमः॑
नमः॑ स॒स्पिञ्ज॑राय	स॒स्पिञ्ज॑राय त्वि॒षीम॑ते
त्वि॒षीम॑ते प॒थीनां॑	त्वि॒षीम॑त इति॑ त्वि॒षि - म॒ते >
प॒थीनां॑ पत॑ये	पत॑ये नमः
न॒मो नमः॑	न॒मो ब॒भ्लु॒शाय॑
ब॒भ्लु॒शाय॑ वि॒व्याधि॑ने >	वि॒व्याधि॑ने ऽन्ना॒नां
वि॒व्याधि॑न इति॑ वि॒ - व्या॑धिने >	अ॒न्ना॒नां पत॑ये
पत॑ये नमः	न॒मो नमः॑

## शिव स्तुति

नमो॑ हरिकेशाय॑	हरिकेशायोपवीतिने॑ >
हरिकेशायेति॑ हरि॑ - केशाय॑	उपवीतिने॑ पुष्टानां॑ >
उपवीतिन॑ इत्युप॑ - वीतिने॑ >	पुष्टानां॑ पतये॑
पतये॑ नमः॑	नमो॑ नमः॑
नमो॑ भवस्य॑	भवस्य॑ हेत्यै॑
हेत्यै॑ जगतां॑	जगतां॑ पतये॑
पतये॑ नमः॑	नमो॑ नमः॑
नमो॑ रुद्राय॑	रुद्रायातताविने॑ >
आतताविने॑ क्षेत्राणां॑	आतताविन॑ इत्या॑ - तताविने॑ >
क्षेत्राणां॑ पतये॑	पतये॑ नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमः॑ सूताय॑
सूतायाहन्त्याय॑	अहन्त्याय॑ वनानां॑
वनानां॑ पतये॑	पतये॑ नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमो॑ रोहिताय॑
रोहिताय॑ स्थपतये॑	स्थपतये॑ वृक्षाणां॑ >
वृक्षाणां॑ पतये॑	पतये॑ नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमो॑ मन्त्रिणै॑ >

## शिव स्तुति

मन्त्रि॑णे वा॒णिजा॑य	वा॒णिजा॑य क॒क्षाणां॑
क॒क्षाणां॑ पत॒ये	पत॒ये नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमो॑ भुव॒न्तये॑ >
भुव॒न्तये॑ वा॒रिव॑स्कृ॒ताय॑	वा॒रिव॑स्कृ॒तायौष॑धीनां
वा॒रिव॑स्कृ॒तायेति॑ वा॒रिवः॑ – कृ॒ताय॑	ओष॑धीनां पत॒ये
पत॒ये नमः॑	नमो॑ नमः॑
नम॑ उ॒च्चैर्घो॑षाय	उ॒च्चैर्घो॑षायाक्र॒न्दय॑ते
उ॒च्चैर्घो॑षायेत्यु॒च्चैः – घो॑षाय	आक्र॒न्दय॑ते प॒त्तीनां॑
आक्र॒न्दय॑त इत्या॑ – क्र॒न्दय॑ते	प॒त्तीनां॑ पत॒ये
पत॒ये नमः॑	नमो॑ नमः॑
नमः॑ कृ॒थ्स॒न्वीता॑य	कृ॒थ्स॒न्वीता॑य धाव॑ते
कृ॒थ्स॒न्वीता॑येति॑ कृ॒थ्स॒न् – वी॒ताय॑	धाव॑ते स॒त्त्वनां॑
स॒त्त्वनां॑ पत॒ये	पत॒ये नमः॑
नम॑ इति॑ नमः॑	

### 16.3 श्री रुद्रक्रमः-तृतीयो ऽनुवाकः

नमः॑ स॒हमा॑नाय	स॒हमा॑नाय नि॒व्याधि॑नै >
नि॒व्याधि॑न आ॒व्याधि॑नीनां	नि॒व्याधि॑न इति॑ नि – व्या॒धि॑नै >



## शिव स्तुति

आ॒व्या॒धिनी॑नां॒ पत॑ये	आ॒व्या॒धिनी॑ना॒मित्या॑ - व्या॒धिनी॑नां
पत॑ये नमः॑	नमो॑ नमः॑
नमः॑ ककु॒भाय॑	ककु॒भाय॑ निष॒ङ्गिणै॑ >
निष॒ङ्गिणै॑ स्ते॒नानां॑ >	निष॒ङ्गिण॑ इति॑ नि - स॒ङ्गिणै॑ >
स्ते॒नानां॑ पत॑ये	पत॑ये नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमो॑ निष॒ङ्गिणै॑ >
निष॒ङ्गिण॑ इषु॒धिम॑तै॑ >	निष॒ङ्गिण॑ इति॑ नि - स॒ङ्गिणै॑ >
इषु॒धिम॑ते तस्कराणां॑	इषु॒धिम॑त इतीषु॒धि - म॑तै॑ >
तस्कराणां॑ पत॑ये	पत॑ये नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमो॑ वञ्च॑ते
वञ्च॑ते परि॒वञ्च॑ते	परि॒वञ्च॑ते स्तायू॒नां
परि॒वञ्च॑त इति॑ परि - वञ्च॑ते	स्तायू॒नां पत॑ये
पत॑ये नमः॑	नमो॑ नमः॑
नमो॑ निचे॒रवै॑ >	निचे॒रवै॑ परि॒चराय॑
निचे॒रव॑ इति॑ नि - चे॒रवै॑ >	परि॒चराया॑रण्यानां॑
परि॒चराये॑ति परि - च॒राय॑	अ॒रण्या॑नां पत॑ये
पत॑ये नमः॑	नमो॑ नमः॑

## शिव स्तुति

नमः॑ सृ॒कावि॑भ्यः	सृ॒कावि॑भ्यो जिघा॑ञ्सद्भ्यः
सृ॒कावि॑भ्य इति॑ सृ॒कावि॑ - भ्यः	जिघा॑ञ्सद्भ्यो मुष्ण॑तां
जिघा॑ञ्सद्भ्य इति॑ जिघा॑ञ्सत्-भ्यः	मुष्ण॑तां पतये
पतये॑ नमः	नमो॑ नमः
नमो॑ऽसिमद्भ्यः	अ॒सिमद्भ्यो॑ नक्तं॑ >
अ॒सिमद्भ्य इत्य॑सिमत् - भ्यः	नक्तञ्चर॑द्भ्यः
चर॑द्भ्यः प्रकृ॑न्तानां >	चर॑द्भ्य इति॑ चरत् - भ्यः
प्रकृ॑न्तानां पतये	प्रकृ॑न्तानामिति॑ प्र - कृ॑न्तानां >
पतये॑ नमः	नमो॑ नमः
नम॑ उष्णी॒षिणै॑ >	उष्णी॒षिणै॑ गिरि॒चराय॑
गिरि॒चराय॑ कुलु॒ञ्चानां॑ >	गिरि॒चरायेति॑ गिरि॒ - चराय॑
कुलु॒ञ्चानां॑ पतये	पतये॑ नमः
नमो॑ नमः	नम॑ इषुमद्भ्यः
इषुमद्भ्यो॑ धन्वावि॑भ्यः	इषुमद्भ्य इती॑षुमत् - भ्यः
धन्वावि॑भ्यश्च	धन्वावि॑भ्य इति॑ धन्वावि॒ - भ्यः
च वः	वो॑ नमः

## शिव स्तुति

नमो॑ नमः॑	नम॑ आतन्वाने॑भ्यः
आतन्वाने॑भ्यः प्रति॑दधाने॑भ्यः	आतन्वाने॑भ्य इत्या॑ – तन्वाने॑भ्यः
प्रति॑दधाने॑भ्यश्च	प्रति॑दधाने॑भ्य इति॑ प्रति॑ – दधाने॑भ्यः
च॒ वः॒	वो॒ नमः॑
नमो॑ नमः॑	नम॑ आयच्छद्भ्यः॑
आयच्छद्भ्यो॑ विसृ॑जद्भ्यः	आयच्छद्भ्य॑ इत्या॑यच्छत् – भ्यः॑
विसृ॑जद्भ्यश्च	विसृ॑जद्भ्य इति॑ विसृ॑जत् – भ्यः॑
च॒ वः॒	वो॒ नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमो॑ऽस्यद्भ्यः॑
अस्यद्भ्यो॑ विद्ध्यद्भ्यः॑	अस्यद्भ्य॑ इत्य॑स्यत् – भ्यः॑
विद्ध्यद्भ्यश्च॑	विद्ध्यद्भ्य॑ इति॑ विद्ध्यत् – भ्यः॑
च॒ वः॒	वो॒ नमः॑
नमो॑ नमः॑	नम॑ आसीने॑भ्यः
आसीने॑भ्यः श्याने॑भ्यः	श्याने॑भ्यश्च
च॒ वः॒	वो॒ नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमः॑ स्वपद्भ्यः॑
स्वपद्भ्यो॑ जाग्रद्भ्यः॑	स्वपद्भ्य॑ इति॑ स्वपत् – भ्यः॑

## शिव स्तुति

जाग्रद्भ्यश्च	जाग्रद्भ्य इति जाग्रत् - भ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमस्तिष्ठद्भ्यः
तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यः	तिष्ठद्भ्य इति तिष्ठत् - भ्यः
धावद्भ्यश्च	धावद्भ्य इति धावत् - भ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमः सभाभ्यः
सभाभ्यः सभापतिभ्यः	सभापतिभ्यश्च
सभापतिभ्य इति सभापति - भ्यः	च वः
वो नमः	नमो नमः
नमो अश्वेभ्यः	अश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यः
अश्वपतिभ्यश्च	अश्वपतिभ्य इत्यश्वपति - भ्यः
च वः	वो नमः
नम इति नमः	

### 16.4 श्री रुद्रक्रमः - चतुर्थो ऽनुवाकः

नम आव्याधिनीभ्यः	आव्याधिनीभ्यो विविद्ध्यन्तीभ्यः
आव्याधिनीभ्य इत्या - व्याधिनीभ्यः	विविद्ध्यन्तीभ्यश्च

## शिव स्तुति

वि॒वि॒द्ध्यन्ती॑भ्य॒ इति॑ वि - वि॒द्ध्यन्ती॑भ्यः	च॒ वः
वो॒ नमः॑	नमो॒ नमः॑
नम॒ उग॑णाभ्यः	उग॑णाभ्यस्तृ॒हती॑भ्यः
तृ॒हती॑भ्यश्च	च॒ वः
वो॒ नमः॑	नमो॒ नमः॑
नमो॒ गृ॒थ्से॑भ्यः	गृ॒थ्से॑भ्यो गृ॒थ्से॑पतिभ्यः
गृ॒थ्स॑पतिभ्यश्च	गृ॒थ्स॑पतिभ्य॒ इति॑ गृ॒थ्स॑पति - भ्यः
च॒ वः	वो॒ नमः॑
नमो॒ नमः॑	नमो॒ ब्रा॒ते॑भ्यः
ब्रा॒ते॑भ्यो ब्रा॒त॑पतिभ्यः	ब्रा॒त॑पतिभ्यश्च
ब्रा॒त॑पतिभ्य॒ इति॑ ब्रा॒त॑पति - भ्यः	च॒ वः
वो॒ नमः॑	नमो॒ नमः॑
नमो॒ ग॒णे॑भ्यः	ग॒णे॑भ्यो ग॒ण॑पतिभ्यः
ग॒ण॑पतिभ्यश्च	ग॒ण॑पतिभ्य॒ इति॑ ग॒ण॑पति - भ्यः
च॒ वः	वो॒ नमः॑
नमो॒ नमः॑	नमो॒ वि॒रू॒पे॑भ्यः
वि॒रू॒पे॑भ्यो वि॒श्व॑रूपेभ्यः	वि॒रू॒पे॑भ्य॒ इति॑ वि - रू॒पे॑भ्यः

## शिव स्तुति

वि॒श्वरूपे॑भ्यश्च	वि॒श्वरूपे॑भ्य इति वि॒श्व - रूपे॑भ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमो महद्भ्यः
महद्भ्यः क्षु॒ल्लके॑भ्यः	महद्भ्य इति महत् - भ्यः
क्षु॒ल्लके॑भ्यश्च	च वः
वो नमः	नमो नमः
नमो रथि॑भ्यः	रथि॑भ्यो ऽरथे॑भ्यः
रथि॑भ्य इति रथि - भ्यः	अरथे॑भ्यश्च
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमो रथे॑भ्यः
रथे॑भ्यो रथपति॑भ्यः	रथपति॑भ्यश्च
रथपति॑भ्य इति रथपति - भ्यः	च वः
वो नमः	नमो नमः
नमः सेना॑भ्यः	सेना॑भ्यः सेनानि॑भ्यः
सेनानि॑भ्यश्च	सेनानि॑भ्य इति सेनानि - भ्यः
च वः	वो नमः
नमो नमः	नमः क्षत्तृ॑भ्यः

## शिव स्तुति

क्षत्तृ॒भ्यः॑ स॒ङ्ग्रही॒तृभ्यः॑	क्षत्तृ॒भ्यः॑ इति॑ क्षत्तृ - भ्यः॑
स॒ङ्ग्रही॒तृभ्यश्च॑	स॒ङ्ग्रही॒तृभ्य॑ इति॑ स॒ङ्ग्रही॒तृ - भ्यः॑
च वः॑	वो नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमस्तक्ष॑भ्यः
तक्ष॑भ्यो रथ॒कारे॒भ्यः॑	तक्ष॑भ्य इति॑ तक्ष - भ्यः॑
रथ॒कारे॒भ्यश्च॑	रथ॒कारे॒भ्य॑ इति॑ रथ - कारे॒भ्यः॑
च वः॑	वो नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमः॑ कुलाले॒भ्यः॑
कुलाले॒भ्यः॑ क॒मरि॑भ्यः	क॒मरि॑भ्यश्च
च वः॑	वो नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमः॑ पु॒ञ्जिष्टे॑भ्यः
पु॒ञ्जिष्टे॑भ्यो निषा॒दे॒भ्यः॑	निषा॒दे॒भ्यश्च॑
च वः॑	वो नमः॑
नमो॑ नमः॑	नम॑ इषु॒कृद्भ्यः॑
इषु॒कृद्भ्यो॑ धन्व॒कृद्भ्यः॑	इषु॒कृद्भ्य॑ इति॑ इषु॒कृत् - भ्यः॑
धन्व॒कृद्भ्यश्च॑	धन्व॒कृद्भ्य॑ इति॑ धन्व॒कृत् - भ्यः॑
च वः॑	वो नमः॑

## शिव स्तुति

नमो॑ नमः॑	नमो॑ मृ॒गयु॑भ्यः
मृ॒गयु॑भ्यः श्व॒निभ्यः॑	मृ॒गयु॑भ्य इति॑ मृ॒गयु॑ - भ्यः॑
श्व॒निभ्यश्च॑	श्व॒निभ्य इति॑ श्व॒नि - भ्यः॑
च॒ वः॑	वो॒ नमः॑
नमो॑ नमः॑	नमः॑ श्व॒भ्यः॑
श्व॒भ्य इ॒श्वप॑तिभ्यः	श्व॒भ्यः इति॑ श्व - भ्यः॑
श्व॒पति॑भ्यश्च	श्व॒पति॑भ्य इति॑ श्व॒पति॑ - भ्यः॑
च॒ वः॑	वो॒ नमः॑
नम॑ इति॑ नमः॑	

### 16.5 श्री रुद्रक्रमः पञ्चमो ऽनुवाकः

नमो॑ भवाय॑	भवाय॑ च
च॒ रु॒द्राय॑	रु॒द्राय॑ च
च॒ नमः॑	नम॑श्शर्वाय॑
शर्वाय॑ च	च॒ प॒शुप॑तये
प॒शुप॑तये च	प॒शुप॑तय इति॑ प॒शु - प॑तये
च॒ नमः॑	नमो॑ नीलग्रीवाय॑
नीलग्रीवाय॑ च	नीलग्रीवायेति॑ नील - ग्री॒वाय॑



## शिव स्तुति

च शितिकण्ठाय	शितिकण्ठाय च
शितिकण्ठायेति शिति - कण्ठाय	च नमः
नमः कपर्दिने >	कपर्दिने च
च व्युप्तकेशाय	व्युप्तकेशाय च
व्युप्तकेशायेति व्युप्त - केशाय	च नमः
नमः सहस्राक्षाय	सहस्राक्षाय च
सहस्राक्षायेति सहस्र - अक्षाय	च शतधन्वने
शतधन्वने च	शतधन्वन इति शत - धन्वने >
च नमः	नमो गिरिशाय
गिरिशाय च	च शिपिविष्टाय
शिपिविष्टाय च	शिपिविष्टायेति शिपि - विष्टाय
च नमः	नमो मीढुष्टमाय
मीढुष्टमाय च	मीढुष्टमायेति मीढुः - तमाय
चेषुमते	इषुमते च
इषुमत इतीषु - मते >	च नमः
नमो ह्रस्वाय	ह्रस्वाय च
च वामनाय	वामनाय च

## शिव स्तुति

च॒ नमः॑	नमो॑ बृ॒हते॑
बृ॒हते॑ च	च॒ वर्॒षीय॑से
वर्॒षीय॑से च	च॒ नमः॑
नमो॑ वृ॒द्धाय॑	वृ॒द्धाय॑ च
च॒ स॒म्बृ॑द्ध॒ध्वने॑	स॒म्बृ॑द्ध॒ध्वने॑ च
स॒म्बृ॑द्ध॒ध्वन॑ इति सं – वृ॒द्ध॒ध्वने॑	च॒ नमः॑
नमो॑ अ॒ग्रिया॑य	अ॒ग्रिया॑य च
च॒ प्र॒थ॒माय॑	प्र॒थ॒माय॑ च
च॒ नमः॑	नम॑ आ॒शवे॑ >
आ॒शवे॑ च	चा॒जि॒राय॑
अ॒जि॒राय॑ च	च॒ नमः॑
नमः॑ शी॒घ्रि॒याय॑	शी॒घ्रि॒याय॑ च
च॒ शी॒भ्याय॑	शी॒भ्याय॑ च
च॒ नमः॑	नम॑ ऊ॒र्म्या॑य
ऊ॒र्म्या॑य च	चा॒व॒स्व॒न्याय॑
अ॒व॒स्व॒न्याय॑ च	अ॒व॒स्व॒न्या॑येत्यव – स्व॒न्याय॑
च॒ नमः॑	नमः॑ स्रो॒त॒स्याय॑

## शिव स्तुति

स्रो॒तस्या॑य च	च द्वी॒प्याय॑
द्वी॒प्याय॑ च	चेति॑ च

### 16.6 श्री रुद्रक्रमः – षष्ठो ऽनुवाकः

नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॑	ज्ये॒ष्ठाय॑ च
च कनि॒ष्ठाय॑	कनि॒ष्ठाय॑ च
च नमः॑	नमः॑ पूर्॒वजा॑य
पूर्॒वजा॑य च	पूर्॒वजा॑येति पूर्॒व – जा॑य
चा॒परजा॑य	अ॒परजा॑य च
अ॒परजा॑येत्य॒पर – जा॑य	च नमः॑
नमो॑ म॒द्ध्यमा॑य	म॒द्ध्यमा॑य च
चा॒पग॒ल्भाय॑	अ॒पग॒ल्भाय॑ च
अ॒पग॒ल्भाये॑त्य॒प – ग॒ल्भाय॑	च नमः॑
नमो॑ जघ॒न्याय॑	जघ॒न्याय॑ च
च बु॒द्धि॒नया॑य	बु॒द्धि॒नया॑य च
च नमः॑	नमस्सो॒भ्याय॑
सो॒भ्याय॑ च	च प्र॒तिस॒र्याय॑
प्र॒तिस॒र्याय॑ च	प्र॒तिस॒र्याये॑ति प्र॒ति – स॒र्याय॑
च नमः॑	नमो॑ या॒म्याय॑

## शिव स्तुति

याम्या॒य च॑	च॒ क्षेम्या॒य
क्षेम्या॒य च॑	च॒ नमः॑
नम॑ उ॒र्वर्या॑य	उ॒र्वर्या॑य च॑
च॒ खल्या॑य	खल्या॑य च॑
च॒ नमः॑	नमः॑ इ॒लोक्या॑य
इ॒लोक्या॑य च॑	चा॒वसा॒न्याय॑
अ॒वसा॒न्याय॑ च॑	अ॒वसा॒न्याये॒त्यव॑ – सा॒न्याय॑
च॒ नमः॑	नमो॑ व॒न्याय॑
व॒न्याय॑ च॑	च॒ कक्ष्या॑य
कक्ष्या॑य च॑	च॒ नमः॑
नमः॑ श्र॒वाय॑	श्र॒वाय॑ च॑
च॒ प्र॒तिश्र॒वाय॑	प्र॒तिश्र॒वाय॑ च॑
प्र॒तिश्र॒वाये॒ति प्र॒ति – श्र॒वाय॑	च॒ नमः॑
नम॑ आ॒शुषे॑णाय	आ॒शुषे॑णाय च॑
आ॒शुषे॑णा॒येत्या॒शु – से॒नाय॑	चा॒शुर॒थाय॑
आ॒शुर॒थाय॑ च॑	आ॒शुर॒थाये॒त्याशु॑ – र॒थाय॑
च॒ नमः॑	नमः॑ शू॒राय॑

## शिव स्तुति

शूराय च	चावभिन्दते
अवभिन्दते च	अवभिन्दत इत्यव - भिन्दते
च नमः	नमो वर्मिणे >
वर्मिणे च	च वरूथिने >
वरूथिने च	च नमः
नमो बिल्मिने >	बिल्मिने च
च कवचिने >	कवचिने च
च नमः	नमः श्रुताय
श्रुताय च	च श्रुतसेनाय
श्रुतसेनाय च	श्रुतसेनायेति श्रुत - सेनाय
चेति च	

### 16.7 श्री रुद्रक्रमः – सप्तमो ऽनुवाकः

नमो दुन्दुभ्याय	दुन्दुभ्याय च
चाहनन्याय	आहनन्याय च
आहनन्यायेत्या - हनन्याय	च नमः
नमो धृष्णावे	धृष्णावे च
च प्रमृशाय	प्रमृशाय च
प्रमृशायेति प्र - मृशाय	च नमः

## शिव स्तुति

नमो॑ दू॒ताय॑	दू॒ताय॑ च
च॒ प्र॒हि॒ताय॑	प्र॒हि॒ताय॑ च
प्र॒हि॒ताये॒ति प्र॒ - हि॒ताय॑	च॒ नमः॑
नमो॑ नि॒षङ्गि॑णे >	नि॒षङ्गि॑णे च
नि॒षङ्गि॑ण इति॑ नि - सङ्गि॑ने >	चे॒षु॒धि॒मते॑ >
इ॒षु॒धि॒मते॑ च	इ॒षु॒धि॒मत॑ इती॒षु॒धि - मते॑ >
च॒ नमः॑	नम॑ स्ती॒क्ष्णेष॑वे
ती॒क्ष्णेष॑वे च	ती॒क्ष्णेष॑व इति॑ ती॒क्ष्ण - इ॒षवे॑ >
चा॒यु॒धि॒ने॑ >	आ॒यु॒धि॒ने॑ च
च॒ नमः॑	नमः॑ स्वा॒यु॒धाय॑
स्वा॒यु॒धाय॑ च	स्वा॒यु॒धाये॒ति सु॒ - आ॒यु॒धाय॑
च॒ सु॒धन्व॑ने	सु॒धन्व॑ने च
सु॒धन्व॑न इति॑ सु॒ - धन्व॑ने	च॒ नमः॑
नम॑स्सृ॒त्याय॑	सृ॒त्याय॑ च
च॒ प॒थ्याय॑	प॒थ्याय॑ च
च॒ नमः॑	नमः॑ का॒त्याय॑
का॒त्याय॑ च	च॒ नी॒प्याय॑

## शिव स्तुति

नी॒प्याय॑ च	च॒ नमः॑
नमः॑ सू॒द्याय॑	सू॒द्याय॑ च
च॒ सर॑स्याय	सर॑स्याय च
च॒ नमः॑	नमो॑ ना॒द्याय॑
ना॒द्याय॑ च	च॒ वै॒श॒न्ताय॑
वै॒श॒न्ताय॑ च	च॒ नमः॑
नमः॑ कू॒प्याय॑	कू॒प्याय॑ च
चा॒व॒त्याय॑	अ॒व॒त्याय॑ च
च॒ नमः॑	नमो॑ व॒र्ष्याय॑
व॒र्ष्याय॑ च	चा॒व॒र्ष्याय॑
अ॒व॒र्ष्याय॑ च	च॒ नमः॑
नमो॑ मे॒घ्याय॑	मे॒घ्याय॑ च
च॒ वि॒द्यु॒त्याय॑	वि॒द्यु॒त्याय॑ च
वि॒द्यु॒त्यायेति॑ वि - द्यु॒त्याय॑	च॒ नमः॑
नम॑ ई॒द्धि॒त्रयाय॑	ई॒द्धि॒त्रयाय॑ च
चा॒त॒प्याय॑	आ॒त॒प्याय॑ च
आ॒त॒प्यायेत्या॑ - त॒प्याय॑	च॒ नमः॑

## शिव स्तुति

नमो॒ वा॒त्याय॑	वा॒त्याय॑ च
च रे॒ष्मियाय॑	रे॒ष्मियाय॑ च
च नमः॑	नमो॑ वा॒स्त॒व्याय॑
वा॒स्त॒व्याय॑ च	च वा॒स्तु॒पाय॑
वा॒स्तु॒पाय॑ च	वा॒स्तु॒पायेति॑ वा॒स्तु – पाय॑
चेति॑ च	

### 16.8 श्री रुद्रक्रमः – अष्टमो ऽनुवाकः

नमः॑ सो॒माय॑	सो॒माय॑ च
च रु॒द्राय॑	रु॒द्राय॑ च
च नमः॑	नमस्ता॒म्राय॑
ता॒म्राय॑ च	चा॒रु॒णाय॑
अ॒रु॒णाय॑ च	च नमः॑
नमश्श॒ङ्गाय॑	श॒ङ्गाय॑ च
च प॒शुप॑तये	प॒शुप॑तये च
प॒शुप॑तय इति प॒शु – प॑तये	च नमः॑
नम उ॒ग्राय॑	उ॒ग्राय॑ च
च भी॒माय॑	भी॒माय॑ च



## शिव स्तुति

च नमः	नमो अग्रेवधाय
अग्रेवधाय च	अग्रेवधायेत्यग्रे - वधाय
च दूरेवधाय	दूरेवधाय च
दूरेवधायेति दूरे - वधाय	च नमः
नमो हन्त्रे	हन्त्रे च
च हनीयसे	हनीयसे च
च नमः	नमो वृक्षेभ्यः
वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः	हरिकेशेभ्यो नमः
हरिकेशेभ्य इति हरि - केशेभ्यः	नमस्ताराय
ताराय नमः	नमः शंभवे >
शंभवे च	शंभव इति शं - भवे >
च मयोभवे >	मयोभवे च
मयोभव इति मयः - भवे >	च नमः
नमश्शङ्कराय	शङ्कराय च
शङ्करायेति शं - कराय	च मयस्कराय
मयस्कराय च	मयस्करायेति मयः - कराय
च नमः	नमश्शिवाय

## शिव स्तुति

शि॒वाय॑ च	च॒ शि॒व॒त॒राय॑
शि॒व॒त॒राय॑ च	शि॒व॒त॒रा॒येति॑ शि॒व – त॒राय॑
च॒ नमः॑	नम॑स्ती॒र्थ्याय॑
ती॒र्त्थ्याय॑ च	च॒ कू॒ल्याय॑
कू॒ल्याय॑ च	च॒ नमः॑
नमः॑ पा॒र्याय॑	पा॒र्याय॑ च
चा॒वा॒र्याय॑	अ॒वा॒र्याय॑ च
च॒ नमः॑	नमः॑ प्र॒त॒र॒णाय॑
प्र॒त॒र॒णाय॑ च	प्र॒त॒र॒णा॒येति॑ प्र – त॒र॒णाय॑
चो॒त्त॒र॒णाय॑	उ॒त्त॒र॒णाय॑ च
उ॒त्त॒र॒णा॒येत्युत् – त॒र॒णाय॑	च॒ नमः॑
नम॑ आ॒ता॒र्याय॑	आ॒ता॒र्याय॑ च
आ॒ता॒र्या॒येत्या॑ – ता॒र्याय॑	चा॒ला॒द्याय॑
आ॒ला॒द्याय॑ च	आ॒ला॒द्या॒येत्या॑ – ला॒द्याय॑
च॒ नमः॑	नम॑श्श॒ष्याय॑
श॒ष्याय॑ च	च॒ फे॒न्याय॑
फे॒न्याय॑ च	च॒ नमः॑

## शिव स्तुति

नमः॑ सि॒क॒त्याय॑	सि॒क॒त्याय॑ च
च॒ प्र॒वा॒ह्याय॑	प्र॒वा॒ह्याय॑ च
प्र॒वा॒ह्यायेति॑ प्र - वा॒ह्याय॑	चेति॑ च

### 16.9 श्रीरुद्रक्रमः - नवमो ऽनुवाकः

नम॑ इ॒रि॒ण्याय॑	इ॒रि॒ण्याय॑ च
च॒ प्र॒प॒थ्याय॑	प्र॒प॒थ्याय॑ च
प्र॒प॒थ्यायेति॑ प्र - प॒थ्याय॑	च॒ नमः॑
नमः॑ कि॒ञ्शि॒लाय॑	कि॒ञ्शि॒लाय॑ च
च॒ क्ष॒य॒णाय॑	क्ष॒य॒णाय॑ च
च॒ नमः॑	नमः॑ क॒प॒र्दि॒ने॑ >
क॒प॒र्दि॒ने॑ च	च॒ पु॒ल॒स्तये॑ >
पु॒ल॒स्तये॑ च	च॒ नमः॑
नमो॑ गो॒ष्ठ्याय॑	गो॒ष्ठ्याय॑ च
गो॒ष्ठ्यायेति॑ गो - स्था॒य॑	च॒ गृ॒ह्याय॑
गृ॒ह्याय॑ च	च॒ नमः॑
नम॑स्त॒ल्प्याय॑	त॒ल्प्याय॑ च
च॒ गे॒ह्याय॑	गे॒ह्याय॑ च
च॒ नमः॑	नमः॑ का॒त्याय॑

## शिव स्तुति

का॒ट्याय॑ च॒	च॒ ग॒ह्व॒रे॒ष्ठाय॑
ग॒ह्व॒रे॒ष्ठाय॑ च॒	ग॒ह्व॒रे॒ष्ठाय॑ेति॒ ग॒ह्व॒रे – स्थाय॑
च॒ नमः॑	नमो॑ ह॒द॒य्याय॑
ह॒द॒य्याय॑ च॒	च॒ नि॒वे॒ष्याय॑
नि॒वे॒ष्याय॑ च॒	नि॒वे॒ष्याय॑ेति॒ नि – वे॒ष्याय॑
च॒ नमः॑	नमः॑ पा॒ञ्च॒स॒व्याय॑
पा॒ञ्च॒स॒व्याय॑ च॒	च॒ रज॑स्याय॒
रज॑स्याय॒ च॒	च॒ नमः॑
नम॑श्शु॒ष्क्याय॑	शु॒ष्क्याय॑ च॒
च॒ हरि॑त्याय॒	हरि॑त्याय॒ च॒
च॒ नमः॑	नमो॑ लो॒प्याय॑
लो॒प्याय॑ च॒	चो॒ल॒प्याय॑
उ॒ल॒प्याय॑ च॒	च॒ नमः॑
नम॑ ऊ॒र्व्याय॑	ऊ॒र्व्याय॑ च॒
च॒ सू॒र्म्याय॑	सू॒र्म्याय॑ च॒
च॒ नमः॑	नमः॑ प॒र्ण्याय॑
प॒र्ण्याय॑ च॒	च॒ प॒र्ण॑श॒ट्टाय॑

## शिव स्तुति

पर्ण॑श॒द्याय॑ च	पर्ण॑श॒द्यायेति॑ पर्ण॑ - श॒द्याय॑
च॒ नमः॑	नमो॑ऽपगु॒रमा॑णाय
अपगु॒रमा॑णाय च	अपगु॒रमा॑णायेत्यप॑ - गु॒रमा॑णाय
चा॒भिघ्न॑ते	अ॒भिघ्न॑ते च
अ॒भिघ्न॑त इत्य॒भि - घ्न॑ते	च॒ नमः॑
नम॑ आ॒क्खि॒दते॑	आ॒क्खि॒दते॑ च
आ॒क्खि॒दत॑ इत्या॑ - खि॒दते॑	च॒ प्र॒क्खि॒दते॑
प्र॒क्खि॒दते॑ च	प्र॒क्खि॒दत॑ इति॑ प्र - खि॒दते॑
च॒ नमः॑	नमो॑ वः
वः॒ कि॒रि॒केभ्यः॑	कि॒रि॒केभ्यो॑ दे॒वानां॑ >
दे॒वानां॑ हृद॒येभ्यः॑	हृद॒येभ्यो॑ नमः॑
नमो॑ वि॒क्षी॒णके॑भ्यः	वि॒क्षी॒णके॑भ्यो नमः॑
वि॒क्षी॒णके॑भ्य इति॑ वि - क्षी॒णके॑भ्यः	नमो॑ वि॒चि॒न्वत्के॑भ्यः
वि॒चि॒न्वत्के॑भ्यो नमः॑	वि॒चि॒न्वत्के॑भ्य इति॑ वि - चि॒न्वत्के॑भ्यः
नम॑ आ॒निर्॒हते॑भ्यः	आ॒निर्॒हते॑भ्यो नमः॑
आ॒निर्॒हते॑भ्य इत्या॑निः - ह॒तेभ्यः॑	नम॑ आ॒मीव॑त्केभ्यः

## शिव स्तुति

आमी॒व॒त्के॒भ्य इ॒त्या॑ – मी॒व॒त्के॒भ्यः॑

### 16.10 श्रीरुद्रक्रमः– दशमो ऽनुवाकः

द्रा॒पे अ॒न्धसः॑	अ॒न्धस॑स्पते
प॒ते द॒रि॒द्रत्	द॒रि॒द्र॒न्नी॒ललो॒हित
नी॒ललो॒हि॒तेति॑ नी॒ल – लो॒हित	ए॒षां पु॒रुषा॑णां
पु॒रुषा॑णामे॒षां	ए॒षां प॒शूनां॑
प॒शूनां॑ मा	मा भेः
भे॒र्मा	मा॒ऽरः॑
अ॒रोमो॑	मो ए॒षां
मो इति॑ मो	ए॒षां किं॑
किञ्च॒न	च॒ नाम॑मत्
आ॒मम॑दि॒त्या म॑मत्	या ते॑ >
ते रु॒द्र	रु॒द्र शि॒वा
शि॒वा त॒नूः	त॒नूश्शि॒वा
शि॒वा वि॒श्वाह॑भे॒षजी	वि॒श्वाह॑भे॒षजीति॑ वि॒श्वाह॑ – भे॒षजी >
शि॒वा रु॒द्रस्य॑	रु॒द्रस्य॑ भे॒षजी

## शिव स्तुति

भे॒ष॒जी॒ तया॑ >	तया॑ नः
नो॒ मृ॒ड	मृ॒ड जी॒वसे॑ >
जी॒व॒स इति॑ जी॒वसे॑ >	इ॒मा॒ रु॒द्राय॑
रु॒द्राय॑ तव॒से॑ >	तव॒से॑ क॒प॒दि॒ने॑ >
क॒प॒दि॒ने॑ क्ष॒य॒द्वी॒राय॑	क्ष॒य॒द्वी॒राय॑ प्र
क्ष॒य॒द्वी॒रायेति॑ क्ष॒य॒त् - वी॒राय॑	प्र॒भ॒रा॒म॒हे
भ॒रा॒म॒हे म॒तिं	म॒ति॒मि॒ति म॒तिं
यथा॑ नः	न॒शं
श॒म॒स॒त्	अ॒स॒द् द्वि॒पदे॑ >
द्वि॒पदे॑ चतु॒ष्पदे॑	द्वि॒पद॑ इति॑ द्वि - पदे॑ >
चतु॒ष्पदे॑ वि॒श्वं >	चतु॒ष्पद॑ इति॑ चतुः - पदे॑ >
वि॒श्वं पु॒ष्टं	पु॒ष्टं ग्रा॒मे >
ग्रा॒मे अ॒स्मिन्	अ॒स्मिन्ना॒तुरं
अ॒ना॒तुर॑मि॒त्यना॑ - तु॒रं >	मृ॒डा नः
नो॒ रु॒द्र	रु॒द्रो॒त
उ॒त नः	नो॒ म॒यः
म॒य॒स्कृ॒धि	कृ॒धि क्ष॒य॒द्वी॒राय॑

## शिव स्तुति

क्षय॑द्वीराय॑ नम॒सा	क्षय॑द्वीरा॒येति॑ क्षय॒त् - वी॒राय॑
नम॒सा वि॒धेम	वि॒धेम ते॑ >
त इति॑ ते	यच्छं
शञ्च॑	च योः
योश्च॑	च मनुः॑
मनु॑रायजे	आयजे॑ पिता
आय॑ज इत्या॑ - यजे	पिता॑ तत्
तद॑श्याम	अ॒श्याम॑ तव
तव॑ रुद्र	रुद्र॑ प्रणीतौ
प्रणी॑ताविति॒ प्र - नीतौ॑ >	मा नः॑
नो॒ महान्तं॑ >	महान्त॑मुत
उत॑ मा	मा नः॑
नो॒ अ॒र्भकं॑	अ॒र्भकं॑ मा
मा नः॑	न उक्षन्तं॑
उक्षन्त॑मुत	उत॑ मा
मा नः॑	न उक्षितं॑
उक्षित॑मित्युक्षितं॑	मा नः॑



## शिव स्तुति

नो॒ व॒धीः >	व॒धीः॑॑ पि॒तरं॑ >
पि॒तरं॑ मा	मो॒त
उ॒त मा॒तरं॑ >	मा॒तरं॑ प्रि॒याः
प्रि॒या मा	मा नः॑
न॒स्तनु॑वः	त॒नुवो॑ रु॒द्र
रु॒द्र री॒रिषः॑	री॒रिषः॑ इति॑ री॒रिषः॑
मा नः॑	न॒स्तो॒के
तो॒के त॒नये॑	त॒नये॑ मा
मा नः॑	न॒ आयु॑षि
आयु॑षि मा	मा नः॑
नो॒ गो॒षु	गो॒षु मा
मा नः॑	नो॒ अ॒श्वेषु॑
अ॒श्वेषु॑ री॒रिषः॑	री॒रिष॑ इति॑ री॒रिषः॑
वी॒रान्मा॑	मा नः॑
नो॒ रु॒द्र	रु॒द्र भा॒मितः॑
भा॒मितो॑ व॒धीः	व॒धीर्, ह॒विष्म॑न्तः
ह॒विष्म॑न्तो न॒मसा॑	न॒मसा॑ वि॒धेम

## शिव स्तुति

वि॒धेम॒ ते॒ >	त॒ इति॑ ते
आ॒रा॒त्ते॑ >	ते॒ गो॒घ्ने
गो॒घ्न उ॒त	गो॒घ्न इति॑ गो - घ्ने
उ॒त पू॒रुष॑घ्ने	पू॒रुष॑घ्ने क्ष॒यद्वी॑राय
पू॒रुष॑घ्न इति॑ पू॒रुष - घ्ने	क्ष॒यद्वी॑राय सु॒म्नं
क्ष॒यद्वी॑रा॒येति॑ क्ष॒यत् - वी॒राय॑	सु॒म्नम॒स्मे
अ॒स्मे ते॑ >	अ॒स्मे इत्य॑स्मे
ते॒ अ॒स्तु	अ॒स्त्वित्य॑स्तु
रक्षा॑ च	च नः॑
नो॒ अधि॑	अधि॑ च
च दे॒व	दे॒व ब्रू॒हि
ब्रू॒ह्यध॑	अधा॑ च
च नः॑	नः॑ शर्म
शर्म॑ यच्छ	यच्छ॑ द्वि॒बर्॒हाः >
द्वि॒बर्॒हा इति॑ द्वि - बर्॒हाः >	स्तु॒हि श्रु॒तं
श्रु॒तं गर्त्त॑सदं >	गर्त्त॑सदं यु॒वानं॑
गर्त्त॑सदमिति॑ गर्त्त - सदं >	यु॒वानं॑ मृ॒गं

## शिव स्तुति

मृ॒गन्न	न भी॒मं
भी॒ममु॒पह॒न्तुं	उ॒पह॒न्तुमु॒ग्रं
उ॒ग्रमि॒त्यु॒ग्रं	मृ॒डा ज॒रित्रे
ज॒रित्रे रु॒द्र	रु॒द्र स्त॒वानः
स्त॒वानो अ॒न्यं	अ॒न्यन्ते॑ >
ते अ॒स्मत्	अ॒स्मन्नि
नि व॒पन्तु	व॒पन्तु से॒नाः >
से॒ना इति॑ से॒नाः >	परि॑ णः
नो रु॒द्रस्य	रु॒द्रस्य हे॒तिः
हे॒ति वृ॑णक्तु	वृ॒णक्तु परि॑
परि॑ त्वेषस्य	त्वेषस्य॑ दु॒र्मतिः
दु॒र्मति॑रघा॒योः	दु॒र्मति॑रिति दुः – म॒तिः
अ॒घा॒यो॒रित्य॑घ – योः	अ॒व स्थि॑रा
स्थि॑रा म॒घव॑द्भ्यः	म॒घव॑द्भ्य स्तनु॒ष्व
म॒घव॑द्भ्य इति॑ म॒घव॑त् – भ्यः	तनु॒ष्व मी॒ढ्वः
मी॒ढ्व स्तो॒काय॑	तो॒काय॑ तनयाय
तनयाय॑ मृ॒डय॑	मृ॒डये॑ति मृ॒डय॑

## शिव स्तुति

मी॒दुष्ट॑म॒ शिव॑तम	मी॒दुष्ट॑मेति॒ मी॒दुः - त॒म
शिव॑तम॒ शिवः॑	शिव॑तमेति॒ शिव - त॒म
शिवो॑ नः	नस्सु॑मनाः >
सु॒मना॑ भव	सु॒मना॑ इति॒ सु - म॒नाः >
भवे॑ति॒ भव	पर॑मे वृ॒क्षे
वृ॒क्ष आ॑युधं	आ॑युधं नि॒धाय
नि॒धाय॑ कृ॒त्तिं >	नि॒धाये॑ति॒ नि - धा॑य
कृ॒त्तिं व॑सानः	व॑सान॒ आ
आ च॑र	च॑र पि॒नाकं
पि॒नाकं॑ बिभ्रत्	बिभ्र॑दा
आ ग॑हि	ग॑हीति॒ गहि
वि॒किरि॑द॒ विलो॑हित	वि॒किरि॑देति॒ वि - कि॒रिद॑
विलो॑हित॒ नमः॑	विलो॑हि॒तेति॒ वि - लो॒हित॑
नम॑स्ते	ते अ॒स्तु
अ॒स्तु भ॑गवः	भ॑गव इति॒ भग - वः
यास्ते॑ >	ते स॒हस्रं॑ >
स॒हस्रं॑ हे॒तयः॑	हे॒तयो॑ ऽन्यं

## शिव स्तुति

अ॒न्यम॒स्मत्	अ॒स्मन्नि
नि॒ वप॑न्तु	व॒पन्तु॒ ताः
ता॒ इति॑ ताः	स॒हस्रा॑णि स॒हस्र॒धा
स॒हस्र॒धा बा॒हुवोः॑	स॒हस्र॒धेति॑ स॒हस्र॒ - धा
बा॒हुवो॑स्तव	तव॑ हे॒तयः॑
हे॒तय॑ इति॑ हे॒तयः॑	ता॒सामी॑शानः
ई॒शानो॑ भगवः	भगवः॑ प॒राची॑ना >
भग॑व इति॑ भग॒ - वः	प॒राची॑ना मु॒खा >
मु॒खा कृ॑धि	कृ॒धीति॑ कृ॒धि

### 16.11 श्री रुद्रक्रमः – एकादशो ऽनुवाकः

स॒हस्रा॑णि स॒हस्र॒शः	स॒हस्र॒शो ये
स॒हस्र॒श इति॑ स॒हस्र॒ - शः	ये रु॒द्राः
रु॒द्रा अधि॑	अधि॑ भू॒म्यां >
भू॒म्यामि॑ति भू॒म्यां >	तेषां॑ स॒हस्र॒योजने॑
स॒हस्र॒योजने॑ऽव	स॒हस्र॒योजन॑ इति॑ स॒हस्र॒ - योज॑ने
अ॒व ध॑न्वानि	ध॒न्वानि॑ तन्मसि
तन्म॑सीति॑ तन्मसि	अ॒स्मिन् मह॑ति
मह॑त्यर्ण॒वे	अ॒र्णवे॑ऽन्तरि॑क्षे

## शिव स्तुति

अ॒न्तरिक्षे॑ भ॒वाः	भ॒वा अ॒धि
अ॒धीत्य॑धि	नी॒लग्री॑वाः शि॒तिका॑ण्ठाः >
नी॒लग्री॑वा इति॑ नी॒ल - ग्री॑वाः >	शि॒तिका॑ण्ठाः श॒र्वाः
शि॒तिका॑ण्ठा इति॑ शि॒ति - क॑ण्ठाः >	श॒र्वा अ॒धः
अ॒धः क्ष॑माच॒राः	क्ष॑माच॒रा इति॑ क्ष॑माच॒राः
नी॒लग्री॑वाः शि॒तिका॑ण्ठाः >	नी॒लग्री॑वा इति॑ नी॒ल - ग्री॑वाः >
शि॒तिका॑ण्ठा दि॒वं >	शि॒तिका॑ण्ठा इति॑ शि॒ति - क॑ण्ठाः >
दि॒वꣳ रु॒द्राः	रु॒द्रा उ॒पश्रि॑ताः
उ॒पश्रि॑ता इत्यु॒प - श्रि॑ताः >	ये वृ॒क्षेषु॑
वृ॒क्षेषु॑ स॒स्मिञ्ज॑राः	स॒स्मिञ्ज॑रा नी॒लग्री॑वाः
नी॒लग्री॑वा वि॒लोहि॑ताः	नी॒लग्री॑वा इति॑ नी॒ल - ग्री॑वाः >
वि॒लोहि॑ता इति॑ वि - लो॒हिताः॑ >	ये भू॒तानां॑ >
भू॒ताना॑मधि॒पत॑यः	अधि॒पत॑यो वि॒शिखा॑सः
अधि॒पत॑य इत्य॒धि - प॑तयः	वि॒शिखा॑सः क॒पर्दि॑नः
वि॒शिखा॑स इति॑ वि - शि॒खासः॑	क॒पर्दि॑न इति॑ क॒पर्दि॑नः
ये अ॒न्नेषु॑	अ॒न्नेषु॑ वि॒विद्ध्य॑न्ति
वि॒विद्ध्य॑न्ति पा॒त्रेषु॑	वि॒विद्ध्य॑न्तीति॑ वि - वि॒द्ध्य॑न्ति

## शिव स्तुति

पात्रेषु॑ पि॒बतः॑	पि॒बतो॑ ज॒नान्
ज॒नानि॑ति॒ ज॒नान्	ये प॒थां
प॒थां प॒थिर॑क्षयः	प॒थिर॑क्षय ऐ॒लबृ॑दाः
प॒थिर॑क्षय इति॒ प॒थि - र॑क्षयः	ऐ॒लबृ॑दा य॒व्युधः॑
य॒व्युध॑ इति॒ य॒व्युधः॑	ये ती॒र्थानि॑
ती॒र्थानि॑ प्र॒चर॑न्ति	प्र॒चर॑न्ति सृ॒काव॑न्तः
प्र॒चर॑न्तीति॒ प्र - च॑रन्ति	सृ॒काव॑न्तो नि॒षङ्गि॑णः
सृ॒काव॑न्त इति॒ सृ॒का - व॑न्तः	नि॒षङ्गि॑ण इति॒ नि - स॑ङ्गिनः
य ए॒ताव॑न्तः	ए॒ताव॑न्तश्च
च भू॒याꣳसः॑	भू॒याꣳसश्च॑
च दि॒शः	दि॒शो रु॒द्राः
रु॒द्रा वि॒तस्थि॑रे	वि॒तस्थि॑र इति॒ वि - त॑स्थिरे
तेषाꣳ सह॑स्रयो॒जने	सह॑स्रयो॒जनेꣳव
सह॑स्रयो॒जन इति॒ सह॑स्र - यो॒जने	अ॒व ध॑न्वानि
ध॑न्वानि त॒न्मसि॑	त॒न्मसी॑ति॒ त॒न्मसि॑
नमो॑ रु॒द्रेभ्यः॑	रु॒द्रेभ्यो॑ ये
ये पृ॒थिव्यां॑	पृ॒थिव्यां॑ यै

## शिव स्तुति

ये॑ऽन्तरिक्षे॑	अ॒न्तरिक्षे॑ ये
ये दि॒वि	दि॒वि येषां॑ >
येषाम॑न्नं >	अ॒न्नं वा॑तः
वा॒तो व॒र्षं	व॒र्षमि॑षवः
इ॒षव॒स्तेभ्यः॑	तेभ्यो॑ द॒श
द॒श प्रा॒चीः >	प्रा॒चीर्द॒श
द॒श दक्षि॑णा	दक्षि॑णा द॒श
द॒श प्र॒तीचीः॑ >	प्र॒तीची॑र्द॒श
द॒शोदी॑चीः	उ॒दीची॑र्द॒श
द॒शोर्ध्वाः॑	ऊ॒र्ध्वास्ते॑भ्यः
तेभ्यो॑ नमः॑	नम॑स्ते
ते नः॑	नो॒ मृ॒डय॑न्तु
मृ॒डय॑न्तु ते	ते यं
यं द्वि॒ष्मः॑	द्वि॒ष्मो यः॑
यश्च॑	च नः॑
नो॒ द्वेष्टि॑	द्वेष्टि॑ तं
तं वा॑ः	वो॒ जंभे॑



## शिव स्तुति

ज॒म्भे द॒धामि	द॒धामी॑ति द॒धामि
---------------	------------------

### 16.12 त्र्यंबकं यजामहे

त्र्य॑ंबकं य॒जामहे	त्र्य॑ंबक॒मिति॑ त्रि - अ॒ंबकं >
य॒जामहे सु॒गन्धिं	सु॒गन्धिं पु॒ष्टिव॒र्द्धनं॑
सु॒गन्धि॑मिति सु - ग॒न्धिं	पु॒ष्टिव॒र्द्धन॑मिति पु॒ष्टि - व॒र्द्धनं॑
उ॒र्वारु॑कमिव	इ॒व ब॒न्धना॑त्
ब॒न्धना॑न् मृ॒त्योः	मृ॒त्योर्मु॑क्षीय
मु॒क्षीय मा	माऽमृ॑तात् >
अ॒मृता॑तित्यमृ॒तात् >	यो रु॒द्रः
रु॒द्रो अ॒ग्नौ	अ॒ग्नौ यः
यो अ॒प्सु	अ॒प्सु यः
अ॒प्स्वि॒त्यप् - सु	य ओष॑धीषु
ओष॑धीषु यः	यो रु॒द्रः
रु॒द्रो वि॒श्वा >	वि॒श्वा भु॒वना
भु॒वना ऽऽवि॑वेश	आ॒वि॒वेश॑ तस्मै >
आ॒वि॒वेशे॑त्या - वि॒वेश	तस्मै रु॒द्राय॑
रु॒द्राय॑ नमः	नमो॑ अस्तु
अ॒स्त्वि॒त्यस्तु	

## **Section 5 – Chamaka Kramam**

## 17 श्री चमक क्रमः

### 17.1 श्री चमक क्रमः – प्रथमो ऽनुवाकः

अ॒ग्ना॒वि॒ष्णू॒ स॒जोष॑सा	अ॒ग्ना॒वि॒ष्णू॒ इत्य॑ग्ना॒ – वि॒ष्णू॒ >
स॒जोष॑से॒माः	स॒जोष॑से॒ति स – जोष॑सा
इ॒मा व॑र्द्धन्तु	व॑र्द्धन्तु वां >
वा॒ङ्गिरः॑	गिर॑ इति गिरः॑
द्यु॒म्नैर्वा॑जेभिः	वा॒जेभि॑रा
आ ग॑तं	ग॒तमि॑ति ग॒तं
वा॒जश्च॑	च मे॑ >
मे प्र॑सवः	प्र॑सवश्च
प्र॑सव इति प्र – स॒वः	च मे॑ >
मे प्र॑यतिः	प्र॑यतिश्च
प्र॑यतिरिति प्र – य॒तिः	च मे॑ >
मे प्र॑सितिः	प्र॑सितिश्च
प्र॑सितिरिति प्र – सि॒तिः	च मे॑ >
मे धी॑तिः	धी॑तिश्च
च मे॑ >	मे क्र॑तुः

## शिव स्तुति

क्र॒तुश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ स्वरः॑	स्वरश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ श्लोकः॑
श्लोकश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ श्रावः॑	श्रावश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ श्रुतिः॑
श्रुतिश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ ज्योतिः॑	ज्योतिश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ सुवः॑
सुवश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ प्राणः॑	प्राणश्च॑
प्राण॑ इति प्र - अनः	च॒ मे॒ >
मे॒ऽपानः॑	अ॒पानश्च॑
अ॒पान॑ इत्यप - अनः	च॒ मे॒ >
मे॒ व्यानः॑	व्या॒नश्च॑
व्या॒न॑ इति वि - अनः	च॒ मे॒ >
मे॒ऽसुः॑	अ॒सुश्च॑

## शिव स्तुति

च॒ मे॒ >	मे॒ चित्तं॑
चित्तं॑ च॒	च॒ मे॒ >
म॒ आधी॑तं	आधी॑तं च॒
आधी॑तमित्या - धी॒तं >	च॒ मे॒ >
मे॒ वाक्	वाक्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ मनः॑
मनश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ चक्षुः॑	चक्षुश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ श्रोत्रं॑ >
श्रोत्रं॑ च॒	च॒ मे॒ >
मे॒ दक्षः॑	दक्षश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ बलं॑ >
बलं॑ च॒	च॒ मे॒ >
म॒ ओजः॑	ओजश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ सहः॑
सहश्च॑	च॒ मे॒ >
म॒ आयुः॑	आयुश्च॑

## शिव स्तुति

च॒ मे॒ >	मे॒ जरा॑
जरा॑ च॒	च॒ मे॒ >
म॒ आ॒त्मा॑	आ॒त्मा॑ च॒
च॒ मे॒ >	मे॒ त॒नूः॑
त॒नूश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ श॒र्म॑	श॒र्म॑ च॒
च॒ मे॒ >	मे॒ वर्म॑
व॒र्म॑ च॒	च॒ मे॒ >
मे॒ऽङ्गानि॑	अ॒ङ्गानि॑ च॒
च॒ मे॒ >	मे॒ऽस्थानि॑
अ॒स्थानि॑ च॒	च॒ मे॒ >
मे॒ प॒रू॒षि॑	प॒रू॒षि॑ च॒
च॒ मे॒ >	मे॒ शरी॑राणि
शरी॑राणि च॒	च॒ मे॒ >
म॒ इति॑ मे॒	

17.2 श्री चमक क्रमः – द्वितीयो ऽनुवाकः

ज्यैष्ठ्यं च	च मे >
म आधिपत्यं	आधिपत्यं च
आधिपत्यमित्याधि - पत्यं >	च मे >
मे मन्युः	मन्युश्च
च मे >	मे भामः
भामश्च	च मे >
मेऽमः	अमश्च
च मे >	मेऽभः
अंभश्च	च मे >
मे जेमा	जेमा च
च मे >	मे महिमा
महिमा च	च मे >
मे वरिमा	वरिमा च
च मे >	मे प्रथिमा
प्रथिमा च	च मे >
मे वर्ष्मा	वर्ष्मा च
च मे >	मे द्राघुया

## शिव स्तुति

द्राघु॒या च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ वृ॒द्धं	वृ॒द्धं च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ वृ॒द्धिः॑
वृ॒द्धिश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ स॒त्यं	स॒त्यं च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ श्र॒द्धा
श्र॒द्धा च॑	श्र॒द्धेति॑ श्रत् - धा
च॒ मे॒ >	मे॒ जग॑त्
जग॑च्च	च॒ मे॒ >
मे॒ ध॒नं >	ध॒नं च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ व॒शः॑
व॒शश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ त्वि॒षिः॑	त्वि॒षिश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ क्री॒डा
क्री॒डा च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ मो॒दः॑	मो॒दश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ जा॒तं



## शिव स्तुति

जा॒तं च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ ज॒नि॒ष्य॒मा॒णं॑	ज॒नि॒ष्य॒मा॒णं॑ च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ सू॒क्तं॑
सू॒क्तं च॑	सू॒क्तमि॒ति सु॑ - उ॒क्तं॑
च॒ मे॒ >	मे॒ सु॒कृ॒तं॑
सु॒कृ॒तं च॑	सु॒कृ॒तमि॒ति सु॑ - कृ॒तं॑
च॒ मे॒ >	मे॒ वि॒त्तं॑
वि॒त्तं च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ वे॒द्यं॑ >	वे॒द्यं च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ भू॒तं॑
भू॒तं च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ भ॒वि॒ष्य॒त्	भ॒वि॒ष्य॒च्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ सु॒गं॑
सु॒गं च॑	सु॒गमि॒ति सु॑ - गं॑
च॒ मे॒ >	मे॒ सु॒प॒थं॑ >
सु॒प॒थं च॑	सु॒प॒थमि॒ति सु॑ - प॒थं॑ >
च॒ मे॒ >	म॒ ऋ॒द्धं॑

## शिव स्तुति

ऋ॒द्धं च॑	च॒ मे॒ >
म॒ ऋ॒द्धिः॑	ऋ॒द्धिश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ क्लृ॒प्तं॑
क्लृ॒प्तं च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ क्लृ॒प्तिः॑	क्लृ॒प्तिश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ मतिः॑
मति॑श्च	च॒ मे॒ >
मे॒ सु॒मतिः॑	सु॒मतिश्च॑
सु॒मतिरिति॑ सु - मतिः॑	च॒ मे॒ >
म॒ इति॑ मे	

### 17.3 श्री चमक क्रम :- तृतीयो ऽनुवाकः

शं च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ मयः॑	मयश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ प्रि॒यं॑
प्रि॒यं च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ ऽनु॒कामः॑	अ॒नु॒कामश्च॑
अ॒नु॒काम॑ इत्यनु - कामः॑	च॒ मे॒ >

## शिव स्तुति

मे कामः	कामश्च
च मे >	मे सौमनसः
सौमनसश्च	च मे >
मे भद्रं	भद्रं च
च मे >	मे श्रेयः
श्रेयश्च	च मे >
मे वस्यः	वस्यश्च
च मे >	मे यशः
यशश्च	च मे >
मे भगः	भगश्च
च मे >	मे द्रविणं
द्रविणं च	च मे >
मे यन्ता	यन्ता च
च मे >	मे धर्ता
धर्ता च	च मे >
मे क्षेमः	क्षेमश्च
च मे >	मे धृतिः

## शिव स्तुति

धृ॒तिश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ वि॒श्वं॑ >	वि॒श्वं॑ च॒
च॒ मे॒ >	मे॒ महः॑
मह॑श्च	च॒ मे॒ >
मे॒ स॒म्वि॑त्	स॒म्वि॑च्च॒
स॒म्वि॑दिति सं - वि॒त्	च॒ मे॒ >
मे॒ ज्ञा॒त्रं॑ >	ज्ञा॒त्रं॑ च॒
च॒ मे॒ >	मे॒ सूः॑
सू॒श्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ प्र॒सूः॑	प्र॒सू॒श्च॑
प्र॒सू॒रिति॑ प्र - सूः	च॒ मे॒ >
मे॒ सी॒रं॑ >	सी॒रं॑ च॒
च॒ मे॒ >	मे॒ लयः॑
लय॑श्च	च॒ मे॒ >
म॒ ऋ॒तं॑	ऋ॒तं॑ च॒
च॒ मे॒ >	मे॒ऽमृ॒तं॑ >
अ॒मृ॒तं॑ च॒	च॒ मे॒ >

## शिव स्तुति

मे॒ऽय॒क्ष्मं	अ॒य॒क्ष्मं च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ऽना॒मय॑त्
अ॒ना॒मय॑च्च	च॒ मे॒ >
मे॒ जी॒वातुः॑	जी॒वातु॑श्च
च॒ मे॒ >	मे॒ दी॒र्घा॒यु॒त्वं
दी॒र्घा॒यु॒त्वं च॑	दी॒र्घा॒यु॒त्वमि॑ति दी॒र्घायु॑ - त्वं
च॒ मे॒ >	मे॒ऽन॒मि॒त्रं
अ॒न॒मि॒त्रं च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ऽभ॒यं	अ॒भ॒यं च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ सु॒गं
सु॒गं च॑	सु॒गमि॑ति सु - गं
च॒ मे॒ >	मे॒ श॒यनं॑
श॒यनं च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ सू॒षा	सू॒षा च॑
सू॒षेति॑ सु - उ॒षा	च॒ मे॒ >
मे॒ सु॒दिनं॑ >	सु॒दिनं च॑
सु॒दिन॑मि॒ति सु॒ - दि॒नं >	च॒ मे॒ >

## शिव स्तुति

म॒ इति॑ मे॒	
-------------	--

### 17.4 श्री चमक क्रमः- चतुर्थोऽनुवाकः

ऊ॒र्क्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ सू॒नृ॒ता॑ >	सू॒नृ॒ता॑ च॒
च॒ मे॒ >	मे॒ प॒यः॑
प॒यश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ र॒सः॑	र॒सश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ घृ॒तं॑
घृ॒तं च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ म॒धु॑	म॒धु च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ स॒ग्धिः॑
स॒ग्धिश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ स॒पी॒तिः॑	स॒पी॒तिश्च॑
स॒पी॒ति॒रिति॑ स - पी॒तिः॑	च॒ मे॒ >
मे॒ कृ॒षिः॑	कृ॒षिश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ वृ॒ष्टिः॑
वृ॒ष्टिश्च॑	च॒ मे॒ >

## शिव स्तुति

मे॒ जै॒त्रं॑ >	जै॒त्रं॑ च
च॒ मे॒ >	म॒ औ॒द्भि॒द्यं॑
औ॒द्भि॒द्यं॑ च	औ॒द्भि॒द्य॒मित्यौ॑त् - भि॒द्यं॑ >
च॒ मे॒ >	मे॒ रयिः॑
रयि॑श्च	च॒ मे॒ >
मे॒ रायः॑	राय॑श्च
च॒ मे॒ >	मे॒ पु॒ष्टं॑
पु॒ष्टं॑ च	च॒ मे॒ >
मे॒ पु॒ष्टिः॑	पु॒ष्टि॑श्च
च॒ मे॒ >	मे॒ वि॒भु॑
वि॒भु॑ च	वि॒भ्वि॑ति वि - भु
च॒ मे॒ >	मे॒ प्र॒भु॑
प्र॒भु॑ च	प्र॒भ्वि॑ति प्र - भु
च॒ मे॒ >	मे॒ ब॒हु॑
ब॒हु॑ च	च॒ मे॒ >
मे॒ भूयः॑	भूय॑श्च
च॒ मे॒ >	मे॒ पू॒र्णं॑

## शिव स्तुति

पूर्णं च	च मे >
मे पूर्णतरं	पूर्णतरं च
पूर्णतरमिति पूर्ण - तरं >	च मे >
मेऽक्षितिः	अक्षितिश्च
च मे >	मे कूयवाः
कूयवाश्च	च मे >
मेऽन्नं >	अन्नं च
च मे >	मेऽक्षुत्
अक्षुच्च	च मे >
मे व्रीहयः	व्रीहयश्च
च मे >	मे यवाः >
यवाश्च	च मे >
मे माषाः >	माषाश्च
च मे >	मे तिलाः >
तिलाश्च	च मे >
मे मुद्गाः	मुद्गाश्च
च मे >	मे खल्वाः >



## शिव स्तुति

ख॒ल्वाश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ गो॒धू॒माः॑ >	गो॒धू॒माश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ म॒सुराः॑ >
म॒सुराश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ प्रि॒यङ्ग॒वः॑	प्रि॒यङ्ग॒वश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ऽण॒वः॑
अ॒ण॒वश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ श्या॒मा॒काः॑ >	श्या॒मा॒काश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ नी॒वा॒राः॑ >
नी॒वा॒राश्च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इति॑ मे॒	

### 17.5 श्री चमक क्रमः– पञ्चमो ऽनुवाकः

अ॒श्मा च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ मृ॒त्ति॒का॑	मृ॒त्ति॒का च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ गि॒र्यः॑
गि॒र्यश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ प॒र्व॒ताः॑	प॒र्व॒ताश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ सि॒क्ताः॑

## शिव स्तुति

सि॒क॒ताश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ वन॒स्पत॑यः	वन॒स्पत॑यश्च
च॒ मे॒ >	मे॒ हि॒र॒ण्यं॑
हि॒र॒ण्यं॑ च	च॒ मे॒ >
मे॒ऽयः॑	अ॒यश्च॑
च॒ मे॒	मे॒ सी॒सं॑ >
सी॒सं॑ च	च॒ मे॒ >
मे॒ त्र॒पु॑	त्र॒पुश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ श्या॒मं॑
श्या॒मं॑ च	च॒ मे॒ >
मे॒ लो॒हं॑	लो॒हं॑ च
च॒ मे॒ >	मे॒ऽग्निः॑
अ॒ग्निश्च॑	च॒ मे॒ >
म॒ आ॒पः॑	आ॒पश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ वी॒रु॒धः॑
वी॒रु॒धश्च॑	च॒ मे॒ >
म॒ ओ॒ष॒धयः॑	ओ॒ष॒धयश्च॑

## शिव स्तुति

च मे >	मे कृष्टपच्यं
कृष्टपच्यं च	कृष्टपच्यमिति कृष्ट - पच्यं
च मे >	मेऽकृष्टपच्यं
अकृष्टपच्यं च	अकृष्टपच्यमित्यकृष्ट - पच्यं
च मे >	मे ग्राम्याः
ग्राम्याश्च	च मे >
मे पशवः	पशव आरण्याः
आरण्याश्च	च यज्ञेन
यज्ञेन कल्पन्तां	कल्पन्तां वित्तं
वित्तं च	च मे >
मे वित्तिः	वित्तिश्च
च मे >	मे भूतं
भूतं च	च मे >
मे भूतिः	भूतिश्च
च मे >	मे वसु
वसु च	च मे >
मे वसतिः	वसतिश्च

## शिव स्तुति

च॒ मे॒ >	मे॒ कर्म॑
कर्म॑ च	च॒ मे॒ >
मे॒ शक्तिः॑	शक्तिश्च॑
च॒ मे॒ >	मेऽर्थः॑
अर्थश्च॑	च॒ मे॒ >
म॒ एमः॑	एमश्च॑
च॒ मे॒ >	म॒ इतिः॑
इतिश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ गतिः॑	गतिश्च॑
च॒ मे॒ >	म॒ इति॑ मे

### 17.6 श्री चमकः क्रमः – षष्ठोऽनुवाकः

अ॒ग्निश्च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ सोमः॑
सोमश्च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ सविता॑

## शिव स्तुति

स॒वि॒ता च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ सर॑स्वती
सर॑स्वती च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ पू॒षा
पू॒षा च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ बृ॒ह॒स्प॒तिः॑
बृ॒ह॒स्प॒तिश्च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ मि॒त्रः॑
मि॒त्रश्च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ वरु॑णः
वरु॑णश्च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑

## शिव स्तुति

च॒ मे॒ >	मे॒ त्व॒ष्टा॑ >
त्व॒ष्टा च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ धा॒ता
धा॒ता च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ वि॒ष्णुः॑
वि॒ष्णुश्च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ऽश्वि॒नौ॑ >
अ॒श्वि॒नौ च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ म॒रुतः॑
म॒रुतश्च॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ वि॒श्वे॑ >
वि॒श्वे च॑	च॒ मे॒ >

## शिव स्तुति

मे दे॒वाः	दे॒वा इन्द्रः॑
इन्द्रश्च॑	च मे॒ >
मे पृ॒थि॒वी	पृ॒थि॒वी च॑
च मे॒ >	म इन्द्रः॑
इन्द्रश्च॑	च मे॒ >
मेऽन्तरि॑क्षं	अन्तरि॑क्षं च
च मे॒ >	म इन्द्रः॑
इन्द्रश्च॑	च मे॒ >
मे द्यौः॑	द्यौश्च॑
च मे॒ >	म इन्द्रः॑
इन्द्रश्च॑	च मे॒ >
मे दि॒शः॑	दि॒शश्च॑
च मे॒ >	म इन्द्रः॑
इन्द्रश्च॑	च मे॒ >
मे मूर्ध्ना॑	मूर्ध्ना॑ च
च मे॒ >	म इन्द्रः॑
इन्द्रश्च॑	च मे॒ >

## शिव स्तुति

मे॒ प्र॒जा॒प॒तिः॑	प्र॒जा॒प॒तिश्च॑
प्र॒जा॒प॒ति॒रिति॑ प्र॒जा – प॒तिः॑	च॒ मे॒ >
म॒ इन्द्रः॑	इन्द्रश्च॑
च॒ मे॒ >	म॒ इति॑ मे

### 17.7 श्री चमक क्रमः – सप्तमो ऽनुवाकः

अ॒ञ्शुश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ रश्मिः॑	रश्मिश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ऽदा॒भ्यः॑
अ॒दा॒भ्यश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ऽधि॒प॒तिः॑	अ॒धि॒प॒तिश्च॑
अ॒धि॒प॒ति॒रित्यधि॑ – प॒तिः॑	च॒ मे॒ >
म॒ उपा॒ञ्शुः॑	उपा॒ञ्शुश्च॑
उपा॒ञ्शु॒रित्युप॑ – अ॒ञ्शुः॑	च॒ मे॒ >
मे॒ऽन्त॒र्या॒मः॑	अ॒न्त॒र्या॒मश्च॑
अ॒न्त॒र्या॒म॒ इत्यन्तः॑ – या॒मः॑	च॒ मे॒ >
म॒ ऐन्द्र॒वाय॒वः॑	ऐन्द्र॒वाय॒वश्च॑
ऐन्द्र॒वाय॒व॒ इत्यैन्द्र॑ – वाय॒वः॑	च॒ मे॒ >



## शिव स्तुति

मे मैत्रावरुणः	मैत्रावरुणश्च
मैत्रावरुण इति मैत्रा – वरुणः	च मे >
म आश्विनः	आश्विनश्च
च मे >	मे प्रतिप्रस्थानः
प्रतिप्रस्थानश्च	प्रतिप्रस्थान इति प्रति – प्रस्थानः
च मे	मे शुक्रः
शुक्रश्च	च मे >
मे मन्थी	मन्थी च
च मे >	म आग्रयणः
आग्रयणश्च	च मे >
मे वैश्वदेवः	वैश्वदेवश्च
वैश्वदेव इति वैश्व – देवः	च मे >
मे ध्रुवः	ध्रुवश्च
च मे >	मे वैश्वानरः
वैश्वानरश्च	च मे >
म ऋतुग्रहाः	ऋतुग्रहाश्च
ऋतुग्रहा इत्यृतु – ग्रहाः	च मे >

## शिव स्तुति

मेऽति॑ग्राह्याः >	अति॑ग्राह्याश्च
अति॑ग्राह्या इत्यति - ग्राह्याः >	च मे >
म ऐन्द्रा॑ग्नः	ऐन्द्रा॑ग्नश्च
ऐन्द्रा॑ग्न इत्यैन्द्र - अ॒ग्नः	च मे >
मे वैश्व॑देवः	वैश्व॑देवश्च
वैश्व॑देव इति वैश्व - देवः	च मे >
मे मरु॑त्वतीयाः >	मरु॑त्वतीयाश्च
च मे >	मे माहेन्द्रः
माहेन्द्र॑श्च	माहेन्द्र॑ इति माहा - इन्द्रः
च मे >	म आदित्यः
आदित्य॑श्च	च मे >
मे सावि॑त्रः	सावि॑त्रश्च
च मे >	मे सार॑स्वतः
सार॑स्वतश्च	च मे >
मे पौष्णः	पौष्ण॑श्च
च मे >	मे पाली॑वतः
पाली॑वतश्च	पाली॑वत इति पाली - वतः

## शिव स्तुति

च मे >	मे हारियोजनः
हारियोजनश्च	हारियोजन इति हारि – योजनः
च मे >	म इति मे

### 17.8 श्री चमक क्रमः – अष्टमोऽनुवाकः

इद्ध्मश्च	च मे >
मे बर्हिः	बर्हिश्च
च मे >	मे वेदिः
वेदिश्च	च मे >
मे धिष्ण्याः	धिष्ण्याश्च
च मे >	मे स्रुचः
स्रुचश्च	च मे >
मे चमसाः	चमसाश्च
च मे >	मे ग्रावाणः
ग्रावाणश्च	च मे >
मे स्वरवः	स्वरवश्च
च मे >	म उपरवाः
उपरवाश्च	उपरवा इत्युप – रवाः
च मे >	मेऽधिषवणे

## शिव स्तुति

अ॒धि॒ष॒व॒णे च	अ॒धि॒ष॒व॒णे इ॒त्य॒धि - स॒व॒ने
च मे >	मे द्रो॒ण॒क॒ल॒शः
द्रो॒ण॒क॒ल॒शश्च	द्रो॒ण॒क॒ल॒श इति द्रो॒ण - क॒ल॒शः
च मे >	मे वा॒य॒व्या॒नि
वा॒य॒व्या॒नि च	च मे >
मे पू॒त॒भृ॒त्	पू॒त॒भृ॒च्च
पू॒त॒भृ॒दिति पू॒त - भृ॒त्	च मे >
म आ॒ध॒व॒नी॒यः	आ॒ध॒व॒नी॒यश्च
आ॒ध॒व॒नी॒य इ॒त्या - ध॒व॒नी॒यः	च मे >
म आ॒ग्नी॒द्ध्रं >	आ॒ग्नी॒द्ध्रं च
आ॒ग्नी॒द्ध्र॒मि॒त्या॒ग्नि - इ॒द्ध्रं >	च मे >
मे ह॒वि॒र्ध्ना॒नं >	ह॒वि॒र्ध्ना॒नं च
ह॒वि॒र्ध्ना॒नमि॒ति ह॒विः - धा॒नं >	च मे >
मे गृ॒हाः	गृ॒हाश्च
च मे >	मे स॒दः
स॒दश्च	च मे >
मे पु॒रो॒डा॒शाः >	पु॒रो॒डा॒शाश्च

## शिव स्तुति

च मे > _ _	मे पचताः _ _ _
पचताश्च _ _	च मे > _ _
मेऽवभृथः _ _ _	अवभृथश्च _ _ _
अवभृथ इत्यव - भृथः _ _ _	च मे > _ _
मे स्वगाकारः _ _ _	स्वगाकारश्च _ _ _
स्वगाकार इति स्वगा - कारः _ _ _	च मे > _ _
म इति मे _	

### 17.9 श्री चमक क्रमः – नवमो ऽनुवाकः

अग्निश्च _	च मे > _ _
मे घर्मः _ _	घर्मश्च _
च मे > _ _	मेऽर्कः _
अर्कश्च _	च मे > _ _
मे सूर्यः _	सूर्यश्च _
च मे > _ _	मे प्राणः _ _
प्राणश्च _	प्राण इति प्र - अनः _ _
च मे > _ _	मेऽश्वमेधः _ _ _
अश्वमेधश्च _ _ _	अश्वमेध इत्यश्व - मेधः _ _ _
च मे > _ _	मे पृथिवी _ _ _

## शिव स्तुति

पृ॒थि॒वी च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ऽदि॒तिः	अ॒दि॒तिश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ दि॒तिः
दि॒तिश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ द्यौः	द्यौश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ श॒क्वरीः॑
श॒क्वरी॑र॒ङ्गुल॑यः	अ॒ङ्गुल॑यो दि॒शः
दि॒शश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ य॒ज्ञेन॑	य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पन्तां॑
क॒ल्पन्ता॑मृक्	ऋक्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ साम॑
साम॑ च	च॒ मे॒ >
मे॒ स्तोमः॑	स्तोमश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ य॒जुः
य॒जुश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ दी॒क्षा	दी॒क्षा च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ तपः॑

## शिव स्तुति

तपश्च॑	च॒ मे॒ >
म॒ ऋ॒तुः	ऋ॒तुश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ व्र॒तं
व्र॒तं च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ऽहो॒रा॒त्रयोः॑ >	अ॒हो॒रा॒त्रयो॑ वृ॒ष्ट्या
अ॒हो॒रा॒त्रयो॑रि॒त्यहः॑ – रा॒त्रयोः॑ >	वृ॒ष्ट्या बृ॒ह॒द्र॒थ॒न्त॒रे
बृ॒ह॒द्र॒थ॒न्त॒रे च॑	बृ॒ह॒द्र॒थ॒न्त॒रे इति॑ बृ॒ह॒त् – र॒थ॒न्त॒रे
च॒ मे॒ >	मे॒ य॒ज्ञेन॑
य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पेतां॑	क॒ल्पेता॑मि॒ति क॒ल्पेतां॑

### 17.10 श्री चमक क्रमः – दशमो ऽनुवाकः

ग॒र्भाश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ व॒त्स॒ः	व॒त्स॒श्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ त्र्य॒विः
त्र्य॒विश्च॑	त्र्य॒वि॒रि॒ति त्रि॑ – अ॒विः
च॒ मे॒ >	मे॒ त्र्य॒वी
त्र्य॒वी च॑	त्र्य॒वी॒ति त्रि॑ – अ॒वी
च॒ मे॒ >	मे॒ दि॒त्य॒वाट्
दि॒त्य॒वाट् च॑	दि॒त्य॒वाडि॑ति॒ दि॒त्य – वाट्

## शिव स्तुति

च॒ मे॒ >	मे॒ दि॒त्यौ॒ही
दि॒त्यौ॒ही च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ पञ्चा॒विः	पञ्चा॒विश्च॑
पञ्चा॒वि॒रिति॑ पञ्च॑ – अ॒विः	च॒ मे॒ >
मे॒ पञ्चा॒वी	पञ्चा॒वी च॑
पञ्चा॒वी॒ति पञ्च॑ – अ॒वी	च॒ मे॒ >
मे॒ त्रि॒व॒थ्सः	त्रि॒व॒थ्सश्च॑
त्रि॒व॒थ्स इति॑ त्रि॑ – व॒थ्सः	च॒ मे॒ >
मे॒ त्रि॒व॒थ्सा	त्रि॒व॒थ्सा च॑
त्रि॒व॒थ्सेति॑ त्रि॑ – व॒थ्सा	च॒ मे॒ >
मे॒ तुर्य॑वाट्	तुर्य॑वाट् च॑
तुर्य॑वाडि॒ति तुर्य॑ – वाट्	च॒ मे॒ >
मे॒ तुर्यौ॒ही	तुर्यौ॒ही च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ प॒ष्ठ॒वात्
प॒ष्ठ॒वाच्च॑	प॒ष्ठ॒वादि॑ति प॒ष्ठ – वात्
च॒ मे॒ >	मे॒ प॒ष्ठौ॒ही
प॒ष्ठौ॒ही च॑	च॒ मे॒ >



## शिव स्तुति

म॒ उ॒क्षा	उ॒क्षा च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ व॒शा
व॒शा च॑	च॒ मे॒ >
म॒ ऋ॒षभः॑	ऋ॒षभश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ वे॒हत्
वे॒हच्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ऽन॒ड्वान्	अ॒न॒ड्वान् च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ धे॒नुः
धे॒नुश्च॑	च॒ मे॒ >
म॒ आयुः॑	आयु॑र्य॒ज्ञेन॑
य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑	क॒ल्पतां॑ प्रा॒णः
प्रा॒णो य॒ज्ञेन॑	प्रा॒ण इति॑ प्र – अ॒नः
य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑	क॒ल्पता॑म॒पानः॑
अ॒पानो य॒ज्ञेन॑	अ॒पान॑ इत्य॒प – अ॒नः
य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑	क॒ल्पतां॑ व्वा॒नः
व्वा॒नो य॒ज्ञेन॑	व्वा॒न इति॑ वि – अ॒नः
य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पतां॑	क॒ल्पतां॑ चक्षुः॑

## शिव स्तुति

चक्षु॑ र॒ज्ञेन॑	य॒ज्ञेन॑ कल्पतां
कल्पता॒॑ श्रोत्रं॑ >	श्रोत्रं॑ य॒ज्ञेन॑
य॒ज्ञेन॑ कल्पतां	कल्पतां॑ मनः
मनो॑ य॒ज्ञेन॑	य॒ज्ञेन॑ कल्पतां
कल्पतां॑ वाक्	वाग्य॒ज्ञेन॑
य॒ज्ञेन॑ कल्पतां	कल्पता॑मात्मा
आत्मा॑ य॒ज्ञेन॑	य॒ज्ञेन॑ कल्पतां
कल्पतां॑ य॒ज्ञः	य॒ज्ञो य॒ज्ञेन॑
य॒ज्ञेन॑ कल्पतां	कल्पता॑मिति कल्पतां

### 17.11 श्री चमक क्रमः – एकादशो ऽनुवाकः

एका॑ च	च॒ मे॒ >
मे॒ तिस्रः॑	तिस्रश्च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ पञ्च॑
पञ्च॑ च	च॒ मे॒ >
मे॒ सप्त॑	सप्त॑ च
च॒ मे॒ >	मे॒ नव॑
नव॑ च	च॒ मे॒ >

## शिव स्तुति

म॒ ए॒का॒द॒श॒	ए॒का॒द॒श॒ च॒
च॒ मे॒ >	मे॒ त्रयो॑द॒श॒
त्रयो॑द॒श॒ च॒	त्रयो॑द॒शे॒ति॒ त्रयः॑ – द॒श॒
च॒ मे॒ >	मे॒ पञ्च॑द॒श॒
पञ्च॑द॒श॒ च॒	पञ्च॑द॒शे॒ति॒ पञ्च॑ – द॒श॒
च॒ मे॒ >	मे॒ सप्त॑द॒श॒
सप्त॑द॒श॒ च॒	सप्त॑द॒शे॒ति॒ सप्त॑ – द॒श॒
च॒ मे॒ >	मे॒ नव॑द॒श॒
नव॑द॒श॒ च॒	नव॑द॒शे॒ति॒ नव॑ – द॒श॒
च॒ मे॒ >	म॒ एक॑वि॒ंश॑तिः
एक॑वि॒ंश॑तिश्च॒	एक॑वि॒ंश॑तिरि॒त्येक॑ – वि॒ंश॑तिः
च॒ मे॒ >	मे॒ त्रयो॑वि॒ंश॑तिः
त्रयो॑वि॒ंश॑तिश्च॒	त्रयो॑वि॒ंश॑तिरि॒ति॒ त्रयः॑ – वि॒ंश॑तिः
च॒ मे॒ >	मे॒ पञ्च॑वि॒ंश॑तिः
पञ्च॑वि॒ंश॑तिश्च॒	पञ्च॑वि॒ंश॑तिरि॒ति॒ पञ्च॑-वि॒ंश॑तिः
च॒ मे॒ >	मे॒ सप्त॑वि॒ंश॑तिः
सप्त॑वि॒ंश॑तिश्च॒	सप्त॑वि॒ंश॑तिरि॒ति॒ सप्त॑-वि॒ंश॑तिः

## शिव स्तुति

च॒ मे॒ >	मे॒ नववि॒शतिः॑
नववि॒शतिश्च॑	नववि॒शतिरिति॑ नव॒ – वि॒शतिः॑
च॒ मे॒ >	म॒ एकत्रि॒शत्
एकत्रि॒शच्च॑	एकत्रि॒शदित्येक॑ – त्रि॒शत्
च॒ मे॒ >	मे॒ त्रयस्त्रि॒शत्
त्रयस्त्रि॒शच्च॑	त्रयस्त्रि॒शदिति॑ त्रयः॒ – त्रि॒शत्
च॒ मे॒ >	मे॒ चतस्रः॑
चतस्रश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ऽष्टौ	अ॒ष्टौ च॑
च॒ मे॒ >	मे॒ द्वादश॑
द्वादश॑ च॒	च॒ मे॒ >
मे॒ षोडश॑	षोडश॑ च॒
च॒ मे॒ >	मे॒ वि॒शतिः॑
वि॒शतिश्च॑	च॒ मे॒ >
मे॒ चतुर्वि॒शतिः॑	चतुर्वि॒शतिश्च॑
चतुर्वि॒शतिरिति॑ चतुः॒ – वि॒शतिः॑	च॒ मे॒ >
मे॒ऽष्टावि॒शतिः॑	अ॒ष्टावि॒शतिश्च॑

## शिव स्तुति

अ॒ष्टा॒वि॒ंश॒ति॒रि॒त्य॒ष्टा - वि॒ंश॒तिः	च॒ मे॒ >
मे॒ द्वा॒त्रि॒ंश॒त्	द्वा॒त्रि॒ंश॒च्च
च॒ मे॒ >	मे॒ ष॒ट्त्रि॒ंश॒त्
ष॒ट्त्रि॒ंश॒च्च	ष॒ट्त्रि॒ंश॒दि॒ति ष॒ट् - त्रि॒ंश॒त्
च॒ मे॒ >	मे॒ च॒त्वा॒रि॒ंश॒त्
च॒त्वा॒रि॒ंश॒च्च	च॒ मे॒ >
मे॒ च॒तु॒श्च॒त्वा॒रि॒ंश॒त्	च॒तु॒श्च॒त्वा॒रि॒ंश॒च्च
च॒तु॒श्च॒त्वा॒रि॒ंश॒दि॒ति च॒तुः - च॒त्वा॒रि॒ंश॒त्	च॒ मे॒ >
मे॒ऽष्टा॒च॒त्वा॒रि॒ंश॒त्	अ॒ष्टा॒च॒त्वा॒रि॒ंश॒च्च
अ॒ष्टा॒च॒त्वा॒रि॒ंश॒दि॒त्य॒ष्टा - च॒त्वा॒रि॒ंश॒त्	च॒ मे॒ >
मे॒ वा॒जः	वा॒जश्च॑
च॒ प्र॒स॒वः	प्र॒स॒वश्च॑
प्र॒स॒व इ॒ति प्र॒ - स॒वः	चा॒पि॒जः
अ॒पि॒जश्च॑	अ॒पि॒ज इ॒त्य॒पि - जः
च॒ क्र॒तुः	क्र॒तुश्च॑

## शिव स्तुति

च सुवः	सुवश्च
च मूर्द्धा	मूर्द्धा च
च व्यश्जयः	व्यश्जयश्च
व्यश्जय इति वि – अश्जयः	चान्त्यायनः
आन्त्यायनश्च	चान्त्यः
अन्त्यश्च	च भौवनः
भौवनश्च	च भुवनः
भुवनश्च	चाधिपतिः
अधिपतिश्च	अधिपतिरित्यधि – पतिः
चेति च	

17.12 इडा देवहूः

इडा देवहूः	देवहूर्मनुः
देवहूरिति देव - हूः	मनुर्यज्ञनीः
यज्ञनी बृहस्पतिः	यज्ञनीरिति यज्ञ - नीः
बृहस्पति रुक्थामदानि	उक्थामदानि श॒सिषत्
उक्थामदानीत्युक्थ - मदानि	श॒सिषद्विश्वे >
विश्वे देवाः	देवास्सूक्तवाचः
सूक्तवाचः पृथिवि	सूक्तवाच इति सूक्त - वाचः
पृथिवि मातः	मातर्मा
मा मा >	मा हि॒सीः >
हि॒सीर्मधु	मधु मनिष्ये
मनिष्ये मधु	मधु जनिष्ये
जनिष्ये मधु	मधु वक्ष्यामि
वक्ष्यामि मधु	मधु वदिष्यामि
वदिष्यामि मधुमतीं	मधुमतीं देवेभ्यः
मधुमतीमिति मधु - मतीं >	देवेभ्यो वाचं >
वाचमुद्यासं	उद्यास॒ शुश्रूषेण्यां >
शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यः	मनुष्येभ्यस्तं

## शिव स्तुति

तं मा॑ >	मा॒ दे॒वाः
दे॒वा अ॒वन्तु॑	अ॒वन्तु॑ शो॒भायै॑ >
शो॒भायै॑ पि॒तरः॑	पि॒तरोऽनु॑
अ॒नुम॑दन्तु	म॒दन्त्वि॑ति म॒दन्तु॑

=====



## **Section 6 – Rudra Chamaka Homam**

## 18 एकोनसप्तत्यधिक शतसंख्याक होमं

There are total 169 Svahaakaara Homas to be performed by Rutviks/ Achaaryaas. For 1 to 166 svaahaakaara Homa Ahutis the "yajamaana" has to say the same "prati svaahaakaara mantra as

"आदित्यात्मने रुद्राय इदं न मम" after each of these Homa Ahutis.

"Yajamaana prati svaahaa kaaram" is different for Homa Ahuti numbers 167,168 &169 and those are given after the corresponding Mantras.

1st ANUVAKA

1. नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः ।  
नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः स्वाहा ॥
2. यात इषुशिव तमा शिवं बभूव ते धनुः ।  
शिवा शरव्याया तव तया नो रुद्र मृढय स्वाहा ॥
3. या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी ।  
तया नस्तनुवा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा ॥
4. यामिषुं गिरिशन्त-हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।  
शिवां गिरित्र तां कुरु माहिंसीः पुरुषं जगत् स्वाहा ॥
5. शिवेन वचसात्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।  
यथा नस्सर्व-मिज्जगदयक्ष् सुमना असत् स्वाहा ॥

6. अ॒द्ध्य॒वो-च॒दधि॒वक्ता॒ प्रथ॒मो दै॒व्यो भि॒षक् ।  
अ॒ही॒श्च॒ सर्वा॑न् जं॒भय॑न् सर्वा॑श्च या॒तुधा॑न्यः स्वाहा ॥
7. अ॒सौ य॒स्त्रामो॑ अ॒रुण॑ उ॒त ब॒भ्रुस्सु॑मंगलः । ये चे॒मा॒ रु॒द्रा  
अ॒भितो॑ दि॒क्षु श्रि॒ता-स्स॒हस्र॑शो ऽवै॒षा॒ हे॒ड ई॒महे॒ स्वाहा ॥
8. अ॒सौ यो॑ ऽव॒सर्प॑ति नी॒लग्री॑वो वि॒लो॒हितः ।  
उ॒तैनं॑ गो॒पा अ॒दृश॑न्न॒दृश॑न् उ॒तहा॑र्यः ।  
उ॒तैनं॑ वि॒श्वा भू॒तानि॑ स दृ॒ष्टो मृ॒डया॑ति नः स्वाहा ॥
9. न॒मो अ॒स्तु नी॒लग्री॑वाय स॒हस्रा॑क्षाय मी॒ढुषे॑ ।  
अथो॑ ये अ॒स्य स॒त्वानो॑-ऽह॒न्ते॒भ्यो-ऽकरं॑ नमः स्वाहा ॥
10. प्र॒मुञ्च॑ ध॒न्वन॑स्त्व-मु॒भयो॑-रा॒र्णियो॒ज्या ।  
याश्च॑ ते ह॒स्त इ॒षवः॑ प॒रा ता॑ भ॒गवो॑ व॒प स्वाहा ॥
11. अ॒वत॑त्य ध॒नुस्त्व॑ सह॒स्राक्ष॑ श॒तेषु॑दे ।  
नि॒शीर्य॑ श॒ल्यानां॑ मु॒खा शि॒वो न॑स्सु॒मना॑ भव स्वाहा ॥
12. वि॒ज्यं ध॒नुः क॒पर्दि॑नो वि॒शल्यो॑ बा॒णवा॑ उ॒त ।  
अ॒ने॒शन्न॑श्ये॒षव आ॒भुर॑स्य निषंग॒थिः स्वाहा ॥
13. या॑ ते हे॒ति॒र्मी॒ढुष्ट॑म ह॒स्ते ब॒भूव॑ ते ध॒नुः ।  
तया॑ ऽस्मान् वि॒श्वत॑स्त्व-म॒यक्ष्म॑या परि॒भुज॑ स्वाहा ॥

14. नमस्ते अस्त्वायु-धायानातताय धृष्णवे ।  
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने स्वाहा ॥
15. परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः ।  
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि त७ स्वाहा ॥

2nd ANUVAKA

16. नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमः स्वाहा ॥
17. नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशभ्यः पशूनां पतये नमः स्वाहा ॥
18. नमस्सस्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमः स्वाहा ॥
19. नमो बभ्रुशाय विव्याधिने-ऽन्नानां पतये नमः स्वाहा ॥
20. नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतये नमः स्वाहा ॥
21. नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो नमः स्वाहा ॥
22. नमो रुद्रयातताविने क्षेत्राणां पतये नमः स्वाहा ॥
23. नमस्सूतायाहन्त्याय वनानां पतये नमः स्वाहा ॥
24. नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमः स्वाहा ॥
25. नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमः स्वाहा ॥
26. नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनां पतये नमः स्वाहा ॥

27. नम॑ उ॒च्चैर्घो॑षाया॒क्रन्त॑यते प॒त्तीनां॑ पतये नमः॑ स्वाहा ॥
28. नमः॑ कृ॒त्स्नवी॑ताय॒ धाव॑ते स॒त्त्वनां॑ पतये नमः॑ स्वाहा ॥

3<sup>RD</sup> ANUVAKA

29. नम॑स्सह॒मनाय॑ नि॒व्याधी॑न आ॒व्याधि॑नीनां पतये नमः॑ स्वाहा ॥
30. नमः॑ कु॒कुभा॑य नि॒षङ्गि॑णे स्ते॒नानां॑ पतये नमः॑ स्वाहा ॥
31. नमो॑ नि॒षङ्गि॑ण इ॒षुधि॑मते तस्करा॒णां पतये॑ नमः॑ स्वाहा ॥
32. नमो॑ वञ्च॒ते परि॑वञ्चते स्तायू॒नां पतये॑ नमः॑ स्वाहा ॥
33. नमो॑ नि॒चेर॑वे परि॒चरा॑यार॒ण्यानां॑ पतये नमः॑ स्वाहा ॥
34. नम॑स्सृ॒कावि॑भ्यो जिगा॒ँसद्भ्यो॑ मु॒ष्णतां॑ पतये नमः॑ स्वाहा ॥
35. नमो॑ऽसि॒मद्भ्यो॑ नक्तं॑ चरद्भ्यः प्रकृ॒न्तानां॑ पतये नमः॑ स्वाहा ॥
36. नम॑ उ॒ष्णीषि॑णे गि॒रिच॑राय॒ कुलु॑ञ्चानां पतये नमः॑ स्वाहा ॥
37. नम॑ इ॒षुम॑द्भ्यो धन्वा॒विभ्य॑श्च वो नमः॑ स्वाहा ॥
38. नम॑ आ॒तन्वा॑नेभ्यः प्र॒तिद॑धानेभ्यश्च वो नमः॑ स्वाहा ॥
39. नम॑ आ॒यच्छ॑द्भ्यो वि॒सृज॑द्भ्यश्च वो नमः॑ स्वाहा ॥
40. नमो॑ऽस्य॑द्भ्यो वि॒द्ध्य॑द्भ्यश्च वो नमः॑ स्वाहा ॥
41. नम॑ आ॒सीने॑भ्य इ॒श्या॑नेभ्यश्च वो नमः॑ स्वाहा ॥
42. नम॑स्स्व॒पद्भ्यो॑ जाग्रद्भ्यश्च वो नमः॑ स्वाहा ॥

43. नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥  
 44. नमस्सभाभ्य स्सभापतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥  
 45. नमो अश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

4th ANUVAKA

46. नम आव्याधिनीभ्यो विविद्ध्यन्तीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥  
 47. नम उगणाभ्य स्तृहतीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥  
 48. नमो गृथ्सेभ्यो गृथ्सपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥  
 49. नमो व्रातैभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥  
 50. नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥  
 51. नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥  
 52. नमो महद्भ्यः क्षुल्लकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥  
 53. नमो रथिभ्योऽरथेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥  
 54. नमो रथैभ्यो रथपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥  
 55. नमस्सेनाभ्य स्सेनानिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥  
 56. नमः क्षत्तृभ्य स्सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥  
 57. नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥  
 58. नमः कुलालेभ्यः कमरिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

59. नमः पु॒ञ्जि॒ष्टेभ्यो॑ नि॒षादे॒भ्यश्च॑ वो नमः स्वाहा ॥
60. नम इ॒षुकृ॑द्भ्यो धन्व॒कृद्भ्यश्च॑ वो नमः स्वाहा ॥
61. नमो मृ॒गयु॑भ्यः श्वनि॒भ्यश्च॑ वो नमः स्वाहा ॥
62. नमः श्व॒भ्यः श्व॒पति॑भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

5th ANUVAKA

63. नमो भ॒वाय॑ च रु॒द्राय॑ च स्वाहा ॥
64. नमश्श॒र्वाय॑ च प॒शुप॑तये च स्वाहा ॥
65. नमो नी॒लग्री॑वाय च शि॒तिका॑ण्ठाय च स्वाहा ॥
66. नमः क॒पर्दि॑ने च व्यु॒प्तके॑शाय च स्वाहा ॥
67. नमस्सह॒स्राक्ष॑ाय च श॒तध॑न्वने च स्वाहा ॥
68. नमो गि॒रिशा॑य च शि॒पिवि॑ष्टाय च स्वाहा ॥
69. नमो मी॒ढुष्ट॑माय चे॒षुम॑ते च स्वाहा ॥
70. नमो ह॒स्वाय॑ च वा॒मना॑य च स्वाहा ॥
71. नमो बृ॒हते॑ च वर्॒षीय॑से च स्वाहा ॥
72. नमो वृ॒द्धाय॑ च स॒म्वृ॑द्ध्वने च स्वाहा ॥
73. नमो अ॒ग्रिया॑य च प्र॒थमा॑य च स्वाहा ॥
74. नम आ॒शवे॑ चाजि॒राय॑ च स्वाहा ॥

75. नम॑श्शी॒घ्रिया॑य च॒ शी॒भ्या॑य च॒ स्वाहा ॥
76. नम॑ ऊ॒र्म्या॑य चाव॒स्वन्या॑य च॒ स्वाहा ॥
77. नमः॑ स्रो॒तस्या॑य च॒ द्वी॒प्या॑य च॒ स्वाहा ॥

6th ANUVAKA

78. नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॑ च॒ कनि॒ष्ठाय॑ च॒ स्वाहा ॥
79. नमः॑ पूर्॒वजा॑य चाप॒रजा॑य च॒ स्वाहा ॥
80. नमो॑ म॒द्ध्य॒माय॑ चाप॒गल्भा॑य च॒ स्वाहा ॥
81. नमो॑ जघ॒न्याय॑ च॒ बु॒द्धि॒न्याय॑ च॒ स्वाहा ॥
82. नमस्सो॒भ्याय॑ च॒ प्र॒ति॒स॒र्या॑य च॒ स्वाहा ॥
83. नमो॑ या॒म्याय॑ च॒ क्षे॒म्याय॑ च॒ स्वाहा ॥
84. नम॑ उ॒र्व॒र्या॑य च॒ ख॒ल्या॑य च॒ स्वाहा ॥
85. नम॑श्श॒लो॒क्या॑य चाव॒सान्या॑य च॒ स्वाहा ॥
86. नमो॑ व॒न्याय॑ च॒ कक्ष्या॑य च॒ स्वाहा ॥
87. नमः॑ श्र॒वाय॑ च॒ प्र॒ति॒श्र॒वाय॑ च॒ स्वाहा ॥
88. नम॑ आ॒शु॒षे॒णाय॑ चा॒शु॒रथा॑य च॒ स्वाहा ॥
89. नम॑श्शू॒राय॑ चाव॒भि॒न्द॒ते च॒ स्वाहा ॥
90. नमो॑ वर्मि॒णे च॒ वरू॒थि॒ने च॒ स्वाहा ॥



91. नमो॑ बि॒ल्मिने॑ च क॒वचि॑ने च स्वाहा ॥

92. नमः॑ श्रु॒ताय॑ च श्रु॒तसे॑नाय च स्वाहा ॥

7th ANUVAKA

93. नमो॑ दु॒न्दु॒भ्याय॑ चा॒हन॒न्याय॑ च स्वाहा ॥

94. नमो॑ धृ॒ष्णवे॑ च प्र॒मृ॒शाय॑ च स्वाहा ॥

95. नमो॑ दू॒ताय॑ च प्र॒हिताय॑ च स्वाहा ॥

96. नमो॑ नि॒षङ्गि॑णे चे॒षुधि॑मते च स्वाहा ॥

97. नम॑स्ती॒क्ष्णेष॑वे चा॒युधि॑ने च स्वाहा ॥

98. नम॑स्स्वा॒यु॒धाय॑ च सु॒धन्व॑ने च स्वाहा ॥

99. नम॑स्सु॒त्याय॑ च प॒थ्याय॑ च स्वाहा ॥

100. नमः॑ का॒त्याय॑ च नी॒प्याय॑ च स्वाहा ॥

101. नम॑स्सू॒द्याय॑ च सर॒स्याय॑ च स्वाहा ॥

102. नमो॑ ना॒द्याय॑ च वै॒शन्ता॑य च स्वाहा ॥

103. नमः॑ कू॒प्याय॑ चा॒व॒त्याय॑ च स्वाहा ॥

104. नमो॑ वर्॒ष्याय॑ चा॒व॒र्ष्याय॑ च स्वाहा ॥

105. नमो॑ मे॒घ्याय॑ च वि॒द्यु॒त्याय॑ च स्वाहा ॥

106. नम॑ ई॒र्दि॒ध्याय॑ चा॒त॒प्याय॑ च स्वाहा ॥

107. नमो वा॒त्याय॑ च रे॒ष्मिया॑य च स्वाहा ॥  
108. नमो वा॒स्त॒व्याय॑ च वा॒स्तु॒पाय॑ च स्वाहा ॥

8th ANUVAKA

109. नमस्सो॒माय॑ च रु॒द्राय॑ च स्वाहा ॥  
110. नमस्ता॒म्राय॑ चा॒रु॒णाय॑ च स्वाहा ॥  
111. नमश्श॒ङ्गाय॑ च प॒शु॒पत॑ये च स्वाहा ॥  
112. नम उ॒ग्राय॑ च भी॒माय॑ च स्वाहा ॥  
113. नमो अ॒ग्रेव॑धाय च दू॒रेव॑धाय च स्वाहा ॥  
114. नमो ह॒न्त्रे च॑ ह॒नीय॑से च स्वाहा ॥  
115. नमो वृ॒क्षेभ्यो॑ ह॒रिके॑शेभ्यः स्वाहा ॥  
116. नमस्त॒राय॑ स्वाहा ॥  
117. नमश्शं॒भवे॑ च म॒योभ॑वे च स्वाहा ॥  
118. नमश्शं॒कराय॑ च म॒यस्क॑राय च स्वाहा ॥  
119. नमश्शि॒वाय॑ च शि॒वत॑राय च स्वाहा ॥  
120. नमस्ती॒र्थ्याय॑ च कू॒ल्याय॑ च स्वाहा ॥  
121. नमः पा॒र्याय॑ चावा॒र्याय॑ च स्वाहा ॥  
122. नमः प्र॒तर॑णाय चो॒त्तर॑णाय च स्वाहा ॥

123. नम आ॒ता॒र्या॒य च॒ ला॒द्या॒य च॒ स्वा॒हा ॥
124. नम॑श्श॒ष्या॒य च॒ फे॒न्या॒य च॒ स्वा॒हा ॥
125. नम॑स्सि॒क॒त्या॒य च॒ प्र॒वा॒ह्या॒य च॒ स्वा॒हा ॥

9th ANUVAKA

126. नम॑ इ॒रि॒ण्या॒य च॒ प्र॒प॒त्थ्या॒य च॒ स्वा॒हा ॥
127. नमः॑ कि॒ञ्शि॒ला॒य च॒ क्ष॒य॒णा॒य च॒ स्वा॒हा ॥
128. नमः॑ क॒प॒दि॒ने च॒ पु॒ल॒स्त॒ये च॒ स्वा॒हा ॥
129. नमो॑ गो॒ष्ठ्या॒य च॒ गृ॒ह्या॒य च॒ स्वा॒हा ॥
130. नम॑स्त॒ल्प्या॒य च॒ गे॒ह्या॒य च॒ स्वा॒हा ॥
131. नमः॑ का॒त्या॒य च॒ ग॒ह्व॒रे॒ष्ट्या॒य च॒ स्वा॒हा ॥
132. नमो॑ हृ॒द॒य्या॒य च॒ नि॒वे॒ष्या॒य च॒ स्वा॒हा ॥
133. नमः॑ पा॒ञ्च॒व्या॒य च॒ रज॒स्या॒य च॒ स्वा॒हा ॥
134. नम॑श्शु॒ष्क्या॒य च॒ हरि॒त्य॒या॒य च॒ स्वा॒हा ॥
135. नमो॑ लो॒प्या॒य चो॒ल॒प्या॒य च॒ स्वा॒हा ॥
136. नम॑ ऊ॒र्व्या॒य च॒ सू॒र्म्या॒य च॒ स्वा॒हा ॥
137. नमः॑ प॒र्ण्या॒य च॒ प॒र्ण्य॑श्चा॒द्या॒य च॒ स्वा॒हा ॥
138. नमो॑ऽप॒गु॒र॒मा॒णाय॑ चा॒भि॒घ्न॒ते च॒ स्वा॒हा ॥

139. नम॑ आ॒क्खि॒दते॑ च॒ प्र॒क्खि॒दते॑ च॒ स्वाहा॑ ॥
140. नमो॑ वः॒ कि॒रि॒के॒भ्यो॑ दे॒वाना॑ ॐ हृ॒दये॑भ्यः॒ स्वाहा॑ ॥
141. नमो॑ वि॒क्षी॒णके॑भ्यो॒ दे॒वाना॑ ॐ हृ॒दये॑भ्यः॒ स्वाहा॑ ॥
142. नमो॑ वि॒चि॒न्व॒त्के॑भ्यो॒ दे॒वाना॑ ॐ हृ॒दये॑भ्यः॒ स्वाहा॑ ॥
143. नम॑ आ॒नि॒र्ह॒ते॒भ्यो॑ दे॒वाना॑ ॐ हृ॒दये॑भ्यः॒ स्वाहा॑ ॥
144. नम॑ आ॒मी॒व॒त्के॑भ्यो॒ दे॒वाना॑ ॐ हृ॒दये॑भ्यः॒ स्वाहा॑ ॥

10th ANUVAKA

145. द्रा॒पे अ॒न्ध॒स॒स्प॒ते॒ दरि॑द्र॒न्नी॒ल॒लो॒हित॑ । ए॒षां पु॒रु॒षा॒णामे॑षां  
प॒शूनां॑ मा भे॒र्मा॒ऽरो॒ मो ए॒षां कि॒ञ्च॒नाम॑म॒थ् स्वाहा॑ ॥
146. या ते॑ रु॒द्र शि॒वा त॒नू॒श्शि॒वा वि॒श्वा॒हभे॑षजी ।  
शि॒वा रु॒द्रस्य॑ भे॒षजी॑ तया॒ नो मृ॑ड जी॒वसे॑ स्वाहा॑ ॥
147. इ॒मा ॐ रु॒द्राय॑ तव॒से क॒प॒दि॒ने॑ क्षय॒द्वी॒राय॑ प्र॒भ॒रा॒महे॑ म॒तिं ।  
यथा॑ नः॒ श॒म॒सद्-द्वि॒पदे॑ चतु॒ष्पदे॑ वि॒श्वं पु॒ष्टं ग्रा॒मे  
अ॒स्मि-न्न॑नातुर॒ ॐ स्वाहा॑ ॥
148. मृ॒डा नो॑ रु॒द्रो त॒नो म॑यस्कृ॒धि क्षय॑द्वी॒राय॑ नम॒सा वि॒धेम॑ ते ।  
यच्छ॒ञ्च योश्च॑ म॒नुरा॑यजे पि॒ता तद॑श्याम॒ तव॑ रु॒द्र प्र॒णी॒तौ  
स्वाहा॑ ॥

149. मा नो महान्तमु॒त मा नो अ॒र्भकं॑ मा न उ॒क्षन्तमु॒त मा न उ॒क्षितं॑ ।  
मा नो व॒धीः पि॒तरं॑ मो॒त मा॒तरं॑ प्रि॒या मा न॑स्तनु॒वो रु॒द्र  
री॒रिषः॑ स्वाहा ॥
150. मा नस्तो॒के तन॑ये मा न आ॒युषि॑ मा नो गो॒षु मा नो अ॒श्वेषु॑  
री॒रिषः॑ । वी॒रान्मा॑नो रु॒द्र भा॒मितो॑ व॒धीर् ह॒विष्म॑न्तो नम॒सा  
वि॒धेम ते॑ स्वाहा ॥
151. आ॒रात्ते॑ गो॒घ्न उ॒त पू॒रुष॑घ्ने क्ष॒यद्वी॑राय सु॒म्न-म॒स्मे ते॑ अस्तु ।  
र॒क्षा च नो॑ अ॒धि च दे॒व ब्रू॒ह्यधा॑ च नः शर्म  
यच्छ॒द्विर्बा॑ः स्वाहा ॥
152. स्तु॒हि श्रु॒तं ग॒र्तस॑दं यु॒वानं॑ मृ॒गन्न॑ भी॒म-मु॒पह॑लु-मु॒ग्रं ।  
मृ॒डा ज॒रि॒त्रे रु॒द्र स्त॒वानो॑ अ॒न्यन्ते॑ अ॒स्मन्नि॑वपन्तु से॒नाः स्वाहा॑ ॥
153. परि॑णो रु॒द्रस्य॑ हे॒तिर्वृ॑णक्तु परि॒त्वेष॑स्य दु॒र्मति॑रघा॒योः ।  
अ॒व स्थि॑रा म॒घव॑द्भ्य-स्तनु॒ष्व मी॒द्वस्तो॑काय तन॒याय  
मृ॒डय॑ स्वाहा ॥
154. मी॒दुष्ट॑म शि॒वत॑म शि॒वो न॑स्सु॒मना॑ भव । प॒रमे॑ वृ॒क्ष आ॒युध॑न्नि॒धाय॑  
कृ॒त्तिं व॑सान आ॒चर॑ पि॒नाकं॑ बिभ्र॒दाग॑हि स्वाहा ॥

155. विकि॒रिद॑ वि॒लो॒हि॒त॑ नम॒स्ते अ॒स्तु भ॒गवः॑ ।

यास्ते॑ स॒हस्र॑ँ हे॒तयो॑ऽन्य-म॒स्मन्नि॑व॒पन्तु॑ ताः स्वाहा ॥

156. स॒हस्रा॑णि स॒हस्र॑धा बा॒हुवो॑स्तव हे॒तयः॑ ।

तासा॑मी॒शानो॑ भ॒गवः॑ प॒रा॒चीना॑ मु॒खा कृ॒धि स्वाहा॑ ॥

### 11th ANUVAKA

157. स॒हस्रा॑णि स॒हस्र॑शो ये रु॒द्रा अ॒धि भू॒म्यां॑ ।

तेषा॑ँ स॒हस्र॑यो॒जने॑ ऽव ध॒न्वा॒नि त॒न्मसि॑ स्वाहा ॥

158. अ॒स्मिन् म॒ह॒त्य॒र्णवे॑ऽन्त॒रि॒क्षे भ॒वा अ॒धि ।

तेषा॑ँ स॒हस्र॑यो॒जने॑ ऽव ध॒न्वा॒नि त॒न्मसि॑ स्वाहा ॥

159. नी॒लग्री॑वाः शि॒ति॒क॒ण्ठाः श॒र्वा अ॒धः क्ष॒माच॑राः ।

तेषा॑ँ स॒हस्र॑यो॒जने॑ ऽव ध॒न्वा॒नि त॒न्मसि॑ स्वाहा ॥

160. नी॒लग्री॑वा शि॒ति॒क॒ण्ठा दि॒वँ रु॒द्रा उ॒प॒श्रि॒ताः ।

तेषा॑ँ स॒हस्र॑यो॒जने॑ ऽव ध॒न्वा॒नि त॒न्मसि॑ स्वाहा ॥

161. ये वृ॒क्षे॒षु स॒स्पि॒ञ्ज॒रा नी॒लग्री॑वा वि॒लो॒हि॒ताः ।

तेषा॑ँ स॒हस्र॑यो॒जने॑ ऽव ध॒न्वा॒नि त॒न्मसि॑ स्वाहा ॥

162. ये भू॒ताना॑-म॒धि॒प॒तयो॑ वि॒शि॒खा॒सः क॒प॒र्दि॒नः ।

तेषा॑ँ स॒हस्र॑यो॒जने॑ ऽव ध॒न्वा॒नि त॒न्मसि॑ स्वाहा ॥

163. ये अ॒न्नेषु॑ वि॒विद्ध्यन्ति॑ पा॒त्रेषु॑ पि॒बतो॑ ज॒नान् ।

तेषां॑ सहस्र॒योजने॑ ऽव ध॒न्वानि॑ तन्म॒सि स्वाहा॑ ॥

164. ये प॒थां प॒थिरक्षय॑ ऐ॒लबृ॒दा यव्यु॑धः ।

तेषां॑ सहस्र॒योजने॑ ऽव ध॒न्वानि॑ तन्म॒सि स्वाहा॑ ॥

165. ये ती॒र्थानि॑ प्र॒चरन्ति॑ सू॒काव॑न्तो निष॒ङ्गिणः॑ ।

तेषां॑ सहस्र॒योजने॑ ऽव ध॒न्वानि॑ तन्म॒सि स्वाहा॑ ॥

166. य ए॒ताव॑न्तश्च भू॒यांसश्च॑ दि॒शो रु॒द्रा वि॑त॒स्थिरे॑ ।

तेषां॑ सहस्र॒योजने॑ ऽव ध॒न्वानि॑ तन्म॒सि स्वाहा॑ ॥

167. नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॑ ये पृ॒थिव्यां॑ येषा॒मन्न॒मिष॑व स्तेभ्यो॑ द॒श प्रा॒चीर्द॑श  
दक्षि॒णा द॑शप्र॒तीची॑ दर्शोदी॒ची दर्शो॑र्द्ध्वा-स्तेभ्यो॑ नमस्ते नो  
मृडयन्तु॑ ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो द्वेष्टि॑ तं वो॒ जंभे॑ दधामि॒ स्वाहा॑ ॥

(पृथिविषद्भ्यो रुद्रेभ्य इदं न मम)

168. नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॑ ये॒न्तरि॑क्षे येषां॑ वा॒त इ॒षव॑ -स्तेभ्यो॑ द॒श प्रा॒चीर्द॑श  
-दक्षि॒णा द॑शप्र॒तीची॑ दर्शोदी॒ची दर्शो॑र्द्ध्वा-स्तेभ्यो॑ नमस्ते नो  
मृडयन्तु॑ ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो द्वेष्टि॑ तं वो॒ जंभे॑ दधामि॒ स्वाहा॑ ॥

(अन्तरिक्षषद्भ्यो रुद्रेभ्य इदं न मम)

169. नमो रु॒द्रेभ्यो॑ ये दि॒वि येषां॑ ँव॒र्षमिष॑व -स्तेभ्यो॑ द॒शप्रा॑चीर्द॒श-  
दक्षि॑णा द॒शप्र॑तीची॒र्दशो॑दी॒चीर्द॒शोर्द॒ध्वा-स्तेभ्यो॑ नमस्ते नो॑  
मृ॒डय॑न्तु ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॑ तं ँवो॑ जंभे॑ द॒धामि॑ स्वाहा॑ ॥  
(दिविषद्भ्यो रुद्रेभ्य इदं न मम)

---



### 18.1 चमक होमः

For Chamak Homa Ahutis the "yajamaana" has to say the same  
"prati svaahaakaara mantra as –

“अग्नाविष्णुभ्याम् इदम् न मम । ”

अग्नाविष्णू सजोषसेमा वर्द्धन्तु वां गिरः । द्युमनैर् वाजेभिरागतं ।

1. वाजश्च मे प्रसवश्च मे ---- शरीराणि च मे स्वाहाः ।
2. जैष्ठ्यं च म ----- सुमतिश्च मे स्वाहाः ।
3. शं च मे ----- सुदिनं मे स्वाहाः ।
4. ऊर्क्च मे ----- नीवाराश्च मे स्वाहाः ।
5. अश्मा च मे ----- गतिश्च मे स्वाहाः ।
6. अग्निश्च म इन्द्रश्च मे ---- प्रजापतिश्च म इन्द्रश्च मे स्वाहाः ।
7. अंशुश्च मे ----- हारियोजनश्च मे स्वाहाः ।
8. इन्द्रश्च मे ----- स्वगाकारश्च मे स्वाहाः ।
9. अग्निश्च मे घर्मश्च मे ---- यज्ञेन कल्पेतां स्वाहाः ।
10. गभाश्च मे ----- यज्ञो यज्ञेन कल्पतां स्वाहाः ।
11. एका च मे ----- भुवनश्चाधिपतिश्च स्वाहाः ।

Chamaka Homam is followed by "vasoordhaaraa", "poornahuti.  
Then Chartur- Veda paarayanam, which may include ghanam,  
geetham, padyam, gadyam etc .

The Section 19.1 gives the uttaraanga Puja that is performed to the  
Kalasha/Kumbha before udvaapanam.

This is detailed in Rudra Ekadasini and Maharudram.

---

## Section 6 – UttarAnga PUja

## 19 उत्तराङ्ग पूजा

### 19.1 कलश उद्घापनं

नि॒ध॒न॒प॒त॒ये॒ नमः॑                      नि॒ध॒न॒प॒ता॒न्ति॒का॒य॒ नमः॑ ।

ऊ॒र्ध्वा॒य॒ नमः॑                      ऊ॒र्ध्व॒लि॒ङ्गा॒य॒ नमः॑

हि॒र॒ण्य॒ा॒य॒ नमः॑                      हि॒र॒ण्य॒लि॒ङ्गा॒य॒ नमः॑

सु॒व॒र्णा॒य॒ नमः॑                      सु॒व॒र्ण॒लि॒ङ्गा॒य॒ नमः॑

दि॒व्या॒य॒ नमः॑                      दि॒व्य॒लि॒ङ्गा॒य॒ नमः॑

भ॒वा॒य॒ नमः॑                      भ॒व॒लि॒ङ्गा॒य॒ नमः॑

श॒र्वा॒य॒ नमः॑                      श॒र्व॒लि॒ङ्गा॒य॒ नमः॑

शि॒वा॒य॒ नमः॑                      शि॒व॒लि॒ङ्गा॒य॒ नमः॑

ज्व॒ला॒य॒ नमः॑                      ज्व॒ल॒लि॒ङ्गा॒य॒ नमः॑

आ॒त्मा॒य॒ नमः॑                      आ॒त्म॒लि॒ङ्गा॒य॒ नमः॑

प॒र॒मा॒य॒ नमः॑                      प॒र॒म॒लि॒ङ्गा॒य॒ नमः॑

ए॒त॒त्सो॒म॒स्य॑ सूर्य॒स्य॑ स॒र्व॒लि॒ङ्ग॑ स्था॒प॒य॒ति॒ पा॒णि॒म॒न्त्रं॑ प॒वि॒त्रं॑ ।

स॒द्यो॑ जा॒तं प्र॒प॒द्या॒मि॒ स॒द्यो॑ जा॒ता॒य॒ वै नमो॑ नमः॑ ।

भ॒वे॑ भ॒वे॑ ना॒ति॒भ॒वे॑ भ॒व॒स्व मां॑ । भ॒वो॒द्भ॒वा॒य॒ नमः॑ ॥

वामदे॒वाय॑ नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॑ नमः॑ श्रे॒ष्ठाय॑ नमो॑ रु॒द्राय॑ नमः॑ का॒लाय॑ नमः॑  
कल॑विक॒रणाय॑ नमो॑ बल॑विक॒रणाय॑ नमो॑ ब॒लाय॑ नमो॑ बल॑प्रमथ॒नाय॑  
नमः॑ सर्व॑भूतदम॒नाय॑ नमो॑ मनो॑न्म॒नाय॑ नमः॑ ।

अ॒घो॒रे॒भ्योऽथ॑घो॒रे॒भ्यो॑ घोर॑घोर॒तरे॑भ्यः ।

सर्वे॑भ्यः सर्व॑शर्वे॑भ्यो नमस्ते अस्तु रु॒द्ररू॑पेभ्यः ॥

तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ महा॒देवाय॑ धीमहि । तन्नो॑ रु॒द्रः प्र॑चोदयात् ॥

ई॒शानः॑ सर्व॑विद्या॒ना-मी॑श्वरः॑ सर्व॑भूता॒नां  
ब्र॒ह्माधि॑पति॒ ब्र॒ह्मणो॑धिपति॒ ब्र॒ह्मा शि॒वो मे॑ अस्तु सदा॑शि॒वो ॥

नमो॑ हि॒रण्यबा॑हवे॒ हि॒रण्यव॑र्णाय॒ हि॒रण्यरू॑पाय॒ हि॒रण्यप॑तये॒ ऽम्बिका॑पतय  
उ॒माप॑तये॒ पशु॑पतये॒ नमो॑ नमः॑ ॥

#### 19.1.1 रु॒द्र ए॒कदा॑शिनि / महा॑ रु॒द्रं

नमः॑ प्रा॒च्यै दि॒शेया॑श्च॒ दे॒वता॑ ए॒तस्यां॑ प्र॒तिव॑सन्त्ये॒ ताभ्य॑श्च॒ नमो॑,  
नमो॑ दक्षि॒णायै॑ दि॒शेया॑श्च॒ दे॒वता॑ ए॒तस्यां॑ प्र॒तिव॑सन्त्ये॒ ताभ्य॑श्च॒ नमो॑,  
नमः॑ प्र॒ती॒च्यै दि॒शेया॑श्च॒ दे॒वता॑ ए॒तस्यां॑ प्र॒तिव॑सन्त्ये॒ ताभ्य॑श्च॒ नमो॑,  
नम॑ उ॒दी॒च्यै दि॒शेया॑श्च॒ दे॒वता॑ ए॒तस्यां॑ प्र॒तिव॑सन्त्ये॒ ताभ्य॑श्च॒ नमो॑,  
नम॑ ऊ॒र्ध्वायै॑ दि॒शेया॑श्च॒ दे॒वता॑ ए॒तस्यां॑ प्र॒तिव॑सन्त्ये॒ ताभ्य॑श्च॒ नमो॑,

नमोऽधरायै दिशेयाश्च देवता एतस्यां प्रतिवसन्त्ये ताभ्यश्च नमो,  
 नमोऽवान्तरायै दिशेयाश्च देवता एतस्यां प्रतिवसन्त्ये ताभ्यश्च नमो,  
 नमो गंगा यमुनयो र्मद्ध्ये ये वसन्ति ते मे प्रसन्नात्मा-नश्चिरं  
 जीवितं वर्द्धयन्ति ,  
 नमो गंगा यमुनयो मुनिभ्यश्च नमो नमो गंगा यमुनयोर्  
 मुनिभ्यश्च नमः ॥

शिवेन मे सन्तिष्ठस्व स्योनेन मे सन्तिष्ठस्व सुभूतेन मे  
 सन्तिष्ठस्व ब्रह्मवर्चसेन मे सन्तिष्ठस्व यज्ञस्यर्धि मनु सन्तिष्ठ  
 स्वोप ते यज्ञ नम उप ते नम उप ते नमः ॥

### 19.1.2 धूपं

धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्वतं यौऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयं  
 धूर्वामस्त्वं देवानामसि सस्नितमं पप्रितमं जुष्टमं वह्नितमं  
 देवहूतम-महुतमसि हविर्धानं दृहस्व माहा मित्रस्य त्वा चक्षुषा  
 प्रेक्षे मा भेर्मा सँवित्ता मा त्वा हिंसिषं ।

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः । धूपं आघ्रापयामि ।

19.1.3 दीपं

उ॒द्दी॑प्य॒स्व जा॒तवे॒दोऽप॒घ्नन् निर्ऋ॑तिं॒ म॒म । प॒शु॒ञ्च॒ म॒ह्य॒मा॒व॒ह जी॒व॒नं  
च दि॒शो दि॒श । मा॒नो हि॒सी-ज्जा॒तवे॒दो गा॒मश्च॑ पु॒रुषं॑ ज॒गत् ।  
अ॒बि॒भ्र॒द॒ग्न आ॒ग॒हि श्रि॒या मा॒ परि॑पातय ।

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

दीपं दर्शयामि । धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

19.1.4 नैवेद्यं

ओं भूर्भु॒व॒स्सु॒वः । तथ्स॑वि॒तु व॑रि॒ण्यं भ॒र्गो दे॒वस्य॑ धीमहि ।  
धि॒यो यो नः॑ प्र॒चो॒दया॑त् । दे॒व स॑वि॒तः प्र॑सु॒वः ।  
स॒त्यं त्व॑र्त्तेन परिषिञ्चामि ।

अमृतं भवतु । अमृतोपस्तरणमसि ।

ओं प्राणाय स्वाहाः । ओं अपानाय स्वाहाः ।

ओं व्यानाय स्वाहाः । ओं उदानाय स्वाहाः ।

ओं समानाय स्वाहाः । ओं ब्रह्मणे स्वाहाः ।

मधु॒वा॒ता ऋ॒ताय॑ते मधु॒क्षर॑न्ति सि॒न्धवः॑ ।

मा॒ध्वी॒र्नः स॒न्त्वोष॑धीः । मधु॒नक्त॑ मु॒तोष॑सि मधु॒मत् पार्थि॑व॒ञ् रजः॑ ।

मधु॒द्यौ॒रस्तु॑ नः पि॒ता । मधु॑मा॒न्नो व॒नस्प॑ति॒र्मधु॑मा॒ञ् अस्तु॑ सूर्यः ।

मा॒ध्वीर्गा॒वो भव॑न्तु नः ॥ मधु॑ मधु॑ मधु॑ ॥

आवा॑हिताभ्यः सर्वा॑भ्यो दे॒वता॑भ्यो नमः ।

(\*\*दिव्यान्नं, घृतगुळपायसं, नाळिकेरखण्डद्वयं, कदलीफलं ...)

निवे॑दयामि ।

मद्ध्ये॑ मद्ध्ये॑ अमृत॑पानीयं समर्प॑यामि । अमृ॑तापिधानमसि ।

हस्त॑प्रक्षाळनं समर्प॑यामि । पाद॑प्रक्षाळनं समर्प॑यामि ।

नैवे॑द्यानन्तरं आच॑मनीयं समर्प॑यामि ।

#### 19.1.5 तांबूलं

पू॒गीफल॑समायुक्तं नाग॑वल्लीद॒ळैर्यु॑तं ।

कर्पू॑रचूर्णं संयु॑क्तं तांबूलं॑ प्रतिगृ॑ह्यतां ।

आवा॑हिताभ्यः सर्वा॑भ्यो दे॒वता॑भ्यो नमः । कर्पू॑र तांबूलं॑ निवे॑दयामि ।

आच॑मनीयं समर्प॑यामि । समस्तो॑पचारान् समर्प॑यामि ।

#### 19.1.6 पञ्चमुख दीपं

सप्र॑थ स॒भां मे॑ गोपा॒य । ये च॑ स॒भ्याः स॒भा सदः॑ ।

तानि॑न्द्रि॒याव॑तः कुरु । सर्व॑मायु॒-रुपा॑सतां । अहे॑ बु॒ध्निय॑ मन्त्रं॑ मे

गोपा॒य । यमृ॑षयस्त्रै-वि॒दा वि॒दुः । ऋचः॑ सा॒मानि॑ यजू॒षि ।

सा हि श्री॑रमृ॒ता स॒तां । or / and

आ॒त्मन्ना-॒त्मन्नि॒त्या-म॑न्त्रयत । तस्मै॑ पञ्च॒मं हू॒तः प्र॑त्यशृ॒णोत् ।



स पञ्चहूतो ऽभवत् । पञ्चहूतो हवै नामैषः । तं वा एतं पञ्चहूतं  
सन्तं । पञ्चहोतेत्या चक्षते परोक्षेण ।  
परोक्षप्रिया इव हि देवाः ॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः । अलङ्कार-पञ्चमुखदीपं  
प्रदर्शयामि । आचमनीयं समर्पयामि ।

19.1.7 कर्पूरनीराजनं

सोमो वा एतस्य राज्यमादत्ते । यो राजासन् राज्यो वा सोमेन  
यजते । देवसुवामेतानि हविषि भवन्ति ।  
एतावन्तो वै देवानां सवाः । त एवास्मै सवान् प्रयच्छन्ति ।  
त एनं पुनः सुवन्ते राज्याय । देवसू राजा भवति ।

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः । कर्पूरनीराजनं प्रदर्शयामि ।  
कर्पूरनीराजनानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

बृहत्साम क्षत्रभृद् वृद्धवृष्णियं त्रिष्टुभौज-श्शुभित-मुग्रवीरं ।  
इन्द्र स्तोमेन पञ्चदशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्षा ।  
रक्षां धारयामि । ओं हर । ओं हर । ओं हर ।

रा॒जा॒धि॒रा॒जाय॑ प्र॒सह्य॑साहि॒ने॑ । नमो॑ वयं॑ वै॒श्रव॑णाय॒ कुर्म॑हे ।  
स मे॒ कामा॑न् काम॒कामा॑य॒ मह्यं॑ । कामे॑श्वरो॒ वैश्र॑व॒णो द॑दातु ।  
कु॒बे॒राय॑ वैश्र॒व॒णाय॑ । म॒हा॒रा॒जाय॑ नमः॑ ।

सुवर्ण॑पुष्पं॒ सम॑र्पयामि । पारि॑जात पुष्पं॒ सम॑र्पयामि ।

### 19.1.8 मन्त्र पुष्पं

योऽपां॑ पु॒ष्पं वे॑द । पु॒ष्प॒वान् प्र॒जा॒वान् प॑शु॒मान् भ॑वति ।  
च॒न्द्र॒मा वा अ॒पां पु॒ष्पं । पु॒ष्प॒वान् प्र॒जा॒वान् प॑शु॒मान् भ॑वति ।  
ओं तद्ब्र॑ह्म । ओं तद्वा॒युः । ओं तदा॒त्मा । ओं तथ्स॒त्यं ।  
ओं तथ्सर्वं॑ । ओं तत्पु॒रोर्नमः॑ ।

अ॒न्तश्च॑रति॒ भूते॑षु गुहा॒यां वि॑श्वमूर्ति॒षु । त्वं य॑ज्ञस्त्वं व॑षट्कार  
स्त्वमि॒न्द्रस्त्व॑ रु॒द्रस्त्वं वि॑ष्णुस्त्वं ब्र॒ह्मत्वं प्र॑जा॒पतिः॑ ।  
त्वं तदा॑प॒ आपो॑ ज्योती॒रसोऽमृतं॑ ब्र॒ह्म भू॑र्भुवस्सुव॒रो ।

न कर्म॑णा न प्र॒जया॑ धने॒न त्यागे॑नैके अमृत॒त्व-मा॑न॒शुः ।  
परे॑ण नाकं॒ निहि॑तं गुहा॒यां वि॑भ्राजदेतद्यतयो॒ विश॑न्ति ।  
वे॒दान्त॑ वि॒ज्ञान॑ सुनिश्चि॒तार्था॑-स्स॒न्यास॑ यो॒गाद्य॑तयः शुद्ध॒ सत्त्वाः॑ ।  
ते ब्र॑ह्मलो॒के तु प॑रान्तकाले॒ परा॑मृतात् परिमुच्यन्ति॒ सर्वे॑ ।

द॒हं वि॒पापं॑ पर॒मेश्व॑भू॒तं य॑त्पुण्ड॒रीकं॑ पु॒रम॑द्ध्यस॒७स्थं॑ ।  
तत्रा॒पि द॒हं ग॒गनं॑ वि॒शोक॑-स्तस्मिन् यदन्तस्त-दुपा॒सित॑व्यं ।  
यो वेदा॑दौ स्वरः प्रो॒क्तो वेदा॑न्ते च प्रति॒ष्ठितः॑ ।  
तस्य॑ प्र॒कृति॑लीनस्य॒ यः पर॑स्स म॒हेश्वरः॑ ।  
वेदो॑क्त मन्त्रपुष्पं समर्पयामि ।

19.1.9 चतुर्वेद पारायणं

ओं । अ॒ग्निमी॑ळे पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑ दे॒वमृ॑त्विजं॑ । हो॒तारं॑ रत्न॒ धात॑मं ।  
ओं । इ॒षेत्वो॑र्जे॒त्वा वा॒यवः॑ स्थो पा॒यवः॑ स्थ दे॒वो व॑स्सवि॒ता प्रा॑र्पयतु  
श्रेष्ठ॑तमाय॒ कर्म॑णे ।  
ओं । अ॒ग्न आ॒याहि॑ वी॒तये॑ गृ॒णानो॑ ह॒व्य दा॑तये ।  
नि॒होता॑ स॒त्सि ब॑र्हिषि ।  
ओं । श॒न्नो दे॒वीर॑भि॒ष्टय॑ आपो॑ भवन्तु पी॒तये॑ । शं॒यो र॒भिस्र॑वन्तु नः ॥

19.1.10 आपस्तंब श्रौत सूत्र, पुराण, वाक्याः

अथातो दर्शपूर्णमासौ व्याख्यास्यामः । प्रातरग्निहोत्रं हुत्वा ।  
अन्यमावहनीयं प्रणीय । अग्नीनन्वा दधाति । न गतश्रियोऽन्यमग्निं  
प्रणयति । (श्रौत सूत्र वाक्यः)

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृतां ।

धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे । (पुराण वाक्यः )

## 19.2 कुंभ /कलश उद्घापनं

### 19.2.1 कलश उद्घापन मन्त्राः

नि॒घृष्वै॑ र॒स॒मा॒यु॒तैः॑ । का॒लैर्॒ ह॒रि॒त्व॒मा॒प॒न्नैः॑ । इ॒न्द्रा॒या॒हि॒ स॒ह॒स्र॒युक्॑ ।  
अ॒ग्नि॒ वि॒भ्रा॒ष्टि॑ व॒सनः॑ । वा॒युः श्वे॒त॒सि॒क॒द्रु॒कः॑ ।  
स॒म्॒व॒त्स॒रो॒ वि॒षू॒वर्णैः॑ । नि॒त्या॒स्ते ऽनु॒च॒रा॒स्त॒व ।  
सु॒ब्र॒ह्म॒ण्यो॑ꣳ सु॒ब्र॒ह्म॒ण्यो॑ꣳ सु॒ब्र॒ह्म॒ण्यो॑ꣳ ।

ओं तत् पु॒रु॒षाय॑ वि॒द्महे॑ म॒हा॒से॒नाय॑ धी॒महि॑ ।  
तन्नः॑ षण्मु॒खः प्र॒चो॒दया॑त् ।

धा॒ताः वि॒धा॒ता पर॒मो॒त स॒न्दृक् प्र॒जा॒प॒तिः॑ पर॒मे॒ष्ठी वि॒रा॒जा॑ ।  
स्तो॒माश्च॒न्दा॑ꣳसि नि॒वि॒दो॒म आ॒हुरे॒तस्मै॑ रा॒ष्ट्र-म॒भि॒सन्न॑माम ।  
अ॒भ्या॒व॒र्त॒ध्व-मु॒प॒मे॒त सा॒क॒म॒यꣳ शा॒स्ता-ऽधि॑पति॒र्वो अ॒स्तु ।  
अ॒स्य वि॒ज्ञान॑-म॒नु॒सꣳ र॒भ॒ध्व॒मिमं॑ प॒श्चा॒दनु॑जीवाथ॒ सर्वे॑ ।  
ओं भू॒त॒ना॒थाय॑ वि॒द्महे॑ भव॒पु॒त्राय॑ धी॒महि॑ । तन्नः॑ शा॒स्ता प्र॒चो॒दया॑त् ।

## शिव स्तुति

नमो॑ अस्तु॑ सर्पे॒भ्यो॒ ये के॑ च पृ॒थि॒वीम॑नु । ये अ॒न्तरि॑क्षे॒ ये दि॒वि  
तेभ्यः॑ सर्पे॒भ्यो॒ नमः॑ । येऽदो॑ रो॒चने॑ दि॒वो ये वा॒ सूर्य॑स्य र॒श्मिषु॑ ।  
येषा॑म॒प्सु सदः॑ कृतं॑ तेभ्यः॑ सर्पे॒भ्यो॒ नमः॑ ।  
या इ॒षवो॑ यातु॑ धा॒नानां॑ ये वा वन॒स्पती॑र॒न्नु ।  
ये वाऽव॑टेषु॒ शेर॑ते तेभ्यः॑ सर्पे॒भ्यो॒ नमः॑ ।  
ओं सर्प॑राजाय विद्महे॒ सह॑स्रफ॒णाय॑ धीमहि ।  
तन्नो॑ अनन्तः प्रचोदयात् ॥

ओं नमो॑ ब्रह्म॒णे नमो॑ अ॒स्त्वग्ग॒नये॑ नमः॑ पृ॒थि॒व्यै नम॑ ओष॒धीभ्यः॑ ।  
नमो॑ वा॒चे नमो॑ वा॒चस्प॑तये॒ नमो॑ विष्ण॒वे बृ॒हते॑ करोमि ।  
(त्रिवारं जपेत्)

वरु॑णाय नमः॑ । सक॒लारा॑धनैः स्वर्चितं ।  
तत्त्वा॑ यामि ब्रह्म॒णा व॑न्दमानस्तदाशास्ते॑ यज॒मानो ह॒विर्भिः॑ ।  
अहे॑डमानो वरु॒णेह बो॒द्ध्युरु॑शस्स॒ मा न॒ आयुः॑ प्रमोषीः ॥  
ओं भूर्भुव॑स्सुव॒रो । सम॑स्तोपचारान् समर्पयामि ।

अस्मात् कुंभात् आवाहितं सकल-तीर्थाधिपतिं वरुणं यथास्थानं  
प्रतिष्ठापयामि । (शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च) ।

## शिव स्तुति

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्-वृणक्तु विश्वतः ।

अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहितं ॥

ओं ह्रीं नमः शिवाय । मनोन्मनाय नमः ।

समस्तोपचारान् समर्पयामि ।

त्र्यंबकं यंजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ।

उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मास्मृतात् ॥

गौरी मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदि सा चतुष्पदी ।

अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् ।

नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः ।

नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः । ओं ह्रीं नमः शिवाय ।

सद्योजातं प्रपद्यामि ।

ओं भूर्भुवस्सुवरों । अस्मिन् कुंभे/कलशे महादेवं , शिवं , रुद्रं ,

शङ्करं, नीललोहितं, ईशानं , विजयं, भीमं, देवदेवं , भवोद्भवं,

आदित्यात्मकरुद्रं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि ।

शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च ।

### 19.3 अभिषेकं

The general order of reciting Sukhtams during abhishekam to the idols/deities are given below. However, the order may vary depending on time availability)

1. Purusha Sukhtam
2. Uttara Naaraayanam
3. Maha Naaraayanam
4. Durga Sukhtham
5. Sri Sukhtham
6. Medha Sukhtam
7. Navagraha Sukhtam
8. Ayushya Sukhtam
9. Shanti Panchakam

### 19.4 अलङ्कारं, अर्चना, पूजा

This section gives the final puja performed to Deities/idols for which Abhishekam has been performed. These deities are cleaned, decorated and then the puja shall be performed. The Ashtothra Pooja/Archana shall be performed for these idols/deities .

The count of the archanaas performed will vary depending on the function and the paucity of time. It is beneficial to perform Rudra krama archana during Pradhosha Puja.

19.4.1 बिल्वाष्टकं

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रियायुषं ।

त्रिजन्मपाप संहारं एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 1

त्रिशाखैः बिल्वपत्रैश्च-ह्यछिद्रैः कोमलैः शुभैः ।

शिवपूजां करिष्यामि एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 2

अखण्ड बिल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे ।

शुद्ध्यन्ति सर्व पापेभ्यो एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 3

साळग्राम शिलामेकां विप्राणां जातु चापर्येत् ।

सोमयज्ञ्य महापुण्यं एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 4

साळग्रामेषु विप्रेषु तटाके वनकूपयोः ।

यज्ञ कोटि सहस्राणां एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 5

दन्ति कोटि सहस्राणि वाजपेय शतानि च

कोटि कन्या महादानं एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 6

लक्ष्म्याः स्तनुत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियं ।

बिल्व वृक्षं प्रयच्छामि एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 7



दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पाप नाशनं ।

अघोर पाप संहारं एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 8

काशीक्षेत्र निवासं च कालभैरव दर्शनं ।

प्रयागे माधवं दृष्ट्वा एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 9

तुळसि बिल्व निर्गुण्डि जंबीरामलकानि च ।

पञ्चबिल्व मितिप्रोक्तं एक बिल्वं शिवार्पणं ॥ 10

बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिव सन्निधौ ।

सर्वपाप विनिर्मुक्तः शिवलोक-मवाप्नुयात् ॥ 11

19.4.2 धूपं

धूर॑सि॒ धूर्व॑ धूर्व॑न्तं॒ धूर्व॑तं॒ योऽ॑स्मान् धूर्व॑ति॒ तं धूर्व॑यं॒ वयं॑  
धूर्वा॑म॒स्त्वं दे॒वाना॑म॒सि स॒स्नित॑मं॒ पप्रि॑तमं॒ जुष्ट॑तमं॒ वह्नि॑तमं॒ देव॑हू॒तम॑-  
म॒हु॒तम॑सि॒ हवि॑र्धानं॒ दृ॒ह॒स्व मा॒ह्वा मि॒त्रस्य॑ त्वा चक्षु॑षा॒ प्रेक्षे॑ मा  
भेर्मा॑ सम्॒वि॒क्ता मा त्वा हि॒सि॑षं ।

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः । धूपं आघ्रापयामि ।

19.4.3 दीपं

उ॒द्दी॑प्य॒स्व जा॒तवे॒दोऽप॒घ्नन् निर्ऋ॑तिं॒ म॒म । प॒शु॒ञ्च॒ म॒ह्य॒मा॒व॒ह जी॒व॒नं  
च दि॒शो दि॒श । मा॒नो हि॒सी-ज्जा॒तवे॒दो गा॒मश्च॑ पु॒रुषं॑ ज॒गत् ।  
अ॒बि॒भ्र॒द॒ग्न आ॒ग॒हि श्रि॒या मा॒ परि॑पातय ।

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः । दीपं दर्शयामि ।

धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

19.4.4 नैवेद्यं

ओं भूर्भु॒व॒स्सु॒वः । तथ्स॑वि॒तुर्व॑रि॒ण्यं भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि ।  
धि॒यो यो नः॑ प्र॒चो॒दया॑त् । दे॒व स॑वि॒तः प्र॑सु॒वः ।  
स॒त्यं त्व॑र्ते॒न परि॑षिञ्चामि । अ॒मृतं॑ भवतु । अ॒मृतो॑प॒स्तर॑णमसि ।  
ओं प्रा॒णाय॑ स्वाहाः । ओं अपा॒नाय॑ स्वाहाः । ओं व्या॒नाय॑ स्वाहाः ।  
ओं उ॒दा॒नाय॑ स्वाहाः । ओं स॒मा॒नाय॑ स्वाहाः । ओं ब्र॒ह्म॒णे स्वाहाः ।  
मधु॒वा॒ता ऋ॒ताय॑ते मधु॒क्षर॑न्ति सि॒न्धवः॑ । मा॒ध्वी॒र्नः स॒न्त्वोष॑धीः ।  
मधु॒न॒क्त मु॒तोष॑सि मधु॒मत् पा॒र्थि॒व॒र॒जः । मधु॒द्यौ॒रस्तु॑ नः पि॒ता ।  
मधु॒मा॒न्नो व॒नस्प॑ति॒र्मधु॑मा अस्तु॒सूर्यः॑ । मा॒ध्वी॒र्गा॒वो भव॑न्तु नः ॥  
मधु॒ मधु॒ मधु॒ ॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

(\*\*दिव्यान्नं, घृतगुळपायसं, नाळिकेरखण्डद्वयं, कदलीफलं\*\*)

निवेदयामि ।

मद्ध्ये मद्ध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि । अमृतापिधानमसि ।

हस्तप्रक्षाळनं समर्पयामि । पादप्रक्षाळनं समर्पयामि ।

नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

#### 19.4.5 तांबूलं

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदळैर्युतं । कर्पूरचूर्णं संयुक्तं तांबूलं

प्रतिगृह्यतां । आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

कर्पूरं तांबूलं निवेदयामि । आचमनीयं समर्पयामि ।

समस्तोपचारान् समर्पयामि ।

#### 19.4.6 पञ्चमुख दीपं

सप्र॑थ स॒भां मे॑ गोपाय । ये च स॒भ्याः स॒भा सदः॑ ।

तानिन्द्रि॑यावतः कुरु । सर्व॑मायु-रुपा॑सतां ।

अहे॑ बु॒ध्निय॑ मन्त्रं मे गोपाय । यमृ॑षयस्त्रै-वि॒दा वि॒दुः ।

ऋचः॑ सा॒मानि॑ यजू॑षि । सा हि श्रीर॒मृता॑ स॒तां । or/and

आ॒त्मन्ना-॒त्मन्नि॒त्या-मन्त्र॑यत । तस्मै॑ पञ्चम॑ हूतः प्रत्य॑शृणोत् ।

स पञ्च॑हूतो ऽभवत् । पञ्च॑हूतो ह॒वै ना॒मैषः॑ ।

तं वा ए॒तं पञ्च॑हू॒तः स॑न्तं । पञ्च॑हो॒तेत्या च॑क्षते प॒रोक्षे॑ण ।  
प॒रोक्ष॑प्रि॒या इ॒व हि दे॒वाः ॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ।

अलङ्कार-पञ्चमुखदीपं प्रदर्शयामि । आचमनीयं समर्पयामि ।

#### 19.4.7 कर्पूरनीराजनं

सोमो॑ वा ए॒तस्य॑ रा॒ज्यमा॑दत्ते । यो रा॒जास॑न् रा॒ज्यो वा सोमे॑न यज॑ते ।  
दे॒व सु॒वामे॑तानि ह॒वीषि॑ भवन्ति । ए॒ताव॑न्तो वै दे॒वानां॑ स॒वाः ।  
त ए॒वास्मै॑ स॒वान् प्र॑यच्छन्ति । त ए॒नं पुनः॑ सुव॑न्ते रा॒ज्याय॑ ।  
दे॒वसू॑ रा॒जा भ॑वति ।

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः । कर्पूरनीराजनं प्रदर्शयामि ।

कर्पूरनीराजनानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

बृ॒ह॒त्साम॑ क्ष॒त्रभृ॑द् वृ॒द्धवृ॑ष्णियं त्रि॒ष्टुभौ॑ज-॒श्शुभि॑त-मु॒ग्रवी॑रं ।  
इन्द्र॑स्तोमे॒न पञ्च॑द॒शेन॑ म॒द्ध्यमि॑दं वा॒तेन॑ स॒गरे॑ण रक्षा ।

रक्षां धारयामि । ओं हर । ओं हर । ओं हर ।

रा॒जाधि॑रा॒जाय॑ प्रस॒ह्य सा॑हि॒नैः । नमो॑ व॒यं वै॑श्र॒वणाय॑ कुर्महे ।  
स मे॒ कामा॑न् काम॒कामा॑य॒ मह्यं॑ । का॒मेश्व॑रो वै॒श्रव॑णो द॒दातु॑ ।

कु॒बे॒राय॑ वै॒श्रव॒णाय॑ । म॒हा॒रा॒जाय॑ नमः ।

सुव॑र्णपु॒ष्पं स॑म॒र्पयामि॑ । पा॒रि॒जात॑ पु॒ष्पं स॑म॒र्पयामि॑ ।

19.4.8 मन्त्र पुष्पं

यो॒ऽपां पु॒ष्पं वै॑द । पु॒ष्प॒वान् प्र॒जा॒वान् प॒शु॒मान् भ॑वति ।

च॒न्द्र॒मा वा अ॒पां पु॒ष्पं । पु॒ष्प॒वान् प्र॒जा॒वान् प॒शु॒मान् भ॑वति ।

य ए॒वं वै॑द ॥ 1

यो॒ऽपा॒मा॒य॒त॒नं वै॑द । आ॒य॒त॒न॒वान् भ॑वति । अ॒ग्नि॒र्वा अ॒पा॒मा॒य॒त॒नं ।

आ॒य॒त॒न॒वान् भ॑वति । यो॒ऽग्ने॒रा॒य॒त॒नं वै॑द । आ॒य॒त॒न॒वान् भ॑वति ।

आ॒पो वा अ॒ग्ने॒रा॒या॒त॒नं । आ॒य॒त॒न॒वान् भ॑वति । य ए॒वं वै॑द ॥ 2

यो॒ऽपा॒मा॒य॒त॒नं वै॑द । आ॒य॒त॒न॒वान् भ॑वति । वा॒यु॒र्वा अ॒पा॒मा॒य॒त॒नं ।

आ॒य॒त॒न॒वान् भ॑वति । यो वा॒यो॒रा॒य॒त॒नं वै॑द । आ॒य॒त॒न॒वान् भ॑वति ।

आ॒पो वै वा॒यो॒रा॒या॒त॒नं । आ॒य॒त॒न॒वान् भ॑वति । य ए॒वं वै॑द ॥ 3

यो॒ऽपा॒मा॒य॒त॒नं वै॑द । आ॒य॒त॒न॒वान् भ॑वति । अ॒सौ वै त॑प॒न्न॒पा-मा॒य॒त॒नं ।

आ॒य॒त॒न॒वान् भ॑वति । यो॒ऽमु॒ष्य-त॑प॒त आ॒य॒त॒नं वै॑द ।

आ॒य॒त॒न॒वान् भ॑वति । आ॒पो॒वा अ॒मु॒ष्य-त॑प॒त आ॒य॒त॒नं ।

आ॒य॒त॒न॒वान् भ॑वति । य ए॒वं वै॑द ॥ 4

योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । चन्द्रमा वा अपामायतनं ।  
 आयतनवान् भवति । यश्चन्द्रमस आयतनं वेद । आयतनवान् भवति ।  
 आपो वै चन्द्रमस आयतनं । आयतनवान् भवति । य एवं वेद ॥ 5

योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । नक्षत्राणि वा अपामायतनं ।  
 आयतनवान् भवति । यो नक्षत्राणा-मायतनं वेद । आयतनवान् भवति ।  
 आपो वै नक्षत्राणा-मायतनं । आयतनवान् भवति । य एवं वेद ॥ 6

योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । पर्जन्यो वा अपामायतनं ।  
 आयतनवान् भवति । यः पर्जन्यस्यायतनं वेद । आयतनवान् भवति ।  
 आपो वै पर्जन्य-स्यायतनं । आयतनवान् भवति । य एवं वेद ॥ 7

योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । सँवत्सरो वा अपामायतनं ।  
 आयतनवान् भवति । यस्सँवत्सर-स्यायतनं वेद । आयतनवान् भवति ।  
 आपो वै सँवत्सर-स्यायतनं । आयतनवान् भवति । य एवं वेद ॥ 8

योऽप्सुनावं प्रतिष्ठितां वेद । प्रत्येवतिष्ठति ॥ 9

ओं तद्ब्रह्म । ओं तद्वायुः । ओं तदात्मा । ओं तत्सत्यं ।

ओं तत्सर्वं । ओं तत्पुरो नमः ।

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु । त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार  
स्त्वमिन्द्रस्त्वꣳ रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्मत्वं प्रजापतिः ।

त्वं तदाप आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरो ।

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्व-मानशुः ।

परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राजदेत-द्यतयो विशन्ति । 1

वेदान्त विज्ञान सुनिश्चितार्था-स्सन्यास योगाद्यतयः शुद्ध सत्त्वाः ।

ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले परामृतात् परिमुच्यन्ति सर्वे । 2

दहं विपापं परमैश्वभूतं यत्पुण्डरीकं पुरमद्ध्यसꣳस्थं ।

तत्रापि दहं गगनं विशोक-स्तस्मिन् यदन्तस्त-दुपासितव्यं । 3

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः ।

तस्य प्रकृति-लीनस्य यः परस्स महेश्वरः । 4

वेदोक्त मन्त्रपुष्पं समर्पयामि । सुवर्ण पुष्पं समर्पयामि ।

पारिजात पुष्पं समर्पयामि ।

19.4.9 प्रदक्षिण नमस्कार :

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च  
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ॥ 1

प्रकृष्ट पाप नाशाय प्रकृष्ट फलसिद्धये  
प्रदक्षिणं करोमीश प्रसीद परमेश्वर ॥ 2

गजाननं भूतगणादि सेवितं । कपिथ जंबू फलसार-भक्षितं ।  
उमासुतं शोकविनाश कारणं । नमामि विघ्नेश्वर पाद पङ्कजं ॥ 3

अगजानन पद्मार्कं गजानन महर्निशं ।  
अनेकदं तं भक्तानां एकदन्त-मुपास्महे । 4

हालास्य नाथाय महेश्वराय । हालाहालालं-कृतकन्धराय ।  
मीनेक्षणायाः पतये शिवाय । नमो नमः सुन्दर-ताण्डवाय । 5

कृपासमुद्रं सुमुखं त्रिनेत्रं । जटाधरं पार्वती वामभागं ।  
सदाशिवं रुद्र-मनन्तरूपं । चिदंबरेशं हृदि भावयामि । 6

नमश्शिवाभ्यां नवयौवनाभ्यां । परस्पराश्लिष्टवपूर्धराभ्यां ।  
नागेन्द्र-कन्या-वृषकेतनाभ्यां । नमो नमः शङ्कर-पार्वतीभ्यां । 7



नमश्शिवाय सांबाय सगणाय ससूनवे ,  
सनन्दिने सगंगाय सवृषाय नमो नमः । 8

महादेवं महेशानं महेश्वर-मुमापतिं ,  
महासेनगुरुं वन्दे महाभय निवारणं । 9

ऋण-रोगादि-दारिद्र्य पापक्षुदपमृत्यवः,  
भयक्रोध मनःक्लेशाः नश्यन्तु मम सर्वदा । 10

सर्व मंगळ मांगल्ये शिवे सर्वाथ साधिके ।  
शरण्ये त्र्यंबिके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते । 11

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं ।  
विश्वाकारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगं ।  
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिहृद्दध्यान-गम्यं ।  
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक नाथं ॥ 12

भानो भास्कर मार्ताण्ड चण्डरश्मे दिवाकर ,  
आयुरा-रोग्य-मैश्वर्यं श्रियं पुत्रांश्च देहि मे । 13

अनायासेन सायुज्यं विना दैन्येन जीवनं,  
देहि मे कृपया शंभो त्वयि भक्तिमचञ्चलां । 14

बालोऽहं बालबुद्धिश्च बालचन्द्रार्ध शेखर,  
नाहं जाने तवाच्चां वै क्षम्यतां करुणानिधे । 15

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम  
तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष महेश्वर । 16

अनन्तकोटि प्रदक्षिण नमस्कारान् समर्पयामि ।

19.4.10 उपचारं

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमो नमः ।

- |                   |                        |
|-------------------|------------------------|
| 1. छत्रं धारयामि  | 2. चामरे व्यजनयामि     |
| 3. वाद्यं घोषयामि | 4. नृत्तं दर्शयामि     |
| 5. गीतं श्रावयामि | 6. आन्दोलिकां आरोपयामि |
| 7. अश्वं आरोपयामि | 8. गजं आरोपयामि        |
| 9. रथं आरोपयामि   |                        |

समस्त राजोपचारान्-देवोपचारान् समर्पयामि ॥

19.4.11 चतुर्वेद पारायणं

ओं । अ॒ग्निमी॑ळे पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑ दे॒वमृ॑त्विजं । हो॒तारं॑ रत्न॒ धात॑मं ।  
ओं । इ॒षेत्वो॑र्जे॒त्वा वा॒यवः॑ स्थो पा॒यवः॑ स्थ दे॒वो व॑स्सवि॒ता प्रा॑र्पयतु  
श्रेष्ठ॑तमाय॒ कर्म॑णे ।

ओं । अ॒ग्न आ॒याहि॑ वी॒तये॑ गृ॒णानो॑ ह॒व्य दा॒तये॑ ।

नि॒होता॑ स॒थ्सि ब॒र्हिषि॑ ।

ओं । श॒न्नो दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ आपो॑ भवन्तु पी॒तये॑ ॥

शँ॒योर॒भि स्र॑वन्तु नः ॥

19.4.12 आपस्तम्ब श्रौत सूत्र, पुराण, वाक्याः

अथातो दर्शपूर्णमासौ व्याख्यास्यामः । प्रातरग्निहोत्रं हुत्वा ।

अन्यमावहनीयं प्रणीय । अग्नीनन्वा दधाति ।

न गतश्रियोऽन्यमग्निं प्रणयति । (श्रौत सूत्र वाक्यः)

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृतां ।

धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे । (पुराण वाक्यः)

19.5 नन्दिकेश्वर पूजा

ओं भूर्भुवस्सुव॒रो । अस्यां॑ घण्ठयां नन्दिकेश्वरं ध्यायामि ।

आवाहयामि । स्नानं समर्पयामि ।

(शिवाभिषेक निर्माल्य तीर्थं अभिषिच्या) ।

स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

गन्ध-पुष्प धूप-दीपैः सकलाराधनैः स्वर्चितं ।

ओं भूर्भुवस्सुवः॑ । तथ्स॒वितु॑ वी॒र्य॑णं ।

भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि । धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दयात्॑ ॥

देव सवितः प्रसुवः । सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि ।

ओं नन्दिकेश्वराय नमः । अमृतं भवतु । अमृतोपस्तरणमसि ।

ओं प्राणाय स्वाहाः । ओं अपानाय स्वाहाः ।

ओं व्यानाय स्वाहाः । ओं उदानाय स्वाहाः ।

ओं समानाय स्वाहाः । ओं ब्रह्मणे स्वाहाः ।

बाण रावण चण्डेश नन्दि भृंगिरिटादयः ,

महादेवप्रसादोऽयं सर्वे गृह्णन्तु शांभवाः ॥

ओं नन्दिकेश्वराय नमः । निर्माल्यदेवताभ्यो नमः ।

शिवनिर्माल्यं समर्पयामि । अमृतापिधानमसि । आचमनीयं समर्पयामि ।

ई॒शानः॑ सर्व॑विद्या॒ना-मी॒श्वरः॑ सर्व॑भू॒तानां॑ ब्र॒ह्माधि॑पति॒ ब्र॒ह्म॒णोऽधि॑पति॒  
ब्र॒ह्मा शि॒वो मे॑ अस्तु सदा॒शिवो॑ ॥ ओं हर । ओं हर । ओं हर ।

(अनन्तरं श्रीशक्ति पञ्चाक्षरी मन्त्रं जपेत्-( see Chapter 11.6 )

हृत्पद्म कर्णिकामद्ध्यं उमया सह शङ्कर ,

प्रविश त्वं महादेव सर्वैरावारणैः सह ।

(इति निर्माल्यं आघ्राय, स्तोत्रादिकं पठेत्)

19.6 क्षमा प्रार्थना

यथक्षर-पदभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद् भवेत् ।  
तत् सर्वं क्षम्यतां देव नारायण नमोस्स्तुते ।  
विसर्ग-बिन्दु-मात्राणि पद-पादाक्षराणि च  
न्यूनानि चातिरिक्तानि क्षमस्व पुरुषोत्तम । 1

मन्त्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं महेश्वर ।  
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते । 2

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा, बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात् ।  
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि । 3

करचरण कृतं वा कायजं कर्मजं वा, श्रवण नयनजं वा मानसं  
वाऽपराधं । विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व  
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शंभो ॥ 4

श्री रुद्रं न जानामि, न जानामि चमकं ।  
सूक्तानि न जानामि, न जानामि स्तोत्राणि ।  
आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनं ।  
पूजा विधिं न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर ॥ 5

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।

तस्मात् कारुण्य-भावेन रक्ष रक्ष महाप्रभो । 6

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु ।

न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतं । 7

अनया पूजया सपरिवारः श्री सांबपरमेश्वरः प्रीयतां ।

ओं तत् सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ।

---

## **20स्वस्ति वचनं**

स्वस्ति मन्त्राः सत्याः सफलाः सन्त्विति भवन्तोऽनुगृह्णन्तु । 1

(तथास्तु )

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः ।

गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥ 2

(तथास्तु)

अस्य यजमानस्य (अनयोर् दंपत्योः, कुमारस्य कुमार्याश्च,) वेदोक्तं  
दीर्घमायुष्यं भूयासुरिति भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 3 (तथास्तु)

कर्मणि मुहूर्तः सुमुहूर्तोऽस्त्विति भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 4

(तथास्तु)

तल्लग्नपेक्षया आदित्यानां नवानां ग्रहाणामानुकूल्यं भूयासुरिति भवन्तो  
महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 5 (तथास्तु)

ये ये ग्रहाः शुभस्थानेषु स्थिताः तेषां ग्रहाणां शुभस्थान-फलावाप्ति-  
रस्त्विति भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 6 (तथास्तु)

अस्य यजमानस्य / अनयोर् दंपत्योः आयुर्बलं यशोवर्चः

पशवःस्तैर्यं सिद्धिर्लक्ष्मीः क्षमाकान्तिः सद्गुणा ऽऽनन्तो नित्योस्सवो

नित्यश्री नित्यमंगळमित्येषां सर्वदा ऽभिवृद्धिर् भवन्तो

महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 7 (तथास्तु)

सर्वे जनाः निरोगाः निरुपद्रवाः सदाचारसंपन्नाः आढ्याः निर्मथ्सराः

दयाळवश्च भूयासुरिति भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 8 (तथास्तु)

देशोऽयं निरुपद्रवोऽस्तु । 9

(तथास्तु)

सर्वे जनाः सुखिनो भवन्तु । 10

(तथास्तु)

समस्त सन्मंगळानि सन्तु । 11

(तथास्तु)

अनेन पूजाविधेन भगवान् सर्वात्मकः सपरिवारः श्री सांबपरमेश्वर

सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा अस्य यजमानस्य, (एतत् समाजस्थानां,

कर्मप्रवर्तकानां, प्रोत्साहकानां, साहाय्यकारीणां, नानाद्रव्य दातृकाणां,

अखिल-भूमण्डल-निवासानां, साश्रित बन्धुमित्राणां, सर्वेषां

महाजनानां) क्षेम-स्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याणां

अभिवृद्धिप्रदः, सर्वदा धर्मे मतिप्रदश्च सांबपरमेश्वर पादारविन्दयोः



अचञ्चल निष्कपट भक्तिवन्तः भूयादिति भवन्तो

महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 12

(तथास्तु)

अस्मत् गृहे वसतां द्विपदां चतुष्पदां च सर्वेषां निरोग पूर्णायुष्य

सिद्धिप्रदो भूयादिति भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु ॥ 13 (तथास्तु)

उत्तरे कर्मणि अविघ्नमस्तु । उत्तरोत्तरा-भिवृद्धिरस्तु ॥ 14 (तथास्तु)

## 20.1 प्राशनं प्रसाद विनियोगं , दक्षिण स्वीकरणं

### 20.1.1 शंखतीर्थ प्रोक्षणं

शंखमद्ध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि ।

अंगलग्नं मनुष्याणं ब्रह्महत्यायुतं दहेत् ।

### 20.1.2 अभिषेक- तीर्थप्राशनं

साळग्राम शिलावारि पापहारी शरीरिणां

आजन्मकृत पापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने ॥

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणं

सर्वपापक्षयकरं शिवपादोदकं शुभं ।

### 20.1.3 पञ्चगव्य प्राशनं

यत्त्वक् अस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके

प्राशनं पञ्चगव्यस्य दहतु अग्निरिव इन्धनं ।

20.1.4 प्रसाद विनियोगं (to yajamaanan)

श॒त॒मा॒नं॑ भ॒वति॑ श॒ता॒युः॑ पु॒रु॒षश्श॒तेन्द्रि॑य  
आ॒यु॒ष्ये॒वेन्द्रि॑ये प्र॒ति॒तिष्ठ॑ति । 1

श्री॒र् व॒र्चस्व॑-मा॒यु॒ष्य-मा॒रौ॒ग्यमा॑वी॒धा-च्छो॑भा॒मानं॑ म॒ही॒यते॑ ।  
धा॒न्यं ध॒नं प॒शुं ब॒हु॒पु॒त्रला॒भं श॒तसं॑व॒त्सरं॑ दी॒र्घमा॑युः ॥ 2

क्ष॒त्रस्य॑ रा॒जा व॒रु॒णोऽधि॑रा॒जः । नक्ष॑त्राणां श॒तभि॑षग् व॒सिष्ठः॑ ।  
तौ दे॒वेभ्यः॑ कृ॒णु॒तो दी॒र्घमा॑युः । 3

सां॒ग्र॒ह॒ण्येष्ट्या॑ यज॒ते । इ॒मां ज॒नतां॑ संगृ॒ह्णानी॑ति ।  
द्वा॒द॒शा र॒त्नी र॒शना॑ भ॒वति॑ । द्वा॒द॒श मा॒सा स्सं॑व॒त्सरः॑ ।  
सं॒व॒त्सर॑ मे॒वा व॒रु॒न्धे । मौ॒जी भ॒वति॑ । ऊ॒र्ग्वे मु॒ञ्चाः॑ ।  
ऊ॒र्जमे॒वा व॒रु॒न्धे । चि॒त्रा नक्ष॑त्रं भ॒वति॑ ।  
चि॒त्रं वा॑ ए॒तत् क॒र्म । यद॑श्चमे॒ध स्समृ॑द्ध्यै ॥ 4

य॒शस्करं॑ ब॒लव॑न्तं प्र॒भु॒त्वं तमे॒व रा॒जाधि॑पति॒र्बभू॑व ।  
सं॒की॒र्ण नागा॑श्चपति॒र्नरा॑णां सु॒मङ्ग॑ल्यं स॒ततं॑ दी॒र्घमा॑युः ॥ 5

20.1.5 दक्षिण स्वीकरणं

हिर्ण्यगर्भं गर्भस्थं हेम बीजं बिभावसोः

अनन्त पुण्य फलदमतः शान्तिं प्रयच्छमे ।

अस्मिन् रुद्रैकादशन्याख्य महाप्रायश्चित्त कर्मणि तत्फल स्वीकरणार्थं

उक्तदक्षिणा प्रत्याम्नायत्वेन इदं हिरण्यं पूजाजप कर्तृभ्यो ब्राह्मणेभ्येः

संप्रददे ।

नमः । न मम । ओं तथ्सत् । ब्रह्मार्पणमस्तु ॥

-----शुभं-----

---

## 21 Appendix

### 21.1 शिवाष्टोत्तर-शत-नामावलि:

- |                         |                            |
|-------------------------|----------------------------|
| 1. ॐ शिवाय नमः          | 2. ॐ महेश्वराय नमः         |
| 3. ॐ शम्भवे नमः         | 4. ॐ पिनाकिने नमः          |
| 5. ॐ शशिशेखराय नमः      | 6. ॐ वामदेवाय नमः          |
| 7. ॐ विरूपाक्षाय नमः    | 8. ॐ कपर्दिने नमः          |
| 9. ॐ नीललोहिताय नमः     | 10. ॐ शङ्कराय नमः          |
| 11. ॐ शूलपाणये नमः      | 12. ॐ खट्वाङ्गिने नमः      |
| 13. ॐ विष्णुवल्लभाय नमः | 14. ॐ शिपिविष्टाय नमः      |
| 15. ॐ अम्बिकानाथाय नमः  | 16. ॐ श्रीकण्ठाय नमः       |
| 17. ॐ भक्तवत्सलाय नमः   | 18. ॐ भवाय नमः             |
| 19. ॐ शर्वाय नमः        | 20. ॐ त्रिलोकेशाय नमः      |
| 21. ॐ शितिकण्ठाय नमः    | 22. ॐ शिवप्रियाय नमः       |
| 23. ॐ उग्राय नमः        | 24. ॐ कपालिने नमः          |
| 25. ॐ कामारये नमः       | 26. ॐ अन्धकासुर सूदनाय नमः |
| 27. ॐ गङ्गाधराय नमः     | 28. ॐ ललाटाक्षाय नमः       |
| 29. ॐ कालकालाय नमः      | 30. ॐ कृपानिधये नमः        |
| 31. ॐ भीमाय नमः         | 32. ॐ परशुहस्ताय नमः       |

- |                                 |                                |
|---------------------------------|--------------------------------|
| 33. ॐ मृगपाणये नमः              | 34. ॐ जटाधराय नमः              |
| 35. ॐ कैलासवासिने नमः           | 36. ॐ कवचिने नमः               |
| 37. ॐ कठोराय नमः                | 38. ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः       |
| 39. ॐ वृषाङ्गाय नमः             | 40. ॐ वृषभारूढाय नमः           |
| 41. ॐ भस्मोद्धूलित विग्रहाय नमः | 42. ॐ सामप्रियाय नमः           |
| 43. ॐ स्वरमयाय नमः              | 44. ॐ त्रयीमूर्तये नमः         |
| 45. ॐ अनीश्वराय नमः             | 46. ॐ सर्वज्ञाय नमः            |
| 47. ॐ परमात्मने नमः             | 48. ॐ सोमसूर्याग्नि लोचनाय नमः |
| 49. ॐ हविषे नमः                 | 50. ॐ यज्ञमयाय नमः             |
| 51. ॐ सोमाय नमः                 | 52. ॐ पञ्चवक्त्राय नमः         |
| 53. ॐ सदाशिवाय नमः              | 54. ॐ विश्वेश्वराय नमः         |
| 55. ॐ वीरभद्राय नमः             | 56. ॐ गणनाथाय नमः              |
| 57. ॐ प्रजापतये नमः             | 58. ॐ हिरण्यरेतसे नमः          |
| 59. ॐ दुर्धर्षाय नमः            | 60. ॐ गिरीशाय नमः              |
| 61. ॐ गिरिशाय नमः               | 62. ॐ अनघाय नमः                |
| 63. ॐ भुजङ्ग भूषणाय नमः         | 64. ॐ भर्गाय नमः               |
| 65. ॐ गिरिधन्वने नमः            | 66. ॐ गिरिप्रियाय नमः          |
| 67. ॐ कृत्तिवाससे नमः           | 68. ॐ पुरातनये नमः             |

- |                           |                         |
|---------------------------|-------------------------|
| 69. ॐ भगवते नमः           | 70. ॐ प्रमथाधिपाय नमः   |
| 71. ॐ मृत्युञ्जयाय नमः    | 72. ॐ सूक्ष्मतनवे नमः   |
| 73. ॐ जगद्व्यापिने नमः    | 74. ॐ जगद् गुरवे नमः    |
| 75. ॐ व्योमकेशाय नमः      | 76. ॐ महासेन जनकाय नमः  |
| 77. ॐ चारुविक्रमाय नमः    | 78. ॐ रुद्राय नमः       |
| 79. ॐ भूतपतये नमः         | 80. ॐ स्थाणवे नमः       |
| 81. ॐ अहये बुध्न्याय नमः  | 82. ॐ दिगम्बराय नमः     |
| 83. ॐ अष्टमूर्तये नमः     | 84. ॐ अनेकात्मने नमः    |
| 85. ॐ सात्विकाय नमः       | 86. ॐ शुद्धविग्रहाय नमः |
| 87. ॐ शाश्वताय नमः        | 88. ॐ खण्डपरशवे नमः     |
| 89. ॐ अजाय नमः            | 90. ॐ पाशविमोचकाय नमः   |
| 91. ॐ मृडाय नमः           | 92. ॐ पशुपतये नमः       |
| 93. ॐ देवाय नमः           | 94. ॐ महादेवाय नमः      |
| 95. ॐ अव्ययाय नमः         | 96. ॐ हरये नमः          |
| 97. ॐ भगनेत्रभिदे नमः     | 98. ॐ अव्यक्ताय नमः     |
| 99. ॐ दक्षाद्ध्वरहराय नमः | 100. ॐ हराय नमः         |
| 101. ॐ पूषदन्तभिदे नमः    | 102. ॐ अव्यग्राय नमः    |
| 103. ॐ सहस्राक्षाय नमः    | 104. ॐ सहस्रपदे नमः     |

105. ॐ अपवर्गप्रदाय नमः

106. ॐ अनन्ताय नमः

107. ॐ तारकाय नमः

108. ॐ परमेश्वराय नमः ॥

---

यस्त्रिसन्द्ध्यं पठेन्नित्यं नाम नामोष्टोत्तरं शतं ।

शतरुद्रत्रिरावृत्या यत् फलं लभते नरः ।

तत् फलं प्राप्नुयान्नित्यं एकावृत्या न संशयः ।

सकृद्वा नामाभिः पूज्य कुलकोटिं समुद्धरेत् ॥

बिल्वपत्रैः प्रशस्तैश्च पुष्पैश्च तुळसीदलैः ।

तिलाक्षतै र्यजेद्यस्तु जीवमुक्तो न संशयः ॥ (स्कान्द पुराणं)

---

## 22 श्री बोधायनमहर्षि प्रणीतानि महान्यास सूत्राणि

Mahanaaysa vidhi of Bhodhayana Rishi is appearing in  
"Bhodhayana Gruhya SheSha SutraM" – Chapter 6.9.

Here BodhAyanamaharShi is giving the mahanyaasa in a capsule form. He is directly teaching the mahanyaasa method to his students. (विधिं व्याख्यास्यामः).

ओं अथातः पञ्चांगरुद्राणां न्यासपूर्वकं जपहोमार्चनाभिषेकविधिं  
व्याख्यास्यामः ॥

(पञ्चांगरुद्रस्य अयमर्थः पञ्चप्रकाराः अंगन्यासाः येषु ते पञ्चांग रुद्राः ।  
एवं षडंगरुद्रस्यापि षट्प्रकाराः अङ्गन्यासाः यस्य सः इत्यर्थः ।  
तत्र शिखाद्यस्त्रपर्यन्तं एकत्रिंशदंगन्यासः दिग्बन्ध सहितः प्रथमः)

न्यासम् 1 – (शिखाद्यस्त्रपर्यन्तं एकत्रिंशदंगन्यासः

दिग्बन्ध सहितः प्रथमः)

याते रुद्रेति शिखायां । अस्मिन् महत्यर्णव इति शिरसि ।  
सहस्राणीति ललाटे । ह्रस्वः शुचिषदिति भ्रुवोर्मध्ये ।  
त्र्यंबकं यजामहे इति नेत्रयोः । नमः स्रुत्यायेति कर्णयोः ।  
मानस्तोक इति नासिकायां । अवतत्येति मुखे । नीलग्रीवौ द्वौ कण्ठे ।  
नमस्ते अस्त्वायुधायेति बाह्वोः । या ते हेतिरित्युपबाह्वोः ।  
परिणो रुद्रस्य हेतिरिति मणिबन्धयोः । ये तीर्थानीति हस्तयोः ।  
सद्योजातमिति पञ्चानुवाकान् पञ्चस्वंगुलीषु ।  
नमो वः किरिकेभ्य इति हृदये । नमो गणेभ्य इति पृष्ठे ।  
नमो हिरण्यबाहव इति पार्श्वयोः । विज्यं धनुरिति जठरे ।  
हिरण्यगर्भ इति नाभौ । मीढूष्टमेति कट्यां ।  
ये भूतानामधिपतय इति गुह्ये । ये अन्नेष्वित्यण्डयोः ।  
सशिरा जातवेदा इत्यपाने । मानो महान्तमित्युर्वोः ।  
एषते रुद्र भाग इति जान्वोः । स्रृष्टजिदिति जंघयोः ।



## शिव स्तुति

विश्वं भूतमिति गुल्फयोः । ये पथामिति पादयोः ।  
अद्ध्यवोचदिति कवचं । नमो बिल्मिन इत्युपकवचं ।  
नमो अस्तु नीलग्रीवायेति तृतीयं नेत्रं ।  
प्रमुञ्च धन्वन इत्यस्त्रं । य एतावन्तश्चेति दिग्बन्धः ॥

### न्यासम् 2 – (मूर्द्धादिपादान्तं दशाङ्गन्यासः द्वितीयः)

ओं नमो भगवते रुद्रायेति नमस्कारान् न्यसेत् ।

- i. ओङ्कारं मूर्द्धनि विन्यस्य नकारं नासिकाग्रतः ।  
मोकारं तू ललाटे वै भकारं मुखमद्ध्यतः ॥
- ii. गकारं कण्ठदेशे तु वकारं हृदि विन्यसेत् ।  
तेकारं दक्षिणे हस्ते रुकारं वामतो न्यसेत् ॥
- iii. द्राकारं नाभिदेशे तु यकारं पादयोर् न्यसेत् ॥

### न्यासम् 3 – पादादिमूर्द्धान्तं पञ्चाङ्गन्यासः तृतीयः

- i. सद्यं च पादयोर्न्यस्य वामं न्यस्योरुमद्ध्यतः ।  
अघोरं हृदि विन्यस्य मुखे तत् पुरुषं न्यसेत् ॥
- ii. ईशानं मूर्द्धनि विन्यस्य हंसो नाम सदाशिवः ।  
हंस हंसेति यो ब्रूयाद्धंसो (ब्रूयात् हंसो) नाम सदाशिवः ।
- iii. एवं न्यासविधिं कृत्वा ततः संपुटमारभेत् ।
- iv. त्रातारमिन्द्रं, त्वं नो अग्ने, सुगं नः पन्थां, असुन्वन्तं, तत्त्वा यामि,  
आनो नियुद्धिः । वयस्सोम, तमीशानं, अस्मे रुद्रा, स्योनापृथिवीत्येतत्  
संपुटं इन्द्रादि दिक्षू विन्यस्य एवमेवात्मनि षोडशरौद्रीकरणं कृत्वा  
विभूरसीत्यनुवाकेन सानुषङ्गेण ॥

## शिव स्तुति

- v. त्वगस्थिगतैः सर्वपापैः प्रमुच्यते सर्वभूतेष्वपराजितो भवति ।  
ततो भूतप्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षस यक्ष यमदूत शाकिनी डाकिनी सर्प  
श्रापद वृश्चिक तस्कराद्यूपद्रवाद्यूपघाताः ॥
- vi. सर्वे (ग्रहाः) ज्वलन्तं पश्यन्तु । मां रक्षन्तु ।

### न्यासम् 4 – गुह्यादिमस्तकान्त षडंगन्यासः चतुर्थः

मनोज्योतिः, अबोद्ध्यग्निः, अग्निर्मूर्द्धा, मूर्द्धानं, मर्माणि ते, जातवेदा,  
इति गुह्य-नाभि-हृदय-कण्ठ-मुख-शिरांस्यभिमन्त्र्य आत्मरक्षा कर्तव्या  
ब्रह्मात्मन्वदसृजतेत्यनुवाकेन ।

### न्यासम् 5 – हृदयाद्य स्त्रान्तं षडंगन्यासः पञ्चमः

शिवसङ्कल्पं हृदयं, पुरुषसूक्तं शिरः, उत्तरनारायणं शिखा, अप्रतिरथं कवचं,  
प्रतिपुरुषद्वयं नेत्रं, शतरुद्रियमित्यस्त्रं ।

#### Korvai for Sivasankalpam

1. येनेदं, येन कर्माणि, येनकर्माण्यपसो, यत् प्रज्ञानगं, सुषारथिर्, यस्मिन्नृचो,  
यदत्र षष्ठं, यज्जाग्रतो, येनेदं, येन द्यौः पृथिवी दश ।
2. ये मनो हृदय, मचिन्त्य, मेका च, ये पञ्च, वेदाहमेतं, यस्येदं धीराः, परात्  
परतरं चैव, परात् परतरो ब्रह्मा, या वेदादिषु, यो वै देवं दश ।
3. प्रयतो, योऽसौ, गोभिर् जुष्टं, कैलास शिखरे, त्र्यंबकं, विश्वतश्चक्षु, श्वतुरो  
वेदान्, मानो महान्त, म्मानस्तोक, ऋतः सत्यं दश ।
4. कद् रुद्राय, ब्रह्मजज्ञानं, यः प्राणतो, य आत्मदा, यो रुद्रो, गन्धद्वारां, य इदं  
शिवसङ्कल्पः सप्तत्रिंशत् ।

### पञ्चांगं सकृत्जपेत् -

हंसः शुचिषत्, प्रतद्विष्णुः, त्र्यंबकं, तत्सवितुर्वृणीमहे, विष्णुर् योनिमिति ।

---

### अष्टांगं प्रणम्य

हिरण्यगर्भो, यः प्राणतो, ब्रह्मजज्ञानं, महीदौः, उपश्वासय, अग्ने नय,  
याते अग्ने, इमं यम इत्यष्टाङ्गं प्रणम्य ।

---

अथात्मानं शिवात्मानं श्रीरुद्ररूपं ध्यायेत् ।

(\*अथात्मानं रुद्ररूपं ध्यायेत् पञ्चमुखं शिवं । इति पाठान्तरं । )

- I. शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रकं  
गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरण भूषितं ।
- II. नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनं  
व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदं ।
- III. कमण्डल्वक्षसूत्रे च दधानं शूलपाणिनं  
ज्वलन्तं पिङ्गळजटं शिखामद्ध्योदधारिणं
- IV. अमृतेनाप्लुतं हृष्टं दिव्यभोगसमन्वितं  
दिग्देवता समायुक्तं सुरासुरनमस्कृतं।
- V. नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययं  
सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणं ।  
एवं ध्यात्वा द्विजः समृक् ततो यजनमारभेत् ।

अथातो रुद्रस्नानार्चनाभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः ॥

आदित एव तीर्थे स्नात्वा, उदेत्य अहतं वासः परिधाय,  
शुचिः प्रयतो ब्रह्मचारी शुक्लवासाः, ईशानस्य प्रतिकृतिं  
कृत्वा तस्य दक्षिणाप्रत्यग्देशे तन्मुखः स्थित्वा, आत्मनि  
देवताः स्थापयेत् ।

---

**न्यासम् 6 – अयं षष्ठः न्यासः**

प्रजनने ब्रह्मा तिष्ठतु । पादयोः विष्णुस्तिष्ठतु ।  
हस्तयोः हरस्तिष्ठतु । बाह्वोरिन्द्रस्तिष्ठतु ।  
जठरे अग्निस्तिष्ठतु । हृदये शिवस्तिष्ठतु ।  
कण्ठे वसवस्तिष्ठन्तु । वक्त्रे सरस्वती तिष्ठतु ।  
नासिकयोर्वायु स्तिष्ठतु । नयनयोश्चन्द्रादित्यौ स्तिष्ठतां ।  
कर्णयोरश्विनौ स्तिष्ठतां । ललाटे रुद्रास्तिष्ठन्तु ।  
मूर्ध्न्यादित्यास्तिष्ठन्तु । शिरसि महादेवस्तिष्ठतु ।  
शिखायां वामदेवस्तिष्ठतु । पृष्ठे पिनाकी स्तिष्ठतु ।  
पुरतः शूली स्तिष्ठतु । पार्श्वयोः शिवाशङ्करौ स्तिष्ठतां ।  
सर्वतो वायु स्तिष्ठतु । ततो बहीः सर्वतोऽग्निर् ज्वालामालापरिवृतस्तिष्ठतु ।  
सर्वेष्वङ्गेषु सर्वादेवता यथास्थानं तिष्ठन्तु । मां (सकुटुम्बं) रक्षन्तु ।

अग्निर्मे वाचि श्रित इति यथालिंगं अंगानि संस्पृश्य आत्मानं गन्धपुष्पधूपदीप  
नैवेद्यैः मानसैः आराधयेत् ।

अथैनं प्रसादयेत् ।

आराधितो मनुष्यैस्त्वं सिद्धैर् देवासुरादिभिः ।

आराधयामि भक्त्या त्वाऽनुग्रहाण (त्वां मां गृहाण) महेश्वर ।

आत्वा वहन्तु हरयः सचेतसः श्वेतैरश्वैः सहकेतुमद्भिः ।

वाताजितैर् बलवद्भिः मनोजवैरायाहि शीघ्रं मम हव्याय शर्वौ ।

त्र्यम्बकमिति च, इत्यावाहयति, स्थापिते तु न आवाहनं ।

अथ आसनं । ददाति सद्यो जातमिति । भवे भव इति पाद्यं ।

भवोद्भावाय नमः इत्यर्घ्यं । वामदेवाय नमः इत्याचमनीयं ।

अथैनं स्नपयति ।

## शिव स्तुति

आपो हिष्ठादिभिः तिसृभिः, हिरण्य वर्णा इति, पवमानः सुवर्जनः इत्यनुवाकेन  
मार्जयित्वा, सर्वो वै रुद्रः, कया नश्चित्रः, अपो वा इद्ं सर्वं इत्येतैश्च,  
वामदेवाय नमः इति वस्त्रं, ज्येष्ठाय नमः इत्युपवीतं, रुद्राय नमः इत्याचमनीयं,  
प्रणवेन भूषणं, कालाय नमः इति गन्धं, कलविकरणाय नमः इत्यक्षतान्,  
बलविकरणाय नमः इति पुष्पं, बलाय नमः इतिधूपं,  
बलप्रमथनाय नमः इति दीपं, सर्वभूतदमनाय नमः इति नैवेद्यं,  
मनोन्मनाय नमः इति तांबूलं ददाति ।

अथास्मै अष्टभिर्मन्त्रैः अष्टौ पुष्पाणि ददाति 'भवाय देवायनमः' इत्यादि ।  
अथास्य अघोरतनूरूपतिष्ठते अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यः इति,  
अथ रुद्रगायत्रीं जपेत्, तत् पुरुषाय विद्मह इति शतकृत्वः  
अपरिमित कृत्वः वा दशवारं वा ।  
अथैनं आशिषमाशास्ते, ईशानः सर्व विद्यानां इति ।

अथस्य मूर्ध्नि हिरण्यकलशेन सन्ततधारां निषिञ्चेत् ।  
मधुना सर्पिषा पयसा चेक्षुरसेन आम्ररसेन वा नाळिकेरोदकेन  
वा तदलाभे उदकेन वा नमस्ते रुद्रमन्यव इत्येकादशानुवाकान् जपेत् ।  
जपान्ते अग्नाविष्णु सजोषसेत्येकादशानुवाकान् प्रत्येकमेकमेकं जपेत् ।  
सर्वेषां पारे पुनराधयेत् उत्तमाराधनेन ।

तेन अभिषिक्तोदकेन अक्षीभ्यां इत्यनुवाकेन अब्लिङ्गादिभिश्च आ पादात्  
संस्पृश्य पापक्षयार्थी व्याधिविमोक्षार्थी श्रीकामः शान्तिकामः पुष्टिकामः  
तुष्टिकामः आयुष्कामः आरोग्यकामः एवं कुर्यात् ।  
एवं कूर्वन् सिद्धिमवाप्नोति ।  
आचार्याय दक्षिणां ददाति ।  
दश गाः सवत्साः सुवर्णभूषिताः वृषभैकादशाः  
तदलाभे एकां गां दद्यात् ।

एकादश ब्राह्मणान् भोजयेत् ।

अश्वमेधक्रतुसहस्रफलमवाप्नोतीत्याह भगवान् बोधायनः।

॥ इति बोधायन महर्षि प्रणीतानि महान्याससूत्राणि ॥

===== शुभं =====

**Books referred for “Bodayana sootraani”**

1. Bodhayaneeya brahmakarma samucchayaH, Page 785,  
Chapter - "mahanyAsa vidhi".

2. "Mahanyaasam" book by R. S. Vadhyaar and Sons &  
Kalpathi.